पड़ोसी

(साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत मलयालम उपन्यास)

पड़ोसी

मूल लेखक

पी. केशवदेव

अनुवादक

सुधांशु चतुर्वेदी

साहित्य अकादेमी

आमुख

केरल के सामाजिक जीवन में गतिशीलता आये हुए लगभग आधी सदी ही बीती होगी। सुदीर्घ निद्रा से जागा केरल, ऊर्जस्वलता से हिल-डुल उठा। उस शीघ्र और ऊर्जस्वल परिवर्तन में लगभग तीस वर्षों से अधिक मैं भी एक छोटा हिस्सेदार था। मैं यह दावा कर सकता हूं कि केरल के सामूहिक राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में नगण्य होने पर भी मेरे चरण-चिह्न दिखाई देंगे।

आज भी केरल की सामूहिक गति की तीव्रता और उत्तेजना बढ़ती जा रही है। मैं आज भी उस गति का हिस्सेदार हूँ, किन्तु आगे दौड़ते समय जिन रास्तों को लांघकर चला आया हूँ पीछे मुड़कर उनकी ओर एक बार दृष्टि दौड़ाने की मेरी आदत-सी पड़ गई है। जब कभी पीछे मुड़कर देखता हूँ, तब बड़े भयंकर संघर्ष और बड़ी मुसीबतों की स्मृतियाँ नवीन कला-रूप लेकर मेरे सामने आया करती हैं। उनमें से एक है 'पडोसी'।

केरल के सामूहिक परिवर्तनों के इतिहास में विशेष रूप से ध्यान देने योग्य तीन बातें हैं—सामंतवाद (जागीरदारी) व कुछ मिलते-जुलते मरुमक्कत्तायम[1] सम्प्रदाय का पतन, जातीय विवशताएँ भुगतने वाले ईषवा (अछूत) समुदाय का सफल स्वतंत्रता-आन्दोलन तथा ईसाई-समुदाय की आर्थिक और शैक्षणिक उन्नति। इन तीनों परिवर्तनों को तीन कुटुम्बों में प्रतिबिम्बित करने वाला उपन्यास है 'पडोसी'।

यह उपन्यास 'मातृभूमि' साप्ताहिक में क्रमशः प्रकाशित हो

---

१. माता के खानदान को प्रधानता देकर माँ के भाइयों की अपनी बहन के पुत्रों को स्वत्व देने की रीति।

चुका है। उन दिनों इस उपन्यास को आगे पढ़ने के लिए पाठक उत्सुक रहा करते थे, यह बात 'मातृभूमि' में प्रकाशित पत्रों से तथा उसके एजेंटों से मैं जान सका था। पाठकों में इतनी उत्सुकता पैदा होने का क्या कारण था ? मैंने अपनी कलम के कमाल (कलात्मक सामर्थ्य) से पाठकों के मन को आकृष्ट कर लिया था--ऐसा मैं नही कहता। फिर क्या ?

भूतकाल की कड़ी से जुड़ी हुई है वर्तमान काल की कड़ी। भविष्य वर्तमान से जुड़ी हुई कड़ी है। भूतकाल को एकदम मिटा देना, उसे स्मृति-मंडल से एकदम हटा देना, किसी के लिए संभव नहीं है। वैसे ही वर्तमान की राख से भविष्य के मकान का निर्माण भी कोई नही कर सकता। केरल में बड़े राष्ट्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन हुए हैं। ये सभी परिवर्तन भूतकाल से सम्बन्धित है। कहने का तात्पर्य यह है कि रूप और भाव में जो परिवर्तन हुए है, वे सभी भूतकाल की सत्ता को अपने में समेटे हुए हैं। 'पडोसी' नामक उपन्यास लगातार पढने के लिए पाठक व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे थे—इसका कारण यह है कि मैंने उनके भूत, वर्तमान और भविष्य को जोड़ने की कोशिश की है।

केरल में आज पचास वर्ष की उम्र के ऊपर ज़िंदा रहने वाले सभी बड़े-बड़े परिवर्तनों में बहकर आये हुए हैं। उन परिवर्तनों की कड़वाहट और मिठास, वेदना और आह्लाद, उनकी जीभ से, उनके मन से अभी तक नही मिट सके हैं। अगर मैं उन अनुभवों को, उन स्मृतियों को एक सशक्त साहित्यिक रूप दे सका तो वही मेरी सफलता का कारण है।

अनेकों मंगलश्शेरी और पच्चाप्पी खानदान पतन के गर्त में पहुँच चुके है। उस गर्त में गिरकर उन खानदानों के सदस्यों में से कई भटक-कर विनष्ट हो गए हैं। किंतु सभी खानदान विनष्ट नहीं हुए, सभी सदस्य भी मिट्टी में नही मिले है। परिवर्तनों में शामिल हो जाने में और अभिमान (खानदान के गौरव) की रक्षा करने में, खानदान तथा सदस्य समर्थ रहे हैं। इस तरह का पतन हुआ, तब भी मृत्यु नहीं हुई।

मंगलश्शेरी खानदान के मालिक पद्मनाभ पिल्लै और पच्चाषी खानदान के मालिक माधव कुरूप के प्रतिरूप आज भी केरल मे इधर-उधर दिखाई देते है। वे भूतकाल के प्रतीक-मात्र बनते हैं, सामाजिक समस्या नही बनते। अपने पुत्र के लिए, खानदान को बनाये रखने के लिए अनुपम त्याग सहने वाली सुमती अम्मा, उस पतन-काल का वैशिष्ट्य थीं। विलासिनी नंदिनी एवं गोपालकृष्णन का छिपकर भाग जाना, पतन से बचने की अभिलाषा-मात्र है। वे सब विनाश के गर्त्त में गिरे बिना ही अपनी योग्यताओं का विकास करके लौट भी आए। राजशेखरन संयुक्त परिवार की रीति से फिसला हुआ एक स्वार्थी है। रामचन्द्रन, भास्कर कुरूप, सुकुमारन नायर, नंदिनी, रवीन्द्रन आदि सब नई परंपरा के प्रतिनिधियों के रूप मे बदल जाते हैं।

ईषवा-समुदाय के स्वतंत्रता-आंदोलन के साथ-ही-साथ केरल की सामाजिक और धार्मिक चिंता-गति मे क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। कुञ्ञन और कल्याणी, पद्मनाभ पिल्लै और माधव कुरूप के समकालीन ईषवा थे। वासु, दिवाकरन और यशोधरा परिवर्तन-काल के ईषवा-समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे नमकहराम नही हैं, किन्तु वे स्वातंत्र्य-बोध पाये हुए है। इसलिए मंगलश्शेरी मे जाकर, हाथ जोडकर और सिर झुकाकर 'तपुरान-तंपुराटी' (स्वामी-स्वामिनी) पुकारने को वे तैयार नही है।

कुञ्ञन को मैने ज़रा उभार दिया है। उसमें कुछ असामान्यता है। भटक-फिरकर मगलश्शेरी मे आकर उस खानदान की अभिवृद्धि को ही उसने अपनी अभिवृद्धि माना। उसने उस कुटुब के विनाश को अपना ही विनाश समझा। वह सारे समाज का विरोध सह सकता है किंतु मंगल-श्शेरी का कोई भी सदस्य उसकी अवहेलना करे अथवा उस पर संदेह करे, यह उसे सह्य नहीं है। संन्यासी बनकर दुनिया-भर मे भटकते समय भी उसे मंगलश्शेरी की ही चिन्ता थी। लौटकर अज्ञात संन्यासी के रूप मे खडाऊँ पहनकर घूमने वाले कुञ्ञन का हृदय मंगलश्शेरी खानदान

का पतन देखकर रो रहा था। आखिर छोटे मालिक पद्मनाभ पिल्लै को नीचा देखने का अवसर दिये बिना कुञ्जन उन्हें साथ लेकर काशी की ओर प्रस्थान करता है। वह त्यागमूर्ति कुञ्जन गहरे रंग में रँगा हुआ सत्य है।

केरल में बड़े-बड़े सामाजिक-राष्ट्रीय-सांस्कृतिक परिवर्तनों से दूर रहकर, धन-संचय तथा शिक्षा-दीक्षा में ध्यान लगाने वाले ईसाई-समाज का प्रतिनिधि है कुञ्ञुवरीत और उसका कुटुंब। कुञ्ञवरीत ने धोखे और छल-कपट से पैसा नहीं कमाया। अवश्य ही उसने चालाकी से बहुत काम लिया। कठिन परिश्रम और विवेकपूर्ण सांपत्तिक योजनाओं ने उसे धनी बना दिया था। कुञ्ञुवरीत के बच्चों, उसके अनुयायियों ने अपनी 'अलग-अलग खिचड़ी पकाने' का विचार न करके केरल के सामूहिक, राष्ट्रीय और सांस्कृतिक आन्दोलनों में घुल-मिलकर भाग लिया था।

इसमें कुछ ऐसी घटनाएँ चित्रित है जिनका विश्वास करना आगे आने वाली पीढियों के लिए कठिन है। कुछ सड़कें केरल में ऐसी थी जो अवर्णों के लिए निषिद्ध थी। 'छाया पड गई'[1] केवल ऐसा कारण बताकर उच्च जाति वालों द्वारा नीची जाति के लोगों को मारना केरल में लगभग रोज की ही घटना थी। स्कूलों और सरकारी दफ्तरों में भी अवर्णों को अछूत मानकर उनको दूर रखा जाता था। आज यह सब केवल कहानी जैसा लगता है। इतना अधिक परिवर्तन हो चुका है, परन्तु वे सभी परिवर्तन एक पीढ़ी के यातनापूर्ण कठोर संघर्षों में प्राप्त किये हुए है, भावी पीढ़ी इसको न भूले।

इस कथा को खंडशः प्रकाशित करने के बाद इस उपन्यास के आदि और अंत के भाग मैंने कुछ और विकसित कर दिए है। अब भी मैं सन्तुष्ट

---

१. केरल में अछूत लोग भी दो प्रकार के थे—एक ईषवा जाति के, जिन्हें छूना मना था और दूसरे पुलया, कुरवा आदि, जिनकी छाया पड जाने से ही उच्च जाति वाले अशुद्ध हो जाते थे।

नही हो सका हूँ। स्रष्टा को अपनी सृष्टि से कभी संतोष नही हो सकता।

केरल के राष्ट्रीय परिवर्तनों को इस उपन्यास मे स्थान नही मिला है। सामूहिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के राष्ट्रीय परिवर्तनों के साथ अखंड रूप से संयुक्त हो जाने के कारण कहीं-कहीं राष्ट्रीय परिवर्तनों की सूचना देने के लिए मैं बाध्य हो गया हूँ। राष्ट्रीय परिवर्तनों को इस उपन्यास में विशेष स्थान नही दिया गया है, क्योंकि केरल में कोई अलग राजनीति नही है। केरल की राजनीति भारतीय राजनीति का केवल एक भाग है। उस पृष्ठभूमि में एक राजनीतिक उपन्यास लिखने की मेरी इच्छा है। वह मै कब शुरू करूँगा, कब समाप्त करूँगा, कितने पृष्ठ का होगा-इस समय यह भविष्यवाणी करना नहीं चाहता। मैं अभी केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैं अपनी इच्छा को पूरी करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

साहित्य मेरे लिए कभी समस्या नहीं रहा। जीवन ही मेरे लिए समस्या है। जीवन-संग्राम की तीक्ष्ण मेखलाओं पर दौड़कर चढ़ते हुए तथा संघर्ष द्वारा ही जीवन का अध्ययन करके उसका निरूपण और व्याख्या करने की कोशिश मैंने की है। वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, शेक्सपियर, होमर, गेटे, टालस्टाय— सभी ने जिंदा रहते हुए जीवन का अध्ययन किया है, जीवन की समीक्षा की है, जीवन की व्याख्या की है। वे है मेरे गुरुजन !

त्रिवनन्तपुरम् — पी० केशव देव

अनुक्रमणिका

१. बाढ़

'कौन झांक रहा है रे ?'—एक घनघोर गर्जन था वह । मंगलश्शेरी घराने की बैठक की बड़ी आराम-कुर्सी से वह शब्द उठा था ।

फाटक के भीतर की ओर झांकने वाला कुञ्ञुवरीत भयभीत होकर पीछे हटा । बच्चे को गोद में लिये हुए सारा ने धीमे स्वर में कहा : 'जाओ न उधर, कोई पकड़कर निगल तो नहीं जायगा ।'

'चलो, पिताजी, चलो'—कुञ्ञुवरीत के बेटे वर्की ने उसका हाथ पकड़कर खींचा ।

कुञ्ञवरीत ने एक बार फिर झांका । बरामदे की आराम-कुर्सी में वही आवाज एक बार फिर गूंज उठी : 'कुञ्ञा, देख रे फाटक पर कौन खड़ा है ?'

'जाओ न उधर ।' सारा ने फिर प्रोत्साहन दिया ।

'यों ही उधर चला जाऊं तो ··' कुञ्ञुवरीत ने संभाव्य विपत्ति की चेतावनी दी ।

'कुञ्ञा ! —गृहस्वामी का स्वर फिर गूंज उठा ।

पश्चिमी अहाते से नारियल के सूखे पत्ते घसीटते हुए कुञ्ञन आँगन में पहुँचा ।—जरा घबराहट के साथ कुञ्ञन ने कहा—'बाढ़ आ गई है छोटे मालिक, बाढ़ !'

'बाढ ? कैसी बाढ ?' गृहस्वामी ने लापरवाही से पूछा ।

'पच्चापो वालों का बाध टूट गया । हमारा सारा पश्चिमी अहाता पानी में डूब गया । सारी-की-सारी खेती पानी में है । पानी का चढ़ाव अभी रुका नहीं है, इधर ही बढ रहा है ।'

गृहस्वामी के चेहरे पर चिंता की गहरी रेखाएँ पड़ गई । उत्कंठा से उन्होंने पूछा—'हमारा बांध भी टूट गया क्या ?'

'हमारा बाँध टूटकर सारे खेत डूब जाने के बाद ही पच्चाषी वालों का बाँध टूटा था। झोंपड़ियाँ सारी गिर गईं। सुना है कि कोई दो व्यक्ति मर भी गए है।'

गृहस्वामी पद्मनाभ पिल्लै आराम-कुर्सी मे उठकर खड़े हो गए। उनकी चोटी ने बरामदे की छत को छू लिया। कंधे पर पड़ा काले किनारे वाला उत्तरीय ओढ़े वे दृढ कदमों से नीचे के बरामदे पर उतरे। उन्होंने आज्ञा दी—'कुञ्ञा, देख फाटक पर कौन खड़ा है ?'

कुञ्ञन फाटक की ओर चल पड़ा। पद्मनाभ पिल्लै ने भीतर की ओर देखकर मृदु स्वर में पुकारा—'दाक्षायणी !'

गृहस्वामी की अर्धांगिनी दाक्षायणी अम्मा बैठक में आईं। स्नेह-मिश्रित आदरपूर्ण स्वर में उन्होंने पूछा: 'क्या मुझे पुकारा था आपने ?'

'हाँ ! वह छतरी ले आ, सिर पर बाँधने के लिए एक अँगोछा भी !'

'अब—इस झंझावात में—कहाँ जा रहे हैं आप ?'

'बाढ़ इधर चढ़ी आ रही है। हमारे और पच्चाषी वालों के बाँध टूट गए हैं। मैं जरा देख आऊँ।'

दाक्षायणी अम्मा अन्दर चली गईं। पद्मनाभ पिल्लै आँगन की ओर उतर गए। तब भी तेज़ ठंडी हवा चल रही थी। उत्तरीय को कस-कर ओढ़ते हुए मेघाच्छन्न आकाश की ओर देखते हुए उन्होंने कहा: 'कलि-काल के अन्त में ही प्रलय होता है।'

कुञ्ञन और कुञ्ञुवरीत सामने आये। कुञ्ञुवरीत की परछाई के समान उसका बेटा वर्की उसके पीछे है। सारा भी बच्चे को गोद में लिये हुए आई, किंतु संकोच से सिकुड़कर दूर खड़ी रही।

कुञ्ञुवरीत ने झुककर पद्मनाभ पिल्लै को अत्यंत विनम्रता से प्रणाम किया।

'तू पच्चाषी वालों के अहाते में रहता है ?' गृहस्वामी का प्रश्न

हवा में गूँज उठा ।

'जी हुज़ूर ! ···एक मुसीबत में पड गया हूँ !'—कुञ्ञुवरीत ने दुबारा झुककर प्रणाम किया ।

'कैसी भी मुसीबत हो, पञ्चायत जाकर कहना चाहिए ।'

कुञ्ञुवरीत ने दयनीय दृष्टि से कुञ्ञन की ओर देखा । कुञ्ञन ने बताया—'इसकी झोपडी बह गई है ।'

'तो मै क्या करूँ ? यह पञ्चायत जाकर कहे ।'

'पञ्चायत वालो से कहने के बाद ही आया हूँ ।' कुञ्ञुवरीत ने कहा ।

'तो फिर ?'

'पानी उतर जाने पर दूसरी झोपडी बना लेने की आज्ञा दे दी है ।'

'पानी उतर जाने पर भी वहा झोपडी बनाई नहीं जा सकती ।' कुञ्ञन ने कुञ्ञुवरीत की सहायता की ।

'क्यो नही ।'

'झोंपडी के स्थान पर तालाब-सा गड्ढा हो गया है—बाँध के टूटते ही पानी के ढालूदार गिराव ने तालाब-का-सा बडा गर्त्त बना दिया है, वहाँ ।'

'बर्तन-भाँडे, कपडे-लत्ते सब-कुछ पानी मे बह गया है···' कुञ्ञुवरीत का गला रुँध गया ।

पद्मनाभ पिल्लै के मुख पर करुणा का अंकुर फूटा । कुञ्ञुवरीत का हाथ पकडे वर्की और बच्चे को गोद लिये सारा की ओर एक बार उन्होंने देखा ।

'उसे एक झोंपडी बनाने की जगह भर चाहिए—यही माँगता है'—कुञ्ञन ने बताया ।

'हूँ ! दक्षिणी अहाते में एक झोंपड़ी बनाने दो, ये सब उस तरफ जायँ ।'

दाक्षायणी अम्मा आँगन की ओर आईं । अँगोछा पतिदेव के हाथ में दे दिया । अँगोछे को सिर पर बाँधकर छतरी लेते हुए उन्होंने कहा,

'पच्चाषी वालों के अहाते में रहते थे ये लोग। बांध टूट गया और इनकी झोपड़ी बह गई। उन्हें बुलाकर कुछ खाने को दे दो।'

वे फाटक की ओर चले, पीछे-पीछे कुञ्अन भी।

× × ×

इसके पहले कभी भी ऐसी भयंकर बाढ़ नहीं आई थी। वहां के लोगों के बाढ़-संबंधी सारे संकल्प उस बाढ़ में ही बह गए। सुरक्षित माने जाने वाले अनेक प्रदेश इस प्रलयंकर आक्रमण के शिकार हो गए।

चार दिन तक लगातार तेज हवा चलती रही। सूर्य भी नहीं निकला। तीसरे दिन शाम को नदी-नाले किनारे तोड़-फोड़कर बहने लगे थे। तटवर्ती खेत, घर, जमीन आदि सब पानी में डूब गए। क्षण-प्रतिक्षण पानी चढ़ रहा था।

आधी रात होते ही मूल सहित उखड़े वृक्ष, वन्य जन्तुओं की लाशें आदि सागर की ओर बहने लगीं। सारा-का-सारा प्रदेश एक लाल समुद्र बन गया। उस घोर अंधकार में चिल्लाहट और करुण-क्रन्दन गूंज उठे।

पूर्वी दिशा से बहती वह नदी दक्षिण को मुड़कर, फिर पश्चिम की ओर बहकर, उत्तरी दिशा को मुड़ने के बीच का एक विशाल प्रदेश है मुक्कोणक्करा। साधारणतया जब बाढ़ आती थी तब किनारों और खेतों में ही पानी चढ़ आता था। अभी तक घरों में कभी नहीं घुसा था। लेकिन उस दिन तो ढलाऊ किनारों और खेतों को पराभूत करके, उसके परे लहलहाने वाले फले-फूले पौधों के बगीचों पर आक्रमण करते हुए बाढ़ का पानी ऊपर चढ़ रहा था। किसी ने ऐसा स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि इस प्रकार की कभी न घटने वाली घटना अब घटेगी। घबराई हुई जनता, जो कुछ हाथ लगा, उसे लेकर प्राण बचाने के लिए भाग निकली।

बगीचा के उस पार का विस्तृत खेत भी जल से लबालब भरकर उमड़ चला। मंगलश्शेरी वालों की तरफ के बांध को तोड़कर जंगली हाथियों के झुंड के समान पानी आगे बढ़ा। पच्चाषी वालों का बांध भी टूट गया। कुञ्ञवरीत की झोंपड़ी का स्थान तालाब बन गया।

मंगलश्शेरी घराना मुक्कोणक्करा के उत्तर-पूर्वी कोने पर है। मंगलश्शेरी के पूर्व की ओर से ही मुक्कोणक्करा से शहर का मार्ग जाता है। उसके पास ही मलयालम पाठशाला, कचहरी और डाकघर हैं। मुक्कोणक्करा का सबसे ऊँचा प्रदेश वही है। लोगों का विश्वास है कि चाहे जितनी बडी बाढ़ आये, उधर पानी नहीं चढ़ेगा। इसलिए जिनकी झोंपड़ियाँ बाढ में बह गई और जिनके घरों में पानी भर गया था, उन सभी ने पाठशाला अथवा कचहरी में शरण ली थी।

पद्मनाभ पिल्लै ने जब यह सुना कि पच्चाषी वालों तथा मंगलश्शेरी वालो की मेड टूट गई है और पानी का चढ़ाव अब भी रुका नहीं है, तब उनकी चिन्ता बढ़ गई। कुञ्ञुवरीत और उसके कुटुम्ब की दशा से उन्होंने बाढ की यातनाओं का अनुमान भी कर लिया था। इसीलिए ठंडी हवा की परवाह किये बिना छतरी लेकर वे बाहर निकले थे।

फाटक से आगे बढ़कर दक्षिण की तरफ उन्होंने दृष्टि डाली तो देखा कि पाठशाला के सामने बड़ी भीड़ है। सिर ऊँचा करके दृढ़ चरणो से वे आगे बढ़े। पाठशाला के नजदीक पहुंचते ही दोनों तरफ की सहमी हुई भीड ने झुककर उनको प्रणाम किया। पाठशाला और कचहरी के बरामदे मे ठंडी हवा से ठिठुरने वाले लोगों ने भी उठकर उन्हें प्रणाम किया। बाढ के भीषण आक्रमण से जान बचाने के लिए भाग आये थे वे सभी लोग। उनमें ऐसे भी लोग हैं, जिनके जो कुछ हाथ लगा, उसे लेकर भाग आए है; कुछ लोग सभी कुछ खोकर सिर्फ़ जान बचाकर भागे हुए भी है। पानी में तैरकर भीगे वस्त्रों से किनारे पर आए हुए लोग भी है। कोई भी कुछ नहीं बोला। एकदम आगे बढकर कण्डम्पुलयन कुछ कहने को उद्यत हुआ। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा, 'क्या है कण्डा ?'

'हम लोग···' कण्डम्पुलयन फूट-फूटकर रोने लगा।

पीछे मुड़कर पद्मनाभ पिल्लै ने कुञ्ञन से कहा, 'कुञ्ञा, बखारी का

धान लेकर कूटने को दे दो। कंद[1] (Tapoica), रतालू, जमीकंद, घुइयाँ—सब जल्दी-जल्दी निकलवाओ। सभी को कुछ खाने को देना है। जल्दी करो।'

कुञ्ञन दौडा। अय्यप्पच्चोन ने हाथ जोडकर ऊपर दृष्टि उठाकर प्रार्थना की—'ईश्वर मंगलश्शेरी के मालिकों को लम्बी उमर दे।'

'सब लोग हमारे घर की ओर चलो!' आज्ञा देकर सिर ऊँचा करके दृढ कदमों से वे फिर दक्षिण की ओर आगे बढे।

सामने के रास्ते से आने वाले ईसाई पौलोस ने एक ओर सिमटते हुए झुककर प्रणाम किया। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा, 'पौलोस, क्या पानी इधर भी चढ आयगा?'

'दक्षिणी और पश्चिमी सारे खेत डूब गए है। पानी बरगद के कोने तक चढ आया है।'

'अब भी चढ रहा है?'

'चढाव अभी रुका नही है। इस तरह चढता रहा तो यहाँ भी चढ आयगा।'

'पच्चाषी मे भी पानी चढ आया क्या?'

'पच्चाषी वाले दूसरी मंजिल पर हैं। स्त्रियों और बच्चो को नाव मे कही भेज दिया है।···तब भी ईश्वर का ऐसा धोखा नही देना चाहिए था। बाली आने वाली थी कि बाढ आ गई।'

'कम-से-कम बीज तो मिलेगा, पौलोस?'

'पयाल तक नही मिलेगा।'

'ईश्वर की सजा है। सचाई और ईमानदारी कही नही रह गई न? सचाई और ईमानदारी जिनमे नही है क्या उन्हे भगवान् नही

---

[1] कंद : कंद की खेती केरल मे खूब होती है। अँग्रेजी मे इसे Tapoica कहते है। गरीबो और किसानो के खाद्य-पदार्थों मे इसका मुख्य स्थान है।

जानते ? उन्हें सजा दें। हमने क्या बिगाडा है ?'

'एक पुलयन की गलती से अनेकों के सिर गिरते है —यह कहावत तुमने सुनी है क्या, पौलोस ?'

'फिर भी ईश्वर को ऐसा धोखा नही देना चाहिए था।'

पद्मनाभ पिल्लै आगे बढ गए। पश्चिमी ओर के मोड से मुंशी कुञ्चु पिल्लै और उनका परिवार आ रहा था। कुञ्चु पिल्लै विनयपूर्वक एक ओर खडा हो गया। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा, 'तेरे घर मे भी पानी चढ आया क्या ?'

'जी हां, चढ रहा है। आंगन से बरामदे तक चढ आने का लक्षण देखकर हम बच्चों को लेकर किसी तरह गिरते-पडते निकल आए।'

'अब कहां जा रहे हो ?'

'कही भी। सब-कुछ चला जाय तब भी अपने प्राण तो छोड नही सकते।'

'तो मंगलश्शेरी मे जाओ। मैं अभी आता हूं।'

गठरियो को लिये हुए कुञ्चु पिल्लै और उसका परिवार चल दिया। पद्मनाभ पिल्लै पश्चिम की तरफ मुड गए। जब वे पुलिया के मोड पर आये तो पगडंडी से कोन्नंचोवन ने पुकारकर कहा, 'हुजूर, आप उधर मत जाइए।'

'क्या कोन्ना ? पानी चढ रहा है क्या ?'

'चढ तो रहा ही है। सारे रास्ते पानी मे डूबकर गड्ढे बन गए है।'

पुलिया पर खडे होकर पद्मनाभ पिल्लै ने चारो तरफ देखा। अजगर-सा पानी पगडंडियों और मुख्य मार्गों से रेंग-रेंगकर आ रहा है। उतरकर उन्होने कोन्नंचोवन से पूछा, 'कोन्ना, क्या आदमियों का भी नाश हुआ ?'

'करुम्बन समुद्र की ओर चला गया है। अलियार कुञ्चु का बेटा मम्मन दिखाई नहीं पड़ता। कुञ्ञिअड्डरन की बूढ़ी मां को पानी बहा

ल गया है।'

'कुञ्ञइङ्ङन का गाय-बकरी ?'

'सब वहीं-के-वहीं मर गए।'

'तेरे बच्चे और स्त्री कहां है ?'

'उन्हें ही तो ढूंढ़ रहा हूँ। उन्हें पानी से किनारे तक पहुंचाकर मैं फिर एक बक्स और बर्तन लेने गया था।"

'वे पाठशाला में बैठे हैं'—पद्मनाभ पिल्लै के पीछे आये कण्ड-म्पुलयन ने कहा।

'तो मैं उधर जाऊँ ?'—गठरी सिर पर रखकर वह उत्तर दिशा की ओर चल पडा।

'तुम्हें न देखकर वे रो रहे हैं। जल्दी जाओ।'—कण्डम्पुलयन ने चिल्लाकर कहा।

'कण्डा, पानी और चढ़ेगा ?' पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा।

आकाश की ओर देखकर कण्डन ने कहा, 'आसमान साफ़ हो रहा है। दोपहर तक पानी चढ़ना रुक जायगा।'

पद्मनाभ पिल्लै वापस लौट पडे। कण्डम्पुलयन भी पीछे हो लिया।

× × ×

मंगलश्शेरी का फाटक भीतर से बन्द है। बाहर एक भारी भीड खड़ी है—हिन्दू हैं, ईसाई हैं, मुसलमान है। गृह-स्वामी को आते देखकर सब सिमटकर खड़े हो गए। उन्होंने फाटक खटखटाया। उनका स्वर घन-गर्जन-सा गूंज उठा :

'अरे, किसने सांकल लगाई ?'

'छोटी मालकिन ने'—कुञ्ञन ने धीमे स्वर में कहा।

'किस छोटी मालिकिन ने सांकल लगाई है ? मंगलश्शेरी के फाटक में आज तक सांकल नहीं लगाई गई है। आगे सांकल लगेगी भी नहीं।'

दाक्षायणी अम्मा बरामदे से आंगन में आईं। पद्मनाभ पिल्लै भीतर

आए। पत्नी पर गरज उठे, 'अरी, तुम्हीने फाटक पर साँकल लगवाई है क्या ?'

'अछूत लोगों···'

'हम मगलश्शेरी वाले, गाँव वालों से डरकर साँकल लगाने वाले नहीं हैं।'

'अछूत लोग जब इधर चढ़ आए थे तभी···'

'अगर वे चढ़ आए तो मेरे कहने से···।'

'तो मुझे मालूम था क्या ?'

'नहीं मालूम था तो अब मालूम हो गया।'—फाटक की ओर मुड़कर उन्होंने आज्ञा दी—

'तुम सब अन्दर चले आओ। बाहर के चौक में और उधर के बड़े कमरे में बैठ जाओ। जगह पूरी न पड़े तो बरामदे में आ जाओ।'

दाक्षायणी अम्मा दौड़कर बरामदे में आईं। भीतर से दो-तीन स्त्रियों की अमर्ष-भरी आवाज़ सुनाई पड़ी।

उस दिन तक किसी भी अछूत ने मगलश्शेरी के फाटक के अन्दर पैर नहीं रखा था। किसी ने वहाँ की मिट्टी तक नहीं छुई थी। अलिखित किन्तु अलंघ्य था वह नियम। केवल कुञ्जन ही उस कानून से बँधा नहीं है।

उस दिन तो ईषवा, पुलया, ईसाई—सभी लोग अपनी-अपनी गठरी और बर्तन लेकर बरोटे, गोदामघर और बरामदे में बैठे रहे। जैसे कोई विशेष बात हुई ही नहीं—एक विशिष्ट मुख-मुद्रा में आराम-कुर्सी पर बैठकर पद्मनाभ पिल्लै पान लगाने लगे। वे जाति-पाँति पर विश्वास करने वाले हैं। वे छुआछूत मानते हैं, किन्तु उस दिन वे जाति-भेद सब एकदम भूल गए। अपने ग्राम पर आई विपत्ति देखकर, गाँव वालों की परेशानी देखकर, जाति-सम्बन्धी आचारों से ऊपर उनका मनुष्यत्व उठ खड़ा हुआ। उसी आत्म-संतृप्ति से वे पान खा रहे हैं।

भीतर की कानाफूसी की प्रतिनिधि-सी दाक्षायणी अम्मा बैठक में

आई। मृदुल मुस्कान से पद्मनाभ पिल्लै ने पत्नी से कहा, 'विपत्ति के समय छुआछूत देखना सम्भव नहीं, दाक्षायणी!'

'मुसीबत के समय छुआछूत ज़रूरी नहीं है तो फिर आराम के समय क्यों ज़रूरी है?'

'सब ईश्वर का निश्चय है, री!'

'छुआछूत ईश्वर का विधान है न?'

'वह भी ईश्वर की विधि है। यह भी ईश्वर-विधि है।'

"हाँ' या 'ना' कहने का अधिकार सिर्फ़ ईश्वर को ही है।"

'इसीके साथ यह दुनिया भी खत्म हो जाती—' दाक्षायणी अम्मा ने ईश्वर से प्रार्थना की। वह प्रार्थना बिलकुल हार्दिक थी। वह एक ऐसे लोक में, जिसमें छुआछूत नहीं है—जीना नहीं चाहती। ऐसे लोक का बने रहना भी उसे पसन्द नहीं।

पद्मनाभ पिल्लै ने सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा, 'दुनिया कभी खत्म नहीं होगी री! पानी उतर जायगा, तब ये सब लोग अपने-आप ही चले जायँगे। फिर घर को हम तीर्थ-जल से शुद्ध कर लेंगे।'

'अछूतों को घर में घुसाकर...।'

'अरी, शरण में आये हुए लोगों को हम मंगलश्शेरी के लोग'—पद्मनाभ पिल्लै का स्वर ऊँचा उठा।

दाक्षायणी अम्मा ने फिर कुछ नहीं कहा। भीतर की कानाफूसी भी शान्त हो गई।

× × ×

ईंधनशाला रसोईघर के रूप में बदल गई। बड़े-बड़े कड़ाहों में चावल पकाया गया। कड़ाहों में कन्द, रतालू, घुइयाँ आदि मिलाकर सब्जी बनाई गई। पश्चिमी आँगन में शरणार्थी पंक्ति बाँधकर बैठ गए। कुञ्जन के नेतृत्व और पद्मनाभ पिल्लै की देख-रेख में सबको खाना दिया गया। इस प्रकार तीन दिन तक गृह-स्वामी की आज्ञा से दोनों वक्त सबको भोजन दिया गया। गृह-स्वामी की ऐसी ही आज्ञा थी।

कुञ्जन ने उस आज्ञा का पालन इस तरह किया कि गृह-स्वामी और अभ्यर्थी दोनों संतुष्ट हो गए।

तीनों दिन मंगलश्शेरी घराने की स्त्रियाँ बाहर नहीं निकलीं और न ही उन्होंने अपने बच्चों को निकलने दिया। घर के बाहर अछूत लोग बैठे थे फिर वे सब कैसे निकलते ?

पद्मनाभ पिल्लै की तीन छोटी बहनें हैं—कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा और सुमती अम्मा। तीनों के दो-दो बच्चे हैं। पद्मनाभ पिल्लै की द्वितीय पत्नी ने अभी तक एक भी बच्चे को जन्म नहीं दिया था। वे सभी बीवी-बच्चे आज अपने-अपने कमरों में और घर के अन्य भीतरी भागों में अपना समय बिता रहे हैं।

किसी ने कुछ कहा तो था नहीं, किन्तु सभी के मन में क्रोध था। दाक्षायणी अम्मा के मन में क्रोध हो तब भी पति की हर एक चेष्टा को सही प्रमाणित करने के लिए वे सतर्क रहती थीं। उन्होंने कहा, 'मुसीबत सारे गाँव पर टूट पड़ी है ? वे लोग भी हमारे समान मनुष्य हैं न ? वे हमारे ही खेतिहर और मजदूर हैं न ?'

'तो फिर···?' कमलाक्षी अम्मा विरोध प्रकट करने को उद्यत हुईं। तुरन्त सुमती अम्मा के द्वारा कनखियों से कुछ कहने पर सहसा वह चुप हो गईं। फिर कमलाक्षी अम्मा ने कुछ नहीं कहा।

सरोजिनी अम्मा ने कहा, 'भैया का जैसा मन होगा, वैसा ही होगा। भैया की इच्छा ही हमारी इच्छा है।'

रसोई वाली पार्वती को यह सब असह्य था। उसने पूछा, 'आज क्या खाना-वाना नहीं बनेगा ?'

'बनाये बिना कैसे कुछ खा पायेंगी, री ?' दाक्षायणी अम्मा ने पूछा।

'मुझसे नहीं होगा। मैंने आज तक छूत खाना नहीं खाया है।'

दाक्षायणी अम्मा के माथे पर बल पड़ गए। 'तू छूत खाना खाये बिना ही पंडिताइन बनी रह। रसोई बनाना और परोसना मैं भी अच्छी तरह जानती हूँ।'

भाभी का चेहरा लाल हो गया तो कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा और सुमती अम्मा की जिद्द बढ़ गई। सुमती अम्मा ने कहा, 'बड़े घर के लोग रसोई में न घुसें। मैं भी खाना बनाना और परोसना खूब जानती हूँ।'

इतना होने पर कोच्चुपार्वती रसोई घर में जाकर खाना बनाने लगी।

तीसरे दिन पानी खेतों और ढलाऊ किनारों से उतरकर नदी-नालों की सीमा में आ गया। शरणार्थी परिवार एक-एक करके मंगलश्शेरी से जाने लगे। पद्मनाभ पिल्लै की आज्ञानुसार कुञ्ञन ने एक-एक कुटुम्ब को दो-दो पंसेरी धान दिया। जिनकी झोंपड़ी बह गई थी, उन्हें बाँस और नारियल के पत्ते भी दे दिए गए।

केवल कुञ्ञुवरीत और उसका परिवार बाकी रह गया। पद्मनाभ पिल्लै ने कुञ्ञन को आज्ञा दी, 'कल ही कुञ्ञुवरीत के लिए दक्षिणी अहाते में एक झोंपड़ी बना दो, कल ही।'

२. कुञ्ञुवरीत ने झोंपड़ी बनाई

कुञ्ञुवरीत पन्द्रह-सोलह मील की दूरी पर एक पुलया की झोंपडी में पैदा हुआ था। उसकी माँ ने उसे 'चात्तन' नाम दिया था।

बहुत वर्ष पहले ईसाई मिशनरियों ने उन प्रदेशो मे जाकर अनेक पुलयों का ईसाई बना लिया था। 'सत्य-विश्वासी' बनने पर जहाँ-जहाँ अछूतों को प्रवेश निषिद्ध था, वहाँ-वहाँ ईसाई धर्म ग्रहण करने पर उन्हें प्रवेश की अनुमति मिल गई। मैदान में बहुत दूर खडे रहने योग्य अछूत को ईसाई बन जाने पर राजकुलों के प्रांगण एवं बरामदे तक भी जाने का अधिकार मिल गया, इसलिए अनेक अछूत ईसाई धर्म स्वीकार करके 'सत्य-विश्वासी' बन गए। किन्तु चात्तन के पिता ने 'सत्य-विश्वासी' बनने से इन्कार कर दिया था।

चात्तन के ताऊ का बेटा धर्म-परिवर्तन करके ईसाई बन गया। अब उसका नाम मत्तायी है। चात्तन और मत्तायी दोनों साथ-साथ काम करते थे। एक दिन नौकरी से लौटते समय संध्या हो चुकी थी। उनके रास्ते में एक मन्दिर पड़ता था। मन्दिर की दीवार से लगी गली से जाने पर पौन मील कम चलना पड़ता था। परन्तु वहाँ पर अछूतों का इस रास्ते में प्रवेश निषिद्ध है, इस प्रकार का 'बोर्ड' लगा हुआ था। मत्तायी ने कहा, 'चात्तन हम इसी रास्ते से चलें।'

'मैं नहीं जाऊँगा। मालिक लोग देख लेंगे तो मार ही डालेंगे।'

'इस अँधेरे में कोई नहीं देखेगा, चात्तन! आ, चल, हम इसी रास्ते से चलेंगे।'

उस पगडण्डी पर कोई नहीं था। मत्तायी चल पड़ा। पीछे-पीछे चात्तन भी। कुछ दूर चलने पर मत्तायी ने कहा, 'चात्तन, कोई उधर से आ रहा है।'

उधर से आने वाला नायर उनके पास आकर गरज उठा, 'तुम अछूत हो न ?'

'न, मै सत्यवेदवाला हूँ। मेरा नाम मत्तायी है।'

'रे, तू अछूत है न ?'—नायर चात्तन की ओर बढा।

चात्तन ने कोई जवाब नही दिया। एक घूँसा। फिर एक लात ! बस ! चात्तन के हाथ का फावड़ा दूर जा गिरा। नायर ने आज्ञा दी, 'भाग जा रे !'

चात्तन आए हुए रास्ते से ही भाग गया। दो दिन बाद चात्तन कुञ्जुवरीत बन गया। उसी दिन वह दिन के समय मन्दिर के पास वाली पगडण्डी मे निकला। दो-तीन नायरो ने उसे रोका। कुञ्जुवरीत ने कहा, 'मैं सत्यवेदवाला हूँ। मेरा नाम कुञ्जुवरीत है।'

रोकने वाले पीछे हट गए। कुञ्जुवरीत उस रास्ते से ही आगे बढा।

खोप्रा व्यापारी माम्मन का केवट बनकर वह पहले मुक्कोणक्करा मे आया था। मालिक माम्मन के द्वारा मूल्य निर्धारित करके रखे हुए नारियल नाव मे चढाकर उस पार पहुँचाना ही कुञ्जुवरीत का काम था। इस प्रकार कुछ दिन बीतने के बाद कुञ्जुवरीत ने 'सारा' से विवाह किया और पच्चाषी वालो के अहाते मे झोंपडी बनाकर रहने लगा। सारा ने दो बच्चो को जना। बडा है वर्की। वह पांच साल का है। दूसरा है तोमस। वह डेढ साल का है। जिस दिन नदी मे बाढ आई, उस दिन कुञ्जुवरीत नाव से नारियल लेने गया था। बहाव के प्रतिकूल नाव ले जाना सम्भव नही था। वह नाव वापस ले आया। वापस आने तक माम्मन मालिक के आँगन तक पानी आ चुका था। नाव बाँधकर वह घर चला गया।

संध्या होने पर नदी के किनारे के खेत और क्यारी पानी मे डूब गए। जमीन भी पानी मे डूब गई। धान के खेतो मे पानी भर गया। उस समय तक कुञ्जुवरीत को कोई भय नही था। वह मंगलश्शेरी के खेतो के पास गया, तो देखा कि उसके पास तक के सभी खेत पानी में डूब गए

थे। बाँध टूट जाय तो ? उसने लौटकर सारा से कहा, 'उधर के सब खेत पानी मे डूब गए ?'

'वह बाँध टूट जायगा ?'

'अय्यप्पन ने कहा तो था कि नहीं टूटेगा।'

'टूट जाय तो ?'

'टूट जाय तो···'

खेतों की तरफ से शोर सुनाई पड़ा—चिल्लाहट, शोर-गुल, रोने की आवाज़ !

'वह बाँध टूट गया, सारा !' कुञ्ञुवरीत ने भयभीत होकर कहा।

'अब यह बांध भी टूट जायगा क्या ?'

'यह नही टूटेगा।'

'टूट जाय तो ?'

'टूट जाय तो···तू एक काम कर—सारे बर्तन उस टोकरी में रख ले। बच्चों को खाना खिला दे। मुझे भी इधर खाना दे दे।'

सबने जल्दी ही खाना खा लिया। कई दिशाओं से शोर-गुल सुनाई पड़ रहा था। बीच-बीच में मिट्टी को काटकर तेजी से बहते हुए पानी की झरझराहट भी सुनाई पड़ रही थी। बिना किसी डर के तोमस सोने लगा। वर्की बाप के साथ बाँध के पास इन्तजार कर रहा है। सारा बाँध न टूटने की प्रार्थना करने लगी।

खेत भर गया। मेड़ के किनारे वाले नारियल के पेड़ खूब हिलने लगे। कुञ्ञुवरीत ने चिल्लाकर कहा, 'झोंपड़ी के बाहर निकल आओ। बाहर निकलो।'

सोते हुए बच्चे को गोद में लेकर सारा बाहर की ओर झपटी। कुञ्ञुवरीत झोंपड़ी के अन्दर दौड़ गया। टोकरी को सिर पर रखकर एक छोटे-से लकड़ी के सन्दूक को बगल में दबाकर वह बाहर आ गया। चलते हुए उसने कहा, 'आ, मेरे पीछे-पीछे आ।'

एक बच्चे को गोद में लेकर और दूसरे का हाथ पकड़े हुए सारा

कुञ्ञुवरीत के पीछे-पीछे चल पड़ी ।

एक भयंकर निर्घोष ! धमाका ! सारा चौंक पड़ी । 'क्या है—क्या है वह ?'

'नारियल का पेड़ गिर पड़ा । झोंपड़ी के ऊपर गिरा है ।'

'हाय ! मेरे मशीहा ! रे !'

'ग्रा—जल्दी ग्रा ।'

वह दौड़ी । सारा ने पूछा, 'सन्दूक ले लिया ?'

'हूँ ।'

'कहाँ है ?'

'मेरी बगल में ।'

उस छोटे-से सन्दूक में बहत्तर रुपये थे । उनकी ग्रब तक की कमाई थी यह ।

× × ×

मंगलश्शेरी का दक्षिणी मैदान छोटी-छोटी कँटीली झाड़ियों से भरा हुग्रा है । इधर-उधर कई छोटे-छोटे नारियल के पेड़ हैं । वह लगभग साढ़े चार एकड़ जमीन है । मैदान के मध्य में पहले एक छोटा-सा मकान था, जो मठ कहलाता था । मंगलश्शेरी खानदान को सबसे ग्रधिक सम्पन्न बनाने वाले कुट्टन पिल्लै वैद्य ने यह मठ बनवाया था । हर साल इकतालीस दिन तक प्रतिदिन 'गणपति हवन' तथा 'ब्राह्मण भोज' का ग्रनुष्ठान इस स्थान पर कराया जाता था । पद्मनाभ पिल्लै के नाना परमेश्वर पिल्लै वकील जब गृह-स्वामी थे तब उन्होंने गणपति होम ग्रौर ब्राह्मणों का भोज बन्द करा दिया था । उसके बाद वह मठ खाली पड़ा रहा । उन दिनों एक युवती ने, जो विवाहित होने के पहले गर्भवती हो गई थी । रस्सी बाँधकर मठ की धन्नी में ग्रात्महत्या कर ली थी । उस घटना के पश्चात् संध्या के बाद उस मठ में घुसने का साहस कोई भी नहीं करता था । धीरे-धीरे वह लोगों के लिए मल-विसर्जन का स्थान भी बन गया । मरम्मत किये बिना, भीग-भीगकर ग्रन्त में वह मठ गिर

गया। गिरने पर उसके पत्थर, लकड़ी आदि जिसके हाथ लगे, वही ले गया।

उस मैदान के पश्चिमी भाग में गली के सामने ही कुञ्ञुवरीत के लिए झोंपड़ी बनवाने का निश्चय किया गया। झाड़-झंखाड़-मरे, सर्पों और प्रेतों के आवास बने उस स्थान में कुञ्ञुवरीत और उसका परिवार रहेगा, इसमें कुञ्ञन को सन्देह था। उसने कुञ्ञुवरीत से कहा, 'दूसरे भागों में और लोग रहते हैं, कुञ्ञुवरीत। मालिक ने यहीं झोंपड़ी बनवा देने को कहा है।'

'अगर ऐसा है तो यही सही, कुञ्ञन तण्डार!'

इस तरह प्रकट रूप मे आधे मन से कुञ्ञुवरीत ने जवाब दिया। परन्तु अन्दर-ही-अन्दर उसने इस स्थान में रहना एक वरदान के समान समझा।

'सब जंगल-ही-जंगल बन गया' कुञ्ञन ने कहा।

'मनुष्य चाहे तो जंगल भी शहर बन सकता है, कुञ्ञन तण्डार!'

'सच है कुञ्ञुवरीत माप्ले! अच्छी उर्वर भूमि है। मेरे पास अगर समय होता तो सब जंगल साफ करके नारियल के पेड़ लगा देता।'

कुञ्ञुवरीत ने फिर कुछ नहीं कहा। चारों तरफ घूमकर उसने एक बार उस स्थान का निरीक्षण किया।

शाम होते-होते कुञ्ञन और कुञ्ञुवरीत ने मिलकर एक झोंपडी बना ली। बांस, बांस की चटाई और नारियल के पत्तों से बनी थी वह। उसमें सिर्फ़ एक कमरा और एक रसोईघर था। सारा और बच्चे मंगलश्शेरी मे ही थे। सारा वहाँ नारियल के पत्तों से छप्पर तैयार कर रही थी। छप्पर बुनने के लिए उसे मजदूरी भी मिली। सभी का खाना-पीना वहीं हुआ। शाम से वे नई झोंपडी में रहने लगे।

संध्या बीतने पर कुञ्ञुवरीत छोटी लकडी की सन्दूकची के बहत्तर रुपये एक कागज़ मे लपेटकर गृह-स्वामी के सामने पहुँचा।

'क्या कुञ्ञुवरीत? रहने की जगह ठीक हो गई?' पद्मनाभ पिल्लै

ने पूछा।

'जी हुजूर !'

'काम मिलने तक रोज की जरूरी चीजें यहाँ से ले लेना। सुना ?'

'और कोई आश्रय नहीं है।' उसने कागज़ की पुड़िया पद्मनाभ पिल्लै के सामने रख दी।

'क्या है यह ?'

'कुछ पैसा है हुजूर ! बिना खाये-पिये जोड़ा है। झोंपडी में रखूं तो···गरीबी के दिन हैं···अगर इधर रख लें तो···'

'कितने रुपये हैं ?'

'सत्तर-बहत्तर होंगे—ऐसा लगता है।'

'दाक्षायणी !' पद्मनाभ पिल्लै ने पत्नी को पुकारा। दाक्षायणी अम्मा बरामदे में आई। पद्मनाभ पिल्लै ने कहा, 'यह पुडिया ले जाकर रख दो। जब कुञ्ञुवरीत माँगे, तब दे देना।'

दाक्षायणी अम्मा ने पुड़िया खोलकर देखी। फिर वैसे ही बंद करती हुई अंदर चली गई।

× × ×

बड़ी हलचल मचाकर और गाँव वालों को बहुत मुसीबतों में डालने के बाद नदी शांति से बहने लगी। सारी खेती नष्ट हो गई। भूख और बीमारियों ने अपना संहार-नृत्य प्रारंभ किया।

मंगलश्शेरी का धान्यागार खाली हो गया था। बीज के लिए अलग रखा गया धान भी खर्च हो गया। फिर खर्च के लिए चावल पैसा देकर मँगाने की स्थिति आ गई। चावल का भाव भी बेहिसाब बढ़ गया। हाथ का पैसा पूरा-का-पूरा खर्च हो जाने से पद्मनाभ पिल्लै दुविधा में पड़ गए।

हमेशा कुञ्ञन ही बैलगाड़ी ले जाकर शहर से चावल तथा अन्य सामान लाता था। एक दिन कुञ्ञन बैलों को गाड़ी में जोतकर शहर जाने को तैयार खड़ा था। मालिक पद्मनाभ पिल्लै ने कहा—'कुञ्ञा, हाथ

में एक भी पैसा नहीं है। क्या करूँ ?'

'मंगलश्शेरी के लिए है' ऐसा कहने पर खादर सेठ जो कुछ भी चाहिए दे देंगे। पैसा फिर दे देना काफ़ी है।'

'यह तो शरम की बात है न, कुञ्ञा ? मंगलश्शेरी वालों ने दुकान से चावल उधार लिया—यह बात दस आदमी जान लें तो···'

'शरम की बात है। फिर क्या किया जाय ?'

सहसा कुछ याद करके मालिक ने अंदर की ओर देखकर पुकारा—'दाक्षायणी !'

बैठक में आई पत्नी को उन्होंने आज्ञा दी, 'वह पुड़िया इधर ले आओ।'

'कौन-सी पुड़िया ?'

'कुञ्ञुदरीत की दी हुई पुड़िया।'

दाक्षायणी अम्मा अंदर से पुड़िया लेकर बाहर आईं। कुञ्ञन का मुख उतर गया। गृह-स्वामी ने पुड़िया लेकर रुपये गिने। उसमें चाँदी के बहत्तर रुपये थे। पुड़िया जमीन पर रखते हुए उन्होंने कहा, 'उठा लो, कुञ्ञा ?'

कुञ्ञन ने रुपये लेकर गिनकर पूछा .

'कुञ्ञुवरीत ने यह यहाँ लाकर दिया था···'

'सम्हालकर रखने के लिए। अभी हमारी रूखत जरूरत इससे पूरी हो जायगी।'

'खादर सेठ से कर्ज़ ले लेना इसकी अपेक्षा अच्छा है।'

'यह बात कोई नहीं जानेगा। दुकान से कर्ज़ लेने पर सब जानेंगे, जो अपमानजनक है।'

कुञ्ञन पुड़िया पकड़े सिर झुकाये खड़ा रहा। गृह-स्वामी ने पूछा, 'कुञ्ञन, तुम क्या सोच रहे हो ?'

'ओ, यों ही !'—वह चल दिया। बैठक पार करके बैलगाड़ी लेकर उसने नगर की ओर प्रयाण किया।

'कुञ्ञन क्यों चिंतित-सा लगा था ? उसका मुख भी उदास हो गया था।' दाक्षायणी अम्मा ने पूछा।

'सोचा होगा कुञ्ञुवरीत यह कहीं से चोरी करके लाया है। नहीं तो इसमे उदास होने की क्या बात ?'

'पता नही !'

× × ×

कुञ्ञुवरीत ने दक्षिणी भाग के झाड़-झंखाड़ को काट-छाँटकर साफ़ कर दिया। आधी जगह मे उसने कद लगा दिए।

वह प्रतिदिन पौ फटते ही उठता। सात-आठ बजे तक ज़मीन का काम करता। उसके बाद बासी चावल खाकर यजमान माम्मन के काम पर चला जाता। फिर साँझ होने पर घर लौटता।

सारा और बच्चे दिन में ज्यादातर मगलश्शेरी मे ही रहते। कोई कहे या न कहे, वहाँ जो कुछ काम दिखाई पड़ता, वे करते थे। सबेरे बासी भात, दोपहर में ताज़ा भात वहाँ मे मिल जाता। सूखे नारियल के पत्ते गायों का गोबर और चूल्हे की राख वह अपने घर ले आती। धान कूटा जाता तो भूसा, छिलके और चावल की कनकी वह ले आती। फटे-पुराने कपड़े भी वह माँग लेती।

कुञ्ञुवरीत का वेतन एक रुपया प्रतिदिन है। उस समय का सबसे ज्यादा वेतन है वह। उसमें से एक भी पैसा खर्च न करने का उसका निश्चय है। दोपहर को यजमान के घर से खाना मिल जाता है। शाम को काम करके लौटते समय दो-तीन छोटे खराब नारियल साथ ले आता। रात के वक्त खाने के लिए चावल एकत्रित करने का काम सारा का है—यही व्यवस्था थी उनकी। किसी दिन किसी कारणवश सारा को चावल न मिलता, तभी कुञ्ञुवरीत के पैसे से चावल खरीदा जाता।

झोंपड़ी के भीतर एक गड्ढा खोदकर, उसीके अंदर कुञ्ञुवरीत की की लकड़ी की संदूकची और सारा के पैसे रखने का मिट्टी का गुल्लक रखा गया। उस गड्ढे को एक तख्ते से ढककर उसके ऊपर एक फटी-

पुरानी बोरी फैलाकर उसके भी ऊपर भूसे का ढेर लगाया गया है। रोज रात को संदूकची और गुल्लक निकालकर कुञ्जुवरीत और सारा अपनी कमाई उसमे डालकर फिर वैसे ही ढककर रख देते हैं।

यजमान माम्मन जी के घर से कुञ्जुवरीत ने तीन मुर्गियां मांगी। उन मुर्गियों के पालन-पोषण का भार बडे लडके वर्की को सौंप दिया। मुर्गियों को खाना देना, कौए, कबूतर के आक्रमण से उनकी रक्षा करना वर्की का प्रमुख काम था। कंद के बढने के कारण मूल को अन्य घरों की मुर्गियों द्वारा नष्ट होने से बचाना तथा उन पौधों की रक्षा करना भी उसका काम हो गया, इसीलिए वह हमेशा झोंपडी के सामने बढते हुए एक छोटे आम के वृक्ष के नीचे बैठा रहता था। दोपहर को सारा उसके लिए मंगलश्शेरी से खाना ले आती थी।

कुञ्जुवरीत और सारा दोनो एक-एक चिट मे शामिल हुए। पहले चिट का इनाम सारा को मिला। कुल तीस रुपये थे। उसने कुञ्जुवरीत से कहा, 'यह उधर दे आओ।'

'अभी नही री। सौ हो जाने पर देना ठीक रहेगा।' सारा इससे सहमत हो गई। कुञ्जुवरीत को भी चिट मिली। वह पचास रुपये की थी। सारा के तीस रुपये कुञ्जुवरीत के बक्स मे ही रखे गए थे। उसने पचास रुपये भी उसीमे रख दिए। पुरानी फटी बोरी के ऊपर फैले भूसे मे कहीं-कहीं उन्होने कई चिह्न लगाये थे ताकि कोई भूसे पर हाथ रखे तो शीघ्र ही पता चल जाय। वर्की यद्यपि पहरा देता था तथापि सारा बार-बार भूसे के चिह्नों को देखने के लिए मंगलश्शेरी से दौड-दौड आती थी।

कंद तैयार हो गए। कुञ्जुवरीत थोडे-थोडे खोदकर सिर पर रखकर रोज नगर के बाजार मे बेच आता। उस बिक्री से उसे सैंतालीस रुपये मिले। अब उनके पास कुल एक सौ सत्ताईस रुपये हो गए। कुञ्जुवरीत सब रुपये एक कागज मे लपेटकर मंगलश्शेरी ले गया। आँगन मे खड़े-खड़े हाथ आगे बढ़ाकर उसने वह पुड़िया गृहस्वामी के सामने

रख दी। गृह-स्वामी ने पूछा, 'कुञ्ञवरीत यह क्या है ?'

'कुछ पैसा है, हुजूर ।'

गृह-स्वामी का चेहरा प्रसन्न हो गया। उन्होंने पूछा, 'कितना है ?'

'कोई एक सौ सत्ताईस होंगे—ऐसा अंदाज़ है।'

गृह-स्वामी ने अंदर की ओर मुख करके आज्ञा दी, दाक्षायणी, यह लेकर रख दो।'

३. मंगलश्शेरी का कुञ्जन

लकड़ी का एक बहुत पुराना पुल है वह। कई वर्षों से मुक्कोणक्करा और पश्चिमी भाग के बीच के सामूहिक एवं व्यावसायिक संबंधों की शृंखला बनाये रखने वाला वही पुल है।

पश्चिमी भाग से पुल पर होकर पूरब के किनारे पर उतरने की जगह पर है उस प्रदेश का एक-मात्र बाजार, जिसका नाम है मुक्को-णक्करा बाजार। उत्पन्न साधनों की बिक्री और आवश्यक सभी साधनों की खरीददारी यही होती है। शाम के समय यहाँ बहुत भीड-भाड होती है। लोग रस्सी, नारियल, काली मिर्च, सुपारी, अण्डे आदि कई चीज़ें यहाँ लाकर बेचते है। अपनी चीज़ों को बेचकर मिले पैसें से अपनी-अपनी जरूरी चीजें जैसे नमक, मिर्च, मछली, कंद आदि खरीद ले जाते है। दोपहर के बाद लगने वाले इस बाज़ार में संध्या तक भीड-भाड रहती थी। बाज़ार मे क्रय-विक्रय करने वालो मे अधिक लोग पश्चिमी भाग के है, इसलिए उस बाज़ार को कायम रखने का उपकरण वह पुल ही है, इसमे कोई संदेह नही।

पूर्वी भाग के खेतों एवं घरों मे काम करने वाले मजदूर ज्यादातर पश्चिमी किनारे के निवासी थे। पश्चिमी भाग के खेतों एव घरों मे आधे से अधिक के स्वामी पूर्वी भाग के नायर घरानों के होने के नाते रोज उन्हे पुल को पारकर पश्चिमी भाग मे पहुँचना आवश्यक हो गया। बीज, बैल, हल आदि खेती के औजार पश्चिमी भाग से पूर्वी भाग की ओर एव पूर्वी भाग से पश्चिमी भाग की ओर .. जाने पडते हैं। वैसे दोनों भागों की खेती-बाड़ी के सम्बध को कायम रखने वाला भी लकडी का वह पुल ही है।

पश्चिमी भाग के ईषवाओं में एक प्रधान अंश नारियल के पेड़ों से

शराब निकालने वाले और शराब बेचने वाले हैं। पूर्वी भाग के नायर लोगों में अधिकतर पियक्कड़ हैं। शराब की मुख्य दुकानें पश्चिम में होने के कारण संध्या होते-होते पुल पर से पश्चिमी भाग की ओर मद्यपानियों का प्रवाह बढ़ता दिखाई देता है।

बाजार ही नहीं, न्यायालय, डाकघर, मलयालम पाठशाला आदि सब पूर्वी भाग में हैं। छह मील दूर नगर की ओर जाने वाला रास्ता भी पूर्वी भाग से होकर जाता है। इसलिए नगर के मुंसिफ कोर्ट एव मजिस्ट्रेट कोर्ट तथा कचहरी जाने वालों को पुल पार करके पूर्वी भाग से जाना पड़ता है। नाव द्वारा नगर की ओर जाने पर समय और पैसा अधिक लगने से कोई ऐसा नहीं करता है।

मुक्कोणक्करा प्राचीन समय से ही नायरों का केंद्र है। पश्चिमी भाग ईषवाओं (अछूतों) का केन्द्र है। मुक्कोणक्करा में बहुत-से ईषवा, बहुत से पुलया, दो-तीन ईसाई कुटुंब और उतने ही मुसलमान कुटुंब भी हैं। पश्चिमी भाग में ईषवाओं के अलावा ईसाई, मुसलमान, पुलया आदि अन्य जातियाँ होने पर भी एक भी नायर घराना नहीं है।

किसी-किसी रात में पुल पर मार-पीट भी हुआ करती है। ईषवाओं की मद्यशाला से शराब पीकर और मछली खाकर लौटने वाले 'नायर' पुल पर चढ़ते समय छुआछूत याद करते थे। अँधेरे में सामने आने वाले पुलयों और ईषवाओं को छुआछूत के नाम पर नायर लोग मारा भी करते थे। परन्तु मार खाने वाले मारने वालों को न तो पलटकर मारा करते थे और न किसी से इसकी शिकायत ही करते थे। यदि शिकायत करें भी तो सुनने के लिए कोई तैयार ही नहीं होता था। कुछ लोग कभी-कभी उलटकर मार देते थे, जिसके लिए उन्हें भयंकर दण्ड भोगना पड़ता था। इन उलटकर मारने वालों में एक रामनकुट्टी था। जब उसे जीतना असंभव हो गया तब नायर लोगों ने उसे एक बड़े क्रिमिनल केस में फँसाकर दीर्घकाल के लिए कारावास भिजवा दिया।

× × × ×

मुक्कोणक्करा के नायर लोगों के अपने-अपने घर थे, किंतु उनमें अधिकतर गरीब ही थे। मन्दिर के सामने बैठने के स्थानों में, बरगद के पेड़ के नीचे, पुलिया के कोने में और ऐसे अन्य स्थानों में बेकार नायर युवकों का ताश खेलते रहना एक साधारण दृश्य था। कुछ लोग मलयालम पढ़कर, सातवें दर्जे की सरकारी परीक्षा पास करके, प्राथमिक स्कूल के अध्यापक बन गए थे। कुछ लोग शहर के व्यापारियों के मुनीम बने थे। अधिकतर लोग वकीलों के मुंशी और लेखपाल थे।

रोज सवेरे वकीलों के मुनीमों और लेखपालों का एक जुलूस-सा निकलता है मुक्कोणक्करा से शहर की ओर। स्नान करके भगवती के मंदिर में दर्शन कर, माथे पर भस्म, चंदन तथा सिंदूर लगाकर, कान पर एक कलम रखकर, पान का डिब्बा फेंटे में बाँधकर, फाइलों का बण्डल बगल में दबाये साथ जाने वाले मुवक्किलों से कानूनी बातें करते हुए चलने वाला वकीलों का वह जुलूस मुक्कोणक्करा की दैनिक घटना है। ये वकील, मुनीम और लेखपाल शाम को शहर से अफ़ीम लेकर ही लौटते हैं। पश्चिमी भाग की मद्यशालाओं से यथाशक्ति शराब पीकर वे मंदिर के तालाब में नहाते हैं। घर पहुँचकर रात का खाना खा ने के बाद वे सब इधर-उधर इकट्ठे होकर अफ़ीम पीते हैं। सीमा-विवाद, भूमि हड़पना, तलाक, उत्सव, शबरीमला और पषनी-जैसे पुण्य स्थानों की यात्रा आदि ही उनके मुख्य मनोरंजक विषय थे।

किंतु पश्चिमी भाग में उन दिनों धीरे-धीरे कुछ परिवर्तन हो रहे थे। श्री नारायण गुरु के 'एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर' वाले सिद्धान्त का प्रचार ही इन परिवर्तनों में मुख्य था। इसके साथ ही ईषवाओं में स्वातंत्र्य-तृष्णा और शिक्षा की जागृति आ गई। ईषवाओं के बच्चे पूर्वी भाग की मलयालम पाठशाला में पढ़ने लगे। पश्चिमी भाग में 'श्री नारायण भजन मठ' स्थापित हुआ। इस मठ में रोज सभाएँ होने लगीं। इतना ही नहीं, हटकर ऊँची जाति वालों को निकलने का रास्ता न देने की प्रतिज्ञा भी कुछ ईषवा युवकों ने की।

पश्चिमी भाग में हुए परिवर्तनों की प्रतिक्रिया पूर्वी भाग मे भी हुई। भगवती मंदिर के सामने मे, बरगद के कोने से, पुलिया के मोड़ से, पाठ-शाला से, न्यायालय मे ललकारे उठी—

'अछूतों का घमंड बढ रहा है। उनके घमंड को चूर न किया गया तो मुसीबत हो जायगी।'

बुजुर्ग कहते आए है 'अदरक का सिर और अछूतों का सिर कुचल देना चाहिए। कुचलने मे ही फायदा है।'

'अछूतों का एक नेता है। इन सब झगडो की जड़ वही है।'

'अछूतों के बच्चे पाठशाला मे नायर बच्चो के साथ अब पढने लगे है। अब वे कहेगे—हमे भी मदिर के अंदर घुसने दो!'

इस प्रकार जितने मुख थे, उतनी ही बातें हुई। इन ललकारों को पच्चाषी वालो ने नेतृत्व दिया, किन्तु पूर्वी भाग की ललकारो की प्रति-ध्वनि पश्चिमी भाग मे गूंजने लगी।

'तंपुरानों को रास्ता न दे, रे! रास्ता देने वाला कुत्ता है, कुत्ता!'

'कौन तंपुरान रे? जो इन बदमाश नायरो को तंपुरान पुकारता है। वह गधा है, गधा!'

'एक नायर मर जाय, तो रास्ता देने के लिए एक आदमी कम होगा। उन बदमाशों को मार भगाना चाहिए। उन्हें टुकड़े-टुकड़े करना है, तभी हम बच सकेंगे।'

लगभग उन्ही दिनों मे दो प्रसिद्ध पहलवान अखाड़ मे उतरे—कर्ता और कुट्टन। जब कर्ता पहलवान को नायर जनता से समर्थन मिला तब कुट्टन पहलवान को ईषवाओं ने आगे बढाया। कर्ता पुल पर खड़े होकर गरजता—

'इनका सिर मैं कुचल दूंगा—कुचलवाऊँगा।'

कुट्टन भी पुल पर खड़ा होकर अट्टहास करता हुआ कहता—

'इन सब बदमाशों को मारकर टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगा।'

ये दोनों जनता के ऊपर तरह-तरह से आक्रमण किया करते थे, परन्तु एक-दूसरे से सीधे लड़ने से बचते रहे।

× × × ×

इन्ही दिनों कुञ्ञन मंगलश्शेरी मे आया था। पश्चिमी भाग के एक मज़दूर का बेटा था कुञ्ञन। उसका पिता एक बहुत ऊँचे पेड़ से फिसलकर गिरा, और उसी समय मर गया। तपेदिक की बीमारी से उसकी माँ भी मर गई। उसका एक बड़ा भाई था, वह भी गाँव छोड़कर कहीं भाग गया। आखिर निराधार कुञ्ञन ने अज्ञात लक्ष्य की ओर यात्रा शुरू की। उस समय उसकी अवस्था केवल चौदह साल की थी।

पुल पार करके वह बाज़ार में पहुँचा। चाय की दुकान के सामने जब बहुत देर तक खड़ा रहा तो दुकान वाले ने एक सूखा दोशा दे दिया। दोशा खाकर और पानी पीकर वह फिर चल पड़ा। मगलश्शेरी घर के सामने पहुँचा तो घर के पिछले हिस्से से एक कोलाहल सुनाई पड़ा। वह अन्दर चला गया। दक्षिणी आँगन पार करके वह पश्चिमी आँगन में जा पहुँचा।

कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा और रसोई वाली दोनों मिलकर खूंटे से रस्सी तोड़कर भाग जाने वाली एक गाय को पकड़ने की कोशिश कर रही थी। अहाते के पेड़-पौधो को कुचलते हुए गाय भाग रही थी। कुञ्ञन ने गाय का पीछा किया और बिना किसी भय के गाय के सींगों को बलपूर्वक पकड़ लिया और 'रस्सी-रस्सी' चिल्लाया। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने रस्सी फेंक दी। कुञ्ञन ने गाय खूंटे से बाँध दी।

कृतज्ञता और वात्सल्यपूर्ण नेत्रों से कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा उसकी ओर देखती रहीं। उन्होंने पूछा : 'तू कहाँ का रहने वाला है, रे ?'

'पश्चिमी भाग का हूँ।'

'तू अछूत है न ?'

'जी हाँ!'

'इधर चढ़ आने को किसने कहा ?'

'किसी ने नहीं।'

'इधर के आँगन में अछूत लोग नहीं आ सकते—यह तुमको नहीं मालूम ?'

'नहीं मालूम।'

कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा मुस्कराईं। उसकी निष्कलंकता ने उनके हृदय को आकृष्ट कर लिया। उन्होंने पूछा :

'तू कहाँ जा रहा है ?'

'कहीं भी।'

'तेरे माँ-बाप नहीं है ?'

'नही। मर गए।'

'तो तू इधर रह सकता है ?'

'रहूँगा।'

इस प्रकार कुञ्जन मंगलश्शेरी में रहने लगा। कुञ्जन के द्वारा गाय को पकड़कर बाँधने की कहानी कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा ने अपने पति वकील परमेश्वरन पिल्लै से कही। कुञ्जन उनको भी पसन्द आया। जानवरों को चराने, घर की खेती-बाड़ी की निगरानी करने आदि काम कुञ्जन को सौंप दिए गए।

उस समय कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा के बड़े बेटे गोपाल पिल्लै की आयु पन्द्रह साल की थी, भास्करन पिल्लै की तेरह साल की और भागीरथी अम्मा की ग्यारह साल की। कुञ्जन उन तीनों का साथी बन गया। वे तीनों उससे कुछ भी नहीं छिपाते थे। कुञ्जन कभी बेकार नही बैठ सकता था। सवेरे से ही जानवरों को दाना-पानी देने का और खेती-बाडी की देख-भाल का काम हो जाने के बाद, घर में कोई भी काम दिखाई पड़ने पर, किसी की आज्ञा या निर्देश की प्रतीक्षा किये बिना ही वह काम करने लगता। घर की ज़मीन में कहीं कोई नारियल का पत्ता गिरा होता तो तुरन्त उठा लाता। लकड़ी चीरी नहीं गई होती तो चीरकर डाल देता। धान सुखाने डाला गया हो तो वह उस पर

कौओं को बैठने नहीं देता। लौकी, तुरई, सेम आदि की बेलों को मचान बनाकर चढ़ा देता। गोबर, राख, कूड़ा-करकट आदि घूरे में डाल देता। इन सबके बीच भागीरथी के लिए फूल भी चुनकर ले आता, भास्करन के लिए गेंद बना देता। रसोईघर में जीरा या राई या अन्य कोई भी चीज खत्म हो गई हो तो तुरन्त दौड़कर बाजार में खरीद लाता, किन्तु अपने काम के बीच में किसी के द्वारा हाथ डालना या कोई दोष निकालना उसे पसन्द नहीं था। उसके कामों में दोष ढूंढने या उसकी सहायता करने की आवश्यकता ही नहीं होती थी। चाहे कोई भी काम हो, सफाई से और पूरा-पूरा करने की उसकी आदत थी।

किसी के पुकारने पर, यहाँ तक कि जबरदस्ती करने पर भी वह हाथ के काम को पूरा किये बिना खाना खाने तक के लिए नहीं उठता था। खाना खाने बैठता तो रसोई वाली परोसते-परोसते थक जाती। रात को वह पिछली कोठरी में सोता था। सबके लेटने के बाद ही वह लेटता और सबके उठने के पहले उठ जाता था।

मंगलश्शेरी के खेतो-खलिहानों में काम करने के लिए रोज बीस-तीस मजदूर आते थे। जहाँ काम होता हो उन खेतों में कुञ्ञन बराबर जाता था। काम में कोई गलती या कमी दिखाई पड़ने पर आकर कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा से कहता। उन कमियों को ठीक करने के उपाय भी बता देता। कुञ्ञन के निर्देशों को कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा पतिदेव के द्वारा प्रयोग में लाती। इस प्रकार धीरे-धीरे कुञ्ञन मजदूरों के लिए, विशेषतः उनके नेता कण्डम्पुलयन के लिए, एक विभीषिका बन गया।

तीन-चार वर्ष बीत गए। कुञ्ञन के बिना मंगलश्शेरी का कोई भी काम नहीं चलेगा, ऐसी स्थिति आ गई। कुञ्ञन के निर्देशों की आज्ञा-जैसी गणना होने लगी। खेती-बाड़ी का काम सीधे कुञ्ञन की देख-रख में होने लगा। कण्डम्पुलयन कुञ्ञन की आज्ञाएँ शिरोधार्य करने को मजबूर हो गया।

कुञ्ञन मंगलश्शेरी का कौन है? गाँव वाले, खासकर नायर लोग,

प्रश्न करने लगे। केवल नौकर है क्या ? नहीं। व्यवस्थापक है ? नहीं। आश्रित है क्या ? नहीं। वह सब-कुछ है। उससे अधिक भी कुछ है। कुञ्ञन ईषवा है, फिर भी मंगलश्शेरी के आँगन, बरामदे, बखारी सब जगह उसका प्रवेश है। अन्दर के कमरों मे नहीं जाता, इसका क्या ठीक। वह नायरों की कानाफूसी का विषय बन गया। उन्ही दिनों मंगलश्शेरी की रसोई वाली को वहाँ से निकाल दिया गया। उसका भी कारण था।

एक दिन कुञ्ञन कहीं से लौटकर आया। उसे बाहर से रसोईघर में आग भभकती दिखाई पड़ी। उसने रसोईघर मे झाँककर देखा। तेज़ी से धधकती आग छत तक पहुँचने ही वाली थी। कुञ्ञन रसोईघर में घुस गया और जलने वाली सभी लकड़ियों को बाहर फेंककर पानी से आग बुझा दी। तब तक रसोई वाली कहीं से दौड़ी आई। कुञ्ञन को रसोईघर में देखकर वह चौंक पड़ी। अदम्य क्रोध मे उसने पूछा : 'राज करते-करते रसोईघर मे भी घुसकर राज करने लगा तू ?'

कुञ्ञन ने उसका उत्तर नहीं दिया। घूरकर देखता हुआ वह चला गया। मन्दिर मे दर्शन के लिए गई कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा और बच्चों के लौट आने पर रसोई वाली ने कहा :

'रसोईघर को अब तीर्थ-जल छिड़ककर शुद्ध करना होगा।'

'रसोईघर में तीर्थ-जल क्यों छिड़कना है ?' कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने पूछा।

'क्योंकि कुञ्ञन रसोईघर में घुस गया था।'

'वह रसोईघर में क्यों घुसा था ?' कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने रसोई के दरवाज़े तक जाकर अंदर की ओर झाँका। उन्होने पूछा : 'लकड़ी खींचकर किसने पानी से आग बुझाई ?'

'इसीलिए तो कह रही हूँ कि कुञ्ञन रसोईघर में घुस गया था।'

पश्चिमी आँगन में खड़ा कुञ्ञन उत्तरी आँगन में आया। उसने कहा :

'अगर मैं उस समय तक इधर न आ गया होता तो यह सारा-का-

सारा घर जलकर राख हो गया होता। चूल्हे मे लकडी भरकर वह बाहर गली मे प्रेम-लीला करती है।'

'तूने देखा है मुझे प्रेम-लीला करते ?'

'सोचती है, पीछे की बाड के पास खडे-खडे, तुरड के पाच्चु पिल्लै मे हँसी-मजाक करते तुम्हे मैंने नही देखा है ?'

'उसके लिए तुम्हे रसोईघर मे घुसने की क्या जरूरत थी ? तुम अछूत हो न ?'

'मै रसोईघर मे क्यो घुसा, मै किस जाति का हूँ आदि बाते पूछने का अधिकार रखने वाले पूछेगे, तब मै जवाब दूंगा।'

तो फिर अछूत जिस रसोई मे घुसता है, उस घर की रसोई बनाने का काम मुझसे नही होगा।'

'तो निकल जा, निकल जा री बाहर'—कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा गरज उठी। वे तुरन्त तीन रुपये लेकर आई और नौकरानी के हाथ मे देकर बोली

'अभी चली जा। घर को राख बनाने आई है तू। बदमाशो के साथ हँसी-मजाक कर-करके घर के लोगो का बदनाम कराने वाली है तू। निकल जा बाहर, अभी निकल जा।'

वे भी मगलश्शेरी वाले अछूतो को ही प्यार करते है। नायरो से तो उनकी दुश्मनी है।' ऐसा भुनभुनाती हुई वह रसोई वाली वहाँ से चली गई।

'पारू' नाम की उस रसोई वाली ने सभी नायर घरों मे जा-जाकर कहा 'मगलश्शेरी के रसोईघर मे काम करने वाला कुञ्ञन है, देख भाल करने वाला भी कुञ्ञन है। शायद वे अपनी बेटी का विवाह भी उससे कर दे।'

नायर लोगो का क्रोध बढ गया। केवल इससे नही कि अछूत कुञ्ञन को रसोईघर मे घुसने दिया। इससे भी नही कि वह वहाँ का कार्य-सचालक बन गया, नायरो में से किसी को मंगलश्शेरी के कामों के लिए

नियुक्त न करना ही उनके क्रोध का कारण था। मंगलश्शेरी वालों से आजन्म शत्रुता रखने वाले पच्चाषी के लोग प्रचार करने लगे कि मगलश्शेरी वालो को 'करयोग' सभा से बाहर निकालना है, किन्तु सभी नायर इस राय मे सहमत नही हुए। उनकी राय थी कि कुञ्ञन को मंगलश्शेरी से निकालना ही काफ़ी है। कई नायर कुञ्ञन की पिटाई करने को भी उद्यत हो गए। साथ ही-साथ कुञ्ञन को बाहर निकालने का प्रस्त व लेकर कुछ लोग परमेश्वरन पिल्लै और कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा के पास गये। परमेश्वरन पिल्लै ने निश्चित रूप से कहा :

'कुञ्ञन चाहे अछूत हो, मुसलमान हो, पुलयन हो, वह यहाँ मे बाहर नही निकाला जायगा। उसने कोई गलती नही की है। उसने इस घर की राख होने से रक्षा की, क्या इसीलिए उसे घर से निकालना है?'

कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने दृढ स्वर मे कहा :

'कुञ्ञन यहीं का है। उसको बाहर निकालकर अन्दर घुसने के लिए कोई न सोचे।'

इस प्रकार का प्रस्ताव लेकर आने वाले निराश होकर लौट गए। उसके बाद कुञ्ञन की पिटाई का प्रस्ताव गूंज उठा, जिसे सुनकर परमेश्वरन पिल्लै ने कहा :

'कुञ्ञन को मारने वाले अपने घर मे विदा लेकर ही आयें।'

कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने कहा :

'मंगलश्शेरी वालो को मारने की हिम्मत रखने वाले इस गाँव मे है क्या?'

कुञ्ञन ने कहा :

'कोई कुछ, भी कहे मालिक और मालकिन आप परवाह न कीजिए। कुञ्ञन को कोई छू भी नही सकता। मारने को हाथ उठाने के पहले मारने वाले का सिर कही दूर जाकर गिर चुका होगा।'

इसके बाद से कुञ्ञन हमेशा एक चाकू अपने फेंटे मे दबाकर ही बाहर जाता था।

कुञ्ञन को किसी ने मारा नहीं।

× × × ×

कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने मरने के पहले अपने बच्चों को दो उपदेश दिए थे :

'घर का मान मत खोना। कुञ्ञन को हाथ से न जाने देना।'

गोपाल पिल्लै, भास्करन पिल्लै, भागीरथी अम्मा और उनके पति नारायण पिल्लै ने कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा के इन दो उपदेशों का अक्षरशः पालन किया। कुञ्ञन का विवाह भी वे करा देना चाहते थे, किन्तु कुञ्ञन की उसमें कोई रुचि नहीं थी। वह कहता था :

'मुझे शादी-वादी नहीं चाहिए। शादी करना एक मुसीबत मोल लेना है। उसका खर्चा चलाना, उसके लिए फिर घर चाहिए, बच्चों का पालन-पोषण करना, सब झंझट है। मुझे न घर वाली चाहिए, न यह सब झमेला।'

उन्हीं दिनों कुञ्ञन के लिए पश्चिमी भाग से विवाह का एक प्रस्ताव आया। पप्पू नाम के एक व्यापारी की लड़की थी कल्याणी। कल्याणी का बड़ा भाई कोच्चु कुट्टन श्री नारायण गुरु का भक्त और छुआछूत का विरोधी प्रचारक भी था। लड़की वालों ने जब कुञ्ञन के सामने प्रस्ताव रखा तो कुञ्ञन ने कहा :

'यह सब मुझसे क्यों कह रहे हो? जो कुछ कहना है मालिक या मालकिन से कहो।'

लड़की वाले मंगलश्शेरी आये और कहा कि वे कुञ्ञन के लिए शादी का प्रस्ताव लेकर आये हैं। उस समय भागीरथी अम्मा का पहला बच्चा हो चुका था और दूसरा पेट में था। पति के साथ वे भी बरामदे तक कुञ्ञन के विवाह की चर्चा में सम्मिलित होने के लिए आईं। भागीरथी अम्मा ने उस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। जब लड़की वाले चले गए, तब उन्होंने कुञ्ञन को बुलाकर कहा :

'तुम्हारे लिए विवाह का प्रस्ताव आया है।'

'मालकिन, मैंने तो कहा था कि मुझे शादी-वादी नहीं करनी है। वे पहले मेरे पास आये थे। आप लोग इन्कार करेंगे—यह सोचकर ही मैंने उन्हें आपके पास भेजा था। आप लोगों ने उनको क्या उत्तर दिया ?'

'विवाह का वायदा कर लिया।'

'ऐसा कह दिया ? ऐसा कह दिया तो···'

'वायदा कर चुकी हूँ।'

'वायदा कर चुकी हैं तो फिर पूरा किए बिना कैसे काम चलेगा ?'

'कुञ्ञन, तुमने दुलहन देखी है ?'

'दुलहन को मैं क्यों देखूँ ? शादी कर लेना काफ़ी है न ?'

विवाह सम्पन्न हो गया। विवाह के पहले दिन भागीरथी अम्मा ने कुञ्ञन को एक लिखित प्रमाण-पत्र देकर कहा :

'उत्तर की ज़मीन तुम्हारे नाम कर दी है। विवाह के बाद बहू को लेकर तुम वहाँ रहना।'

'वह चाहे तो उधर रहे। कुञ्ञन तो इसी घर में रहेगा।'

× × × ×

उत्तर की ज़मीन दो एकड़ से भी अधिक विस्तृत नारियल के पेड़ों का एक बगीचा है। उसमें एक छोटा-सा घर है। बहुत पहले मंगलश्शेरी के मालिक प्रसिद्ध चिकित्सक कुट्टन पिल्लै के समय में दवा आदि तैयार करने के लिए यह घर काम में आता था। छोटा होने पर भी लकड़ी और पत्थर से बना वह घर मज़बूत था। आजकल उसे नारियल रखने का गोदाम बना रखा था।

उस छोटे-से घर को साफ़ करके कुञ्ञन और कल्याणी रहने लगे, किन्तु कुञ्ञन प्रायः मंगलश्शेरी में ही रहता था। वहीं खाना खाता था। सारा काम निबटाकर घर तक पहुँचने पर आधी रात हो जाती थी, इसलिए कल्याणी भी मंगलश्शेरी में ही जाकर बैठती थी। वह भी वहीं खाना खाती थी।

कल्याणी को आँगन और बरोठे तक प्रवेश की अनुमति थी। कभी-

कभी वह बरामदे तक भी जा सकती थी, किन्तु ऐसी एक भी जगह नही थी, जहाँ कुञ्जन का प्रवेश निषिद्ध हो। कुञ्जन मगलश्शेरी का है। यद्यपि कल्याणी कुञ्जन की पत्नी है, वह ईषवा स्त्री है। इस अन्तर से कल्याणी कुण्ठित रहा करती। उसमे भी अधिक दुख उसे कुञ्जन के उपेक्षित भाव से होता।

विवाह और कौटुम्बिक जीवन कुञ्जन के लिए कोई समस्या नही बनी। मालिक और मालकिन ने तय किया इसलिए उसने विवाह किया। पत्नी को ले आया और मालिक द्वारा दान दिये गए घर मे उसे बसाया। स्त्री को जो चाहिए, सब-कुछ मालकिन देती ही है। आधी रात के बाद ही सही, वह पत्नी के साथ सोता भी है। अब और क्या चाहिए ?

लेकिन भागीरथी अम्मा जानती थी कि इस तरह चलता रहा तो यह विवाह-बंधन स्थायी नही हो सकेगा, इसलिए उन्होने कुञ्जन से कहा कि आगे से उसको मगलश्शेरी से खाना नही दिया जायगा।

'खाना पकाने-परोसने के लिए ही तुमने शादी की है न ?'

'तो क्या मालकिन, मैंने उससे कहा कि वह मेरे लिए खाना-वाना बनाकर न दे ?'

'तो आगे से तुम्हारा खाना-पीना सब उस घर मे ही होगा।'

उस दिन से चावल, दाल आदि सब साधन मगलश्शेरी से उस घर मे जाने लगा। कल्याणी कुञ्जन को खाना बनाकर खिलाने भी लगी।

जब भागीरथी अम्मा की तीसरी लडकी हुई तभी कल्याणी का पहला बच्चा हुआ। कल्याणी ने कुल तीन बच्चो को जन्म दिया—दो बेटो और एक बेटी को। बडा बेटा वासु, मंझला दिवाकरन और छोटी लडकी यशोधरा।

४. पच्चाषी ख़ानदान

पच्चाषी खानदान के लोग बहुत प्रभावशाली थे। मुक्कोणक्करा में ही नहीं, आस-पास की जगहों में भी उनकी प्रभुता मानी जाती थी। एक जमाने में वे 'लूट-मार' का दमन कर शासन करने वाले थे। उन दिनों पच्चाषी पुरखों की आज्ञाएँ ही कानून थीं। उस जमाने में मुक्कोणक्करा और आस-पास की जगहों के अनेक धर्मों के लोग पच्चाषी के दरवाजे पर झगड़ों और वाद-विवादों के समाधान के लिए खड़े रहते थे।

उन दिनों वे राजाओं के सेनापति और अखाड़े के उस्ताद भी थे। युद्धों में, कहा जाता है, पच्चाषी सेनापतियों ने बहुत-से साहस और चमत्कारी के काम किए हैं। उन दिनों उन पच्चाषी सेनापतियों को पुरस्कार में प्राप्त तलवार और ढाल पच्चाषी अखाड़े में अब भी सुरक्षित रखे हैं। कहा जाता है कि उन दिनों राजनीतिक छल-छद्मों से बहुत-सी खेती-बाड़ी और ज़मीन उन्होंने भूमि-कर के बिना हथिया ली थी।

वह समय तो सदा के लिए बीत गया। उनका प्रताप और प्रभाव नष्ट हो गया। प्रतिष्ठा के साथ ही उनकी कुबेरता भी मन्द पड़ गई। युद्ध-कौशल गुण्डागर्दी में परिणत हो गया। प्रभुता कायम रखने के लिए गुण्डागर्दी के सिवाय अन्य कोई मार्ग न रहा, ऐसी स्थिति आ गई। पूरे देश में सभ्यता और शिक्षा की अभिवृद्धि हुई, पर इस परिवर्तन ने पच्चाषी परिवार को अछूता छोड़ दिया। तो भी मुक्कोणक्करा के नायर लोग पच्चाषी वालों को अपने गाँव का मुखिया मानते रहे।

उन दिनों के ग्रामाधिकारी के पास कोई विशेष शक्ति नहीं थी, तब भी उनके कुछ हकों को लोग मानते थे। गाँव की सीमा के अन्दर के नायर घरों में कोई तीज-त्योहार या मन्दिरों में कोई उत्सव होता तो वह ग्रामाधिकारी के नेतृत्व में होना चाहिए, यही प्रथा थी। उस प्रथा

का उल्लघन करने वालो को सामाजिक बहिष्कार भोगना पडता था। दावत, उत्सव आदि कब और कैसे सम्पन्न किया जाना चाहिए इत्यादि बातें औपचारिक ढग से निश्चय करने के अधिकार भी उस ग्रामाधिकारी के पास थे। विवाह आदि विशेष कार्यों मे ग्रामाधिकारी के जाने पर सफेद पट और कम्बल बिछाकर उनका स्वागत करने की प्रणाली भी प्रचलित थी। मुक्कोणक्करा मे पच्चाषी वालो को ऐसा अधिकार था, तब भी उससे उन्हे कोई आर्थिक लाभ नही होता था।

जिस समय की यह घटना है उस समय पच्चाषी घराने के मालिक माधव कुरुप थे। उनके पहले के मालिक का नाम पप्पु कुरुप था। उनके भी पहले कुञ्ञु कुरुप मालिक थे। गुडागर्दी, झगडा और अनैतिक सम्बन्धो के लिए कुञ्ञु कुरुप और पप्पु कुरुप कुप्रसिद्ध थे। यद्यपि कुञ्ञु कुरुप की अनेक जाति की कई पत्नियाँ थी तथापि उन्होने स्वजाति की सोलह स्त्रियो से विवाह किया था।

'मरुमक्कत्तायम्'[१] की रीति का विवाह केवल एक प्रकार का लैंगिक सम्बन्ध ही था। पति-पत्नी-सम्बन्ध या पिता-पुत्र-सम्बन्ध ऐसा कोई नाता उस प्रथा मे नही था। पत्नी को 'अच्ची' और पति को 'नायर' कहा जाता था। अच्ची तथा उसके गर्भ से पैदा हुए बच्चो का खर्च देने का भार

नपूतिरियो को छोडकर शेष करल की हिन्दू जाति के लोगो मे कौटुबिक सपत्ति और विरासत के क्रम का एक खास नियम प्रचलित था जो 'मरुमक्कत्तायम्' कहलाता था। 'मरुमक्कत्तायम्' के अनुसार कौटुबिक सपत्ति पर पूर्ण स्वामित्व कुटुम्ब की स्त्रियो का ही माना जाता था। स्त्री के नाम पर खानदान के सबसे बडे पुरुष जो उसीके भाई या मामा लगते थे, घर की सपत्ति की देख भाल करने का काम करते थे। उनको खानदान के लोग 'कारणवर' कहते थे। कारणवर के अधीन रहने वालो को 'अनतिरवर' या 'मरुक्कल' कहते थे। सम्पत्ति का अधिकार पिता से पुत्र को न मिलकर बहन के बच्चो को मिलने की इस रीति को 'मरुमक्कत्तायम्' कहा जाता है।

'नायर' पर नही था। अच्ची और बच्चे अपने ही घर मे रहे तथा उनका खर्च भी वही स चले, यही नियम था। नायर अपने कुटुब मे ही रहते थे। अपन घर म रात के खाने के बाद मशाल लेकर अच्ची के घर जाने की प्रथा उन दिनों सर्वसाधारण थी।

अच्ची और सन्तानो का नन-वस्त्र देना, ओणम् और तिरुवातिरा पर्व के समय पारितोषिक रूप मे कुछ उपहार देना, विषु के दिन कुछ देना बस इतना ही अच्ची और बच्चो के प्रति नायर का कर्त्तव्य था। अर्च्ची के प्रसव के दिनो मे भी 'नायर' की एक जिम्मेदारी है— तेल और धान दना। नायरो के घर वाले ही अधिकाश उस कर्त्तव्य को निपटा देते थे।

घर का मालिक यदि किसी स्त्री से विवाह करता तो वह स्त्री ससुराल मे लाई जाती थी। परिवार के सभी सदस्यो की आवश्यकताए, शिकव-शिकायते मालिक तक पहुंचाने का कार्य उस मामी के माध्यम से हुआ करता था। इस माध्यम का दुरुपयोग करने वाली ही उस जमाने मे अधिकतर मालकिने होती थी। उस समय के मालिक के भाजे इस तरह गाया करते थ

'मालकिन को
सिर पर रखकर
मारो अच्छे पत्थर से।'

मालिक के मर जाने पर मृत शरीर को जलाने के पूर्व ही मालकिन और बच्चो को घर स निकल जाना पड़ता था यह भी उस जमाने का कठोर नियम था।

कुञ्जु कुरुप ने सोलह विवाह किये थे और सोलहो स्त्रियो को अपने कुटुब मे नायर रखा था। किन्तु नये विवाह का प्रस्ताव आते ही पहली स्त्री को उसके घर भेज दिया जाता था। पच्चारो मालिक बड़े भी थे और ग्राम के मुखिया भी। अत. नये-नये विवाह करने मे उनको कोई मुश्किल नही होती थी, किन्तु मुतुवन्नु कुट्टन पिल्लै की

भांजी माधवी से विवाह का जो प्रयत्न कुञ्ञु कुरुप ने किया था, उसमे वे विफल हो गए थे।

भद्रकोणकरा के दक्षिणी भाग मे मुतुवत्तु नाम का घराना एक अच्छा सम्पन्न परिवार था। उस कुटुम्ब के मालिक कुट्टन पिल्लै थे। वे हठीले स्वभाव के थे। उनके दो छोटे भाइयो मे एक सरकारी अफसर और दूसरा पुलिस अफसर था। इसलिए सरकार के ऊपर कुट्टन पिल्लै का कुछ हाथ था। कुञ्ञु कुरुप का प्रभुत्व और गुण्डा-गर्दी दक्षिणी भाग मे नही चल पाती थी अत कुञ्ञु कुरुप और कुट्टन पिल्लै के बीच कोई संघर्ष नही हुआ था। उसी साल मे कुञ्ञु कुरुप के एक दूत ने अचानक आकर कुट्टन पिल्लै से कहा कि कुञ्ञु कुरुप ने माधवी से विवाह करने का निश्चय किया है। 'निश्चय किया है' यह सुनते ही कुट्टन पिल्लै का अभिमान झकृत हो उठा। वह क्रोध से गरज उठा :

'मेरी भांजी का विवाह निश्चित करने का अधिकार पच्चाषी कुरुप को है क्या?'

'कुरुप जी के कहने से ही मेरा आना हुआ'—इस प्रकार दूत ने विनम्रता से अपने को बचा लिया।

'तो तुम कुञ्ञु कुरुप से कहना कि उसकी बहन से मैंने विवाह करने का निश्चय किया है।'

कुट्टन पिल्लै का यह उत्तर सुनकर कुञ्ञु कुरुप ने एक प्रतिज्ञा की :

'मुतुवत्तु घराने की जगह तालाब बनाकर ही पच्चाषी कुरुप दम लेगा।'

कुञ्ञु कुरुप की प्रतिज्ञा सुनकर कुट्टन पिल्लै ने भी प्रतिज्ञा की :

'मुतुवत्तु घराने की जगह जब तालाब बनेगा, तब उस तालाब का पानी पच्चाषी के कुरुपों का खून होगा।'

कुञ्ञु कुरुप और कुट्टन पिल्लै का हठ बढ़ता गया। बदमाश होने के कारण कुञ्ञु कुरुप के द्वारा माधवी को बलपूर्वक ले जाने के भय से कुट्टन पिल्लै आशंकित था, इसलिए उन्होंने माधवी अम्मा को अपने पिता

के घर पर भेज दिया। कुट्टन पिल्लै से सीधा संघर्ष करने का साहस कुञ्ञु कुरुप में भी नहीं था। कुञ्ञु कुरुप की अपेक्षा कुट्टन पिल्लै में न केवल शारीरिक शक्ति बढ़ी-चढ़ी थी, बल्कि सरकार में भी उसका कुछ हाथ था। अतः कुट्टन पिल्लै को अन्य प्रकार से परेशान करने का प्रयास ही कुञ्ञु कुरुप ने किया। कुट्टन पिल्लै के नौकरों और खेतिहरों को प्रेरणा देकर खेत की चहारदीवारी में अनेक उपद्रव मचाये। सीमा-संबंधी समस्याओं को फिर उठाया। कुट्टन पिल्लै के एक दूर के सम्बन्धी से अधिकार तर्क का कोर्ट में मुकदमा चलवाया। मुतुवत्तु के घर की स्त्रियों को बदनाम करने का प्रयत्न किया। माधवी अम्मा को तमिल प्रदेश के किसी चेट्टियार के हाथों बेच दिया गया है—ऐसी अफवाह भी फैला दी।

कुट्टन पिल्लै के पास कुञ्ञु कुरुप की दाल नहीं गली। जिलाधीश भाई और पुलिस भाई की सहायता सेउ सने किसानों और पट्टीदारों को अपने वश में कर लिया। खेत की सीमाओं का झगड़ा भी खत्म कर दिया। अधिकार के लिए झगड़ा करने वालों ने जीतने का कोई रास्ता न देखकर मुकदमा वापस ले लिया। आखिर कुञ्ञु कुरुप की जिद्द ने पागलपन का रूप धारण कर लिया।

कुम्भ महीने का भरणी-दिवस मुक्कोणक्करा का मुर्गबाज़ी का प्रसिद्ध दिन था। देवी के मन्दिर के सामनेवाले खेत में यह लड़ाई हुआ करती थी। दूर-दूर से प्रसिद्ध मुर्गों को लड़ाई मे भाग लेने के उद्देश्य से ले-लेकर लोग आते थे। इस लड़ाई को देखने के लिए लोग बहुत दूर से आकर इकट्ठे होते थे। देवी-मन्दिर के मेले से अधिक कुम्भ-भरणी के दिन मुर्गों की यह लड़ाई प्रसिद्ध थी।

उस समय की मुर्गों की लड़ाई में कुञ्ञु कुरुप के बाद दूसरा प्रमुख व्यक्ति था वेलायुधत्तंडान। वेलायुधत्तंडान के मुर्गे को अन्य कोई मुर्गा परास्त नहीं कर सकता था, इसीलिए कुञ्ञु कुरुप के मुर्गे को वेलायुध-त्तंडान के मुर्गे से लड़ने के लिए छोड़ा नहीं गया था। जल्दी परास्त होने वाले मुर्गे से कुञ्ञु कुरुप का मुर्गा लड़ता था।

जिस समय कुञ्जु कुरुप और कुट्टन पिल्लै का झगडा चल रहा था, उस समय मुर्गेबाजी का एक उत्सव मनाया गया। मेले के पिछले दिन खेत म खडे होकर वेलायुधत्तडान ने कुञ्ञ् कुरुप को चुनौती दी .

'पच्चार्षा वालो मे अपने मुर्गे को मेरे अयप्पन के सामने छोड दने का धैर्य है क्या ?'

उस चुनौती को स्वीकार न करने पर पच्चाषी लोगो का नेतृत्व और मान-सम्मान मिट्टी मे मिल जायगा। कुञ्जु कुरुप समझ गया कि इसके पीछे कुट्टन पिल्लै की प्रेरणा काम कर रही है, इसलिए वेलायुधत्तडान की चुनौती स्वीकार करने के लिए कुञ्ञ् कुरुप आतुर हो गया।

'अरे ले आ अपने अय्यप्पन को, मै अपना अर्जुन छोडने को तैयार हूँ।'

यह खबर चारो ओर फैल गई। अगले दिन झगडा देखने के लिए ऐसा भीड जमा हुई जैसी उस दिन तक कभी नही हुई थी। तीसरे पहर मुर्गेबाजी शुरू हुई। एक ने एक मुर्गे पर तो दूसरे ने दूसरे मुर्गे पर जीतने की बाजी लगाई। बहुत-से मुर्गे हार गए। बहुत-से लागो का बाजी हारनी पडी। बहुत-से मुर्गे जीत गए। बहुतो को लाभ हुआ।

आखिर अपने मुर्गे को लेकर वेलायुधत्तडान मैदान म आगे बढा :

'देखो, मेरा अय्यप्पन आ रहा है, जिसमे धैर्य हो, वह अपने मुर्गे को छोड दे।'

'आ रहा है रे, मेरा अर्जुन आ रहा है।'

वेलायुधत्तडान का अय्यप्पन और कुञ्ञ् कुरुप का अर्जन दोनो अखाडे मे उतरे। सभी लोग बडी उत्कंठा-भरी दृष्टि से उन्हे देखते रहे। किसी को कुछ भी कहने का साहस नही हुआ। किसी ने भी किसी मुर्गे को प्रोत्साहन नही दिया। केवल कुट्टन पिल्लै ही आगे जाकर खडे हो गए।

घमासान लडाई छिड गई। अय्यप्पन की एक आंख फूट गई। अर्जुन के सिर से खून बहने लगा। सग्राम और भी घनघोर हो उठा। कुट्टन पिल्लै का चेहरा कभी प्रसन्नता से आलोकित हो उठता तो कभी उदास हो जाता। कुञ्जु कुरुप कुट्टन पिल्लै की ओर गौर से देख रहा था।

आखिर कुट्टन पिल्लै से न रहा गया। उसने ज़ोर से चिल्लाकर कहा :

'उड़-उड़कर चोच मारो अय्यप्पन ! उसकी दोनो आंखे छीन लो !'

कुञ्ञु कुरुप अपनी सुध-बुध खो बैठा। उसने एकाएक छलाँग मारकर कुट्टन पिल्लै की कनपटी पर जबरदस्त प्रहार किया।

अचानक प्रहार से कुट्टन पिल्लै को कुछ क्षण के लिए चक्कर आ गया। वह सचेत होकर पीछे हटा और दूसरे ही क्षण प्रतिकार के रूप में उसने छलाँग लगाकर कुञ्ञु कुरुप की कनपटी पर जोरदार चोट की। इस प्रहार से उसका सिर चकरा गया।

'तेरा घर मै मिट्टी मे मिला दूँगा।' कुञ्ञु कुरुप ने अट्टहास किया।

'वह मिट्टी मै तेरे खून से रंग दूँगा।' कुट्टन पिल्लै ने गरजकर उत्तर दिया।

दोनो के दाएँ हाथ सग्राम के लिए ऊपर उठे। एक साथ कई हाथो ने उन दोनो के हाथो को पकड लिया। कई लोग दोनो को वहाँ से हटा ले गए। इस प्रकार वह मुर्गेबाजी खत्म हो गई—कुट्टन पिल्लै और कुञ्ञु कुरुप का झगड़ा भी उस समय समाप्त हो गया।

कुञ्ञु कुरुप के सुदीर्घ विवाह के इतिहास मे मंगलश्शेरी की कुञ्ञुकुट्टी अम्मा से विवाह करने का श्रम उनकी दूसरी पराजय थी। मगलेश्शेरी में पुरुष बहुत कम थे तथा कुञ्ञुकुट्टी से विवाह करने वाले के हाथ मे वहाँ की मालिकी आनी निश्चित थी। वह विवाह करने की कुञ्ञु कुरुप ने भरसक कोशिश की, किन्तु वह विवाह मगलश्शेरी मे किसी को भी पसंद नही था। कुञ्ञुकुट्टी अम्मा ने कहा था :

'उससे कहो कि उसकी दाल यहां नही गलेगी। मंगलश्शेरी की देख-भाल करने के लिए पुरुष नहीं है तो स्त्रियाँ तो है ?'

उसी दिन से मंगलश्शेरी और पच्चाषी दोनो परिवारों मे झगड़े का प्रारम्भ हुआ।

× × ×

कुञ्ञु कुरुप के बाद पप्पु कुरुप पच्चाषी का मालिक बना। पप्पु कुरुप भी अपने मामा-जैसी प्रकृति का ही था। उसने तेरह विवाह किये थे। मृत्यु आ जाने से इससे अधिक न कर सका।

कुञ्ञु कुरुप की तरह पप्पु कुरुप ने भी मगलश्शेरी परिवार से विवाह करने की कोशिश की। कुञ्ञुकुट्टी अम्मा की बेटी कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा थी उनका लक्ष्य। कुञ्ञुकुट्टी अम्मा ने पहले की तरह उत्तर दिया था :

'तुम्हारी दाल यहाँ नही गलेगी।'

पप्पु कुरुप की ओर से विवाह का प्रस्ताव सुनकर कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने जोर से खखारकर जमीन पर थूक दिया। इस प्रकार पच्चाषी तथा मगलश्शेरी का झगडा और बढ गया।

पप्पु कुरुप के विवाहों मे मुल्लक्काट्ट की भवानी के साथ का विवाह विशेष प्रसिद्ध हुआ था। मुल्लक्काट्ट भवानी अम्मा उस प्रदेश की सबसे सुन्दर कन्या थी। पप्पु कुरुप की दृष्टि उस पर पहले से थी किन्तु दस विवाह हो जाने और उम्र अधिक हो जाने से मिलने मे सन्देह होने के कारण भवानी के परिवार से विवाह की चर्चा करने मे हिचकता था। भवानी अम्मा का भाई शकरन नायर एक अध्यापक तथा बडा अभिमानी था, इसलिए पप्पु कुरुप को भय था कि विवाह की बात चलाने पर वह साफ मना कर देगा।

पप्पु कुरुप इसी प्रयत्न मे था कि अन्य कोई पुरुष भवानी अम्मा से विवाह न करे। सारे गाँव का मुखिया होने के कारण पप्पु कुरुप को विवाहो का समाचार सर्वप्रथम प्राप्त हो जाता था। मुक्कोणक्करा का कोई व्यक्ति भवानी अम्मा से विवाह करना चाहता तो पप्पु कुरुप उत्तर देता कि मुल्लक्काट्ट के लोग प्रतिष्ठित नायर परिवार के नही है। यदि बाहर से कोई विवाह का प्रस्ताव लाता तो वह उडा देता कि भवानी अम्मा का स्वभाव बुरा है। उसके अनेक प्रेमी है। इस प्रकार पप्पु कुरुप ने प्रयत्न करके अनेक विवाहों को उटका दिया।

अत मे पालक्कल पाच्चु पणिक्कर ने भवानी अम्मा से विवाह करने

का निश्चय किया। पच्चाषी-जैसे प्रतिष्ठित वंश के न होने पर भी आर्थिक दृष्टि से उनकी बराबरी करने योग्य थे पालक्कल वाले। पहली पत्नी के मर जाने से पाच्चु पणिक्कर का दूसरा विवाह होने वाला था। शंकरन नायर ने पाच्चु पणिक्कर को पहले ही चेता दिया था कि पच्चाषी का पप्पु कुरुप विवाह उटकाने में सिद्धहस्त है, इसलिए विवाह-सम्बन्धी समाचार उसके कानों तक नहीं पहुँचना चाहिए और पच्चाषी में जाकर पूछना-बताना भी नहीं चाहिए। इसलिए पाच्चु पणिक्कर और शंकरन नायर ने सोच-विचारकर विवाह निश्चित किया था।

परन्तु पप्पु कुरुप के प्रधान पुरुष होने के कारण उसकी सम्मति तथा सान्निध्य के बिना वह विवाह होना आचार-विरुद्ध समझकर पप्पु कुरुप की अनुमति लेने के लिए शंकरन नायर पच्चाषी में उनके पास पहुँचा। पप्पु कुरुप को पहले ही समाचार मिल चुका था, फिर भी अनजान-जैसे भाव से उसने कहा :

'शंकरन नायर, इधर कैसे आना हुआ ?'

'भवानी का विवाह निश्चित करने की अनुमति पाने के लिए।'

'कहाँ का आया है विवाह ?'

'पालक्कल पाच्चु पणिक्कर का।'

'पालक्कल पाच्चु पणिक्कर ? यहाँ कोई नहीं था क्या उससे विवाह करने को ?'

'दूसरे गाँवों से कई लोगों ने इधर विवाह किया है। यहाँ के पुरुष भी बाहर से लड़कियाँ लाए हैं।'

'ऐसा है रे यह ? यहाँ एक ही देखने लायक लड़की है। उसका विवाह दूसरे गाँव में करना हमारे लोगों का अपमान नहीं है ?'

'पालक्कल के लोग बड़े अमीर हैं।'

'तो मैं पूछता हूँ कि उससे बढ़कर धनी एवं प्रतिष्ठित परिवार के लोग यहाँ नहीं हैं ?'

'यह विवाह निश्चित हो गया है। मैं वचन दे चुका हूँ।' पप्पु कुरुप

का क्रोध भड़क उठा । वह गरजकर बोला :

'वचन देकर अनुमति लेने तू यहाँ आया है ?'

'वहाँ आकर विवाह करवा दें, यही कहने मैं आया हूँ ?'

'मुझसे बिना पूछे निश्चित किया गया विवाह मेरे बिना ही कर भी लो ।'

'ऐसा ही है तो कर भी लूंगा ।'

'तो जा कर ले, मैं भी देख लूंगा ।'

इस प्रकार के विवाद के बाद दोनों अलग हो गए ।

विवाह के दिन प्रातःकाल मुल्लक्काट के घर में खलबली मच गई । सखियों के साथ सबेरे मन्दिर में दर्शन करने के लिए गई हुई भवानी अम्मा वापस नहीं आई । सखियाँ वापस आ गईं । उन्होंने आकर बताया कि भवानी को मन्दिर में काम करने वाली एक लडकी बुला ले गई है । भवानी को उस लड़की की माँ देखना चाहती है और वह जल्दी लौट आएगी—ऐसा कहकर गई है, किन्तु बहुत देर प्रतीक्षा करने पर भी जब वह वापस नही लौटी तो वे लौट आईं । घर वाले भवानी की खोज में चारो ओर दौडे । घटना इस प्रकार घटी :

मन्दिर में काम करने वाली लड़की पप्पु कुरुप के कहने के अनुसार भवानी को अपने साथ ले गई थी । उस लड़की की धोखा देने की भावना से अनभिज्ञ भवानी एक घर मे पहुँची । वहाँ पर उपस्थित पप्पु कुरुप ने मीठी वाणी मे पूछा,

'भवानी, तुम्हारा विवाह आज ही है ?'

'जी हाँ ।'

'आज किस समय ?'

'रात के आठ बजे ।'

'किन्तु दिन के आठ बजे भी तो एक शुभ मुहूर्त है न ?'

'होगा ।'

'इस समय आठ बजे हैं । इसी समय विवाह हो जाना ठीक है

न ?'—एक थाल मे साडी और ब्लाउज़ भवानी की ओर बढ़ाते हुए पप्पु कुरुप ने कहा :

'यह स्वीकार कर लो। जब तक मैं इस गाँव मे जिन्दा हूँ। पालक्कल पाच्चु पणिक्कर से तुम्हारा विवाह नही होने दूंगा। मै यह सब नही सह सकता · यह तुम स्वीकार कर लो।'

भवानी ने स्वीकार नही किया। पप्पु कुरुप ने क्रोधित होकर कहा :

'रात के आठ बजे तेरा विवाह नही होने दूंगा।' पच्चाषी पप्पुकुरुप कहते है।

भवानी अम्मा फिर भी कुछ हिचकिचाई। तब पप्पु कुरुप आग-बबूला होकर गरजा :

'यदि तू इसे स्वीकार कर लेगी तो तेरे भाई और घर वालो के लिए हितकर होगा। नही तो आज यहाँ खून की नदी बहेगी। तेरे भाई और पालक्कल पाच्चु पणिक्कर को मै मार डालूंगा।'

भवानी अम्मा चौक पड़ी। पप्पु कुरुप ने आगे कहा

'शुभ मुहूर्त है अब। इसे ले लो। स्वर्ण की तरह तेरी देख-भाल करूंगा। तुझे धन और सपत्ति दूंगा ··लो इस थाल को स्वीकार कर लो।'

भवानी अम्मा ने हाथ आगे बढाकर थाल थाम लिया। पप्पु कुरुप एक गुप्त मार्ग से भवानी को पच्चाषी ले गया।

शकरन नायर और शेष घर वाले भवानी को खोजते-खोजते थक गए। अन्त मे उन्हे मालूम हो गया कि वह पच्चाषी मे है। सब लोग मिलकर पच्चाषी मे पहुंचे। पप्पु कुरुप ने मजाक करते हुए पूछा

'आज सब लोग इधर कैसे पधारे ? आज तो आपके यहाँ विवाह है न ?'

शकरन नायर ने क्रोध मे पूछा, 'मेरी बहन भवानी यहाँ है क्या ?'

'हाँ तो ?'

'तो निकालकर बाहर भेजो !'

'नही तो ?'

'नही तो मैं अंदर घुस जाऊँगा।'

'इस गांव में इतनी हिम्मत किसमे है ?' कहता हुआ पप्पुकुरुप उछलकर उठ खड़ा हुआ।

शकरन नायर आगे की ओर उछला। पप्पु कुरुप ने शंकरन नायर को पैर की ठोकर दी। शंकरन नायर पीठ के बल गिर पड़ा। तुरन्त ही कटार निकालकर वह उठ खड़ा हुआ। पप्पु कुरुप ने चाकू निकाल लिया। अन्दर से भवानी अम्मा दौड़ती हुई आई। वह रोती हुई बोली :

'मेरे प्यारे भाई, लड़ाई-झगड़े के बिना आप यहाँ से चले जाइए। मैं यहाँ रह लूंगी।'

'ऐसा है तो आज से तू मेरी बहन नहीं है री ! तू मेरे घर में पैर मत रखना।'—ऐसे गरजता हुआ शकरन नायर वापस लौट गया।

× × ×

चौबीस साल की अवस्था मे घर का स्वामित्व माधव कुरुप के हाथ में आ गया। इसके पहले ही वह दो विवाह कर चुका था और दोनों पत्नियों को तलाक भी दे चुका था। मालिक बनते ही माधव कुरुप ने मंगलश्शेरी की कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा की बेटी भागीरथी अम्मा से विवाह का प्रस्ताव किया। अनुभव अपने मामाओं का ही उसको मिला। उसके बाद किये गए अनेक विवाहों में एक बहुत प्रसिद्ध है।

अम्मुकुट्टी अम्मा बहुत सुन्दर थी, पर गरीब घर की लड़की थी। उसका पड़ोसी अय्यप्पन नायर उसे बहुत अधिक चाहता था। उससे विवाह करने की कामना पूरी न होने पर वह आत्महत्या कर लेगा, ऐसी प्रतिज्ञा भी उसने की। अन्त में अम्मुकुट्टी अम्मा के घर वालों ने कहा कि यदि शंकरन नायर की सारी सम्पत्ति अम्मुकुट्टी अम्मा के नाम पर कर दी जाय तो यह विवाह सम्भव है। अय्यप्पन नायर इससे सहमत हो गया। उसने अपनी छह बीघा भूमि अम्मुकुट्टी के नाम पर कर दी। साथ ही पांच सौ रुपये अम्मुकुट्टी के नाम पर ज़मीन खरीदने के लिए

एक मध्यस्थ व्यक्ति को देने का वायदा किया। मध्यस्थ व्यक्ति माधव कुरुप निश्चित हुआ।

जब मध्यस्थ माधव कुरुप ये पाँच सौ रुपये लेने के लिए गया, तब पहली बार उसने अम्मुकुट्टी को देखा। माधव कुरुप ने चुपके से अय्यप्पन नायर से कहा :

'सचमुच तुम बेवकूफ़ हो, अय्यप्पन नायर !'

'क्यों ?'

'भूमि और रुपये देकर विवाह करने वाला बेवकूफ नहीं तो और कौन है ?'

'मुझे वही चाहिए, उसके बिना मै मर जाऊँगा।'

'तो जो चाहे करो।'

जब जमीन खरीदोगे तब पैसा लौटा दिया जायगा—ऐसा वायदा करके माधव कुरूप ने रुपये ले लिए। अम्मुकुट्टी और अय्यप्पन का विवाह हो गया। अय्यप्पन नायर खरीदने के लिए भूमि खोजने लगा। कोई जमीन देखकर कीमत बताने पर माधव कुरुप को दिखाता तो माधव कुरुप उसमें कोई-न-कोई मीन-मेख निकाल देता अथवा उसके खरीदने पर होने वाली कठिनाइयों को बताकर डरा देता। अन्त मे माधव कुरुप ने एक अच्छी जमीन खरीद देने का वायदा किया। उसके लिए अय्यप्पन नायर रोज ही माधव कुरुप के घर जाने लगा। 'फसल कट जाने दो' या 'मन्दिर का उत्सव हो जाने दो' आदि का बहाना बनाकर माधव कुरुप उसे रोज ही लौटा देता। अम्मुकुट्टी अम्मा पति से रोज ही कहती :

'पहले से ही लोगों ने कहा था कि तुम बेवकूफ हो।'

अय्यप्पन नायर घबरा गया। जमीन न खरीद सके तो कोई बात नहीं, वह रुपया लौटा लेने का मार्ग खोजने लगा। अम्मुकुट्टी अम्मा ने पति को अन्तिम निर्देश देते हुए कहा : 'रुपये वापस लाये बिना इस घर मे पैर मत रखना।'

माधव कुरुप से रुपये माँगने की हिम्मत अय्यप्पन नायर में नही है।

रुपये लिये बिना अम्मुकुट्टी अम्मा घर के अन्दर पैर नहीं रखने देगी। वह पच्चाषी में जाकर बहुत देर बैठता। कभी अम्मुकुट्टी अम्मा के घर के दरवाज़े पर बहुत देर खड़ा रहता। इस प्रकार दो-तीन दिन बीत जाने पर अम्मुकुट्टी अम्मा की समझ में आ गया कि रुपये लेने के लिए उसे स्वयं ही पच्चाषी जाना पड़ेगा।

अम्मुकुट्टी अम्मा नहाकर सज-धजकर पच्चाषी जा पहुँची। उस समय माधव कुरुप अपनी बैठक में बैठा था। आँगन के छोटे-से आम के पेड़ की आड़ में खड़ी होकर अम्मुकुट्टी अम्मा ने खखारा।

'कौन है?' माधव कुरुप ने पूछा, जैसे उन्होंने देखा न हो।

'मैं हूं अम्मुकुट्टी!'

'तू इस समय इधर कैसे आई?'

'वे रुपये वापस दो।'

'कौन-से रुपये?'

'जो ज़मीन खरीदने के लिए दिये गए थे।'

'किसने किसे दिये थे?'

'ज़मीन खरीदने का वायदा करके तुमने हमसे रुपये लिए थे, क्या अब भूल गए?'

माधव कुरुप ने गंभीर होकर पूछा :

'मैं कौन हूं, तुझे मालूम है?—पच्चाषी का मालिक माधव कुरुप हूं मैं। पच्चाषी का कोई भी व्यक्ति किसी का भी दलाल अभी तक नहीं बना और बनेगा भी नहीं।'

'ज़मीन खरीदने के बारे में वह रोज ही यहां आया करता है।'

'कौन? अय्यप्पन नायर? वह तो है बेवकूफ़! यह बात तेरी समझ में अभी तक नहीं आई?'

'वह तो मैं पहले से ही जानती थी।'

'फिर क्यों उसके साथ हो गई?'

'फिर मैं करती भी क्या। विवाह न करने पर वह आत्म-हत्या कर

लेता ।'

'ऐसा है तो तू एक बात सुन । यही रह जा । अब उसके पास मत जा ।'

'ऐसा कर सकती हूँ ?'

'कर क्यों नही सकती ?'

'जब मेरे घर वाले आयँगे······तो मैं जाए बिना कैसे रहूँगी ।'

'नही जाओगी तो क्या वे पकडकर ले जायंगे ?'

'ऐसा नहीं, लेकिन कुछ दिन बाद मुझे यहाँ से भी ढकेलकर बाहर कर दिया गया तो ?'

'मै ? मैं तुझे ढकेलकर बाहर करूँगा क्या अम्मुकुट्टी ! तू यहीं रह जा । आज से तू मेरी पत्नी है ।'

अम्मुकुट्टी माधव कुरुप की पत्नी बन गई, किन्तु एक वर्ष होते ही उसने उसे निकाल बाहर किया । अय्यप्पन नायर पागल होकर कहीं चला गया ।

* * *

माधव कुरुप की मालिकी मे पच्चाषी घराने की आर्थिक दशा अधिक-से-अधिक गिर रही थी । कुञ्ञु कुरुप और पप्पु कुरुप के कर्ज अदा करने का भार माधव कुरुप के ही सिर पर आ जाने से कर्ज देने वालों ने न्यायालय के माध्यम से खेत और जमीन नीलाम करा लिए । माधव कुरुप भी कर्ज लेने मे अपने पूर्वजो से पीछे नही रहा ।

एक ओर पच्चाषी घराने की आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही थी तो दूसरी ओर परिवार के सदस्यो की सख्या बढ़ती जा रही थी । प्रस्तुत समय मे परिवार में कुल मिलाकर छत्तीस सदस्य थे । सबकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति खानदान से ही होनी चाहिए । आवश्यकता पूरी न होने पर घर के व्यक्तियों मे फसल चुराकर काम चलाने की रीति है । इस प्रकार कुटुम्ब मे परस्पर सौहार्द शिथिल होने लगा । अब सदस्य आपस में बड़बडाने लगे । धीरे-धीरे यह बड़बड़ाना छोटे-मोटे

संघर्षों में परिणत होने लगा।

माधव कुरुप के तीन जवान भांजे नीलकंठ कुरुप, दामोदर कुरुप और अच्युत कुरुप थे। नीलकंठ कुरुप का काम खेत की उपज बेचना और शराब पीना था। दामोदर कुरुप शराबी और बदमाश था। गाँव के सभी झगडों और मार-पीट में वह शामिल रहता। इसमे उसके शराब पीने का खर्चा निकल आता था। जब कभी उसे इस प्रकार से पैसा नहीं मिल पाता, तब वह खेत की फसल आदि चुराकर बेचता। अच्युत कुरुप विलासी और कवि था। 'चंगम्पुषा'[1] की कविताएँ उसे कंठस्थ थी। उन कविताओं का अनुकरण करके कविता भी बनाया करता था। घर का अनाज चोरी करने मे भी वह निपुण था।

इसी अवसर पर मुर्गेबाजी की प्रतियोगिता मे विजयी होने के लिए माधव कुरुप ने अद्रामान नाम के व्यापारी को पाँच बीघा भूमि मुफ्त मे दे दी थी। शहर मे एक चाय की दुकान का मालिक था वह। अद्रामान के मुर्गे को माधव कुरुप का मुर्गा पराजित नही कर सका। दोनों मुर्गे समान ताकत के थे।

एक दिन कहीं से अद्रामान को एक लडाकू मुर्गा मिला। छोटा होने पर भी सभीको पराजित करने की ताकत उसमे थी। लोगों ने अफवाह उड़ाई कि उस साल की मुर्गेबाजी मे अद्रामान नये मुर्गे को अखाड़े में उतारेगा और पच्चासों के माधव कुरुप के मुर्गे को पराजित करेगा। यह सुनकर माधव कुरुप बहुत भयभीत हुआ। इसमें पराजित होने के बाद जीवित रहने का कोई प्रयोजन है क्या?

माधव कुरुप ने पराजित न होने के लिए एक उपाय सोचा। उसने अद्रामान को बुलाकर चुपके से पूछा कि वह अपने मुर्गे को अखाड़े में न उतारने को तैयार है। यदि अखाड़े मे नही उतारेगा तो उसने उसे दस मन धान देने का वायदा किया। अद्रामान उससे सहमत नहीं हुआ। तब

१. केरल के एक सुप्रसिद्ध शृंगारी कवि।

माधव कुरुप ने पाँच मन बीज के लायक खेत के बदले उस मुर्गे को माँग लिया। शहर मे अव्वल दर्जे का खेत था वह। अद्रामान तैयार हो गया। पाँच मन बीज के लायक खेत देकर वह मुर्गा ले आया। इस प्रकार माधव कुरुप मुर्गेबाज़ी में पराजय की मान-हानि से बच गया।

यह बात सुनकर पच्चाषी खानदान मे स्त्री-बच्चों सहित सभी लोग क्रोधित हो कानाफूसी करने लगे।

५. मंगलश्शेरी खानदान

मंगलश्शेरी खानदान के पास पहले पच्चाषी खानदान के समान धन और ऐश्वर्य नहीं था, लेकिन कुलीनता और प्रतिष्ठा में वे पच्चाषी परिवार के बराबर ही थे।

जब प्रसिद्ध वैद्य कुट्टन पिल्लै घर के मालिक बने तब मंगलश्शेरी खानदान मे धन की वृद्धि हुई। एक साधारण वैद्य होने पर भी कुट्टन पिल्लै ने एक साधु से कुछ रहस्यमयी औषधि का प्रयोग सीखकर उनके द्वारा अद्भुत यश प्राप्त किया। किसी इलाज से ठीक न होने वाले रोगों को उन्होंने इलाज करके ठीक कर दिया। जड़ी-बूटी के प्रयोग के द्वारा कुछ रोगों को वे दूर कर देते थे।

इस प्रकार सारे गाँव में वैद्य कुट्टन पिल्लै की कीर्ति फैल गई। जगह-जगह से रोगी आने लगे। धन भी आसानी से मिलने लगा। स्वभाव से कजूस कुट्टन पिल्लै ने खूब धन इकट्ठा किया। वैद्य की पत्नी और बच्चे होने पर भी 'मरुमकत्तायम्' के अनुसार उनकी सारी संपत्ति मंगलश्शेरी के खानदान की ही बनी रही।

वैद्य की दो बहनें थीं—कात्यायनी अम्मा और कुञ्ञुकुट्टी अम्मा। कात्यायनी अम्मा के बाँझ और रोगी होने के कारण उनका पति भी उन्हें छोड़कर चला गया। कुञ्ञुकुट्टी अम्मा के पति वासु पिल्लै एक वकील के मुनीम थे। कुञ्ञुकुट्टी अम्मा के भी कोई बच्चा नहीं हुआ।' परन्तु इस कारण से वासु पिल्लै ने उनको तलाक नहीं दिया। वैद्य के सदा बीमारों की सेवा-शुश्रूषा में लगे रहने के कारण मुनीमी छोड़कर वासु पिल्लै ने मंगलश्शेरी खानदान की देख-भाल का काम अपने हाथ में ले लिया।

दोनों बहनों के बच्चा पैदा न होने से वैद्य को बड़ा दुःख हुआ

ज्योतिष से पता चला कि ब्राह्मण-शाप के कारण उनके सन्तान नहीं हो रही है। शाप-निवारण के लिए प्रतिवर्ष इकतालीस ब्राह्मणों को उनके पैर धोकर इकतालीस दिन तक भोजन देने का निश्चय किया गया। उसके लिए वैद्य ने घर के दक्षिणी भाग में एक मठ बनवाया। ब्राह्मणों को न्योता देकर इकतालीस दिन पैर धोकर और दक्षिणा देकर अव्वल दर्जे की दावत दी। आयुर्वेद-शास्त्र के अनुसार दोनों बहनों को दवाइयाँ भी दी। न जाने ब्राह्मणों को भोजन कराने से अथवा औषधि के सेवन से, चाहे जैसे भी हो, कुञ्ञुकुट्टी अम्मा के सन्तान हो गई।

इसी बीच पच्चाषी के कुञ्ञु कुरुप ने विवाह की बातचीत के लिए अपना दूत भेजा। कुञ्ञु कुरुप के संदेश-वाहक ने कहा था—'वासु पिल्लै जो केवल एक मुनीम है, मंगलश्शेरी की प्रतिष्ठा के योग्य नहीं है। यदि उसको अलग कर दिया जाय तो स्वयं कुञ्ञु कुरुप कुञ्ञुकुट्टी अम्मा से विवाह करने को तैयार है। लेकिन वैद्य और कुञ्ञुकुट्टी अम्मा दोनों ही समझ गए कि कुञ्ञु कुरुप की आँख वैद्य की संपत्ति पर है; कुञ्ञुकुट्टी अम्मा पर नहीं।

प्रत्युत्तर में वैद्य ने कहला भेजा : 'पच्चाषी के लोगों से हम कोई बंधुता नहीं चाहिए।'

'जाकर कह दो—उसके लिए रखा हुआ पानी फेंक दे।' कुञ्ञुकुट्टी अम्मा ने कहा।

कुञ्ञुकुट्टी अम्मा ने तीन बच्चों को जन्म दिया। उनमें से दो मर गए। केवल एक कन्या ही जीवित रही। उसका नाम कुञ्ञुलक्ष्मी रखा गया। वह सुन्दरी और बुद्धिमती थी। वैद्य उसे प्राणों से भी अधिक प्यार करते थे। मरने के पहले कुञ्ञुलक्ष्मी का विवाह करा देने की अपनी अभिलाषा वैद्य पूरी न कर सके।

कात्यायनी अम्मा के बाँझ और रोगी होने के कारण वुट्टन पिल्लै के मरने के बाद कुञ्ञुलक्ष्मी मंगलश्शेरी की मालकिन बन गई। लेकिन उसके बाद खानदान का भरण-पोषण बहुत क्लेशपूर्ण था। कुञ्ञुकुट्टी

अम्मा से विवाह करके मंगलश्शेरी की सम्पत्ति हस्तगत न कर सकने से कुञ्ञ कृष्ण नाराज थे, परन्तु वैद्य कुट्टन पिल्लै के प्रताप और प्रभाव के कारण उसे प्रकट नहीं कर सकते थे। वैद्य की मृत्यु के बाद कुञ्ञ कुरुप ने अनेक प्रकार से मंगलश्शेरी परिवार को सताना शुरू किया। बदमाश लडकों द्वारा फाटक के बाहर से गाली दिलवाना, खेत की फसल चोरी करवा देना, सीमा-विवाद पैदा करना आदि उपद्रव कुञ्ञकृष्ण कर रहे थे। किन्तु कुञ्ञकुट्टी अम्मा के नयचातुर्य और वासु पिल्लै के नियम-ज्ञान से वे बचते रहे। कुञ्ञकुट्टी अम्मा और वासु पिल्लै की कामना थी कि एक ऐसे सुयोग्य वर से कुञ्ञुलक्ष्मी का विवाह किया जाय जिससे भविष्य में पच्चापी का मुकाबला करने में शक्ति मिले।

जब कुञ्ञुलक्ष्मी विवाह के योग्य हुई तो कई जगह से विवाह के प्रस्ताव आये। उनमें से एक प्रस्ताव पच्चापी के पप्पु कुरुप का भी था। पच्चापी के लोग यही चाहते थे कि उनके बराबर या उनसे अधिक सम्पन्न मंगलश्शेरी वालों से या तो स्थायी सम्बन्ध किया जाय या उसका सर्वनाश कर दिया जाय। कुञ्ञ कृष्ण के कुञ्ञकुट्टी अम्मा से विवाह न कर पाने पर भी उसने यह कभी नहीं सोचा था कि पप्पु कुरुप के विवाह की माँग मंगलश्शेरी वाले अस्वीकार कर देंगे। पप्पु कुरुप ने मंगलश्शेरी परिवार के पास सन्देश भेजा कि समान धन, कुल और प्रतिष्ठा वाले दोनों परिवारों की आपसी शत्रुता से मंगलश्शेरी वालों के नुकसान होंगे और दोनों खानदानों के आपस में मिल जाने से बहुत लाभ होगा।

कुञ्ञकुट्टी अम्मा ने दृढ़ स्वर से उत्तर दिया :

'पच्चापी का बन्धुत्व हमें नहीं चाहिए। वे लोग हमारा कुछ नहीं बिगाड सकते। मेरे भाई ने जो कमाया, वह सम्पत्ति मेरी बेटी और उसकी सन्तान के सुख के लिए है। पच्चापी परिवार के शराब पीने के लिए नहीं।'

इस घटना से पच्चापी की मंगलश्शेरी वालों से दुगुनी शत्रुता हो गई।

परमेश्वरन पिल्लै वकील ने कुञ्ञुलक्ष्मी से विवाह किया। पच्चापी

परिवार का सामना करने में समर्थ था वह। परमेश्वरन पिल्लै जल्दी ही एक क्रिमिनल वकील के नाम से प्रख्यात हो गया। बड़े-बड़े बदमाश उसका आदर करते थे। सज्जनों और दुर्जनों को एक समान वश में करने की एक विशेष सामर्थ्य उसमें थी।

जब पप्पु कुरुप ने सुना कि कुञ्ञुलक्ष्मी का विवाह परमेश्वरन पिल्लै से होने वाला है तो वह आग-बबूला हो उठा। मुक्कोणक्करा के नायर लोगों को उसने आज्ञा दी कि वे लोग मंगलश्शेरी में सम्पन्न होने वाले विवाह में भाग न लें। किन्तु मंगलश्शेरी के बन्धु-बांधवों और उनके आश्रित लोगों ने पप्पु कुरुप की आज्ञा को ठुकराने का निश्चय किया। यह जानकर पप्पु कुरुप ने घर-घर में स्वयं जाकर प्रचार किया कि मंगलश्शेरी की एक-मात्र कन्या का विवाह बाहरी गाँव के पुरुष के साथ करना मुक्कोणक्करा वालों का खुला अपमान है, परमेश्वरन पिल्लै प्रतिष्ठित परिवार का नायर नहीं है, इत्यादि। पप्पु कुरुप ने शठता से आज्ञा दी कि गाँव का कोई भी व्यक्ति मंगलश्शेरी वालों को किसी प्रकार का सहयोग न दे। गाँव के मुखिया और गुण्डागर्दी में भी समर्थ पप्पु कुरुप की आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस किसी में नहीं था।

विवाह की बड़ी तैयारी की गई। गाँव वालों में से बहुत-से लोग आयगे, इसकी प्रतीक्षा में दावत का प्रबन्ध किया गया था, किन्तु किसी के न आने पर भी मंगलश्शेरी के लोग घबराये नहीं। शहर के बड़े-बड़े वकील, मजिस्ट्रेट, मुन्सिफ तथा अन्य बड़े-बड़े अफ़सर आये थे। विवाह और भोज हो जाने के बाद खाने-पीने की चीजें बहुत अधिक बच गईं। वासु पिल्लै ने चारों ओर घूम-फिरकर नाना जाति के लोगों को बुलाकर अच्छी-खासी दावत दी। अन्त में कुञ्ञुकुटी अम्मा ने कहा :

'गाँव के लोग आकर ठूंस-ठूंसकर खा नहीं गये, इससे हमें कोई नुकसान नहीं। गरीबों को खिलाकर हमें पुण्य मिलेगा। वे आभारी भी रहेंगे।'

× × ×

कुञ्ञुकुट्टी अम्मा और वासु पिल्लै की मृत्यु के बाद परमेश्वरन पिल्लै को मंगलश्शेरी का मालिक बनना पड़ा। खानदान की देख-भाल के लिए अधिक समय की आवश्यकता होने से परमेश्वरन पिल्लै ने वकालत छोड़ दी।

उस समय ही कुञ्ञन ने अचानक मंगलश्शेरी में पहुँचकर रस्सी तुड़ाकर भाग जाने वाली गाय को पकड़कर बाँधा था और वहां रहने लगा था। बाद में वह मंगलश्शेरी का सबसे विश्वस्त सेवक बन गया था। आगे चलकर वह घर का सदस्य भी बना। कुञ्ञन की विश्वस्तता और कुशलता ने परमेश्वरन पिल्लै के शासन के भार को बहुत हल्का कर दिया।

विवाह के चार-पांच वर्ष बीत जाने पर माता-पिता की मृत्यु के बाद कुञ्ञलक्ष्मी अम्मा ने एक बच्चे को जन्म दिया। पहले बच्चे के चार वर्ष बाद दूसरा बच्चा हुआ। फिर दो-दो वर्ष बाद दो बच्चे हुए। पहला लड़का मर गया। दो लड़के और एक लड़की जीवित रह गए -- गोपाल, भास्कर और भागीरथी।

परमेश्वरन पिल्लै के भरण-काल में पप्पु पिल्लै ने अनेक कपट-बाण मंगलश्शेरी के विरोध में चलाकर देखे। परमेश्वरन पिल्लै ने उनका तत्क्षण खण्डन कर दिया। कुञ्ञन के वहाँ रहने और उसकी स्वच्छन्दता ने सारे नायरों को कुपित कर दिया। वे भी मंगलश्शेरी को सताने लगे। इस प्रकार मंगलश्शेरी सबकी आँखों का काँटा बन गया।

परमेश्वरन पिल्लै की मृत्यु अचानक हुई। एक दिन नाश्ता करके किसी आवश्यक कार्य से शहर जाने के लिए वे बैलगाड़ी में बैठ गए। उस पर चढ़ते ही परमेश्वरन पिल्लै की छाती में दर्द हुआ। अचानक दर्द बढ़ गया। खून की एक उल्टी हुई। पता लगते ही घर के सभी लोग दौड़ आए। सबने मिलकर परमेश्वरन पिल्लै को उठाकर बैठक में लिटाया। वैद्य को बुलाने के लिए कुञ्ञन दौड़ा गया। थोड़ी देर बाद परमेश्वरन पिल्लै को फिर खून की उल्टी हुई। कुञ्ञलक्ष्मी अम्मा ने

गोद में सिर रखकर परमेश्वरन पिल्लै इस दुनिया से सदा के लिए विदा हो गए।

पति की मृत्यु कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा के लिए एक असह्य दुःख था। परन्तु दुखी होकर रहना उनके लिए सम्भव नहीं था। तीन बच्चे है। एक बडी सम्पत्ति की देख-भाल की जिम्मेदारी है। पति के संस्कार-कर्म का निर्देश भी उन्हे ही देना पडा। परमेश्वरन पिल्ल के घर वालो तथा बन्धु-जनो के द्वारा शव की माँग करने पर भी कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा उसे देने को तैयार नही हुई। मगलश्शेरी के दक्षिणी भाग मे ही उनका दाह-कर्म किया गया।

बहुत से लोगो ने सोचा कि भरण करने योग्य कोई पुरुष न होने से मगलश्शेरी खानदान का नाश हो जायगा। पच्चापी के पप्पु कुरुप ने भी आशा की कि वह कुटुम्ब नष्ट हो जायगा, परन्तु वे आशाएं और प्रतीक्षाएं पूर्ण नही हुई। कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा समय के अनुसार उठ खडी हुई।

मुक्कोणक्करा के विविध भागो मे मगलश्शेरी वालो की खेती-बाडी है। पश्चिमी और दक्षिणी भाग मे भी उनके खेत है। बहुत-से भूमिधर और खेतिहर उनके नीचे है। वहाँ सब जगह गडबडी करने वाले भी पच्चाषी वाले है परन्तु कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा घबराई नही। असामान्य सामर्थ्य और अद्भुत धैर्य से उन्होने सारे खानदान की देख-भाल की। कुञ्जन की सचेतता, नितान्त प्रयत्न और विश्वस्तता उनकी सहायक थी।

पच्चाप् पप्पु कुरुप ने दुबारा एक दूत भेजा, विवाह-प्रस्ताव लेकर। उस निपुण दूत ने कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा को समझाया कि खानदान का भरण-पोषण और बच्चो की देख-भाल, दोनो एक औरत नही कर सकती। कुञ्जन धोखेबाज अछूत है, वह छिपकर सम्पत्ति हडप रहा है और खान-दान का उद्धार पप्पु कुरुप ही कर सकता है। तीन बच्चो की माँ होने पर भी वह उससे विवाह करने को तैयार है। सारी बाते धीरज के साथ सुनने के बाद कुञ्जुलक्ष्मी अम्मा ने कहा :

'उसकी दाल यहाँ नही गलेगी।'

× × ×

मंगलश्शेरी परिवार के धनी हो जाने पर भी वे सब पुराने घर में ही रहते थे। उस घर को तोड़कर नया घर बनाने या परिष्कार करने के लिए कुट्टन पिल्लै वैद्य सहमत नहीं हुए थे। कुञ्ञुकुट्टी अम्मा के शासन-काल में कई लोगों ने इस घर के स्थान पर नया घर बनाने का सुझाव दिया। प्रत्युत्तर में उन उपदेश देने वालों से कुञ्ञकुट्टी अम्मा ने कहा :

'इस घर में ही हमारे पूर्वज पैदा हुए, जीवन बिताया और मैं भी इस घर पैदा हुई हूँ, बड़ी हुई हूँ। मैं भी इसी घर में मरना चाहती हूँ।'

परमेश्वरन पिल्लै ने निश्चय किया कि पुराने घर के स्थान पर नया घर बनाया जाय। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा को नया घर बनाना पसन्द होने पर भी पुराना घर तोड़ना पसन्द नहीं था। अन्त में पुराने घर को तोड़े-फोडे बिना परमेश्वरन पिल्लै ने एक राज के द्वारा नये घर और चतुश्शाला के निर्माण की योजना बनाई। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने उसके लिए स्वीकृति भी दे दी। मकान बनाने की तैयारी शुरू हो जाने के बीच में परमेश्वरन पिल्लै का देहान्त हो गया। तीन-चार वर्ष बीत जाने पर कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने मकान बनवाने का काम शुरू करवाया।

मकान के लिए ज़रूरी लकड़ी अपने बागों से ही प्राप्त की। मकान के लिए लम्बी और सीधी लकड़ी की ज़रूरत थी। मंगलश्शेरी की जमीन के छोर पर उसी तरह का एक बड़ा पेड़ था। उधर की ज़मीन पच्चापी परिवार की थी। वह पेड़ इधर लगाये जाने पर भी बढ़ते-बढ़ते सीमा पार कर गया था।

कुञ्ञन ने पेड़ काटने के लिए कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा से अनुमति माँगी। अनुमति मिल जाने पर उसने लकड़हारों को पेड़ काटने के लिए भेजा। खबर सुनकर काटने वालों को रोकने के लिए पप्पु कुरुप दौड़ा आया। लकड़हारे डरकर वापस आ गए। कञ्ञन ने प्रतिज्ञा की कि कल पेड़ जरूर कटवा डालेगा।

कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने कहा :

'घर बनाने के लिए यदि उस पेड़ की लकड़ी नहीं मिली तो घर नहीं बनेगा।'

अगले दिन कुञ्ञन लकड़हारों को साथ लेकर पेड़ काटने निकला। कन्धे पर कुल्हाड़ी रखे कुञ्ञन आगे-आगे चला। झगड़े की सम्भावना होने से कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा घर में नहीं बैठ सकीं। वे भी पेड़ काटने के स्थान की ओर चल दीं।

पप्पु कुरुप और उसके भांजे झगड़ा करने को तैयार खड़े थे। कुञ्ञन तथा अन्य आदमियों को देखकर पप्पु कुरुप के भांजे माधव कुरुप ने चिल्लाकर कहा, 'पेड़ काटने वाले सभी घर से विदा लेकर आ रहे हैं क्या?'

कुञ्ञन ने व्यंग्य-मिश्रित विनय से कहा, 'बेचारों के विदा मांगने के लिए कोई नहीं है।'

कुञ्ञन कुल्हाड़ी लेकर पेड़ के पास पहुँचा। पप्पु कुरुप ने उपदेशात्मक स्वर में कहा, 'कुञ्ञन तू चला जा। तू दूसरों के लिए अपने प्राणों की बलि देने को क्यों घूम रहा है? पेड़ काटना ही है तो मंगलश्शेरी के लोगों से आकर काटने को कह।'

'मंगलश्शेरी के लोग ही आ रहे हैं पेड़ काटने के लिए'—पीछे से कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा का शब्द गूँज उठा।

'मंगलश्शेरी वालों के पेड़ काटने से पहले ही पच्चाषी वाले उनका सिर काट डालेंगे, यह जानती हो?' पप्पु कुरुप ने गरजकर कहा।

प्रत्युत्तर में कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा बोली, 'पच्चाषी वालों के काटने पर जमीन पर लुढकने वाला सिर मंगलश्शेरी वालों को नहीं चाहिए। सिर काटने के लिए तैयार खड़े लोग आ जायं।' कुञ्ञन के हाथ से कुल्हाड़ी लेकर कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा आगे बढ़ीं।

उस पेड़ के तने में एक बार कुल्हाड़ी चलाकर कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने पप्पु कुरुप की ओर देखा। पप्पु कुरुप और भांजे स्तब्ध खड़े हैं। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा तब भी कुल्हाड़ी से पेड़ पर वार-पर-वार करती रहीं। देखने के लिए इकट्ठे हुए लोग कौतूहल से खड़े देखते रहे।

कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा का भारी जूड़ा खुलकर नीचे गिर गया। वह पसीने से तर हो गई। अचानक पप्पु कुरुप ने कुञ्ञलक्ष्मी अम्मा के हाथ से कुल्हाड़ी लेते हुए कहा :

'हटो, मैं काटे देता हूँ।'

कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने कुल्हाड़ी छोड़ते हुए कहा, मेरा सिर काटने आया है न?'

'तुम मुझे नहीं चाहती। पर मैं तो तुमको चाहता हूँ।'

देखने-सुनने वाले ठहाका मारकर हँस पड़े।

उसी लकड़ी से मंगलश्शेरी का नया मकान बनाया गया।

× × ×

नये घर में गृह-प्रवेश के बाद भागीरथी अम्मा का विवाह और गोपाल पिल्लै की मृत्यु हुई।

भागीरथी अम्मा के विवाह के प्रस्ताव कई जगहों से आये। कुञ्ञु-लक्ष्मी अम्मा की इच्छा थी कि ऐसे व्यक्ति से बेटी का विवाह किया जाय जो पच्चाषी से मुकाबला कर सके। वे जानती थीं कि बेटे के असमर्थ होने के कारण घर का शासन बेटी के पति को करना पड़ेगा, इसलिए उनका आग्रह था कि दामाद बनने वाला व्यक्ति धूर्त न हो, बल्कि खानदान की अभिवृद्धि करने वाला हो।

आने वाले अनेकों विवाह प्रस्तावों में एक पच्चाषी के माधव कुरुप का भी था। यह समाचार सुनते ही कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने घृणा से थूक दिया।

भांजे के विवाह के लिए भेजे गए दूत से कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा नेकहा :

'मंगलश्शेरी और पच्चाषी के बीच कोई सम्बन्ध किसी भी समय होना सम्भव नहीं है। यदि होगा भी तो वह दोनों पक्षों के लिए नाश का कारण बनेगा, इसलिए विवाह का प्रस्ताव लेकर कोई यहाँ न आय।'

इसी समय एक नवयुवक मुक्कोणक्करा के ग्रामाधिकारी के पद पर नियुक्त किया गया। उसका नाम नारायण पिल्लै था। उस समय के

ग्रामाधिकारी अपने-अपने अधिकार-क्षेत्रों में बिना मुकुट के राजा थे। ग्रामाधिकारी के पद पर वृद्ध और समर्थ व्यक्ति ही नियुक्त किये जाते थे, परन्तु राजमहल में सिफ़ारिश के कारण ही नवयुवक नारायण पिल्लै कम उम्र मे ही ग्रामाधिकारी बन गया।

नारायण पिल्लै का घर दस-पन्द्रह मील दूर है। राजमहल में शयनागार सजाने और उसकी रक्षा करने का भार उसके मामा पर था। उसकी सिफ़ारिश से ही भांजे नारायण पिल्लै को ग्रामाधिकारी का पद मिला था। नारायण पिल्लै नौजवान होने पर भी अनुभवी और समर्थ कार्यकर्ता के रूप में सुशोभित हुआ।

मन्दिर में भगवत्-दर्शनार्थ गये हुए नारायण पिल्लै ने पहली बार भागीरथी अम्मा को देखा था। प्रथम दर्शन मे ही वह उसको देखता रह गया। इस प्रकार मंगलश्शेरी की स्त्रियों को देखने का साहस किसी पुरुष में नहीं था। ग्रामाधिकारी का इस प्रकार किसी लड़की को टक-टकी लगाकर देखते रहना उसकी प्रतिष्ठा के उपयुक्त भी नहीं था। मादकता का सौरभ फैलाने वाला मनोहर पुष्प है भागीरथी अम्मा। उनको देखकर कौन एकटक देखे बिना रह सकेगा।

दूसरे ही दिन नारायण पिल्लै का संदेशवाहक मंगलश्शेरी में विवाह का प्रस्ताव लेकर पहुँचा। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा ने इस प्रस्ताव पर अधिक सोच-विचार नहीं किया। प्रतिष्ठित खानदान में पैदा हुआ, उच्च अधिकारी और साथ ही नौजवान—दामाद के लिए इससे अधिक और कौन-सी योग्यता चाहिए। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा सहमत हो गई। कुञ्जन खुशी से उछल पड़ा।

भागीरथी अम्मा और नारायण पिल्लै का विवाह धूम-धाम से सम्पन्न हो गया। पच्चाषी के लोगो के भाग न लेने पर भी गाँव के अधिकांश लोग विवाह मे शामिल हुए। विवाहोपरान्त नारायण पिल्लै मंगलश्शेरी में ही रहने लगे। उस दिन से मंगलश्शेरी में लोगो की भीड़ लगती रही। औद्योगिक कार्यों के लिए बहुत-

से लोग नारायण पिल्लै के पास आया करते थे, इसलिए घर के दक्षिणी कमरे के आगे वाले बड़े बरामदे में दफ्तर और दर्शक कक्ष बन गया। धीरे-धीरे मंगलश्शेरी के कुटुम्ब का भरण-भार भी नारायण पिल्लै के कन्धे पर आ पड़ा।

भागीरथी अम्मा के विवाह के एक महीने के बाद उसके बड़े भाई गोपाल पिल्लै का देहान्त हो गया। हमेशा दवा और चिकित्सा पर जीवन बिताने वाले गोपाल पिल्लै की मृत्यु से सभी को बहुत दुःख होने पर भी आश्वासन मिला। भागीरथी अम्मा का दूसरा भाई भास्कर पिल्लै निकम्मा, आलसी और विलासी था, इसलिए उसे कुटुम्ब की जिम्मेदारी लेना पसन्द नहीं हुआ। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा बूढ़ी होने लगी। इस प्रकार कुटुम्ब-भरण में गड़बड़ी होने पर नारायण पिल्लै ने शासन की बागडोर सँभाल ली।

एक वर्ष बीत जाने पर उस खानदान में एक जन्म और दो मृत्यु हुईं। कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा उदर रोग के कारण मर गईं और भास्कर पिल्लै बाढ़ के समय नाव-प्रतियोगिता के लिए जाने पर नाव के भँवर में फँस जाने से मर गया। इस प्रकार भागीरथी अम्मा मंगल-श्शेरी खानदान मे अकेली रह गई।

माता और भाई की मृत्यु के एक महीने बाद भागीरथी अम्मा ने एक बच्चे का जन्म दिया। वह लड़का था। उसका नाम पद्मनाभ रखा गया। नारायण पिल्लै और भागीरथी अम्मा का वात्सल्य पाकर वह बड़ा हुआ। उसकी दीर्घायु और स्वास्थ्य के लिए मन्दिरो में पूजा करवाई गई, होम किये गए।

इसी बीच माधव कुरुप पच्चापी का मालिक बन गया। मंगलश्शेरी के प्रति शत्रुता और भी बढ़ गई। उसने गाँव के लोगों मे इसका खूब प्रचार किया कि कुञ्ञन मंगलश्शेरी का मालिक है। नायर घराने मे एक ईषवा का शासन करना नायर जाति के लिए अपमान की बात है। माधव कुरुप ने मंगलश्शेरी के किसानों को कुञ्ञन के खिलाफ़ भड़का

दिया। अपने-जैसा ही एक आदमी उनके ऊपर शासन चलाये, इस पर पहले से ही उन्हें विरोध था। कुञ्ञन की निगरानी के कारण उन्हें चोरी करने का मौका न मिलने से जलती हुई अग्नि में घी डालने के समान उनका विरोध बढ़ गया। कुञ्ञन की शिकायत लेकर कण्डम्पुलयन, कोन्नञ्चोवन आदि मंगलश्शेरी जाने लगे।

कण्डम्पुलयन कहता : 'कुञ्ञन हमें काम नहीं करने देता। पूर्वी भाग में काम करते समय कहता है पश्चिमी भाग में जाकर काम करो। खाद डालते समय कहता है खेत निराओ। फसल काटने वाले जब इधर-उधर हटते हैं, तब कहता है कि अन्न चुराकर भाग रहे हैं। ऐसा होगा तो हम काम कैसे करेंगे हुजूर ?'

कोन्नञ्चोवन कहता :

'यह नहीं हो सकता, मालकिन ! हम इस कुञ्ञन के इशारे पर नहीं नाच सकते।'

नारायण पिल्लै और भागीरथी किसानों की इस प्रकार की शिकायत सुनी-अनसुनी कर देते।

इसी दरमियान कुञ्ञन का विवाह हो गया। कुछ ज़मीन कुञ्ञन को रहने के लिए दी गई। वहाँ के नायर लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगी। उन्हें बहुत क्रोध आया। मंगलश्शेरी में नौकरी पाकर मुनीम बनने की इच्छा रखने वाले कुछ नायर लोग कुञ्ञन को वहाँ से भगाने की कोशिश करने लगे। एक दिन के आदेश पर एक व्यक्ति मंगलश्शेरी की जमीन पर लगे नारियल के पेड़ पर, जो पड़ोस के घर की ओर झुका था, कुञ्ञन नारियल तोड़ने के लिए चढ़ने लगा। तभी पड़ोस का आदमी, जो वकील का मुनीम था, गरजता हुआ दौड़ा आया और बोला : 'किसके कहने पर नारियल तोड़ रहा है रे ?'

'किसके कहने पर ? मैंने कहा है कुञ्ञन !' ने जवाब दिया।

'तू कौन होता है कहने वाला ?'

'मैं कौन हूँ ? मैं कौन हूँ ?'...कुञ्ञन उत्तर नहीं दे सका।

'उतरो पेड़ से,—आदेश के स्वर मे मुनीम परमू नायर ने नारियल तोड़ने वाले से कहा।

चढ़ने वाला आदमी पेड़ से उतर आया। कुञ्ञन का शासन उसको भी पसन्द नहीं था।

उसने कहा : 'मालिक के कहने पर ही मैं पेड़ पर चढ़ूंगा।'

आगे से नारियल तोड़ने के लिए तुम मत आना' कुञ्ञन ने आज्ञा दी और तुरंत ही स्वयं पेड़ पर चढ़कर नारियल तोड़ डाले।

जो आदमी मगलश्शेरी मे खेत काटने का काम करते थे, वे फ़सल काटने के बाद एक-एक बोझ चुराकर ले जाते थे। वह चुराकर ले जाते है, ऐसा कहा जाता है : वे सब खुले-आम चोरी करते थे। कोई देख नही रहा है, इस भाव से ले जाते हैं। सभी लोग देखने पर अन-देखे का भाव प्रकट करते है। कुञ्ञन ने कहा कि वह इस प्रकार किसी को चोरी नही करने देगा। उसका मत था कि जो भी फ़सल का बोझ लेगा, सबको दिखाकर लेगा। उसने सब फसल काटने वालों को चेतावनी दी कि इसक अलावा यदि कोई चुराकर ले जायगा तो उसे काम से हटा दिया जायगा।

एक दिन एक फ़सल काटने वाली ने बोझ ढोते समय एक बोझ झाडी मे छिपाकर रख दिया। कुञ्ञन ने उसे देख लिया। उस स्त्री से आगे काम पर आने के लिए मना कर दिया। स्त्री ने मंगलश्शेरी में भागीरथी अम्मा के पास जाकर शिकायत की। भागीरथी अम्मा ने कुञ्ञन को बुलाकर कहा कि उसे फ़सल काटने दो। कुञ्ञन ने कहा :

'ऐसा नही हो सकता मालकिन ! यह चोरी करती है।'

'बेचारी गरीब है। उसे भी काम करने दो।'

'नही दे सकता'—कहता हुआ कुञ्ञन मुड़कर चला गया।

कुञ्ञन के खिलाफ़ भागीरथी अम्मा और नारायण पिल्लै कुछ नही कहते थे, लेकिन कुञ्ञन का प्रत्येक कार्य मंगलश्शेरी की उन्नति के लिए होता था।

६. मिल गए तो चाटकर मारेगा

भागीरथी अम्मा ने चार बच्चों को जन्म दिया। वे क्रमशः पद्मनाभ, कमलाक्षी, सरोजिनी और सुमती हैं। पद्मनाभ को हाई स्कूल और कालेज में पढ़ाकर भागीरथी अम्मा और नारायण पिल्लै पेशकार या जज बनाना चाहते थे, इसलिए मुक्कोणक्कारा की मलयालम पाठशाला में चौथे दर्जे में उत्तीर्ण होने पर पद्मनाभ को शहर के अंग्रेजी स्कूल में भर्ती करा दिया गया।

पद्मनाभ ऊंचा और मोटा-ताजा लड़का था। पकी नारंगी-जैसा रंग, लम्बी नाक, बड़ी-बड़ी आँखें, परम्परा के अनुरूप हाव-भाव—ये सब पद्मनाभ की विशेषताएँ थीं। उसकी आवाज़ में गंभीरता और आज्ञा देने की शक्ति थी, लेकिन वह बहुत कम बोलता था। सभी लोग आदर से उसको 'मंगलश्शेरी का बबुआ' कहकर पुकारते थे।

पद्मनाभ मुक्कोणक्करा के अंग्रेजी स्कूल मे पढ़ने वाला पहला विद्यार्थी था। उन दिनों के अंग्रेजी स्कूल के विद्यार्थी के लिए कोट, पैण्ट और हैट पहनकर ही कक्षा में घुसने का कठोर नियम था। पद्मनाभ सूट-बूट पहनकर बैलगाड़ी मे बैठकर स्कूल जाता था। गाँव के लोगों के लिए वह एक कौतूहलजनक दृश्य था। पच्चाषी खानदान को उससे असह्य ईर्ष्या हुई। एक दिन पद्मनाभ को बैलगाड़ी से स्कूल जाते देख-कर पच्चाषी के माधव कुरुप ने शाप दिया :

'वह अंग्रेज़ी पढ़कर भ्रष्ट होगा और ईसाई बन जायगा।'

माधवकुरुप के शाप के बारे मे सुनकर भागीरथी अम्मा ने कहा :

'उसके ईसाई बन जाने पर पच्चाषी खानदान उसे अपनी लड़की न दे।'

अंग्रेज़ी पढ़ने से ईसाई बन जाने के बारे में नायर लोगों के बीच

वाद-विवाद हुआ। एक पक्ष के लोगों ने कहा कि मजिस्ट्रेट गोविन्द पिल्लै, पुलिस इन्सपेक्टर रामकृष्ण कुरुप, पेशकार शंकर मेनोन, दीवान स्वामी आदि अंग्रेजी पढ़कर ईसाई नहीं बने। दूसरे पक्ष के लोगों ने कहा कि वे ईसाई नहीं बने फिर भी वे रीति-रिवाज कुछ मानते नहीं; ईसाइयों की भाषा बोलते है। इसलिए उन लोगों को हिन्दू मानना उचित नहीं। अन्त मे पञ्चायों में ही एक मत में यह निश्चय किया गया कि वहा के लडको को भी अंग्रेजी पढाई जाए। उसके अनुसार माधव कुरुप के भांजे नीलकण्ठ को अंग्रेजी स्कूल मे भर्ती करा दिया गया।

माधव कुरुप को पसन्द न होने पर भी बहनो के हठ से नीलकण्ठ को अंग्रेजी स्कूल मे भेजा गया था। उसके लिए सूट-बूट, हैट आदि खरीद दिये गए किन्तु मंगलश्शेरी के पद्मनाभ का बैलगाड़ी मे बैठकर स्कूल जाना देखकर नीलकण्ठ को भी बैलगाडी में बैठकर ही जाना चाहिए, यह बात माधव कुरुप के सामने निवेदन के रूप म पहुँचने पर वे क्रोधित हो उठे —

'बैलगाड़ी पर चढे बिना क्या अंग्रेजी नही पढी जा सकती ? नहीं पढी जा सकती तो वह अंग्रेजी न पढे।'

नीलकण्ठ के पैदल ही स्कूल जाने का निश्चय हुआ। इसके बाद एक दिन नीलकण्ठ ने छिपकर अपने बालों के साथ चोटी भी कटवा दी। उस घटना ने पञ्चायों मे खलबली मचा दी।
माधव कुरुप आग-बबूला हो उठे : 'उसे घर में मत घुसने दो। उसे पीने के लिए पानी तक मत दो!'

दुबारा सिर पर चोटी रखने पर ही नीलकण्ठ घर मे घुस सका। उस दिन से उसकी अंग्रेजी की पढाई भी खत्म हो गई।

मंगलश्शेरी का पद्मनाभ फिर भी प्रतिदिन बैलगाड़ी पर बैठकर स्कूल जाता रहा।

× × ×

जिन दिनों पद्मनाभ पिल्लै मैट्रिक में पढ़ रहा था, उन्ही दिनों मुक्कोणक्करा और आस-पास की जगहों में चेचक की बीमारी फैली। देवी के मंदिर में पूजा-पाठ किये जाने पर भी रोग फैलता ही गया। मंगलश्शेरी मे भी बड़ी धूम-धाम से पूजा की गई।

ग्रामाधिकारी नारायण पिल्लै को चेचक निकल आई। विशेषज्ञों ने मत प्रकट किया कि रोग भयंकर है। नारायण पिल्लै के बुखार से पीड़ित होते ही चारों बच्चों को नाव में चढ़ाकर घर भेज दिया गया। भागीरथी अम्मा और कुञ्ञन वहां स जाने को तैयार नहीं हुए। तीन विशेषज्ञों को सुश्रुषा के लिए नियुक्त किया गया।

नारायण पिल्लै के बीमार पड़ने के चार दिन बाद भागीरथी अम्मा को भी तबियत खराब हो गई। फिर भी कुञ्ञन वही रहा। दोनो का जोवन खतरे मे है और जीवन की चाह हो तो कुञ्ञन वहां से चला जाय, ऐसा उन विशेषज्ञों ने कुञ्ञन को उपदेश दिया। कुञ्ञन ने उसकी परवाह नहीं की।

उसने कहा : 'ऐसा कहकर कुञ्ञन को मत डराओ ! अपने मालिक-मालकिन को छोड़कर मै कही नहीं जाऊंगा।'

बाईसवें दिन कुञ्ञन समझ गया कि नारायण पिल्लै और भागीरथी अम्मा बचेंगे नही। यह समाचार किसी प्रकार अपने पिता के घर रहने वाले बेटे-बेटियों को मालूम हो गया। वे चारों तभी मुक्कोणक्करा जाने के लिए व्याकुल हो उठे, किंतु नारायण पिल्लै की बहन ने उन्हें नहीं जाने दिया। केवल पद्मनाभ पिल्लै उस रोक को तोड़कर वहां से छिपकर भाग गया।

बड़ी रात गये पद्मनाभ पिल्लै मुक्कोणक्करा पहुंचा। मंगलश्शेरी पहुंचने पर देखा कि वहां का फाटक बद था। खटखटाया। कुञ्ञन ने दरवाजा खोला। पद्मनाभ पिल्लै अंदर जाने लगा। कुञ्ञन ने रोका।

'इधर मत आओ।'

'मत आओ !···हट जा कुञ्ञन। मुझे अपने माता-पिता को

देखना है ।'

'अभी मत देखो छोटे मालिक, अभी नहीं देख पाओगे ।'

'मुझे देखना है । मैं देखकर ही मानूंगा ।'—पद्मनाभ पिल्लै ने कुञ्ञन को ढकेलते हुए कहा ।

'मत आओ—मैं कहता हूं, अंदर मत आओ !'

'मैं अंदर आऊँगा । मुझे अपने माता-पिता को देखना है'—पद्मनाभ पिल्लै ने कुञ्ञन को फिर ढकेल दिया ।

कुञ्ञन ने अपने फेंटे से चाकू निकालकर अपनी छाती पर रखते हुए कहा—

'मेरे छोटे मालिक यदि इस घर में घुसे तो मैं यह चाकू अपनी छाती में घुसेड़ लूंगा ।'

पद्मनाभ पिल्लै फाटक के बाहर हो गया । कुञ्ञन ने दरवाजा बंद कर लिया ।

अट्ठाइसवें दिन नारायण पिल्लै स्वर्ग सिधार गए । उन्नीसवें दिन भागीरथी अम्मा का भी स्वर्गवास हो गया ।

× × ×

अपनी बहनों के लिए ज़िन्दगी न्योछावर करने की प्रतिज्ञा करके पद्मनाभ पिल्लै ने बहनों के साथ मंगलश्शेरी में पैर रखे । वह यौवन में प्रवेश कर ही रहा था । इसी समय अनेक गड़बड़ियों से भरे खानदान का सारा भार उसके सिर पर आ पड़ा, किंतु साथ में निःस्वार्थ हाथ बटाने वाले कुञ्ञन को देखकर उसे सांत्वना मिली । खानदान की देख-भाल से अधिक बहनों की उन्नति मे उसका ध्यान था ।

घर में बड़े और अनुभवी व्यक्ति के अभाव मे अनेक लोग वहाँ आने लगे । वकीलों के मुनीम कुमार पिल्लै, गोविन्दन नायर, दस्तावेज-लेखक शंकर पिल्लै आदि मंगलश्शेरी में रोज आने-जाने लगे । ये लोग सहायता करने और उपदेश देने जाते हैं । कभी-कभी रुपया और धान भी पद्मनाभ पिल्लै से माँग ले जाते हैं ।

सहानुभूति प्रकट करने और सहायता देने के लिए पच्चाषी माधव-कुरुप भी मंगलश्शेरी पहुँचा। बाद में कहीं से लौटते समय यों ही चला आया—ऐसा भाव प्रदर्शित करते हुए वे तीन-चार बार वहाँ गये। पद्मनाभ पिल्लै को बहुत-से उपदेश दिये। कमलाक्षी, सरोजिनी और सुमती को बुलाकर प्यार से डाँटा। कभी उपदेश या सहायता की आवश्यकता पड़े तो आदमी भेज देना, वह आ जायगा—ऐसा वादा भी कर दिया। लेकिन पद्मनाभ पिल्लै को माधव कुरुप के उपदेश और सहायता की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए उसने कोई आदमी नहीं भेजा।

पद्मनाभ पिल्लै के पास उपदेश देने के लिए आने वाले लोगों की भीड़ लगी रहती थी। सबके उपदेश देने की मुख्य बात यही थी कि कुञ्ञन को वहाँ से निकाल देना चाहिए। ईषवाओं पर विश्वास नहीं करना चाहिए; कुञ्ञन धोखेबाज है। उत्तर की ज़मीन उसने धोखे से हस्तगत कर ली है, उसी प्रकार सारी भूमि हड़पने की कोशिश में है—उपदेशकों ने एकमत होकर ऐसा अभिप्राय प्रकट किया। पद्मनाभ पिल्लै वह सब सुन लेता। कुञ्ञन कुछ भी देखने-सुनने नहीं जाता। उसके लिए उसके पास समय नहीं था।

एक दिन कुञ्ञन ने पद्मनाभ पिल्लै से कहा—'मक्खियों की तरह भिनभिनाते हुए ये लोग क्यों चले आते हैं, छोटे मालिक ?'

'कुछ मिलने की आशा से, कुञ्ञन। मैं कुछ दे भी देता हूँ।'

'आना भी अच्छा है और देना भी। किन्तु बाद में भगाने पर भी जायँगे नहीं।'

काई बात नहीं कुञ्ञन। फूंकने पर उड़ जायँगे।'

'होशियार रहिए।'

पद्मनाभ पिल्लै कम उम्र के होने पर भी खानदान का इतिहास अच्छी तरह जानने वाले थे, इसलिए उपदेश और सहायता देने का वायदा करते हुए आने वालों से होशियार रहने की आवश्यकता भी वे

जानते थे। कुञ्जन यह अच्छी तरह जानता था कि कितना ही बुद्धिमान और होशियार होने पर भी सुई की जगह फावडा डालने वाले लोग भी है। बहुत दिनों के बाद कुञ्जन ने फिर पूछा :

'अब भी इन मक्खियो को पालते रहेगे तो ..'

'हमेशा सबसे लडकर कैसे जी सकेगे, कुञ्जा ?'

'सबसे लडना ठीक नही कहकर सर्प-सन्ततियो को क्या गोद मे बैठाया जा सकता है ?'

'सर्प-सन्ततियाँ नही है कुञ्जा – ये मक्खियाँ है मक्खियाँ।'

कुञ्जन ने फिर कुछ नही कहा।

माधव कुरुप ने कई बार पद्मनाभ पिल्लै और उनकी बहनो को अपने घर आने के लिए निमत्रण दिया। कुञ्जन ने जाने की अनुमति नही दी। कुञ्जन ने कहा

'छोटे मालिक, वहाँ न जाना ही अच्छा है। झगडा करे तो दबाकर मारेगे, प्यार करे तो चाटकर मारेगे यही है पच्चाषी वालो की आदत।'

'रोज-रोज बुलाये तो क्या किया जाय, कुञ्जा ?'

'स्पष्ट कह देना चाहिए कि नही आ सकते'

'यह मुझसे नही होगा।'

'तो मैं कहूँगा।'

'नही, तुम कुछ मत कहो। तुम्हारे कहने से व्यर्थ मे ही झगडा हो जायगा।'

एक दिन बिना बुलाये ही माधव कुरुप की बहने और उनकी बेटियाँ अतिथि बनकर मगलश्शेरी आईं। पद्मनाभ पिल्लै और बहनो ने उन अतिथियो का खूब आदर-सत्कार किया। जाते समय वे लोग पद्मनाभ पिल्लै और उनकी बहनो को अपने घर आने का औपचारिक निमत्रण देकर वापस चली गई। पद्मनाभ पिल्लै ने सोचा कि इस प्रकार का निमंत्रण पाकर पच्चाषी न जाना बहुत अनुचित होगा। कुञ्जन भी

विरोध करने में असमर्थ हो गया।

अंत में पद्मनाभ पिल्लै और उसकी बहनें पच्चाषी गईं। वहाँ उनका बड़ा आदर-सत्कार हुआ। इस प्रकार धीरे-धीरे पच्चाषी और मंगलश्शेरी की लड़ाई कुछ कम हो गई। आपस में सस्नेह आवागमन साधारण बात हो गई। माधव कुरुप के भांजे नीलकण्ठ कुरुप और दामोदर कुरुप नित्य ही मंगलश्शेरी आने लगे। विलासी कवि अच्युत कुरुप भी कभी-कभी वहाँ आने लगा।

× × +

कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा और सुमती अम्मा ने युवावस्था में पदार्पण किया। अनेक स्थानों से विवाह के प्रस्ताव आने लगे। पद्मनाभ पिल्लै चाहते थे कि बहनों को शक्तिसंपन्न एवं सुयोग्य वर प्राप्त हों। एक दिन माधव कुरुप ने पद्मनाभ पिल्लै से कहा कि मंगलश्शेरी और पच्चाषी का संबंध दृढ़ बनाना है—

'हमारे मामा लोगों के आपस मे लड़ते-झगड़ते रहने के कारण हमारी उन्नति नहीं हुई। यदि हम आपस में मिल-जुलकर रहें तो इस गाँव में कोई सिर उठाने की हिम्मत नहीं करेगा। यदि हममें फूट रहेगी तो वे हमारे सिर पर चढ़ने लगेंगे।'

माधव कुरुप के अनुसार दोनों परिवारों का संबंध जोड़ने का उपाय नीलकण्ठ कुरुप, दामोदर कुरुप और अच्युत कुरुप का कमलाक्षी अम्मा, सुमती अम्मा एवं सरोजिनी अम्मा से विवाह करना था। माधव कुरुप की भांजी देवकी अम्मा का विवाह पद्मनाभ पिल्लै से किया जाय—यह दूसरा निर्देश था।

दोनों परिवारों की मित्रता को दृढ़ बनाने तथा पूर्वजों के आपसी वैमनस्य से दोनों परिवारों की रक्षा करने की इच्छा पद्मनाभ पिल्लै की भी थी। पच्चाषी की देवकी के सुंदर होने के कारण पद्मनाभ पिल्लै उससे संबंध करने को तैयार था किन्तु निकम्मे, पियक्कड़, गैर-जिम्मेवार नीलकण्ठ कुरुप, दामोदर कुरुप तथा बिलकुल आवारा अच्युत कुरुप से

अपनी बहनो का विवाह् करना उसे पसंद नही था। बुद्धिमान माधव कुरुप ने जबरदस्ती भी नही की। उन्होने होशियारी से पद्मनाभ पिल्लै का देवकी अम्मा से विवाह् करना स्वीकार कर लिया।

पद्मनाभ पिल्लै ने विवाह का वचन दे दिया। यह जानन पर कुञ्ञन का चेहरा मुरझा गया। उसने पद्मनाभ पिल्लै से पूछा

'ऐसा करना उचित होगा, छोटे मालिक ? वह···वह···'

'मैंन वचन दे दिया है, कुञ्ञा।'

'वचन दे दिया है तो फिर···'

'मंगलश्शेरी मे कोई भी वचन देकर कभी पीछे नही हटा।'

'मगलश्शेरी मे किसी ने पच्चाषी से विवाह भी नही किया, छोटे मालिक!'

दोनो ने फिर कुछ नही कहा। पद्मनाभ पिल्लै आराम-कुर्सी पर सिर झुकाये बैठे रहे। बाहर सिर झुकाये खडा कुञ्ञन धीरे-धीरे वहां से चला गया।

पद्मनाभ पिल्लै और देवकी अम्मा का विवाह हो गया। अभी तक उस गाँव मे उतनी धूम-धाम से कोई विवाह सम्पन्न नही हुआ था। गाँव के सभी लोगों ने भाग लिया। मगलश्शेरी तथा पच्चाषी वालो के सभी रिश्तेदारो ने इसमे भाग लिया था। शहर के बडे-बडे अफसर और वकील भी आये थे। माधव कुरुप ने विवाह् मे खूब पैसा भी खर्च किया।

विवाहोपरात पद्मनाभ पिल्लै, घर के मालिक, की पत्नी देवकी अम्मा मालकिन बन गई। मालकिन ने शासन करना शुरू कर दिया। पच्चाषी वालो की भाजी, मगलश्शेरी की मालकिन, सुदरी—फिर शासन के विषय मे क्या कहना है! कुञ्ञुकुट्टी अम्मा, कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा, भागीरथी अम्मा आदि उस घर की मालकिने थी, किन्तु बाहर की बैठक मे किसी ने भी प्रवेश करके शासन नही किया था। देवकी अम्मा सदैव बैठक मे बैठती थी। आराम-कुर्सी पर नही बैठती थी, बस इतना

ही ग्रतर था।

पद्मनाभ पिल्लै को यह पसद नही था, लेकिन पत्नी को नियत्रित करने का साहस भी उनमे नही था। देवकी ग्रम्मा ने मंगलश्शेरी की संपूर्ण जमीन ग्रौर खेती-बाडी के संबंध मे पूरी जानकारी हासिल कर ली। ग्रामदनी की भी जानकारी हो गई। खर्च के ऊपर भी नियत्रण करने लगी। कुञ्ञन पर लगाये जाने वाले नियत्रणों का भी निर्देश किया। ग्रपनी ननदो के लिए क्या-क्या जरूरी है, क्या-क्या नही; इसका निश्चय करने का ग्रधिकार भी उन्होंने ग्रपने ऊपर ले लिया।

पद्मनाभ पिल्लै ने कोई विरोध नही किया, किंतु पत्नी का कोई निर्देश काम मे भी नही लाये। देवकी ग्रम्मा की खोज बीन तथा निर्देश सब-कुछ पद्मनाभ पिल्लै से होने के कारण उनकी बहना ग्रौर कुञ्ञन को उनका पता नही चला, किंतु देवकी ग्रम्मा के हमेशा बैठक मे बैठने पर सभी को विरोध था। फिर भी किसी ने विरोध प्रकट नही किया।

इसी बीच देवकी ग्रम्मा ग्रपने भाइयों से ग्रपनी ननदो का विवाह कराने के लिए ग्राग्रह करने लगी। उसके लिए देवकी ग्रम्मा के पास बहुत-से तर्क भी थे :

'मैं ग्रच्छी हूँ, मेरे भाई बुरे है, ऐसा ही है न ग्रापका विचार? यदि ग्राप बहनों का विवाह ग्रन्य पुरुषो से करेंगे तो वे सब यहाँ ग्राकर शासन करने लगेंगे। ग्रभी तक यहाँ ऐसा ही होता ग्राया है न?'

पद्मनाभ पिल्लै ने प्रत्युत्तर दिया . 'इसमे हमे कोई नुकसान तो नही हुग्रा, देवकी!'

'कोई नुकसान नही हुग्रा? गाँव के लोग ग्रापके दुश्मन है न?

'कोई दुश्मन नही है।'

'बन्धु है क्या?'

'दुश्मन नही हैं तो फिर···?'

'जो दुश्मन नहीं हैं, वे सब बंधु हैं क्या, मैं पूछती हूँ?'

'हम लोगों ने किसी को दुश्मन या बंधु बनाने का प्रयत्न नहीं किया है, देवकी। हमें अपने काम से ही मतलब है।'

'उतना काफ़ी नहीं, मैं कहती हूँ। अछूत के हाथ में घर का शासन देना क्या उचित है? गाँव-भर में बहनों से विवाह करने के लिए कोई युवक नहीं है, ऐसा कहकर कहीं से लड़कों को पकड़ लाकर बहनों का विवाह कराना कहाँ का न्याय है?'

इस प्रकार रात-दिन देवकी अम्मा अपना तर्क, आदेश और निर्देश देती रही। परिणामस्वरूप पद्मनाभ पिल्लै का मन बदल गया। वे पत्नी के भाइयों से अपनी बहनों का विवाह कराने के लिए कुछ हद तक सहमत हो गए। देवकी अम्मा ने यह समाचार तुरंत पच्चाषी में पहुँचाया। विवाह निश्चित हो गया, यह समाचार पच्चाषी में फैल भी गया। जितने मुख उतनी ही बातें। बरगद के पेड़ के नीचे इस प्रकार विचार-विमर्श हुआ।

'मंगलश्शेरी मे विवाह की तारीख निश्चित हो गई क्या?'

'तारीख निश्चित हो या न हो, विवाह तो हुआ-जैसा ही है। पहले बहन मंगलश्शेरी जा पहुँची; बाद में भाइयों को भी बुला लिया।'

'सर्वनाश करके छोड़ेंगे।'

'कुञ्ञु कुरुप के समय से ही मंगलश्शेरी परिवार मे विवाह करने का प्रयत्न चल रहा है न?'

'मंगलश्शेरी से विवाह करने का उद्देश्य जानत हैं आप?'

'क्या है?'

'उनकी संपत्ति छीन लेने का!'

'संपत्ति छीनने जायें तो क्या वे चुपचाप दे देगे? कुञ्ञन है वहाँ, जानते हो?'

'पच्चाषी के लोगों के प्रवेश करने पर कुञ्ञन को वहाँ से बाहर ही निकला समझो।'

'पच्चाषी के लोगों के घुस जाने पर, राख का ढेर बनाकर ही निकलेंगे।'

× × ×

पद्मनाभ पिल्लै ने पत्नी को विवाह के विषय पर अर्धसम्मति दे देने पर भी कुञ्ञन और बहनों से कुछ नहीं कहा। एक दिन शाम को दौड़ते आये कुञ्ञन ने पद्मनाभ पिल्लै से पूछा :

'लोग यहाँ के विषय में अफ़वाह उड़ाने लगे हैं, छोटे मालिक।'

'लोग क्या कहते हैं ?'

'पच्चाषी के लड़कों का यहाँ की छोटी मालकिनों के साथ विवाह का निश्चय हुआ है। छोटे मालिक ने इसका वचन भी दे दिया है।'

'वचन न देने पर भी मेरी इच्छा यही है।'

'वह···वह···वह अब···' कुञ्ञन को कहने के लिए शब्द नहीं मिले।

'इसमें दोष क्या है ?'

'दोष क्या है, ऐसा पूछने पर···उसमें दोष-ही-दोष है।'

'वे प्रतिष्ठित परिवार के हैं न, कुञ्ञा ? उनके पास धन-संपत्ति की कोई कमी है ?'

'प्रतिष्ठित लोग हैं; संपत्ति वाले हैं, लेकिन चोरी और गुण्डागर्दी ही उनका मुख्य कार्य है। ऐसे लोगों से लड़कियों का विवाह करा दिया जाय तो···'

'लेकिन मैं देवकी से कह चुका हूँ।'

कुञ्ञन बहुत देर मौन खड़ा रहा। फिर बोला :

'कह दिया है तो···किंतु इस प्रस्ताव को टाल देना ही अच्छा है।'

'अब नहीं टल सकता, कुञ्ञा।'

'नहीं टल सकता है तो···विवाह कर दीजिए।'

'तो कुञ्ञन, बहनों से एक बार पूछकर देखो कि वे विवाह के लिए सहमत हैं या नहीं।'

'जब आप तैयार हैं तो वे कैसे मना करेंगी ?'

'यदि वे मना कर देंगी तो मैं वचन टाल दूंगा।'

कुञ्ञन ने घर के दक्षिणी भाग में जाकर कमलाक्षी अम्मा, सुमती

अम्मा और सरोजिनी अम्मा को बुलाकर सारी बात बताई। बहुत देर तक वे कुछ नहीं बोलीं। अंत में कमलाक्षी अम्मा ने पूछा :

'बड़े भाई ने मंजूर कर लिया ?'

'छोटे मालिक ने वचन दे दिया है, किंतु यदि आप लोग सहमत न हों तो वे वचन टाल देंगे।'

'यह नहीं हो सकता कुञ्ञा—बड़े भाई का वचन टाला नहीं जा सकता। भाई के लिए यह शरम की बात होगी। आप भाई से कह दीजिए कि मैं विवाह के लिए सहमत हूँ।'

सरोजिनी अम्मा ने भी कहा : 'भाई सहमत हैं तो मैं भी सहमत हूँ, कुञ्ञा !'

कुञ्ञन ने फिर सुमती अम्मा से पूछा : 'छोटी मालकिन, आप क्या कहती है ?'

सुमती अम्मा ने अवज्ञा भाव से पूछा : 'अच्युत कुरुप मेरा पति होने वाला है न ?'

'हाँ, ऐसा ही लगता है।'

'मुझे नहीं चाहिए। मैं पच्चाषी के किसी भी व्यक्ति से विवाह नहीं करूँगी।'

कुञ्ञन को संतोष हुआ। फिर भी उसने कहा :

'आपके ऐसा कहने पर छोटे मालिक को वचन टालना पड़ेगा न, छोटी मालकिन ?'

'भाई का वचन बदलना शरम की बात है, लेकिन उससे कहीं अधिक शरम की बात होगी मंगलश्शेरी की लड़की का पच्चाषी के लड़के से विवाह।'

कुञ्ञन प्रसन्नता को नियंत्रित करता हुआ पद्मनाभ पिल्लै के पास पहुँचा। बहनों की बातें सविस्तार उन्हीं के शब्दों में दुहरा दीं। बहुत देर तक सोचने के बाद पद्मनाभ पिल्लै बोले :

'वह—वह बुद्धिमती है।'

'कौन, छोटे मालिक ?'

'सुमती।'

७. टूटे हुए विवाह-सम्बन्ध

विवाह सपन्न हुआ। नीलकण्ठ कुरुप ने कमलाक्षी अम्मा से और दामोदर कुरुप ने सरोजिनी अम्मा से विवाह किया। कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा को वे पच्चाषी नहीं ले गए। नीलकण्ठ कुरुप और दामोदर कुरुप घर के मालिक न होने से उन्हें अपनी पत्नियों को घर में ले जाने का अधिकार नहीं है।

रात मे पच्चाषी से खाना खाकर वे दोनों भाई मंगलश्शेरी आ जाते और सबेरे उठकर चले जाते। इस प्रकार तीन-चार दिन बीत जाने पर पद्मनाभ पिल्लै ने देवकी अम्मा से कहा :

'तुम्हारे भाई सबेरे उठकर कहाँ चले जाते हैं?'

'और फिर क्या करें? खाने के लिए उन्हे घर नही जाना है क्या?'

'यहाँ खाना नही बनता है क्या?'

'हमारे घर में भी खाना बनता है।'

'तुम्हारे घर मे खाना बनने के कारण क्या हमारे यहाँ वे लोग खाना नही खा सकते, देवकी?'

'फिर वे क्या करें? क्या हमारे यहाँ से खाना माँगें? कहने वाले कहें, तभी वे यहाँ रुकेगे।'

'उन बच्चों से यह सब कहने के लिए तू है न?'

'विवाहित लडकियाँ बच्चियाँ है क्या?'

'उनको यह सब मालूम नही है। तू उनसे सब कह दे।'

'मैं कुछ कहूँगी तो वे सब मुँह फुला लेंगी।'

'उनसे कहो कि मैंने कहा है।'

दूसरे दिन से नहाने के बाद नीलकण्ठ कुरुप और दामोदर कुरुप नाश्ता करके जाने लगे। इस प्रकार कुछ दिन के बाद दोपहर का खाना भी वे

मगनश्शेरी मे ही खाने लगे। नहाने और सुबह के नाश्ते के बाद विश्राम करने तक दोपहर के खाने का समय हो जाता। दोपहर के खाने के बाद थोडा आराम करने पर सध्या हो जाती। रात को लौटना है ही। फिर उस समय न जाना ही सुविधाजनक है, इसलिए रात का खाना भी वे मगलश्शेरी मे ही खाने लगे। इस प्रकार पच्चाषी की देवकी अम्मा और उसके भाई मगलश्शेरो मे ही स्थायी रूप से रहने लगे।

कुञ्जन यह सब देखता हुआ चुपचाप अपना काम करता रहा। हमेशा खेती का काम देखते रहने से अन्य कार्यों पर ध्यान देने का समय ही उसके पास नही था। उससे बहुत-से लोग बहुत-कुछ पूछा करते है। उनके द्वारा कही गई बहुत-सी बाते वह सुना भी करता है। पच्चाषी खानदान की अवनति होने पर एक-एक करके सब मंगलश्शेरी मे रहना आरम्भ कर रहे है। मगलश्शेरी खानदान मिट्टी मे मिल जायगा, ऐसा कुछ लोगो का कहना है। दूसरे लोगो का कहना है कि मंगलश्शेरी का ईषवा शासन समाप्त हो गया, अब कुञ्जन को वहाँ से भगा दिया जायगा। कुञ्जन इन बातो पर ध्यान नही देता था। किसी के पूछने पर उत्तर भी नही देता था।

देवकी अम्मा ने धीरे-धीरे शासन मे अपना हाथ डालना शुरू कर दिया। जब पद्मनाभ पिल्लै के माध्यम से कुञ्जन पर अधिकार का प्रयत्न निष्फल हो गया, तब सीधे उसे नियन्त्रित करने का प्रयत्न करने लगी। कुञ्जन फसल कटने के बाद खलिहान मे धान निकाल लेने के बाद ही गल्ला घर पर लाता था। उस वर्ष देवकी अम्मा ने एक नया निर्देश दिया कि फसल कटकर सीधे घर के आँगन मे आनी चाहिए। देवकी अम्मा का तर्क था कि अकेले कुञ्जन से खलिहान मे फ़सल की देख-भाल नही हो पाती। इससे बहुत-सा धान चोरी हो जाता है; इसलिए घर के आँगन में धान निकालने पर चोरी नही हो सकेगी। अन्त मे उसने कहा :

'चोरी में कुञ्ञन को भी हिस्सा मिलता होगा ?'

पद्मनाभ पिल्लै को गुस्सा आ गया, किन्तु उन्होंने कुछ भी नहीं कहा।

कुञ्ञन के आने पर देवकी अम्मा ने कहा :

'कुञ्ञन, फ़सल आँगन में लाकर रखो।'

'ऐसा क्यों ?'

'यहाँ ही दाँय चलाना ठीक है।'

'जब कहने वाले मालिक कहेंगे तो जैसा उचित होगा, वैसा करूँगा।'—कुञ्ञन के स्वर मे विरोध प्रतिध्वनित हो रहा था।

पद्मनाभ पिल्लै ने उसे सुना। उन्होंने कुछ भी नहीं कहा।

फिर एक दिन देवकी अम्मा और सुमती अम्मा में झगडा हो गया। प्रतिवर्ष पद्मनाभ पिल्लै के जन्म-दिन पर मन्दिर में पूजा और गरीबों को भोजन कराया जाता था। दावत भी दी जाती थी। इस वर्ष के जन्म-दिन पर खाना न दिया जाय, देवकी अम्मा ने ऐसा मत प्रकट किया। उन्होंने कहा :

'वे लोग यहाँ का खाना खाकर गाली देते है।'

सुमती अम्मा ने तुरन्त जवाब दिया 'हमारा खाना खाकर अभी तक किसी ने हमें गाली नहीं दी।'

'तुम लोगों ने सुना नहीं होगा।'

'क्या तुमने हमारे बारे मे भला-बुरा कहते सुना है ?'

'सुनने से क्या ? विना सुने ही पता चलता है कि वे लोग भला-बुरा कहते हैं।'

'नहीं-नहीं !—हमारा खाना खाकर अभी तक किसी ने भला-बुरा नहीं कहा; कहेंगे भी नहीं। खाना देने का नाम करने के लिए यदि उन्हें चावल का माँड पीने को दिया जायगा तो वे अवश्य गाली देंगे। हम उन्हें खाना खिलाते समय पेट भरकर खिलाते हैं।

'ओह ! मंगलश्शरी वालों का घमंड पहले ही प्रसिद्ध है न !'

'हम अपने घमंड से अपने घर में ही बैठते हैं।'

देवकी अम्मा को चुप रह जाना पड़ा।

× × ×

सुमती अम्मा के लिए विवाह के प्रस्ताव कई जगह से आये। अन्त में भास्करन नायर से विवाह निश्चित हो गया। विवाह का निश्चय सुमती अम्मा की पूर्ण सहमति से ही किया गया।

भास्करन नायर का घर शहर के बाहर था। सामान्य सांपत्तिक स्थिति वाला नायर परिवार है यह। उस परिवार में पुरुषों की कमी होने से छोटी उम्र में ही वह घर का मालिक बन गया। उस परिश्रमी तथा विनम्र मालिक ने अपने प्रयत्न से परिवार को आर्थिक दृष्टि से ऊपर उठाथा। उसके बाद ही उसने विवाह करने का निश्चय किया।

देवकी अम्मा, नीलकण्ठ कुरुप और दामोदर कुरुप उस विवाह के विरोध मे थे। उस विरोध का प्रमुख कारण ईर्ष्या थी। सुमती अम्मा ने अच्युत कुरुप से विवाह करना अस्वीकार कर दिया था, विरोध का एक कारण यह भी था, किन्तु वह प्रकट नहीं किया। विरोधियों के तर्क थे कि भास्करन नायर घर का मालिक होने के कारण विवाह के बाद पत्नी को अपने घर ले जायगा। वे प्रतिष्ठित परिवार के भी नहीं हैं। कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा निष्पक्ष रहीं।

भास्करन नायर प्रतिष्ठित परिवार का नहीं है, ऐसा कहने वाली देवकी अम्मा को सुनाते हुए कुञ्ञन बुदबुदाया :

'प्रतिष्ठित घराने में विवाह करने से क्या हुआ? जैसा कि किसी ने कहा था, मुझसे आकर मिलने पर और मेरे आकर मिलने पर मुझे कुछ देना—जैसा हो गया न?'

कमलाक्षी अम्मा ने कहा :

'प्रतिष्ठित परिवार का भले न हो। वह अच्छी तरह से रहेगी, यही काफी है। उसको वह बड़े लाड़-प्यार से रखेगा।'

'कम-से-कम वह तो सुख से जी ले'—सरोजिनी अम्मा ने कहा।

देवकी अम्मा और उनके भाइयों की बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। विवाह आमोद-प्रमोद के साथ सम्पन्न हो गया। विवाहोपरान्त जब सुमती अम्मा ससुराल जाने लगी तब आपस में मिलकर वे तीनों सगी बहनें फूट-फूटकर रोईं। पद्मनाभ पिल्लै ने बड़ी कठिनाई से अपने आँसुओं को रोका।

'वह सौभाग्यवती है,' पद्नाभ पिल्लै ने धीमे स्वर मे कहा।

सुमती अम्मा भास्करन नायर के घर की मालकिन बन गई। भास्करन नायर के परिवार के लोग भी मगलश्शेरी-जैसे प्रतिष्ठित परिवार की लड़की पाकर बहुत प्रसन्न थे। भास्करन नायर की बहनों से और उनके बेटे-बेटियों मे प्रेमपूर्ण व्यवहार करने के कारण सुमती अम्मा से प्रसन्न हो सबने प्रेम तथा सम्मानपूर्ण व्यवहार किया।

× × ×

देवकी अम्मा ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे का नाम रवीन्द्रन रखा गया। जब रवीन्द्रन छह महीने का था, तब कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा ने बच्चों को जन्म दिया। कमलाक्षी अम्मा की लड़की का नाम विलासिनी और सरोजिनी अम्मा के लड़के का नाम गोपालकृष्णन रखा गया।

नीलकठ कुरुप और दामोदर कुरुप मंगलश्शेरी में ही स्थिरवासी हो गए। उन्हें अपने घर से केवल साधारण खाना ही मिलता था। एक पैसा भी वहाँ से लेना मुश्किल था। पच्चाषी का सामान्य भोजन बहुत प्रसिद्ध था। अधिक सदस्य होने से चावल और दाल ही वहाँ के भोजन की विशेषता थी। मंगलश्शेरी में तीनों समय बड़ा स्वादिष्ट भोजन बनता था। पतियों के स्वाभिमान की रक्षा करना अपने अभिमान की रक्षा के लिए आवश्यक था, इसलिए नीलकंठ कुरुप और दामोदर कुरुप के स्नान, वस्त्रों आदि आवश्यकताओं को कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा बराबर पूरी करती थीं। पद्मनाभ पिल्लै ने भी उस बात का बड़ा ध्यान रखा। इस प्रकार बहन और भाइयों को वहां

स्थिरवास मिलते देखकर गाँव के लोग तरह-तरह की बातें करने लगे।

नीलकंठ कुरुप और दामोदर कुरुप दोनों पियक्कड थे। पच्चाषी के खेतों से चोरी करके नीलकंठ कुरुप शराब पीने के लिए पैसा प्राप्त करता था। दामोदर कुरुप गाँव के सीमा-विवादों तथा भूमि-अपहरण-सम्बन्धी बातों में दखल देकर शराब पीने का काम चला लेता था, किन्तु निरन्तर अन्न चोरी जाते रहने से पच्चाषी की भूमि खाली होने लगी। नीलकंठ कुरुप को शराब पीने के लिए पैसा मिलने में बाधा पडने लगी। गाँव में झगड़ा कम होने से दामोदर कुरुप को भी शराब पीने में कठिनाई होने लगी। शराबी शराब पिये बिना रह नहीं सकता, इसलिए वे दोनों पैसे के लिए अपनी-अपनी पत्नियों को परेशान करने लगे।

कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा के पास कुछ पैसा था। वह सब उन्होंने अपने-अपने पतियों को शराब पीने के लिए दे-देकर समाप्त कर दिया। फिर और किसी जरूरत के बहाने पद्मनाभ पिल्लै से पैसा लेकर शराब पीने के लिए दे दिया। रोज नई-नई जरूरतें खोजने की कठिनाई से वे पद्मनाभ पिल्लै से पैसा माँगने में असमर्थ हो गई। कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा के लिए पति असहनीय भार बन गए, लेकिन उन्होंने किसी से शिकायत नहीं की। किसी को बताया भी नहीं। वे दोनों एकान्त में बैठकर रोया करती थीं।

बहन के बिना कहे ही पद्मनाभ पिल्लै सब जानते थे, किन्तु वे अनजाने-से बने थे। उन्हें विदित था कि पच्चाषी के कुरुपों से बहनों का विवाह करके उन्होंने पूरे खानदान का और विशेषकर अपनी बहनों का बहुत अधिक अहित किया है। लेकिन घटना तो घटित हो ही गई; बहनें माताएँ भी बन गईं, तब क्या किया जाय ?

कुञ्ञन भी सब-कुछ जानता था। वह भी अनजाने का-सा भाव प्रकट कर रहा था। ऐसे ही अनजाने भाव से रहने का निश्चय वह कर चुका था, किन्तु कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा को रोते देख-

कर वह पास जाकर कहना :

'छोटी मालकिनों के इस तरह रोने से उस खानदान का सर्वनाश हो जायगा न ?'

'रोने के अलावा और हम क्या करें, कुञ्ञन ?'

'क्या करो ? मैं बताता हूँ, क्या करना है। यहाँ से भाग जाने को कहो।'

'ऐसा कहना उचित है क्या, कुञ्ञन ? मंगलश्शेरी की स्त्रियों ने अभी तक अपने पतियों से बाहर निकल जाने को नहीं कहा है।'

'ठीक है, छोटी मालकिन। मंगलश्शेरी की स्त्रियां अपने पतियों को देवता मानती थी, किन्तु उन मालकिनों के पति पच्चाषी के नहीं थे। स्वर्गवासी मालिक और मालकिन ने कहा था कि पच्चाषी के लोगों को मंगलश्शेरी में पैर मत रखने देना।'

'ऐसा सब हो गया, अब क्या किया जाय ?'

'मैं पहले ही बता चुका हूँ कि क्या करना है। उनसे यहाँ से चले जाने को कहिए।'

'चले जाने को कहने पर...'

'ऐसा कहने पर चले जायँगे। यदि नहीं गये तो भगा दूंगा।'

'भाई साहब को ही कहना चाहिए न ?'

'मैं पूछता हूँ कि यदि मालिक न कहें तो छोटी मालकिन बिना कहे रह सकती हैं क्या ?'

'सिर के होने पर दुम हिलाना क्या उचित है कुञ्ञन ?'

'यदि सिर और पूंछ दोनों न हिलें तो...'

इस प्रकार उनकी यह बातचीत समाप्त हो जाती थी। देवकी अम्मा किसी की परवाह नहीं करती थी। उसके भाई जो कुछ मांगते हैं, उसे देना मंगलश्शेरी की जिम्मेदारी है, ऐसा विचार था देवकी अम्मा का।

× × ×

कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा ने फिर एक-एक बच्चे को

जन्म दिया। कमलाक्षी अम्मा की बेटी को नन्दिनी और सरोजिनी अम्मा के बेटे को राजशेखरन नाम दिया गया। पहले की तरह इस बार भी नीलकठ कुरुप और दामोदर कुरुप ने उनके प्रसव के बाद की सेवा-सुश्रूषा के लिए कुछ भी नही दिया। 'मरुमकत्तायम' वालो मे प्रसव-सुश्रूषा के लिए कुछ न देना बडे शर्म की बात है, इसलिए बहनो की सेवा-सुश्रूषा के लिए पतियो ने कुछ नही दिया, इसे किसी को न बताने का विशेष प्रबध पद्मनाभ पिल्लै ने किया था। उन्होने बहनो की सेवा-सुश्रूषा का बडा ध्यान भी रखा।

लेकिन अपनी परिस्थिति को छिपाने के लिए देवकी अम्मा ने कहा 'सेवा-सुश्रूषा के लिए कुछ न देने पर भी पच्चार्षी की सतान का सगनश्शेरी मे पैदा होना उनके लिए गर्व की बात नही है क्या ?'

पूरा कह चुकने के पहले ही पद्मनाभ पिल्लै ने उसे डॉट दिया। थोडी दूर पर खडे कुञ्ञन ने यह सुनते ही घृणा से जमीन पर थूक दिया।

प्रसूति-गृह मे सरोजिनी अम्मा और कमलाक्षी अम्मा किसी के जाने बिना खूब रोईं। भाई के द्वारा सिर पर रखे गए पाप के बोझ को वे मौन होकर ढो रही थी।

नीलकठ कुरुप और दामोदर कुरुप दोनो ने देवकी अम्मा के वाक्यो को दोहराया। किंतु पद्मनाभ पिल्लै और कुञ्ञन को सुनाकर वे नही कहते थे। चोट मे चूना लगाने की तरह उनकी बातो को सुनकर कमलाक्षी अम्मा क्रोध से देखती थी और सरोजिनी अम्मा दाँत पीसती थी।

शराब पीने के लिए पैसा लेने को नीलकठ कुरुप और दामोदर कुरुप अपनी पत्नियो को सताने लगे। पत्नियो के गहने चुराकर बेचकर या गिरवी रखकर शराब पी डाली। सब जानते हुए भी कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा कुछ भी नही कहती थी। वे एकान्त मे रोती थी। घर मे झगडा न किया जाय, पद्मनाभ की इज्जत मे बट्टा न लगाया जाय, यही वे चाहती थी। पत्नियो के इस प्रकार के अपमान के भय से दोनो पति लाभ उठाते थे। शराब पीने के लिए पैसा न मिलने

पर वे कोई-न-कोई बहाना निकालकर पत्नियों से झगडा करते थे।

'एक दिन कुञ्ञन ने खर्च के लिए धान लाकर रसोई के बरामदे मे रखा। दामोदर कुरुप ने उस धान को एक मजदूर के द्वारा बेचकर शराब पी ली। पता चल जाने पर भी सब अनजान ही बने रहे। दूसरे दिन सरोजिनी अम्मा ने कुञ्ञन से कहा :

'कुञ्ञा, बखारी से धान निकाल लाओ।'

'कल ही तो धान लाया था' फिर इतनी जल्दी क्या आवश्यकता आ पड़ी ?

यह सुनकर दामोदर कुरुप चिल्लाया :

'क्यों और किसलिए, यह सब पूछने वाला तू कौन है ?'

कुञ्ञन ने बड़ी कठिनाई से अपने क्रोध को दबाकर किंचित् परिहास करते हुए पूछा :

'जानना जरूरी है ? बहुत जरूरी हो···तो— जानने का हठ न करना ही ठीक है न ?'

'क्यो रे चमार तुझे इतना घमण्ड !'

'इस खानदान मे बडे-बडे मालिक-मालकिन थे। उन्होने कभी चमार शब्द का प्रयोग नही किया था। अब यदि पेट भरने के लिए आने वाले 'चमार या कुत्ता' शब्द का प्रयोग करे तो······'

'क्या कहा रे !'—दामोदर कुरुप हाथ बढाता हुए कुञ्ञन की ओर बढ़ा।

'हाय रे !' रोते हुए कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा दोनो ने दामोदर कुरुप को पकड लिया।

'कुञ्ञा, कुञ्ञन यहाँ से जाओ !' सरोजिनी अम्मा ने कहा।

कुञ्ञन ने क्रोध को नियंत्रित करते हुए कहा :

'धान अभी लिये आता हूँ छोटी मालकिन !'

आवाज सुनकर वहाँ आई हुई देवकी अम्मा ने कहा :

'दूर रहने योग्य 'चमार' को बुलाकर घर का शासक बना देने पर

यह इससे भी अधिक कहेगा।'

जाते-जाते कुञ्ञन ने कहा :

'उधर छोटे मालिक बैठे हैं, नहीं तो उत्तर दे देता।'

लेकिन कमलाक्षी अम्मा ने उसका उत्तर दे दिया :

'चमार' को बुलाकर घर में रखा और शासक बनाया, यह हमने अपनी पसन्द से किया।'

'हमारे लिए यह शर्म की बात है'—देवकी अम्मा ने प्रत्युत्तर दिया।

'जिनको शर्म हो वे यहां से चले जायें।'

किसी ने भी यह नहीं सोचा था कि कमलाक्षी अम्मा धीरता से इतनी बड़ी बात कह देंगी। कभी-कभी हरिणी भी शेरनी बन जाती है।

× × ×

प्रति वर्ष सुनार बुलाकर गहने दुबारा बनवाने का रिवाज मंगलश्शेरी में था। उस वर्ष भी सुनार बुलाया गया। देवकी अम्मा दुबारा बनवाने के लिए अपने गहने निकाल लाई। पद्मनाभ पिल्लै ने देवकी अम्मा से कहा :

'कमलाक्षी और सरोजिनी से भी गहने लाने को कहो।'

'खुद बुलाकर क्यों नहीं कहते ?'

'तेरे कहने में क्या दोष है ?'

'मेरा कहना वे नहीं मानतीं।'

'न मानने का कोई कारण तो होगा ?'

'यह उन्हीं से पूछिए।'

दक्षिणी भाग के बरामदे में खांसने की आवाज सुनाई पड़ी। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा :

'कौन है ?'

'मैं हूँ।'

'कमलाक्षी ?'

'जा, हाँ।'

'अपने और सरोजिनी के गहने ले आओ।'

'हमारे गहने यहाँ नहीं है।'

'कहाँ चले गए ?'

कोई उत्तर नहीं।

'कौन ले गया ?'

जवाब नहीं। केवल एक दीर्घ नि:श्वास !

'मेरी बच्चियो, मैंने तुम्हारा सर्वनाश कर डाला ?' कहते हुए पद्मनाभ पिल्लै का गला रुँध गया।

वे अपनी बहनों को बच्चियाँ ही कहते थे। उनके विवाहित हो जाने पर, यहाँ तक कि माँ बन जाने पर भी पद्मनाभ पिल्लै के लिए वे बच्चियाँ ही हैं।

उन्होंने बहनों को नये गहने बनवाकर दिये। आभूषणों को उनके हाथ में देते हुए उन्होंने कहा :

'ये अब किसी को मत देना।'

'भैया' हम देती नहीं हैं, वे ले जाते हैं।'

'अब कभी ले जायें तो मुझसे कहना।'

बहुत दिन बीत गए। एक दिन जब नीलकंठ कुरुप गहने की पेटी खोलने लगा तब कमलाक्षी अम्मा ने उसका हाथ पकड़ लिया। कुरुप कमलाक्षी को धक्का देकर पेटी से दो कंगन और एक हार निकालकर बाहर भाग गया। कमलाक्षी अम्मा जोर-जोर से चिल्लाने लगीं।

अंदर से बाहर को भागा हुआ कुरुप कुञ्ञन की जबरदस्त पकड़ में फंस गया। कुरुप जोर से चिल्लाया :

'हाथ छोड़ दे, चमार !'

'यहीं खड़ा रह बे !' कुञ्ञन ने कसकर पकड़ते हुए कहा।

कमलाक्षी अम्मा ने जोर से चिल्लाकर कहा : 'कंगन और माला मत ले जान देना कुञ्ञा, मत ले जान देना।'

कुञ्जन ने जबरदस्ती कुरुप के हाथों मे गहने छीन लिए। कुरुप ने कुञ्जन के माथे पर जोर मे वार किया। कुञ्जन सुध-बुध भूल गया। उसने भी एक जोर का घूँसा कुरुप की छाती पर मारा! कुरुप चारों खाने चित्त होकर गिर पडा।

कोलाहल सुनकर सब लोग तुरन्त वहाँ एकत्र हो गए। पद्मनाभ पिल्लै ने शात भाव से हाथ पकडकर नीलकंठ कुरुप को खडा कर दिया।

'मेरे बडे भाई को चमार से पिटवाकर ...' कहता हुआ दामोदर कुरुप एक गडासा लेकर सामने आ झपटा। गडासा ऊपर उठाकर उसने पद्मनाभ पिल्लै की ओर चलाया। पदमनाभ पिल्लै के बडे हाथों ने बिजली का काम किया। गडासे के साथ दामोदर कुरुप मुख के बल पृथ्वी पर गिर पडा। पद्मनाभ पिल्लै ने कडकती हुई आवाज मे कहा :

जाओ—दोनो भाई निकल जाओ यहाँ से। आज से फिर कभी इस घर मे कदम मत रखना।'

'इस खानदान को मिट्टी मे मिलाकर ही हम लोग यहा आयँगे' कहता हुआ नीलकठ कुरुप फाटक की ओर चला गया।

'करके दिखा दूंगा—करके दिखा दूंगा!' कहता हुआ दामोदर कुरुप अपने बडे भाई के पीछे-पीछे चला गया।

रसोईघर का खम्भा पकडकर खडी हुई देवकी अम्मा बोली :

'अब आगे--'

'जाना हो तो तू भी चली जा—' पदमनाभ पिल्लै ने आज्ञा दी।

'मैं ऐसे नही जाने वाली हूँ। खूब सोचने के बाद ही जाऊँगी।'

'तो खूब सोचने के बाद ही जाना।'

'यह घर की सामर्थ्य है क्या ?'

'जिसके घर मे सामर्थ्य होगी, उसका ही गाँव मे सम्मान होगा।'

बात यहीं पर खत्म हो गई। कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा ने चैन की साँस ली। दोनों देवकी अम्मा के घमण्ड का खुल्लम-

खुल्ला विरोध करने लगीं। एक सप्ताह बीत जाने पर देवकी अम्मा ने अपने घर जाने की इच्छा प्रकट की। पद्मनाभ पिल्लै ने अनुमति देते हुए कहा :

'तू जिस प्रकार आई थी उसी प्रकार जाना। जो-जो सामान लाई थी, वह सब अपने साथ लेती जाना।'

'मुझे जो कुछ दिया गया था, वह सब मैं लेती जाऊँगी।'

'अपने बेटे को मैं नहीं ले जाने दूंगा।'

'वह मेरा बेटा है। पच्चाषी का बेटा है।'

'तू उसे पच्चाषी से तो लाई नहीं थी।'

'मैं पच्चाषी की हूं तो मेरा बेटा भी पच्चाषी का है। उसे लेकर ही मैं जाऊँगी।'

पद्मनाभ पिल्लै ने अनुमति दे दी। वह रवीन्द्र को लेकर आगे-आगे और देवकी अम्मा बहुत पीछे-पीछे चल दी। पच्चाषी के मुख्य द्वार पर पहुँचने पर पद्मनाभ पिल्लै खड़े हो गए। देवकी अम्मा रवीन्द्र को पति की गोद से जोर से खींचती हुई अंदर चली गई। आँखें पोंछकर पद्मनाभ पिल्लै अपने घर वापस आ गए।

× × ×

कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा के दो-दो बच्चों की माता बन जाने पर भी उनकी जवानी में कोई कमी नहीं आई थी, इसलिए उनसे विवाह करने के लिए प्रस्ताव आ रहे थे। किसी तरह मंगलश्शेरी में पहुँचने के लिए लालायित लोग भी उनमें थे। पहले की तरह धोखा न हो जाय, इसलिए पद्मनाभ पिल्लै ने विवाहों के इन प्रस्तावों पर बड़ी सतर्कता से विचार किया।

कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा दोनों ने दूसरा विवाह न करने का निश्चय कर लिया था। 'गरम पानी में जली हुई बिल्ली' की तरह वे लोग पतियों से डर गई थीं। उन लोगों ने कुञ्ञन द्वारा भाई के पास कहला भेजा कि यदि भाई को हम लोगों से सच्चा प्रेम है तो

हमारे विवाह की चर्चा न चलायें। कुञ्ञन ने वह प्रार्थना पद्मनाभ पिल्लै को समझा दी। पद्मनाभ पिल्लै ने स्वयं स्वीकार किया कि उसने अपनी बहनों के साथ अपरिहार्य अपराध किया है। अपनी भीगी पलकों को उन्होंने पोंछ लिया।

कञ्ञन अपने मालिक से दूसरा विवाह करने का हठ कर रहा था। पद्मनाभ पिल्लै को पतियों से विहीन बहनों को देखकर विवाह करना पसंद नहीं था। किंतु उनकी फुफेरी बहन दाक्षायणी अम्मा से विवाह करने के लिए कुञ्ञन बार-बार मालिक से कहने लगा। कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा दोनों इससे पूर्ण रूप से सहमत थी।

अपने बेटे से भांजी का विवाह करने की नारायण पिल्लै ताल्लुके-दार की इच्छा थी। उनकी बहन जब मंगलश्शेरी आती थी तो अपनी बेटी दाक्षायणी को अवश्य साथ लाती थी। दोनों भाई-बहन अपने बेटे बेटी के विवाह की चर्चा आपस में करते थे। यह सब बातें कुञ्ञन जानता था।

बड़ी हो जाने पर दाक्षायणी अम्मा भी पद्मनाभ पिल्लै की पत्नी बनना चाहती थी। पद्मनाभ पिल्लै का विवाह देवकी अम्मा से हो जाने पर वह निराश हो गई थी। फिर वह देवी-पूजा, व्रत-उपवास रखना, पूजा-पाठ करना आदि मे अपना समय व्यतीत करने लगी।

एक दिन कुञ्ञन ने पद्मनाभ पिल्लै से कहा :

'अब देर मत कीजिए। उस छोटी मालकिन को यहां ले आइए।'

'अब उसे बुलाना क्या ठीक है कुञ्ञा ? यदि उसने अस्वीकार कर दिया तो ?'

'यदि आप बुलायेंगे तो ! वे अब तक आपकी ही माला जपती हुई अविवाहित बैठी हैं। आपके वहां पहुंचने पर सब सहमत हो जायेंगे।'

पद्मनाभ पिल्लै पिता के घर गये। बुरा-भला कहने के बाद आपस में सस्नेह वार्तालाप हुआ। बिना किसी आडम्बर के पद्मनाभ पिल्लै और

दाक्षायणी अम्मा का विवाह हो गया। पद्मनाभ पिल्लै दाक्षायणी अम्मा को मंगलश्शेरी ले भी आये।

× × ×

सुमती अम्मा पति के घर की मालकिन है। पति के साहसी और परिश्रमी होने के कारण उस खानदान की दिन दूनी रात चौगुनी अभिवृद्धि हो रही थी। सुमती अम्मा पूर्ण संतुष्ट थी।

भास्करन नायर की दो बहनें थी। उनके बेटे-बेटियाँ भी थे। वे सब सुमती अम्मा को बहुत चाहते थे। बुद्धिमती होने के कारण सुमती अम्मा ने उस स्नेह और आदर का दुरुपयोग भी नहीं किया। उसने दो बच्चों को जन्म दिया। बड़ा था रामचन्द्रन और छोटी वसुमती।

जब मुक्कोणक्करा का उत्सव मनाया जाता था तब भास्करन नायर अपनी पत्नी तथा बच्चो के साथ मंगलश्शेरी आया करता था। भास्करन नायर के गाँव के मन्दिर में उत्सव होने पर कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा भी अपने बच्चों के साथ वहाँ जाती थी। इसी बीच मंगलश्शेरी और पच्चापी का आपस में सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। इस घटना से सुमती अम्मा को बहुत दुःख हुआ।

इस बार गाँव के लोगों ने बडी धूमधाम से उत्सव मनाने का निश्चय किया। शास्ता के मन्दिर का प्रधान कार्यक्रम आतिशबाज़ी का था। उस वर्ष आतिशबाज़ी के प्रबन्ध का भार भास्करन नायर ने अपने ऊपर लिया था। गाँव के लोगो के द्वारा दिये गए रुपयों के अलावा भास्करन नायर ने अपने पास से अच्छी-खासी रकम खर्च करने का निश्चय किया; उस वर्ष की आतिशबाजी के बारे में पहले से ही प्रसिद्धि होने लगी। दूर-दूर के लोग केवल आतिशबाज़ी देखने के लिए एकत्रित हुए थे।

मंगलश्शेरी से कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा तथा उनके बच्चे, पद्मनाभ पिल्ल और दाक्षायणी अम्मा पहले से ही भास्करन नायर के घर पहुँच गए थे। जिस नाव में वे आये थे, वह घर के घाट में ही

बाँधी गई।

उत्सव देखने के लिए सब एक साथ मन्दिर में गये। अपनी प्रतिष्ठा के अनुसार सभी लोग उचित स्थानों पर बैठे। सजे हुए सात हाथियों के साथ जुलूस के मन्दिर में पहुँचने तक रात के तीन प्रहर बीत चुके थे। बाजे बन्द कर दिए गए। आतिशबाजी शुरू हो गई। दर्शक चुपचाप अद्‌भुत और आह्लाद से देखने लगे।

कई तरह की आतिशबाजी जलाई गई। फुलझड़ी आदि अनेक कार्यक्रम समाप्त हो गए। सात दनाके के साथ फटकर स्वागत करने वाले 'बाण' को देखने के लिए लोग प्रतीक्षा कर रहे थे। दनाके की आवाज के साथ एक गोला आसमान में उड़ गया और वहाँ फिर दनाके से उसके फटने पर अनेक नक्षत्र फूटकर फैले और नीचे गिर गए। जमीन पर गोला दगने की आवाज करते हुए वह गोला फिर आकाश में जा फटा। नक्षत्रों को नीचे गिराकर फिर ऊपर फटा, जिससे नक्षत्र फैल गए। इस प्रकार तीन-चार, पाँच-छह बार फूटने वाले गोले दागे गए।

सातवाँ बाण सात बार फटेगा। सातवीं बार फटने पर स्वागत आकाश में व्यक्त दीख पड़ेगा। उसको देखने के लिए सब उत्सुकता से खड़े थे।

जमीन पर भयंकर शब्द के साथ एक विस्फोट हुआ। माया-गोला ऊपर नहीं उठा। जिस तरफ विस्फोट हुआ, उधर से चीखने-चिल्लाने की आवाज आई। दर्शक घबड़ाकर खड़े हो गए। चीखने की आवाज मर्मान्तक वेदना में परिवर्तित हो गई। एक 'मेहताब' की रोशनी फैल गई। लोग कुछ आदमियों को घटना-स्थल से उठाकर ले जा रहे हैं। सभी के मन में घटना की वास्तविकता जानने की उत्कंठा बढ़ गई। सब आपस में फुसफुसा रहे थे।

'भास्करन नायर घायल हो गया है'—किसी ने कहा।

घटना-स्थल से एक करुण-क्रन्दन उस वातावरण में व्याप्त हो गया।

गाड़े हुए 'बाण' में जब आग लगाई गई तो वह ऊपर जाने के

पहले ज़मीन पर ही फूट गया। भास्करन नायर और दो अन्य लोगों को चोट आई। तीनों को गाड़ी में बैठाकर अस्पताल पहुंचाया गया। बेहोश सुमती अम्मा को उठाकर घर ले गए।

दूसरे दिन दोपहर को भास्करन नायर का शव घर लाया गया। संध्या को शोक-मूक लोगों के समूह के सान्निध्य में शव-संस्कार किया गया।

मालिक के शव को चिता में रखते ही पत्नी और बच्चों को फाटक के बाहर निकल जाना चाहिए। भास्करन नायर के क्रिया-कर्म के पश्चात् कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा सुमती अम्मा को उठाकर मंगलश्शेरी लिवा लाईं। पद्मनाभ पिल्लै ने रामचन्द्र का हाथ पकड़ा और दाक्षायणी ने वसुमती को गोद में ले लिया। देखने वाले फूट-फूटकर रो पड़े।

वे लोग नाव पर चढ़ गए। नाव धीरे-धीरे आगे बढ़ी। श्मशान में चिता से ऊपर उठने वाले दुर्गंधयुक्त धुएँ की पर्तों ने चन्द्रबिंब को छिपा लिया।

८. मरने वाले मनुष्य हैं न ?

मातृ-सत्ता वाले खानदानों मे विवाह करना और उससे छुटकारा पाना दोनों ही कपड़े बदलने के समान साधारण बात थी, किन्तु मंगल-श्शेरी में वह साधारण बात कभी नही थी। तीन पीढ़ियों से विवाह करने वाले स्थिर रूप से वही रहकर उस खानदान की उन्नति के लिए प्रयत्न करते रहे। इसके विरुद्ध था, पद्मनाभ पिल्लै और उनकी बहनों का विवाह। इसके उत्तरदायी केवल पद्मनाभ पिल्लै ही थे। कहावत है, 'गोरे बनने चले तो सफेद दाग बन गया' उसी प्रकार बहनो और खानदान की भलाई के लिए किये गए कार्य से खानदान की बुराई हुई। इसी बीच सुमती अम्मा के पति का भी देहान्त हो गया।

तीन पतिहीन बहनें और छः पितृहीन बच्चे ही मंगलश्शेरी कुटुब के सदस्य रह गये। पति और पिता हो तो भी खानदान के सदस्यो का भरण-पोषण, खानदान के मालिक का कर्त्तव्य है। फिर भी पति और पिता का न होना बहुत बड़ी कमी है, लेकिन कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा ने पतियो के घर से निकल जाने पर प्रसन्नता का ही अनुभव किया। किन्तु भास्करन नायर की मृत्यु ने सारे परिवार को दुःख-समुद्र मे डुबो दिया।

कई दुर्भाग्यो के बीच मंगलश्शेरी मे दाक्षायणी अम्मा का प्रवेश सौभाग्य की बात थी। वह स्वभाव से शांत और प्रेममयी थीं। जहाँ तक उनका सबंध है, मंगलश्शेरी खानदान मातृप्रधान रीति से केवल पति का घर ही नही —मामा के बच्चो का भी घर था। उस घर की धन-सम्पत्ति में उनका कोई अधिकार नहीं था। लेकिन धन- सम्पत्ति उनके लिए कोई समस्या नहीं थी, खोई हुई चीज उसे प्राप्त हो जाने पर वह पूर्ण रूप से प्रसन्न थी।

चाहे मातृ-सत्ता वाला खानदान हो या पितृ-सत्ता वाला, मामी सदैव

सिरदर्द पहुँचाने वाली एक समस्या है। किसी दूसरे घर से आई स्त्री मालिक की पत्नी होने से मालकिन बनना और खानदान के लोग नही सहन करते थे। मालकिन के अधिकार को यदि घर के लोग न माने तो मामी उसे सहन नही करती थी। इस प्रकार की स्पर्द्धा और उससे हुए झगडे मातृ-प्रधान खानदानो मे होते ही रहते थे, किन्तु उसमे भिन्न प्रकार की मामियाँ भी थी। ऐसी ही भिन्न प्रकृति की मामी थी दाक्षायणी अम्मा। वे अधिकार नही चाहती थी बल्कि प्यार और शान्ति चाहती थी।

जब लड़कियाँ सयानी हो जाती थी, तब उनके लिए मामाजी और बड़े भाइयो के सामने न जाने का अलिखित नियम था। इस नियम मे कुछ गुण और कुछ दोष थे। सन्देह की जान वाली लैंगिक गड़बडी नही होगी, यह इस नियम का गुण था। किसी को कोई शिकायत हो तो सीधे मालिक से कहना सम्भव नही था, यही दोष था। मालिक के पास स्त्रियो की किसी तरह की शिकायत पहुँचाना मामी अथवा मालिक की माताजी का काम था। साधारण रूप से घर मे झगडा पैदा करने के लिए मालकिने इस अवसर से लाभ उठाती थी। पद्मनाभ पिल्लै की पहली पत्नी देवकी अम्मा ने मालकिन का पद पूर्ण रूप से अपनाया था, किन्तु दाक्षायणी अम्मा बिलकुल विपरीत थी। घर की सारी समस्या पति से कहना और पति का उत्तर घर की स्त्रियों से कहने मे दाक्षायणी अम्मा स्नेह की रीति का पालन करती थी।

इसी अवसर पर गाँव मे बाढ आ गई। बाढ और उसके बाद का अकाल समाप्त हो गया। जिन्दगी पुराने ढर्रे पर चलने लगी।

× × ×

दक्षिणी भाग की जमीन पर हल चलाकर कुञ्ञु ने दूसरी बार कन्द-मूल की खेती की। इधर-उधर दो-तीन नारियल के पेड भी लगा दिए। जो घर वहाँ टूटा पडा था, उसकी लकडियाँ एकत्रित करके सारा ने

खाना बनाने के काम में लगा दीं। एक दिन कुञ्जन न यह सब-कुछ देखा। उसे वह सब पसन्द नहीं आया। उसने नाराज होकर पूछा :
'यह तुमने क्या किया यहाँ पर ? क्या किसी से पूछने की जरूरत नहीं है ?'

कुञ्जुवरीत नम्रता से बोला :

'कुञ्जन तडार, ऐसा क्यों कह रहे हो ? हमने कौन-सी गलती की है ?'

यहाँ एक झोपड़ी बनाकर रहने की अनुमति दी गई है तो तू यहाँ मनमानी क्यों कर रहा है ? किससे पूछकर यहाँ तुमने कन्द-मूल की खेती की है ? नारियल के पेड़ लगाने के लिए तुमसे किसने कहा ?'

'झाड़ी में जहरीले साँप-ही-साँप थे। हमारे दो बच्चे हैं, उन्हें बाँधकर रख सकते है क्या ? बच्चो के इधर-उधर भागते समय कहीं साँप न काट लें इसलिए झाड़ी काट दी। झाड़ी काटकर सोचा कि चार-पाँच कन्द-मूल के पेड़ लगा दूँ।'

'नारियल के पेड़ लगाने को किसने कहा था ?'

'नारियल का पौधा बढ़कर जब पेड़ बन जायगा तब क्या मैं तोड़ ले जाऊँगा, कुञ्जन तण्डार ?'

सारा ने कुञ्जुवरीत पर दोष लगाया :

'मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि कुञ्जन तण्डार से पूछकर ही नारियल के पेड़ लगाओ।'

'यह कैसे री ? इनसे मिल पाता तब न। हजारों काम है, एक जगह रह नहीं पाता, तब मैं इन्हें कहाँ ढूंढ़ता ?'

'तूने छोटे मालिक से अनुमति क्यों नहीं माँगी ?'

'यह क्या कहते हो, कुञ्जन तंडार ? इतनी छोटी-छोटी बातें मालिक से मैं कैसे पूछता ?'

'छोटी-सी बात ही बाद में बड़ी बन जाती है।'

'आगे से पूछकर ही करूँगा, कुञ्जन तंडार !'

मारा ने कहा :

'कुञ्जन तंडार ने हमारी सहायता की थी। आगे भी हमारी सहायता कीजिएगा।'

कुञ्जन ने दृढ़ स्वर में कहा :

'मैं किसी की सहायता नहीं कर सकता। वकील के पास जाकर पूछना चाहिए। फिर मैं एक बात बताये देता हूँ। उँगली पकड़कर पोहचा पकड़ने की आदत छोड़ दो। दूसरे को बेवकूफ मत समझो।'

कुञ्जन के जाने पर मारा ने कहा :

'यह बड़ा चालाक है। वहाँ जाकर एक की चार कहेगा।'

'ओह ! कोई बात नहीं।'

उस वर्ष कन्द-मूल बेचकर कुञ्जुवरीत ने एक सौ छत्तीस रुपये कमाये। उसके पास चिट से मिले सौ रुपये भी थे। कुल मिलाकर दो सौ छत्तीस रुपये की पुड़िया लेकर कुञ्जुवरीत मंगलश्शेरी में पहुँचा।

पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'क्या बात है कुञ्जुवरीत ?'

कुञ्जुवरीत ने दूर से रुपयों की पुड़िया उनके आगे रख दी।

'क्या रुपये हैं कुञ्जुवरीत ?'

'जी हाँ।'

'कितने हैं ?'

'दो सौ छत्तीस होंगे।'

पद्मनाभ पिल्लै ने रुपयों की पुड़िया हाथ में उठा ली। उस दिन उन्हें रुपयों की ज़रूरत भी थी। उन्हें मिलने वाले रुपये मिलने में चार-पाँच दिन लग जायँगे। इसी चिन्ता में बैठे थे, उसी समय कुञ्जुवरीत की कागज की पुड़िया सामने आई।

'इसे यहाँ रख लूँगा।'

कुञ्जुवरीत कुछ कहने के भाव से सिर खुजलाने लगा।

—'क्या कुछ कहना है ?'

जी हाँ।'

'तो कहो।'

'उस जगह पर चार-पाँच नारियल के पौधे लग जाने तो ..'

'उपजाऊ मिट्टी है, नारियल का पौधा वहाँ खूब बढ़ेगा ।'

'मेरे मालिक ने भी पौधा दे देने को कहा है ।'

'किसने ? माम्मन ने ? लाकर लगा दो । लगता है कि गर्मी में सोचना पड़ेगा ।'

'सींचने के लिए पत्नी और बच्चे हैं···फिर···'

'फिर क्या ?'

'आदमी का जीवन पर कुछ भरोसा नहीं ।'

हाँ, सभी मरेंगे । उसके लिए क्या करना है ?'

'एक कागज पर लिखकर दे देते तो···'

'यहाँ दिये गए रुपयों के लिए लिखना है क्या ?'

'जरूरी नहीं है । फिर भी मनुष्य की जिन्दगी का क्या भरोसा ? यही सोचकर ।'

'अब तक कुल मिलाकर कितना रुपया दिया है ?'

'लगता है चार सौ छत्तीस होंगे ।'

'कल रसीदी टिकट लेकर आ जाओ, मैं लिख दूँगा ।

दूसरे दिन कुञ्जुवरीत टिकट लेकर वहाँ पहुँचा । जब पद्मनाभ पिल्लै ने लिखना शुरू किया तब कुञ्जुवरीत ने कहा :

'मेरे मालिक ने कहा था कि रुपया देने पर ब्याज लेंगे । बड़े मालिक से कुञ्जुवरीत ब्याज ले तो···'

'कुञ्जुवरीत ब्याज चाहता है तो दूँगा ।'

'नहीं-नहीं । फिर कागज पर लिखने से हिसाब ठीक रहेगा । चार सौ पैंतीस लिखने से···'

'पाँच सौ लिखना है क्या ?'

'वह एक हिसाब होगा वैसा सोचकर ।'

पद्मनाभ पिल्लै ने पाँच सौ रुपये की रसीद लिखकर और हस्ताक्षर करके कुञ्जुवरीत को दे दी । उसे लेकर कुञ्जुवरीत चला गया ।

कुञ्ञुवरीन ने घर आकर पूरी जमीन पर नारियल के पेड लगा दिए, बचे हुए भाग मे कद-मूल भी।

कुञ्ञन को यह सब देखकर क्रोध आ गया। उसने कुञ्ञुवरीत से पूछा : 'तुझसे किसने कहा यहाँ नारियल के पेड लगाने को ? तेरे बाप की जमीन है क्या ?'

'कुञ्ञन तडार, इतने नाराज क्यो होते हो ? यह जमीन तुम्हारे बाप की भी नहीं है।'

कुञ्ञन को कोई उत्तर नही सूझा। कुछ देर चुप रहने के बाद बोला . 'तेरे या मेरे किसी के बाप की नही है। जमीन के मालिक के बच्चो से पूछने के बाद ही क्या तूने पेड लगाये है, यही मैने पूछा है।'

'जिससे पूछना था, उससे पूछकर ही नारियल के पेड लगाये है।'

सारा ने कुञ्ञन को सात्वना देते हुए कहा : 'कुञ्ञन तडार, नाराज मत हो। बडे मालिक से पूछने के बाद ही हमने पेड लगाये है।

'उँगली पकडकर पोहुचा पकड रहे हो न ?'

× × ×

अपने बच्चो की पढाई-लिखाई की ओर कुञ्ञन ध्यान नही देता था, लेकिन पद्मनाभ पिल्लै का इस ओर पूरा ध्यान था। वासु और सुमती अम्मा दोनो समान उम्र वाले थे। वासु प्राथमिक स्कूल मे सातवी तक पढा। सातवीं मे फेल हो जाने पर उसने पढाई छोड दी। वह हमेशा गॉव के पश्चिमी भाग मे अपना समय व्यतीत करता था। पश्चिमी भाग मे चलने वाले हरिजनोद्धार आन्दोलन तथा जाति-उन्मूलन-आन्दोलन की ओर उसका ध्यान था। अखबार पढ़कर तर्क करते हुए घूमना ही उसका मुख्य काम था।

वासु केवल खाना खाने के लिए घर आता था। कभी-कभी वह वहाँ बैठकर माँ, भाई और बहन से हरिजनोद्धार तथा जाति-उन्मूलन-आंदोलन के बारे में बातचीत भी करता था। कुञ्ञन को यह सब नापसंद था। वह कहता : 'इस तरह की बे-सिर-पैर की बातें यहाँ मत

करो। गांव के उस पार जाकर ऐसी बातें करो।'

इसी बीच गांव के पश्चिमी भाग में एक मित्र-भोज हुआ। जाति-भेद मिटाने के लिए सभी जाति के लोगों ने मिश्र-भोज तथा मिश्र-विवाह का उद्देश्य रखने वाले सहोदर-संघ के आह्वान के अनुसार उस मिश्र-भोज का आयोजन किया था। उसका नेतृत्व वासु का मामा कोच्चुकुट्टन कर रहा था।

मिश्र-भोज में भाग लेने के लिए सभी जातियों का आह्वान करने वाला नोटिस देखकर पश्चिमी भाग के अछूत लोग दो पक्षों में बँट गए और तीव्र वाद-विवाद करने लगे। कोच्चुरामन वैद्य मिश्र-भोज के विरोध में और गोविंदन वैद्य पक्ष में था, लेकिन मौखिक रूप से उसके अनुकूल होने पर भी गोविंदन वैद्य ने मिश्र-भोज में भाग नहीं लिया। कोच्चु-कुट्टन के नेतृत्व में कुछ ईषवा और अन्य अछूत लोगों ने मिश्र-भोज में भाग लिया। वासु भी उसमें शामिल था।

पुलयों के साथ वासु के भोजन करने की बात सुनकर कुञ्ञन आग-बबूला हो उठा। उसने अपनी पत्नी कल्याणी को आज्ञा दी—'उसे अब घर में पैर मत रखने देना। उसे खाना मत देना; वह मेरी आँखों के सामने न पड़े।'

कुञ्ञन की आज्ञा का उल्लंघन करने की शक्ति कल्याणी और बच्चों में नहीं थी। वासु ने उस दिन से उस घर में पैर नहीं रखा। वह अपने मामा के साथ नाना के यहाँ रहने लगा। वह बीड़ी बनाने का काम करने लगा।

मिश्र-भोज की घटना के बाद गांव के पश्चिमी भाग में 'पुलयच्चोवन' नाम की एक नई जाति पैदा हो गई। शुद्ध ईषवाओं ने पुलयच्चोवन को सामूहिक दृष्टि से बहिष्कृत कर दिया। मिश्र-भोज में भाग लेने वाले लोगों को ही नहीं; बल्कि उनके घर वालों को भी बहिष्कृत कर दिया।

कुञ्ञन का दूसरा लड़का दिवाकरन सातवीं कक्षा में और लड़की यशोधरा छठी कक्षा में पढ़ रही थी। इसी समय स्कूलों में जातीय

झगड़ा शुरू हो गया।

महाराजा के जन्म-दिवस पर सब स्कूलों में बड़े-बड़े उत्सव मनाये जाते थे। उस दिन मुक्कोणक्करा के स्कूल में कई तरह के कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। शाम को स्कूल के विद्यार्थियों की चाय-पार्टी थी, उसके लिए विद्यार्थियों से रुपये लिये गए थे।

नायर अध्यापकों ने पहले ही इस बात का निश्चय कर लिया था कि नायर विद्यार्थियों के साथ अन्य विद्यार्थियों को चाय नहीं पिलाई जायगी, इसलिए नायर, ईषवा और ईसाई विद्यार्थियों को चाय पिलाने के स्थान अलग-अलग निश्चित किये गए। गाँव के पश्चिमी भाग से आने वाले दो-तीन विद्यार्थियों ने इस जाति-भेद के प्रति अपना विरोध प्रकट किया। शेष ईषवा विद्यार्थियों ने भी उनका साथ दिया। वे सब चाय पिये बिना ही उठकर चले गए।

इस घटना का समाचार पश्चिमी भाग में पहुँचते ही ईषवा क्रुद्ध हो उठे। शुद्ध ईषवा और पुलयच्चोवन का अंतर भूलकर ईषवाओं के प्रतिषेध का एक जुलूस स्कूल की ओर चल दिया। रास्ते में नायर लोगों ने उन जुलूस वालों को गालियाँ दीं। दो जगहों पर पत्थरों की वर्षा भी की गई। ईषवा आग-बबूला हो उठे। फिर भी माधव वैद्य के नेतृत्व में जुलूस बिना किसी झगड़े के समाप्त हो गया।

कुञ्ञन ने जब सुना कि दिवाकर और यशोधरा ने भी चाय नहीं पी और जुलूस में भाग लिया तो उसने उन्हें बुलाकर खूब डाँटा। मारने के लिए हाथ उठाने पर कल्याणी ने कहा : 'जब सभी ईषवा विद्यार्थियों ने चाय नहीं पी तो ये लोग कैसे पी लेते ?'

कुञ्ञन ने दोनों को तात्कालिक रूप में माफ़ कर दिया और उपदेश दिया : 'छुआ-छूत, जाति-धर्म बनाने वाले हम नहीं हैं। इसके विरुद्ध चलने वालों को कोई फ़ायदा नहीं होगा।'

× × ×

स्कूल की चाय-पार्टी और उसके खिलाफ़ निकाले गए जुलूस ने सारे

गाँव मे खलबली मचा दी। नायर समाज ने अमर्ष के साथ अपने विचार प्रकट किये :

'अभी चोवन लोगो को नायर लोगो के साथ बैठकर चाय पीने की आकांक्षा है। फिर कहेगे कि नायर स्त्रियो मे विवाह करना है।'

'अछूत लोगों का घमंड मार खाने मे ही चूर हो सकेगा।'

'जिस स्कूल में नायर बच्चे पढते है उसमें चोवन बच्चो को प्रवेश देने से ही ऐसी आफत आई है न ?'

पश्चिमी भाग से क्रोध-भरा प्रत्युत्तर मिला 'हमारे द्वारा कुत्तों के समान दुम हिलाते रहने के कारण ही वे लोग हमे ठोकर मार-मारकर नीचे गिरा रहे है।'

'इन नायरो का सिर काट डालने के बाद ही हम सुरक्षित रह सकेंगे।'

'मारना है रे, मारना है। एक नायर को काट डालने पर कम-से-कम एक के लिए हम रास्ते मे नही हटना पडेगा।'

एक दिन एक नायर विद्यार्थी और एक ईषवा विद्यार्थी मे झगडा हो गया। नायर विद्यार्थी ने ईषवा विद्यार्थी को 'कोट्टी'[1] कहकर पुकारा, ईषवा विद्यार्थी ने नायर विद्यार्थी को 'वेटला'[2] कहकर पुकारा। झगडा बढ गया। नायर विद्यार्थी ने एक तमाचा मारा। ईषवा विद्यार्थी ने भी तमाचे मे प्रत्युत्तर दिया। अध्यापक ने बीच मे पडकर दोनों को शात

---

१ कोट्टी ईषवा लोगो के लिए सवर्ण लोगो द्वारा उपहास मे प्रयोग लाने वाला नाम। पुराने जमाने मे इनका खास काम था नरियल और ताड के पेड से ताडी निकालकर बेचना। ताडी निकालने के लिए जो प्रक्रिया होती है उसे 'कोट्टुक' कहते हैं। उस क्रिया से 'कोट्टी' नाम बनाया गया।

२. वेटला अपर्ण लोगो के द्वारा नायर लोगो का परिहास करने के लिए प्रयोग मे लाने वाला नाम। नायर लोग ब्राह्मणो से नीचे और बाकी सब जाति वालो से ऊपर होने से त्रिशङ्कु-जैसे बीच के है। नारियल को पूरा पकने के पहले की अवस्था मे वेटला कहा जाता है। नायर भी ऐसे ही, न उच्च जाति के और न नीच जाति के, हैं, इसलिए उनके उपहास मे यह नाम अवर्ण लोगो के द्वारा कोट्टी शब्द के प्रयोग की प्रतिक्रिया के रूप मे काम मे लाया जाता है।

कर दिया। दोनों को बेंच पर खड़े होने का दण्ड दिया गया।

दूसरे दिन पश्चिमी भाग के ईषवा विद्यार्थी कुछ बदमाशों की सहायता लेकर ही स्कूल गए। बदमाश कुट्टन दादा पुल पर खड़े होकर चिल्लाया :

'सब नायरों को मार गिराऊँगा—काट डालूँगा !'

विद्यार्थियों को स्कूल पहुँचाकर कुट्टन दादा ने रास्ते में अध्यापकों को सावधान करते हुए धमकी दी 'अध्यापको, सावधान रहो। हमारे बच्चों को किसी ने छू भी लिया तो नायर अध्यापकों का सिर काट डालूँगा। समझ लो।'

नायर गुण्डों के आने के पहले ही ईषवा गुण्डे वहाँ से चले गए।

उस दिन शाम को सब विद्यार्थियों के स्कूल से बाहर निकलने पर नायर लोगों ने एक नायर विद्यार्थी से एक ईषवा बालक के गाल पर तमाचे लगवाए। जब वह ईषवा बालक रोता हुआ जाने लगा, तब उससे कहा : 'तू जाकर अपने ईषवा गुण्डों को लिवा ला।'

पश्चिमी भाग में रोषाग्नि भड़क उठी। पूर्वी भाग पर आक्रमण करने की तैयारियाँ शुरू हो गई, किन्तु कोच्चुरामन वैद्य और गोविन्दन वैद्य ने कहा कि एकदम आक्रमण कर देना ठीक नहीं है। विद्यार्थी के मारने का विरोध करते हुए एक बड़ी जन-सभा में एक प्रस्ताव पास किया गया। उस प्रस्ताव को सरकार के पास भी भेजने का निश्चय किया गया। उसके अनुसार बाजार के समीप एक सभा-मंडप तैयार किया गया। शहर में सभापति और भाषण देने वालों को बाजे और जुलूस के साथ नाव पर बैठाकर सभा-मंडप में लाया गया। पश्चिमी भाग के तथा अन्य गाँवों के ईषवा उस सभा में उपस्थित हुए। सभाध्यक्ष और भाषण देने वालों ने छुआछूत और जाति-पाँति का विरोध करते हुए जोरदार भाषण दिये। सभा समाप्त हो जाने पर घास-फूँस के बने हुए 'जाति-राक्षस' की एक मूर्ति को पुल पर लाकर जलाया गया। कुञ्ञन के बेटे वासु ने इस मूर्ति में आग लगाई। उसे देखकर कुञ्ञन ने कहा : 'इसका दिमाग खराब हो गया है।'

९. कुञ्ञन की औरतें

मंगलश्शेरी से संबंध टूट जाने पर नीलकंठ कुरुप और दामोदर कुरुप सभी से वहाँ की बुराई करने लगे। अछूत से हमें पिटवाया। उसका बदला हम लेकर रहेंगे। मंगलश्शेरी खानदान को हम मिट्टी में मिला देंगे, आदि बातों का प्रचार करने लगे।

देवकी अम्मा मौन बैठी रही। उसमे आशा थी कि उन्हें और बेटे रवीन्द्र को मंगलश्शेरी बुला ले जायेंगे। इस विषय पर छिप-छिपकर और चालाकी से कुछ पूछ-ताछ तथा विचार-विमर्श भी होता रहा, किन्तु जब पद्मनाभ पिल्लै ने दाक्षायणी अम्मा से विवाह कर लिया, तब देवकी अम्मा की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। अब वह पास-पड़ोस की स्त्रियों से मंगलश्शेरी वालों की बुराई करने लगी।

'रवीन्द्रन के पिता को मुझसे और रवीन्द्र से कोई विरोध नही था।'

पड़ोसिन कुञ्ञिक्कावम्मा ने पूछा : 'यदि तुमसे विरोध नही था, तब विवाह-बंधन क्यों तोड दिया ?'

'क्यों तोड़ा ?...मैं खुल्लमखुल्ला कैसे कह दूं ?...ईषवा का ही शासन चलता है न वहाँ ?'

'कौन ? कुञ्ञन ?'

'नहीं तो कौन ? यदि आज कुञ्ञन कह दे कि किसी को खाना नहीं खाना चाहिए तो उस दिन वहाँ आग तक नहीं जलेगी। वहाँ के मालिक और उनकी बहनें कुञ्ञन के इशारे पर ही तो चलते हैं !'

'तो क्या, कुञ्ञन के कहने से ही यह संबंध छोड़ दिया ?

'इस सारे झगड़े की जड वही था।'

'मैं पूछती हूं इस तरह गडबड करने से उसे क्या लाभ ?'

'अपने फायदे के लिए ही झूठ बोल-बोलकर उसने वहाँ गडबडी पैदा कर दी। इसमें कई रहस्य हैं। थोड़े दिन के लिए ही सही, मैंने उनका

अन्न खाया है न ? मेरे बेटे मे उनका ही खून है। उनकी बाते खुल्लम-खुल्ला मै कैसे कह सकती हूँ ?'

ऐसा है तो दाल मे कुछ काला अवश्य है।

'कुञ्जिक्काव् बहन यदि किसी से न कहे तो······'

'काहा बहन जी ! मुझसे कहिए। आप तो अच्छी तरह जानती है न कि मै इधर उधर लगाने वाली नही हू।'

'मगलश्शेरी मे हमारा रहना कमलाक्षी, सरोजिनी और सुमती को पसन्द नही था। हमारे वहा रहने से उनकी मनमानी कैसे चल सकती थी ?'

'मनमानी याने ?'

'सुमती, कमलाक्षी और सरोजिनी······मै कैसे कहू कुञ्जिक्काव् बहन ?'

'बोलो बहन ! बोलो। मै किसी से कहूँगी नही।'

'वे सब कुञ्जन की औरते है।'

जैसा कहना था, सब कह डाला। उसी दिन शाम के पहले ही सब घरो मे यह कहानी फैल गई। सबने चुपके-चुपके कहा और सुनने वालो ने भी चुपचाप सुना। शाम होते-होते इसकी लहर बाजार तक पहुँच गई। सबने अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार यह कहानी कही। सबने छिपाकर कहा, सबने छिपकर सुना भी।

कुञ्जन उस दिन भी मछली खरीदने बाजार पहुँचा। कुछ लोगो ने उसे घृणा से देखा। कुछ लोगो ने घूरकर देखा। कुछ लोगो की आँखे क्रोध से लाल हो गई। अर्थ-भरी दृष्टिया ! कुञ्जन की समझ मे कुछ भी नही आया। वह आश्चर्य से सबको देखने लगा। कही से एक आवाज सुनाई पडी – 'ईषवा होने पर भी वह भाग्यवान है। मगलश्शेरी मे रहना, वहा की बागडोर सँभालना और वही विवाह भी।'

कुञ्जन स्तब्ध रह गया। मछली बेचने वाले परीत ने कुञ्जन के कान मे वह छिपी कहानी सुनाई। कुञ्जन मछली खरीदे बिना घर चला

गया। वह मंगलश्शेरी पहुँचा। मालिक आँगन में टहल रहे थे। कुञ्ञन ने मालिक के चेहरे को ध्यान से देखा। उसमें कोई भाव-भेद दिखाई नही पड़ा। उन्होंने घर के बारे में कुञ्ञन से अनेक प्रश्न किए; कुञ्ञन ने सबका उत्तर भी दिया। कुञ्ञन ने कई बातों पर अपना सन्देह प्रकट किया। मालिक ने उसका समाधान किया। 'नहीं—इन्होंने यह कहानी नही सुनी है।' कुञ्ञन का मन आश्वस्त हो गया।

कुञ्ञन पिछवाड़े गया। उनको कुञ्ञन से सैकड़ों बातें कहनी हैं। उन्होंने वे सब बातें कहीं; उसने सबका जवाब दिया। उनकी बातचीत में या दृष्टि में कोई असामान्यता नहीं है। 'नही—यह कहानी इन लोगों ने भी नहीं सुनी।' कुञ्ञन आश्वस्त हो गया।

वह अपने घर पहुँचा। कमरे में जाकर सोने का बहाना करके वह लेट गया। कल्याणी ने कई प्रश्न किये। उसने किसी का भी उत्तर नहीं दिया। पश्चिमी भाग में वासु को देखने गया हुआ दिवाकरन रात मे लौटा। उसने माँ से कई बातें बताई। कल्याणी चटाई पर लेट गई। उस दिन घर में किसी ने भी खाना नहीं खाया।

दूसरे दिन सबेरे करीब आठ बजे कुञ्ञन मंगलश्शेरी पहुँचा। कुञ्ञुवरीत की पत्नी सारा रसोई के बाहर खड़े होकर कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा, सुमती अम्मा और दाक्षायणी अम्मा से कुछ फुसफुसा रही थी। कुञ्ञन सीधा पूर्वी भाग में मालिक के पास पहुँचा। वहाँ से लेखपाल पप्पु नायर को बाहर जाते देखा। पद्मनाभ पिल्लै आराम-कुर्सी पर सिर नीचा किये बैठे थे।

कुञ्ञन पद्मनाभ पिल्लै के सामने जाकर खड़ा हो गया। उन्होंने सिर नही उठाया; उसे नहीं देखा। उसने जरा खखारा। उन्होंने सिर ऊपर उठाया; फिर झुका लिया। उनके आँसू की बूँद आराम-कुर्सी के हाथों पर गिर रही थी।

कुञ्ञन नहीं रोया, वह घर के उत्तरी भाग में गया। उसे देखते ही कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा और सुमती अम्मा उठकर अन्दर

चली गई। उनसे बातचीत करने वाली सारा पड़ोस के घर में चली गई। सब बच्चे कुछ घबराहट में खड़े थे।

कुञ्ञन फिर पूरब के ग्राँगन में गया। ग्राज काम भी बहुत है। चार-पाँच जगहों से नारियल तोड़ने है। धान लाकर कमरे में रखना है। शहर से घर की ज़रूरी चीज़ें लानी हैं। जगह-जगह से रुपया लाना है। इस प्रकार के बहुत-से काम हैं। मालिक ने कुछ नहीं कहा। कुञ्ञन ने कुछ पूछा भी नही।

क्या कहना है ? क्या पूछना है ?

तीस-पैंतीस साल पहले घूमता-घामता यहाँ ग्राया हुग्रा एक ग्रनाथ था वह.। इस घर को उसने पराया कभी नही समझा। इस घर के लोगों ने भी उसे पराया नहीं समझा। इस घर के सभी सदस्य उसके यहाँ ग्राने के बाद पैदा हुए हैं। उसने उन सबको गोदी में खिलाया है। फिर भी—फिर भी स्वच्छ जल के तालाब में कहीं से एक बूँद विष टपक पड़ा लगता है।

कुञ्ञन रोया नहीं। उसने ग्रासमान की ग्रोर देखा। वह ध्यानमग्न होकर थोड़ी देर खड़ा रहा। एक बार ग्रचानक घर ग्रौर घर में बैठे ग्रपने मालिक की ग्रोर दृष्टि डाली। फिर एकदम चल पड़ा। फाटक के बाहर निकलकर जल्दी-जल्दी चलने लगा।

जिस प्रकार भूला-भटका ग्राया था वह, क्या उसी प्रकार जा भी रहा है ?

मंगलश्शेरी का घर ग्रौर कुञ्ञन का घर दोनों श्मशान के समान शान्त हो गए। बाहर की फुसफुसाहट ही उस घर में प्रतिध्वनित होती रही।

कल्याणी ने घर की चहारदीवारी के पास ग्राकर मंगलश्शेरी की ग्रोर देखा। कोई दिखाई नहीं पड़ा; बच्चों की ग्रावाज भी नहीं सुनाई पड़ी। वह मंगलश्शेरी में जाना चाहती थी। पर वह वहाँ कैसे जा सकेगी ? कैसे वह उनके मुख की ग्रोर देख सकेगी ?

शाम को कल्याणी का भाई कोच्चुकुट्टन और वासु आए। कोच्चु-कुट्टन ने कहा : 'मालिकों की सेवा का यही फल मिला।'

वासु ने कहा : 'वे मालिक लोग हैं और हम नीच हैं ?

कल्याणी ने कुछ भी नहीं कहा।

चार-पाँच दिन बीत गए। पद्मनाभ पिल्लै को पूर्ण विश्वास था कि कुञ्ञन वापस आयगा, पर उन्हें निराश होना पड़ा। कोच्चुकुट्टन और वासु कुञ्ञन को खोजने निकले। पद्मनाभ पिल्लै ने भी कुञ्ञन को ढूँढ़ने के लिए आदमी भेजे। सब लोग निराश होकर लौट आए।

इसी समय पच्चाषी के रसोईघर में दूसरी कहानी सुनाई पड़ी। देवकी अम्मा ने कुञ्ञिक्कावु अम्मा से कहा : 'कुञ्ञन के भाग जाने का कारण जानती हो क्या ? तीनों लड़कियों को कुछ होने वाला है !'

'कुञ्ञन ही है क्या ?'

'नहीं तो क्या ? और कोई वहाँ घुस भी सकता है ?'

'ऐसा कहो ! सब पूछते हैं कि कुञ्ञन क्यों भाग गया। अब सारी बातें समझ में आ गईं।'

'उन्हें भी क्या दोष दें ? बिना आदमी के वे तीनों कैसे रह सकती हैं। आखिर उनकी उम्र ही कितनी है ?'

'कितने महीने हो गए ?'

'एक को छह, दूसरी को चार और तीसरी को तीन।'

यह कहानी भी चारों ओर खूब फैल गई। सारा ने यह कथा मंगल-श्शेरी में कह सुनाई, खेत में फसल कटवाते खड़े पद्मनाभ पिल्लै के कान में भी किसी ने कहा। फसल काटने वालों के हाथ से हँसिया छीनकर वे मंगलश्शेरी की ओर दौड़े। फाटक से ही जोर-जोर से चिल्लाने लगे :

'काट डालूँगा—तीनों का सिर आज मैं काट डालूँगा !'

दाक्षायणी अम्मा ने दौड़ते हुए आकर पति को पकड़ लिया। हाथी को भी मार गिराने की ताकत रखने वाले पद्मनाभ पिल्लै बीमार और

दुबली-पतली पत्नी की पकड़ में एक पल के लिए खड़े रह गए। पद्म-नाभ पिल्लै गरजे : 'तीनों को काटकर मैं भी मर जाऊँगा।'

'न सूत न कपास, जुलाहों में लट्ठा-लट्ठी—वाली बात न करिए। रुकिए एक क्षण'—उस दिन पहली बार दाक्षायणी अम्मा पति से आज्ञा के स्वर में कह रही थीं। उनकी आँखों मे क्रोध की चिनगारियाँ और घृणा की आग जलने लगी।

'रोको मत भाभी, रोको मत'—सुमती अम्मा नियम का उल्लंघन करके भाई के सामने आकर खड़ी हो गई। सिर झुकाए हुए उन्होंने कहा : 'पहले यह सिर काटिये, बड़े भैया ! सबसे छोटी का सिर पहले काटिये।'

पीछे आई हुई कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा भाई के सामने सिर झुकाकर खडी हो गई। सब बच्चे रोने लगे। सरोजिनी अम्मा ने कहा—'काट डालिए भैया, काट डालिए। हमको पालने और मारने का अधिकार आप ही का है।'

कमलाक्षी अम्मा ने कहा : 'हमारे सिर काटकर पच्चाषी की देवकी के सामने रख दीजिए। तभी उस भद्रकाली को तृप्ति होगी।'

पद्मनाभ पिल्लै का हाथ शिथिल हो गया। हँसिया नीचे गिर पड़ा—

'बच्चियो ! मेरी······मेरी प्यारी बच्चियो !' वे फूट-फूटकर रोने लगे।

उत्तरी भाग के पीछे देखते खड़े दिवाकरन और यशोधरा दोनों ठहाका मारकर हँस पड़े।

× × × ×

वासु माता और भाई-बहनों के साथ रहने लगा। वह घर का मालिक बन गया। घर का सारा भार उसके कंधों पर आ गया।

उससे छोटे घर में कई परिवर्तन कर दिए गए। छोटे-से बरामदे में एक मेज और चार-पांच कुर्सियां लाकर डाल दी गईं। पश्चिमी भाग

से नवयुवक रोज वहाँ आने लगे। समाचार-पत्र पढ़ने तथा कविता-पाठ के शब्दों से वह घर मुखरित हो उठा।

लेकिन घर में खाने-पीने की तंगी हो गई। कल्याणी ने वासु से कहा, 'बेटा, तू जाकर मंगलश्शेरी के मालिक से कह कि यहाँ खाने को कुछ नहीं है।'

'कौन मालिक?'—वासु ने भौहें चढ़ाते हुए क्रोध से कहा—'मेरे लिए छोटा मालिक और बड़ा मालिक नहीं है। मालिक के घर जाकर मैं भिक्षा नहीं माँग सकता।'

'ऐसा मत कह बेटा! उनके अन्न में ही हमारा खून बना है।'

'उनके अन्न से मेरा खून नहीं बना। मेरे पिता के द्वारा मेहनत करके पैदा किये अन्न से बना है मेरा खून।'

कल्याणी ने फिर कुछ नहीं कहा। वह जानती थी कि वासु से विवाद करना मुसीबत मोल लेना है।

वासु बाजार में सिलाई की दुकान पर जाकर सिलाई सीखने लगा। वासु का भाई दिवाकरन सातवाँ दर्जा पास करके घर में बेकार बैठा है। दिवाकरन की छोटी बहन यशोधरा ने छठे दर्जे से पढ़ाई छोड़ दी। उस जमाने की दृष्टि से यह सामान्य स्तर से कुछ ऊँची पढ़ाई समझी जाती थी, इसलिए वे अशिक्षित लोगों की तरह नहीं रह सकते थे। खाना चाहिए; कपड़ा चाहिए। खाना बुरा होने पर भी कपड़े खराब नहीं होने चाहिएँ। कुञ्ञन के रहते समय वहाँ खाने-कपड़े की कोई कमी नहीं हुई थी।

कल्याणी संकट में पड़ गई। विवाह के पश्चात् अपनी गृहस्थी के काम के अलावा और कोई काम उसने नहीं किया था। कुञ्ञन के वहाँ रहते समय कभी-कभी मंगलश्शेरी चली जाया करती थी। कुञ्ञन की पत्नी होने के नाते उसका वहाँ एक विशेष स्थान था। कोई भी उससे वहाँ किसी तरह के काम के लिए नहीं कहता था।

वासु, दिवाकरन और यशोधरा से मंगलश्शेरी जाने के लिए कुञ्ञन

ने मना कर दिया था। वहाँ जाने पर आदर से बातचीत करना और अच्छा व्यवहार करना बच्चे नहीं जानते, इसीलिए उसने उन पर इस प्रकार की रोक लगा रखी थी।

वासु, दिवाकरन और यशोधरा के शिक्षित तथा स्वतंत्र विचारों के हो जाने पर वे अपने-आप ही मंगलश्शेरी वालों से दूर रहने लगे। स्कूल मे पहुँचने पर भी कुञ्जन का कोई बच्चा मंगलश्शेरी के बच्चों से बातचीत नहीं करता था और न दोस्ती ही रखता था।

मंगलश्शेरी वालों को कुञ्जन से चाहे जितना अधिक प्यार हो, उसके बच्चों से उनको घृणा थी।

कमलाक्षी अम्मा ने पूछा : "ये सब बच्चे इतने घमंडी क्यों हो गए ?"

'चार अक्षर पढ़ा देने का दोष है यह।'—दाक्षायणी अम्मा ने प्रत्युत्तर दिया।

'केवल इन लडकों को ही क्यों दोष दे रही हो ! सभी अछूत लडके घमण्डी होकर ही बडे हो रहे है न'—सरोजिनी अम्मा का मत है यह।

'तो भी कुञ्जन के बेटे ऐसे हो गए, यह आश्चर्य की बात है।'—सुमती अम्मा को यही आश्चर्य है।

पद्मनाभ पिल्लै किसी से कुछ नहीं कहा करते। कुञ्जन के चले जाने पर उन्हें बहुत कष्ट हुआ। घर के शासन मे भी कुञ्जन का अभाव खटकने वाला था। कुञ्जन की पत्नी और उसके बच्चों का भूखा रहना भी पद्मनाभ पिल्लै के लिए असह्य था। उन्होंने उत्तरी चहारदीवारी के पास जाकर कल्याणी को पुकारा। वह दौडी आई और नम्रता से एक ओर खड़ी हो गई। उन्होंने कहा : 'जिस चीज की आवश्यकता हो, घर आकर माँग लेना। कुञ्जन चला गया तो भी····· ' कंठ अवरुद्ध हो जाने से वे आगे कुछ न बोल सके।

कल्याणी फूट-फूटकर रोई।

उसके बाद से वह खर्चे के लिए धान मंगलश्शेरी से ले जाया करती

थी। बच्चे जानते हुए भी अनजाने बने रहे।

वासु सिलाई सीख गया। अब वह स्वयं कपड़ा काटकर सिलने लगा। उसने एक मशीन खरीदकर सिलाई की दुकान खोलने का निश्चय किया, किंतु मशीन खरीदने के लिए पैसा कहाँ? कल्याणी ने कहा: 'बेटा, तू जाकर मालिक से कह, वे रुपये दे देंगे।'

'मालिकों के पास जाकर नाक-मुँह बंद करके मैं खड़ा नहीं हो सकता।'

'वे ईश्वर की तरह हैं। तू वहाँ जा बेटे! जरूरत के पैसे मालिक दे देंगे।'

'मुझसे यह नहीं हो सकता! मालिक के सामने हो या ईश्वर के सामने, मैं मुँह पर हाथ रखकर खड़ा नहीं रह सकता।' वासु के शब्दों में असाधारण दृढ़ता थी।

कल्याणी ने फिर कुछ नहीं कहा।

उसी दिन शाम को वह मंगलश्शेरी गई। घर के पास आम के पेड़ के नीचे खड़े होकर उसने पुकारा। आराम-कुर्सी पर बैठे मालिक ने पूछा: 'कौन है?'

'कुञ्ञन की पत्नी है।'

'क्या है कल्याणी?'

'बड़े बेटे ने सिलाई सीख ली है। उसको एक···'

'हूँ। सिलाई की दुकान खोलना अच्छा है। रोज के खर्च का पैसा मिल जायगा। उसके लिए मुझे क्या करना है?'

'उसे सिलाई के लिए एक··· कोई यंत्र चाहिए।'

पद्मनाभ पिल्लै ने कुछ सोचकर कहा:

'हूँ। कल इधर आना।'

कल्याणी चली गई।

दूसरे दिन सुबह कुञ्ञुवरीत आया। कागज की एक पुड़िया पद्मनाभ पिल्लै के सामने रखकर वह नम्रता से खड़ा हो गया।

'क्या रुपया है कुञ्ञुवरीत ?'

'जी हाँ।'

'कितना है ?'

'दो सौ पचास होंगे।'

पद्मनाभ पिल्लै ने पुड़िया हाथ में लेकर कहा : 'कुञ्ञन के जाने के बाद से यहाँ का काम बड़ा गडबड है। पैसे की बड़ी परेशानी है।'

कुञ्ञुवरीत मौन खड़ा रहा। पद्मनाभ पिल्लै ने कहा :

'जो भी हो, वह भाग्यवान है।'

'कौन मालिक ?'

'कुञ्ञन का जो बडा बेटा है न—वासु ? उसने सिलाई सीख ली है। अब उसको एक सिलाई की मशीन खरीदनी है।'

'साँप को दूध पिलाने की तरह·· कुञ्ञन तो अच्छा था, किंतु उसके बेटे बडे घमंडी है। उनको कुछ मत देना, मालिक।'

'घमंडी होने पर भी उनको कोई तकलीफ़ नही होनी चाहिए कुञ्ञु-वरीत ! कुञ्ञन के बेटों की तकलीफ इस खानदान के लिए अनिष्टकर है।'

'जैसी मालिक की इच्छा···फिर···'

'फिर क्या चाहिए ?'

'मनुष्य की जिन्दगी का क्या भरोसा, ऐसा सोचकर।'

'बात स्पष्ट कहो, कुञ्ञुवरीत।'—वे मंद-मंद मुस्कराए।

'बिक्री के एक कागजात पर कुछ लिख दें तो रजिस्ट्रार के पास जाकर मुहर लगवाकर ले आऊं। आज के लोग कल दिखाई नही पड़ते··· कुछ रुपये और इकट्ठा करके ले आऊँगा।'

'हूँ। कल कचहरी आ जाना।'

दूसरे दिन दक्षिणी भाग की ज़मीन की रजिस्ट्री कर दी गई। वासु के लिए मशीन खरीदने के रुपये उन्होंने कल्याणी को दे दिए।

१०. उत्सव का झगड़ा

भगवती के मदिर मे झडा फहराया गया। वहाँ दस दिन का उत्सव मनाया जाता था। मीन भरणी के दिन ही प्रमुख मेला होता है। झडा फहराने के दिन और अन्तिम दिन का मेला गांव वालो की ओर से मनाया जाता है। बाकी दिन एक-एक घर के लोग उत्सव मनाते थे। आठवें दिन का उत्सव मगलश्शेरी वालों और नवे दिन का पच्चाषी वालो तथा दसवे दिन का मेला सपूर्ण गाव वालो द्वारा धूम-धाम से मनाया जाता था।

मेले के समय पच्चाषो के लोग अपना बडप्पन दिखाया करते थे। किसी भी घर के नेतृत्व म उत्सव मनाने पर वह सब पच्चाषो वालो के पूर्ण नियत्रण मे होना चाहिए, यह उनका हठ था। पच्चाषी के विरुद्ध खडे होकर गडबडी करने की किसी की इच्छा न होने से और उत्सव ईश्वर की प्रीति की बात होने के कारण पच्चाषी के नियत्रण और नेतृत्व पर किसी ने प्रश्न-चिह्न नही लगाया। पच्चाषी वाले उत्सव का नियत्रण केवल अपनी नेतागीरी प्रदर्शित करने के लिए ही नही, बल्कि आर्थिक लाभ के खयाल से भी किया करते थे।

उत्सव के आरम्भ होने के एक महीने पूर्व से ही चदा एकत्रित करना शुरू हो गया। प्रत्येक घर के हर व्यक्ति से चार आने वसूल किये जाते थे। प्रत्येक खेती वाले घर से कम-से-कम दो पसेरी धान, प्रत्येक नारियल के बाग के सर्वोत्तम नारियलो मे से एक नारियल। यही है चदा वसूल करने का कार्यक्रम। जो चदा नही देता था, उसे सामूहिक बहिष्कार आदि दड सहने पडते थे।

उत्सव काल मे पच्चाषी के मालिको द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले अधिकार के बारे मे अनेक कहानियाँ प्रचलित थी। उनमे से केवल एक का वर्णन नीचे दिया जाता है · 'उत्सव के एक प्रधान दिन पर शहर से ताल्लुकेदार, मुन्सिफ, इसपेक्टर आदि आये थे। सजे हुए सात हाथियों

के नेतृत्व में जुलूस आकर मंदिर के सामने खड़ा हो गया। नाद-स्वर बजना प्रारंभ हुआ। शहर से अफ़सरों के आगमन के कारण जन-समुदाय शांति से खड़ा था। ताल्लुकेदार ब्राह्मण था। वे नाद-स्वर के नाद में आनंद-विभोर हो रहे थे। उस समय पच्चाषी के मालिक को लगा कि उनकी अधिकार-शक्ति कितनी है, यह बात उन अधिकारियों को जता देनी चाहिए। तुरंत मालिक ने आज्ञा दी—'नाद-स्वर बंद करो।'

नाद-स्वर वालों ने बाजा बंद कर दिया। मालिक ने आज्ञा दी : 'पंच-वाद्य शुरू करो।'

पंच-वाद्य शुरू हो गया। थोड़ी देर बाद ही मालिक ने आदेश दिया : 'पंच-वाद्य बन्द करो।' मालिक ने आज्ञा दी : 'फेरी बजाओ। फेरी शुरू हो गया।' यह है एक कहानी।

उस वर्ष के उत्सव मे झंडा फहराना देखने के लिए मंगलश्शेरी से स्त्रियाँ और बच्चे भी गये। झंडा फहराने के बाद जब वे मंदिर से बाहर निकलीं, तब बहुत दूर खड़े पच्चाषी के दामोदर कुरुप ने चिल्लाकर कहा : 'मंदिर में ईषवा औरतें घुस गई हैं। मंदिर में शुद्धि-कलश रखकर दुबारा झंडा फहराना चाहिए'

'कहाँ-कहाँ' पूछते हुए सभी लोग इधर-उधर देखने लगे। अंत में दामोदर कुरुप मंगलश्शेरी की स्त्रियों की तरफ इशारा करके बोला : 'देखो वे खड़ी हैं।'

'वे मंगलश्शेरी वाली हैं न?'—किसी ने पूछा।

'वे कुञ्ञन की औरतें हैं'—दामोदर कुरुप ने चिल्लाकर कहा।

'फू'—एक आवाज़! मंदिर और आस-पास के लोग कांप गए। मंदिर की भगवती के आवेश से बढ़ने की तरह सुमती अम्मा आगे आकर बोली : 'फिर से कह रे कुत्ते, क्या कहा?'

सब अवाक् रह गए। कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा और दाक्षायणी अम्मा ने मिलकर सुमती अम्मा को पकड़ लिया।

'कुत्ता!'—एक बार फिर गरजती हुई सुमती अम्मा लौट पड़ी।

उनके चले जाने के बाद दामोदर कुरुप चिल्लाया : 'ग्राना री ! — दसवें दिन का उत्सव देखने के लिए इधर ग्राना । तब बताऊँगा ।'

सुमती ग्रम्मा मुडकर खड़ी हो गई । बड़ी बहनें ग्रौर भाभी मिलकर उसे पकड़कर घर ले गई ।

× × ×

परिस्थिति गरम हो गई । मंदिर, बाज़ार ग्रौर चौराहों पर तीव्र वाद-विवाद हुग्रा :

'सुमती ग्रम्मा की फटकार से दामोदर कुरुप दूर जा गिरा ।'

'फिर भी स्त्री है ? एक पुरुष से ऐसा कहना उचित नहीं था ।'

'पुरुष होने से क्या, जो मन मे ग्राये ग्रंट-संट बक सकता है ।'

'पुरुषों के कुछ कहने पर भी क्षमा कर देना स्त्रियों का धर्म है ?'

'क्षमा करने लायक बात ही क्षमा की जा सकती है । स्त्रियो की ग्रान पर उँगली उठाने पर उनकी फटकार ग्राँखें फोड़ देगी ।'

'लेकिन एक बात है ।'

'क्या ?'

'पच्चाषी के कुरुप गुण्डे है ।'

'मंगलश्शेरी के पद्मनाभ पिल्लै के सामने ये ग्रपना गुण्डापन लेकर जायँगे तो पिटकर कीडो-जैसे कुचले जायँगे ।'

इस प्रकार जगह-जगह पर तरह-तरह के वाद-विवाद हुए ।

मंदिर मे हुई घटना का दाक्षायणी ग्रम्मा ने पद्मनाभ पिल्लै से सविस्तार वर्णन किया । वे जरा मुस्कराए :

'नानी की तरह है सुमती । दामोदर कुरुप के बडे मामा ने एक दिन इसी प्रकार की एक बदमाशी दिखाई थी, लकडहारो को लेकर एक पेड कटवाने के लिए नानी के पहुँचने पर । पप्पु कुरुप 'पेड़ काटने वाले का गला काट डालूंगा', कहता हुग्रा गंडासा लिये खड़ा था । नानी ने ही कुल्हाड़ी से पेड काट डाला । बदमाश पप्पु कुरुप देखता ही रह गया । यह सुमती भी नानी-जैसी है ।'

मंगलश्शेरी से अन्तिम झगड़े के लिए पच्चाषी के लोग तैयार हो गए। माधव कुरुप ने कहा : 'या तो वे रहेंगे या हम। दो में से एक का निश्चय होना है।'

दामोदर कुरुप बाज़ार में खड़ा होकर चिल्लाया : 'सुमती और उसके भाई की आँतों की माला गले में पहनता हुआ, मंदिर में देवी की तीन प्रदक्षिणा करके भगवती के चरणों में प्रणाम करूँगा।'

देवकी अम्मा ने गप्पोड़ी पारु अम्मा से कहा : 'मंगलश्शेरी की स्त्रियों को हमारे यहाँ के पुरुषों से पहले से ही घृणा है। उनको इस बात का घमण्ड है कि वे धनी और रूपवती हैं। उनका घमण्ड चूर न करें तो इस गाँव में किसी का भी जीना दूभर हो जायगा।'

ये प्रतिज्ञाएँ तथा ललकारें मंगलश्शेरी में यथासमय पहुँच जाती थीं। किसी को डर न होने पर भी दाक्षायणी अम्मा ने पूछा : 'हमें कुछ तैयारी नहीं करनी है क्या ?'

पद्मनाभ पिल्लै ने कहा : 'हाँ ! करनी है।'

दाक्षायणी अम्मा के घर आदमी भेजकर सारी बातें बताई गईं। दूसरे ही दिन दाक्षायणी अम्मा के दो भाई, दो बलिष्ठ गुण्डों को साथ लेकर मंगलश्शेरी आ पहुँचे। उसी दिन से लोग कहने लगे कि मंगश्लशेरी में झगड़े के लिए तैयारी हो रही है और उत्सव के अन्तिम दिन बड़ा झगड़ा होगा।

पच्चाषी के लोग आग-बबूला हो उठे। वहाँ भी गुण्डों को इकट्ठा कर रखा गया था। माधव कुरुप ने मंदिर में खड़े होकर कहा : 'इस गाँव में पच्चाषी और मंगलश्शेरी दोनों अब साथ नहीं रह सकते। या तो पच्चाषी वाले या मंगलश्शेरी वाले — दोनों में से एक ही रह सकता है।'

मंगलश्शेरी का उत्सव मामूली ढंग से मनाया गया। उस दिन भी मंगलश्शेरी नारियाँ मंदिर गई थीं, लेकिन पद्मनाभ पिल्लै और दाक्षायणी अम्मा के दोनों भाई रामन पिल्ल और गोविन्द पिल्ल उनके साथ

थे। जरूरत पडने पर सहायता करने वहाँ पहुँचने के लिए गुण्डों को भी तैयार कर रखा था।

उस दिन पच्चाषी घराने का एक बच्चा भी उस उत्सव में नहीं आया, इसलिए कोई अनिष्ट घटना नही हुई। निकट भविष्य में होने वाले घमासान युद्ध के पूर्व की उमसभरी शान्ति थी वह।

उत्सव के अन्तिम दिन लोगों की बहुत अधिक भीड थी। उत्सव से अधिक झगड़ा देखने के लिए उत्सुक होकर भीड आई थी। माधव कुरुप, उनके भांजे और उनकी मदद के लिए आये हुए गुण्डे, सब पहले ही उत्सव-स्थल पर पहुँच गए थे। मंदिर के सामने बरगद के पेड के नीचे पच्चाषी की स्त्रियाँ बैठी थीं। उत्सव के शुरू होने पर उस स्थान में उन्नत परिवार की स्त्रियाँ ही बैठ सकती थी।

मगलश्शेरी में रात का भोजन समय से पहले कर लेने के बाद पद्मनाभ पिल्लै ने दाक्षायणी अम्मा से पूछा 'क्या वे सब उत्सव देखने चल रही है ?'

'वे सब आ रही है, ऐसा कहा है। वे सब तैयार खडी है।'

'मार-पीट होगी।'

'उन्हें पता है।'

'तो बच्चो को मत ले जाना।'

'अच्छा।'

'क्या तुम भी चल रही हो ?'

'क्या मुझे उत्सव नही देखना है ?'

'हम उत्सव देखने नही जा रहे हैं।'

'जो भी हो, मैं साथ आऊँगी।'

'तो सब लोग तैयार हो जाओ।'

कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा, सुमती अम्मा और दाक्षायणी अम्मा आगे-आगे चलीं, उनके पीछे पद्मनाभ पिल्लै, रामन पिल्लै और गोविन्द पिल्लै। उसके बहुत दूर पीछे दो गुण्डे भी। इन लोगों के जन-

समूह मे घुमते ही उत्कठापूर्ण एक शाति छा गई। सुमती अम्मा चारों ओर देखती हुई किसी की परवाह किये बिना धीरता से सबसे आगे चल रही थी।

वे बरगद के पास जा पहुँची। वहाँ कुछ घटने की सभावना से लोग दूर हट गए। बरगद से सटकर बैठे हुए एक छोटे लडके ने जोर से चिल्लाकर कहा. 'कुञ्जन की गौरते आ रही है—आ रही है।'—उसने सुमती अम्मा के सामने खडे होकर पूछा · 'क्या तेरुम कडुम'[1] लेकर आई है ?'

सुमती अम्मा ने उस लडके को एक धक्का दिया। वह लडखडाकर नीचे गिर पडा। एक लोहे-जैसे हाथ ने सुमती अम्मा को पकड लिया। पद्मनाभ पिल्लै ने हाथ उठाकर एक वार किया। दामोदर कुरुप लडखडाता हुआ नीचे गिर पडा।

भयकर चिल्लाहट के साथ मार-पीट शुरू हो गई। कटारी और चाकू अन्तरिक्ष मे ऊपर-नीचे चमकने लगे। अट्टहास और करुण-क्रदन सुनाई देने लगा।

कितने समय तक मार-पीट होती रही, कुछ पता नहीं। बत्तियाँ बुझ जाने पर अधेरा हो गया था। उस घने अधकार मे से केवल करुण रोदन और कराहे ही सुनाई पड रही थी। भयभीत भीड दूर खडी थी।

पाँच व्यक्तियो को दो नावो मे बैठाकर अस्पताल ले जाया गया। उनमे से दो मर चुके थे।

× × ×

पद्मनाभ पिल्लै ने अस्पताल जाने से इन्कार कर दिया। उनके बाएँ हाथ मे दो घाव है। उनके ऊपर चलाई गई कटारी और छुरी रोकने के लिए हाथ चलाने मे लगे घाव है ये। उन्होने कहा · इन नीचों से मार खाकर मै अस्पताल जाऊँगा तो शरम की बात होगी। उससे अच्छा

१ तेरुम कूडुम— तेर और कूड

तेर कीचड से भरे हुए नारियल के खोल से बनाया हुआ बर्तन।

कूड चाकू रखने का लकडी का केस।

है मर जाना।'

गोविन्द पिल्लै के वार से दामोदर कुरुप तथा नीलकंठ कुरुप के वार से गोविन्द पिल्लै परलोक सिधार गए। नीलकंठ कुरुप, माधव कुरुप और रामन पिल्लै को भी चोटें लगीं। मृत शरीरों के साथ उन्हें भी अस्पताल पहुंचाया गया।

दोनों पक्षों की सहायता के लिए आए हुए पहलवान मौका देखकर दूर ही खड़े रहे।

कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा, सुमती अम्मा और दाक्षायणी अम्मा को कोई चोट नहीं आई। उन लोगों को पीछे हटाकर पद्मनाभ पिल्लै कटारी लेकर आगे बढ़े थे। सुमती अम्मा को बार-बार क्रोध से आगे बढ़ते देखकर पद्मनाभ पिल्लै ने आज्ञा दी—'सुमती को पकड़ो, दाक्षायणी।'

भाभी और बहनों ने मिलकर सुमती अम्मा को बलपूर्वक पकड़ लिया था।

सवेरा होते ही शहर से इन्सपेक्टर और पुलिस आ गई। इन्सपेक्टर कत्रिकापुट्टु कुमार पिल्लै का नाम सुनते ही सुवर्णकोणवलकरा के लोग कांपने लगे।

'ईश्वर को भी खड़ा रखने की शक्ति उस इन्सपेक्टर कत्रिकापुट्टू कुमार पिल्लै में है।' उसके बारे में कहा जाता था कि रास्ते चलने वालों को भी डराकर भगाते हुए आ रहा था वह।

इन्सपेक्टर और तीन सिपाही मंदिर की ओर गये। पुलिस के चार आदमी मंगलश्शेरी गये। इन्सपेक्टर साहब ने रिपोर्ट तैयार करके उसपर गवाहों के हस्ताक्षर करवाये। तब तक मंगलश्शेरी में गये पुलिस के आदमी पद्मनाभ पिल्लै और रामन पिल्लै को गिरफ्तार करके ले आए। जब वे पहुंचे तब इन्सपेक्टर साहब मंदिर के सामने एक कुर्सी पर बैठे थे। पास ही एक बेंच पड़ी थी। पद्मनाभ पिल्लै आते ही इन्सपेक्टर को अभिवादन करके बेंच पर बैठ गए। इन्सपेक्टर गरजा : 'तुमसे बेंच पर

बैठने के लिए किसने कहा ? उठो वहाँ से ।'

पद्मनाभ पिल्लै मृतक के समान हो गए। वह असंभावित था। इसका एक कारण भी था।

पिछले वर्ष के मेले में पच्चापी माधव कुरुप के विशेष निमंत्रण से कत्रिकापुट्टु कुमार पिल्लै उत्सव देखने आये थे। पच्चाषी में गंभीर स्वागत और पार्टी के बाद कत्रिकापुट्टु कुमार पिल्लै जब उत्सव-स्थान पर सर्वपूज्य के रूप में आकर खड़े हुए थे, तब पद्मनाभ पिल्लै वहाँ पहुँचे। कत्रिकापुट्टू की अवहेलना करते हुए वे जहाँ नाद-स्वर चल रहा था, उस ओर चले गये। कत्रिकापुट्टू ने पास खड़े माधव कुरुप से कहा : 'मेरे हाथों मे ठीक से फँसेगा एक दिन ।'

'इस प्रकार ठीक से फँसा है अब ।' इन्सपेक्टर ने आज्ञा दी 'हथकड़ियाँ डालो ।'

पद्मनाभ पिल्लै और रामन पिल्लै के हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी गई। इन्सपेक्टर ने पुलिस के प्रमुख सिपाही से पूछा : 'स्त्रियों को हथ-कड़ियाँ पहनाकर क्यों नही लाये ?'

इन्सपेक्टर ने ही उत्तर दिया : 'नही तो, अभी रहने दो।'

पद्मनाभ पिल्लै और रामन पिल्लै के हाथों मे हथकड़ी पहनाकर पैदल ही शहर की ओर ले गए। मंगलश्शेरी के पद्मनाभ पिल्लै को हथकड़ी पहनाकर ले जाते देखने के लिए सड़क के दोनों किनारों पर लोगों की भीड़ जमा हो गई थी।

मंगलश्शेरी मे उस दिन चूल्हा नहीं जला। उस रात वहाँ कोई सोया भी नहीं।

उत्तरी भाग से कल्याणी आई। वह रोई। उस दिन उसने भी खाना नहीं खाया।

दक्षिणी भाग से कुञ्जुवरीत की पत्नी सारा और बच्चे मंगलश्शेरी में आकर बैठे। कुञ्जुवरीत ने दाक्षायणी अम्मा से कहा : 'पैसे-वैसे की ज़रूरत हो तो मुझसे कहिएगा।'

छिपे हुए गुण्डे भी कैद कर लिए गए। बड़ा फौजदारी का एक बहुत मुकदमा चलाने की सारी तैयारी पुलिस ने कर ली।

पद्मनाभ पिल्लै, रामन पिल्लै और उनके दोनों मददगारों को कैद से छुड़ाने के लिए दाक्षायणी अम्मा के मामा और उनके दूसरे एक भाई ने अपनी सारी सामर्थ्य लगा दी, किन्तु पुलिस की ओर से जोरदार तर्क दिया गया कि पद्मनाभ पिल्लै के बड़े पूँजीपति और प्रभावशाली होने के कारण उन्हें हिरासत से बाहर कर देने पर पुलिस को गवाही मिलने में बाधा पड़ेगी, इसलिए मजिस्ट्रेट और सेशन्स-दोनों अदालतों में जमानत के लिए दिया गया प्रार्थना-पत्र स्वीकार नही किया गया।

कुञ्ञुवरीत ने दो बार पाँच-पाँच सौ रुपया दाक्षायणी अम्मा को लाकर दिया। मंगलश्शेरी के सारे गहने गिरवी रख दिए गए। फिर भी उन लोगों की जमानत नही हो सकी। अंत में हाईकोर्ट में जमानत का प्रार्थना-पत्र भेजने का निश्चय किया गया। उसके लिए रुपया नहीं था। कुञ्ञुवरीत ने दाक्षायणी अम्मा से कहा—'यदि चाहें तो माम्मन मालिक से एक हजार रुपया माँगकर ला सकता हूँ। मालिक के आने पर वापस दे देना काफ़ी है।'

दाक्षायणी अम्मा उससे सहमत हो गई। कुञ्ञुवरीत ने माम्मन मालिक से एक हजार रुपया माँगकर ला दिया।

दाक्षायणी अम्मा के मामा तथा भाई ने राजधानी में जाकर सबसे समर्थ तथा प्रसिद्ध क्रिमिनल एडवोकेट से हाईकोर्ट में जमानत का प्रार्थना-पत्र दिलवा दिया। हाईकोर्ट में जमानत का तर्क सुनकर जमानत की अनुमति दे दी गई। इसमें अठारह दिन लग गए। एक हजार रुपया भी खर्च हो गया।

पद्मनाभ पिल्लै के आगमन से निर्जीव मंगलश्शेरी खानदान सजीव हो उठा। मुकदमा चलाने के लिए विचार-विमर्श और तैयारियाँ तेजी से शुरू हो गईं। रामन पिल्लै और दोनों बदमाश मुकदमा खत्म होने

तक मंगलश्शेरी में ही रहें, यह भी निश्चय किया गया।

कुञ्ञुवरीत आँगन में सिर खुजलाता हुआ खड़ा था। पद्मनाभ पिल्लै ने कहा : 'कुञ्ञुवरीत ने हमारी जो सहायता की है, उसे मैं कभी भूल नहीं सकता।'

'मालिक के लिए मैं इतना ही नहीं, इससे भी बढ़कर करने को तैयार हूँ।'

'कुञ्ञन होता तो······'

'उसे याद करने पर दुःख होता है। कुञ्ञन की किसी संतान ने इधर मुड़कर भी नहीं देखा।'

'कल्याणी भी नहीं आई ?'

उसका उत्तर दाक्षायणी अम्मा ने दिया : 'वह यहाँ आकर रोकर चली ग ई।'

पद्मनाभ पिल्लै ने उसके बारे में फिर कुछ भी नही कहा।

'तो फिर······' कुञ्ञुवरीत कुछ कहने को हुआ।

'क्या है, कुञ्ञुवरीत ?'

'कुल मिलाकर दो हजार रुपया हो गया। एक हजार माम्मन साहब से लिया था। उसे मैं ही वापस कर दूंगा।'

'दक्षिणी भाग के पूर्वी किनारे के तीन बीघा खेत तुम्हारे नाम रेहन-नामा कर दूंगा।'

'इसकी कोई ज़रूरत तो नहीं है। फिर भी मनुष्य की ज़िन्दगी का क्या ठिकाना।'

'कल ही तुम रजिस्ट्रार के आफिस में आ जाओ। भूमि की रजिस्ट्री तुम्हारे नाम करा दूंगा। काफी है न ?'

'काफ़ी है! फिर भी यदि उस पर मुझे बिक्रीनामा दे दिया जाय तो बाकी जो कुछ देना होगा, वह भी मैं दे दूंगा।'

'तो वैसा ही हो। कल ही भूमि का पूरा अधिकार तुम्हारे नाम पर बिक्रीनामा रजिस्ट्री करवा दूंगा।

११. रिश्ते शिथिल हो रहे हैं

मुकदमे मे केवल विजय प्राप्त करना और सजा न मिलना ही पर्याप्त नही है, बल्कि मंगलश्शेरी की प्रतिष्ठा के अनुसार मुकदमा भी चलाना है। वह बहुत खर्चीला मुआमला है।

मगलश्शेरी वालों के जाने-माने वकीलों को बुलाकर मुकदमा चलाते समय पच्चाषी वाले पीछे कैसे हट सकते है? पुरातनता तथा ग्राम-नेतृत्व करने वाले हैं न वे लोग ?

इस प्रकार बड़े-बडे मशहूर वकीलों को बुलाकर मुकदमा लडने मे मंगलश्शेरी वालों और पच्चाषी वालो मे स्पर्धा हो गई। गाँव के मुनीम, विधि-पत्र-लेखक, गवाही देने वाले आदि कचहरी के लोग पच्चाषी एव मंगलश्शेरी के उपदेशक और सहायक बनकर साथ देने लगे।

पद्मनाभ पिल्लै, उनकी बहने और पत्नी जिद्द से आग-बबूला हुई बैठी हैं। सर्वनाश हो जाने पर भी मुकदमा जीतना चाहिए; खानदान की प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए—यही उनका एक-मात्र उद्देश्य था। कमलाक्षी अम्मा, सरोजिनी अम्मा और सुमती अम्मा ने एक स्वर मे कहा—'सारी संपत्ति नष्ट हो तो हो जाने दो। भाई को सजा मिलने पर हममे से कोई जीवित नही रहेगा।'

मंगलश्शेरी के शासन मे अनेक प्रकार की गड़बडियाँ हुई। कुञ्जन के चले जाने के बाद से खेतो और बागो मे उपज कम हो गई। किसान तथा बटाई वाले चोरी भी अधिक करने लगे थे। पद्मनाभ पिल्लै को उसके बारे मे पता लगाने तथा नियत्रण करने का अभ्यास नही था। अभ्यास करने का उनके पास समय भी नही था। उनका पूरा ध्यान मुकदमा चलाने मे था।

इस प्रकार ज़मीन से आमदनी बहुत कम हो गई। खर्चा औकात से अधिक बढ गया।

किंतु उन्हें आय और व्यय का सोच-विचार नहीं था। शान-शौकत से मुकदमा लड़ना, जीतना और खानदान की प्रतिष्ठा बढ़ाना ही उनका उद्देश्य था।

राजधानी का सबसे प्रसिद्ध क्रिमिनल एडवोकेट पद्मनाभ पिल्लै को मिल गया। उस वकील को प्राप्त करने में पच्चाषी वालों से झगड़ा भी हुआ। फीस के लिए वकील नीलाम होने लगा। इस नीलामी में पद्मनाभ पिल्लै की जीत हुई। प्रधान वकील की सहायता के लिए दो वकील और भी नियुक्त किये गए।

मुकदमा चलने लगा। राजधानी से आए अद्भुत पराक्रमी वकीलों को देखने के लिए और मुकदमा सुनने के लिए कचहरी में भीड़ जमा होने लगी।

मुकदमे के दिन मुक्कोणक्करा से शहर की ओर दो जुलूस निकला करते हैं। एक मंगलश्शेरी से और दूसरा पच्चाषी से। मुकदमे में गवाही देने वाले, उपदेशक, सहायक, बंधु-बांधव तथा दर्शक आदि कई तरह के लोग उन जुलूसों में भाग लेते थे।

मंगलश्शेरी और पच्चाषी की स्थावर और जंगम सम्पत्तियों को मिट्टी में मिलाता हुआ उत्सव के झगड़े का मुकदमा इस प्रकार आगे बढ़ता चला जा रहा था।

× × ×

मुकदमे की बातें जानने के लिए कल्याणी प्रतिदिन मंगलश्शेरी जाने लगी। पिछवाड़े में जाकर छोटी मालकिनों से मुकदमे की बातें जानकर वापस चली आती। कभी-कभी वह रो भी पड़ती थी।

कल्याणी के बच्चों को मुकदमे से कोई दिलचस्पी नहीं थी। वासु कहता—'आपस में लड़-झगड़कर मर-मिटने दो। एक मालिक खत्म होने पर एक आदमी रास्ते से हटाने में कम होगा।'

'नमकहरामी मत कर बेटा'—कल्याणी उपदेश देती।

'उन्होंने क्या हमको यों ही कुछ दान दिया था कि हम वफ़ादारी

दिखायें ।'

कल्याणी चुप हो जाती ।

वासु बाजार में सिलाई की एक दुकान चला रहा है। वासु के सिलाई में होशियार होने पर भी ईषवा होने के कारण और जाति, धर्म व ईश्वर के खिलाफ़ होने के कारण नायर तथा कुछ अन्य जाति के लोग उसके पास कपड़े सिलने के लिए नहीं देते थे। उसकी दुकान के अंदर रखे एक बोर्ड पर इस प्रकार लिखा था : 'मनुष्य को जाति, धर्म और ईश्वर की आवश्यकता नहीं है ।'

जाति-पाँति के विरोध का समर्थन करने वाले लोग भी, धर्म और ईश्वर की आवश्यकता नहीं है, इस बात मे सहमत नही थे। बाज़ार में इस बात का खूब प्रचार हुआ कि जो ईश्वर को नहीं मानता, उसको नौकरी मत दो, उसकी दुकान के अंदर मत घुसो और उससे बातचीत मत करो। निरीश्वरवादी दर्जी वासु को परास्त करने के लिए एक दुकान पर शबरीमलाशास्ता और दूसरी दुकान पर परम शिव का चित्र रखकर पूजा शुरू कर दी गई ।

किंतु कमीज और जंपर की बढिया सिलाई करवाने की इच्छा रखने वाले छिपकर वासु से कपड़ा सिलवाते थे। वासु की दुकान पर लोग सदैव जाते रहते थे। पश्चिमी तौर मे कुछ ईषवा युवक जाति, धर्म और ईश्वर के विरोधी थे। वे सब वासु की दुकान पर एकत्रित होते। वासु का मामा कोच्चुकुट्टन वहाँ रोज आता था।

वासु बाज़ार में खड़े होकर ऐलान करता—'जाति का आविर्भाव धर्म से और धर्म का आविर्भाव ईश्वर से हुआ है, इसलिए ईश्वर-विश्वास मिट जाने पर जाति-भेद समाप्त हो जायगा।'

बहुत-से लोग रुष्ट हो जाते। किंतु वासु किसी की परवाह नहीं करता। वह कहता : 'सबसे बड़ा झूठ ईश्वर है। उस झूठ से धर्म की उत्पत्ति हुई। धर्म रूपी झूठ से जाति रूपी झूठ उत्पन्न हुआ। नीच जाति के लोगों को धोखा देने के लिए ऊँची जाति के लोगों द्वारा बनाये झूठ हैं

ये। इन झूठों को नष्ट करना है। तभी मनुष्य यथार्थ में मनुष्य बन सकेगा।'

वह प्रेरणा के साथ कहता : 'हमारे अंदर मंगल महाशक्तियाँ सोई पड़ी हैं। उन शक्तियों को झकझोरकर जगाने से हम शेर के समान गरज उठेंगे, कुत्तों के समान पूंछ हिलाते हुए चरण नहीं चाटेंगे।'

ये भाषण तथा घोषणाएँ पूरे गाँव में प्रतिध्वनित होने लगीं। आस-पास के दुकानदारों ने उसके खिलाफ़ आवाज़ उठाई। 'कोट्टी भाषण देते-देते बाज़ार में बैठकर भी भाषण देने लगे। पिटाई से ही यह भाषण समाप्त होगा। कोट्टी का सिर और इञ्चा[1] का सिर कूटने से ही अधिक फायदेमंद बन सकता है।'

उसकी भी प्रतिध्वनि हुई। वासु की दुकान में बैठे पश्चिमी भाग के कुट्टन दादा ने गरजकर कहा : 'क्या ये नायर लोग खुले बाजार में खड़े होकर हमारे विरोध में आवाज़ उठाने लगे हैं? मार डालूंगा! सभी नायरों को जान से मार डालूंगा!'

वासु की दुकान पर बैठे ईषवा युवकों ने ताली बजाकर अभिनंदन किया।

एक दिन पद्मनाभ पिल्लै खेत देखकर वापस आते समय बाज़ार में चले गए। वासु की दुकान देखने के लिए वे वहाँ तक गये थे। उनके साथ उनका साला रामन पिल्लै भी था।

साथियों के बीच वासु के अखबार पढ़ते समय पद्मनाभ पिल्लै और रामन पिल्लै वहाँ पहुँचे थे। वासु ने उठना चाहा किंतु उठा नहीं। कोई भी नहीं उठा।

पद्मनाभ पिल्लै का चेहरा पीला पड़ गया। रामन पिल्लै का चेहरा क्रोध से लाल हो गया।

---

१. इञ्चा—केरल के जंगलों में पाई जाने वाली एक प्रकार की झाड़ी, जिसको कूटकर शरीर धोने के काम में लाया जाता है। माना जाता है कि इसे जितना कुचला जाय उतना ही नरम होता है।

धनी और प्रतापी एक नायर खानदान के मालिक हैं वे। वासु उनके घर के नौकर का बेटा है। उनके द्वारा दी गई जमीन पर ही वासु और उनका परिवार रहता है। इमी खानदान द्वारा दी गई सिलाई की मशीन मे ही वासु सिलाई का काम करता है। पद्मनाभ पिल्लै को देखकर उठा नही। उनके मिलाई की दुकान में घुमने पर भी वासु उठा नही।

'बैठिए मिस्टर पद्मनाभ पिल्लै'—वासु न उनका इस प्रकार स्वागत किया।

'तूने क्या कहा कोट्टी!'—रामन पिल्लै हाथ उठाकर वासु की ओर झपटा।

उठे हुए हाथ को पद्मनाभ पिल्लै ने बलपूर्वक पकड लिया।—'वह कुञ्जन का बेटा है। उसे मै मारने नही दूंगा।' रामन पिल्लै का हाथ पकडे दुकान से बाहर निकलकर वे वहाँ मे चल दिए।

वासु की दुकान मे घटित घटना कल्याणी को मालूम हो गई। उस दिन उसने खाना नही खाया। वह पूरे दिन रोती रही।

वर्षो से पोषित सामाजिक वृक्ष परिवर्तन रूपी तूफान से हिल रहा है। जड एक-एक करके उखड जाएँगी। क्रोध और अट्टहास होगे। वेदनाएँ भी होंगी। आसू बहेगे।

× × ×

सातवाँ दर्जा पास करके दिवाकरन सरकारी नौकरी के प्रयत्न मे था। यद्यपि ईषवा लोगो को विधान की ओर से कोई रुकावट नही थी, फिर भी उन्हे कोई सरकारी नौकरी मे नही देता था, इसलिए दिवाकरन को बहुत परिश्रम से एक अस्थायी नियुक्ति मिल गई। प्राथमिक पाठशाला के अध्यापक के दो महीने के लिए छुट्टी लेने पर उस पद पर दिवाकर की नियुक्ति हुई। उस गाँव मे यह एक नूतन घटना थी—एक ईषवा को नौकरी मिली।

ईषवा युवकों ने दिवाकरन का अभिनंदन करने का निश्चय किया।

उसके लिए बुलाई गई सभा के अध्यक्ष गोविंदन वैद्य बने। नौकरी मिल जाने वाले दिवाकरन तथा नौकरी देने वालों को अनुमोदित करने का प्रस्ताव पास करने पर भी ईषवाओं को जो-जो कष्ट उठाने पड़े हैं, उसका वर्णन करने वाले थे भाषण।

सभा-समाप्ति पर वासु और दिवाकरन के घर जाते समय बाज़ार में खड़े नायरों ने उनकी खिल्ली उड़ाई :

'कोट्टी उस्ताद अभिनन्दित होकर जा रहे हैं रे !' एक ने कहा।

'छुरी और टोकरी ले आ, हम भी अनुमोदन करेंगे।'

सभी लोग ठहाका मारकर हँस पड़े।

बाज़ार के दूसरे भाग से कुट्टन दादा ने गरजते हुए कहा : 'गंडासा इधर ला रे ! इन सब नायरों का गला काट डालूं।'

फिर किसी ने कुछ नहीं कहा।

दिवाकरन के घर पहुँचने पर कल्याणी ने कहा : 'बेटे, तू जाकर मालिक से आशिर्वाद ले आ।'

"मैं वहाँ जाऊँ तो बाहर खड़ा होना पड़ेगा। उन्हें 'मालिक' कहकर पुकारना है न ?"

'जा बेटे—बता दे कि तुझे काम मिल गया है।'

'मुझसे नहीं होगा। वहाँ जाकर मुख बंद करके खड़े रहना और मालिक कहकर बुलाना।'

अगले दिन दिवाकरन नौकरी पर गया। दर्जे में पहुँचने पर केवल पांच विद्यार्थी ही उठकर खड़े हुए। बाकी सब बैठें-बैठे बोर्ड की ओर देख-देखकर हँस रहे थे। बोर्ड पर इस प्रकार लिखा था—

'कोट्टी उस्ताद के आने पर कोई मत उठो।'

दिवाकरन बोर्ड देखकर स्तब्ध रह गया। लड़के ठहाका मारकर हँस पड़े। उसे रुलाई आई। लेकिन वह रोया नहीं। बोर्ड पोंछकर जब उसने पढ़ाना शुरू किया तो सारे विद्यार्थी एक-एक करके उठकर चले गए।

दिवाकरन प्रधानाध्यापक के पास गया। दबी हुई हँसी से प्रधानाध्यापक ने पूछा : 'कक्षा कैसी लगी ?'

'विद्यार्थी न हों तो किसे पढाऊँ ?'

'विद्यार्थी नही हैं तो मत पढ़ाओ।'

'पढ़ाने के लिए ही तो मेरी नियुक्ति हुई है न ?'

'तो पढाओ।'

'मेरा पढाना शुरू करने पर सब विद्यार्थी बाहर चले जाते है।

'उसके लिए मैं क्या करूँ ?'

'उनसे कहिए कि कक्षा से न जायें।'

'हूँ—हुँ' अन्यमनस्क होकर प्रधानाध्यापक ने सिर हिलाया।

वह दिन ऐसे ही गुज़र गया।

दूसरे दिन जब दिवाकरन कक्षा मे पहुँचा तो कोई विद्यार्थी नही उठा। पाँच ईषवा विद्यार्थी ही उठे। जब उसने पढ़ाना शुरू किया तो सारे विद्यार्थी उठकर चले गए। उनके साथी बाहर खड़े तमाशा देख-देखकर हँस रहे थे।

दिवाकरन ने उस दिन प्रधानाध्यापक से शिकायत नही की। वह चुपचाप बैठा रहा।

तीसरे दिन जब वह कक्षा मे पहुँचा तो वहाँ एक छुरी और टोकरी रखी देखी। वह अपनी सुध-बुध भूल गया।

'किस नायर ने यह सब यहाँ रखा है ?'

सारे विद्यार्थी हँस पड़े।

दिवाकरन छुरी और टोकरी उठाकर प्रधानाध्यापक के पास पहुँचा।

'ये···ये चीज़े आप अपने ही पास रखिए।'—दोनो चीज़ें उनके सामने फेंककर वह निकलकर बाहर चला गया।

उसके बाद वह नौकरी पर नही गया।

× × ×

मुकदमा जोरो से चल रहा था। मंगलश्शेरी और पच्चाषी में फिर मार-पीट होगी, ऐसा सुनाई पड़ रहा था।

१२. नायर-ईषवा संघर्ष

पच्चाषी की ज़मीन और बगीचों से चोरी होना सामान्य बात थी। भाजे भी चोरी किया करते थे और बटाई वाले भी। भांजो के चोरी करने के कारण बटाई वालों को भी चोरी करने में सुविधा रहती थी।

माधव कुरुप के मालिक बनने पर बहुत अधिक खेत तथा बाग बेच दिए गए, लेकिन अपने पास बची भूमि और बाग की चोरी उन्होंने अच्छी तरह नियंत्रित कर ली है। चोरों को पकड़ने के लिए वे रात में खेतों-बागो मे घूम-फिरकर निगरानी करने लगे। चोरी पकड़ने पर चाहे भांजा हो या बटाई वाला, वे दंड भी देते थे।

नदी के किनारे एक झोपड़ी में एक ईषवा बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे। जब उन्हें खाने को कुछ नहीं मिलता था, तब वह बूढ़ा ईषवा जिस पर चढ़ सकता था, ऐसे नारियल के पेड़ पर चढ़कर नारियल तोड़ लेता था। माधव कुरुप की धमकी उसकी चोरी को बंद नही कर सकी। अंत में नारियल के साथ रगे हाथ उसे पकडने का निश्चय करके माधव कुरुप रात में एक स्थान पर छिप गये। जब वह बूढ़ा छोटे से-नारियल के पेड़ पर धीरे-धीरे चढ़कर नारियल का गुच्छा तोड़कर नीचे उतरा, तब माधव कुरुप ने उसे पकड़ लिया। बूढा होने के कारण उन्होंने उसे मारा नही। उन्होंने उसे नारियल के पेड़ से ही बाँधकर नारियल का गुच्छा उसके सिर पर रख दिया और कहा : 'यदि तूने जरा भी आवाज़ की तो मार डालूंगा।' यह कहकर वह चला गया।

बूढ़े को ढूंढ़ने आई बुढ़िया यह दृश्य देखकर जोर-जोर से चिल्लाने लगी। पास-पडोस के ईषवाओं ने आकर बूढ़े को बंधन-मुक्त किया और नारियल का गुच्छा भी बूढ़े को दे दिया।

दूसरे दिन सारे ईषवा युवकों ने वासु की सिलाई की दुकान पर एकत्रित होकर पच्चाषी के मालिक की दुष्टता का प्रतिकार करने का

निश्चय किया । प्रतिकार कैसे करना चाहिए, यह भी उन्हीं लोगों ने निश्चित किया ।

× × ×

माधव कुरुप का भाजा दामोदर कुरुप जो उत्सव की लड़ाई में मर चुका था, उसका छोटा भाई अच्युत कुरुप विलास-प्रिय था । उसका काम शृंगार-कविताएँ गा-गाकर सुनाना तथा प्रेम-पत्र लिखना था ।

जिन घरों में जवान लड़कियाँ है उन सबके यहाँ वह जाता था । सध्या-समय बाजार में खड़ा होकर स्त्रियों को देखा करता था । कभी-कभी उनका पीछा भी करता था । इस प्रकार उसके हाथों से प्रति-दिन प्रेम-पत्र स्वीकार करने वाली है पद्माक्षी ।

पद्माक्षी एक शराब की दुकान के मालिक की बेटी है । बाजार में सुना जाता है कि अच्युत कुरुप से ही नहीं, बल्कि और भी कई लोगों से वह प्रेम-पत्र लेती है । उसके माता-पिता और भाई आधी रात के बाद ही घर लौटते थे, इसलिए पद्माक्षी को प्रेम-व्यापार के लिए पर्याप्त सुविधा मिल जाती थी । रात में अच्युत कुरुप पद्माक्षी के घर जाता है, यह बात बहुतों को मालूम है ।

वासु की दुकान में एकत्र हुए लोगों ने निश्चय किया कि बूढ़े को नारियल के पेड़ से बाँधकर नारियल का गुच्छा उसके सिर पर रखने का बदला लेने के लिए अच्युत कुरुप का उपयोग करना चाहिए । इस-लिए उस रात वे पद्माक्षी के घर के पास छिपकर बैठ गए ।

जब अच्युत कुरुप पद्माक्षी के घर में घुस गया, तब छिपे हुए युवकों ने घर को घेरकर शोर मचाना शुरू कर दिया । डर के मारे अच्युत कुरुप इधर-उधर भागा । अँधेरा होने के कारण वह एक कटहल के पेड़ से टकराकर गिर पड़ा । उनका युवकों ने उसे घेरकर पकड़ लिया । मशाल जलाकर, पीपे पीटते हुए उसे जुलूस के साथ सड़क पर ले जाकर एक पेड़ से बाँध दिया । कालिख और हल्दी से उसका चेहरा रँग दिया । उसके माथे पर एक कागज चिपका दिया, जिसमें लिखा था,

'हे प्रेम, तुम्हारा नाम सुनते ही डर लगता है।' फिर उसकी निगरानी करने के लिए वे नौजवान पहरे पर खड़े रहे।

पच्चापी अच्युत कुरूप को पश्चिमी भाग के ईषवाओं ने रँगकर पेड में बाध दिया है, यह बात सुबह से पहले ही सारे गाँव मे फैल गई। नायर लोगों को अपमानित करने के लिए ईषवाओं ने जान-बूझकर ऐसा किया है और नायरों के लिए यह एक चुनौती है, ऐसी व्याख्या की गई। नायरों ने एक स्वर मे कहा—ईषवाओं के अभिमान को मिट्टी में न मिलाया गया तो नायरों की प्रतिष्ठा नष्ट हो जायगी।

झगडा होगा। वहीं पर ईषवाओं का अहंकार मिट्टी मे मिलाना है, ऐसा निश्चय करके आवश्यक सावधानी रखते हुए माधव कुरुप के नेतृत्व मे नायरो का एक सघ पश्चिमी भाग मे पहुँचा, किन्तु झगडा करने के लिए ईषवाओ के न आने से अच्युत कुरूप को मुक्त करके गालियाँ देते हुए और अट्टहास करते हुए नायर लोग वापस आ गए।

उस दिन पश्चिमी और पूर्वी भागों मे खूब विचार-विमर्श हुआ। वासु जब अपनी दुकान खोलने आया तो दुकान के बाहर कुछ लोगों को खड़ा पाया। उनके खड़े होने के तौर-तरीके देखकर विपत्ति की शका से वह पश्चिमी भाग में वापस चला गया।

दोपहर होने पर पुल के ऊपर मार-पीट हो गई। एक ईषवा पुल के ऊपर खड़ा था। एक नायर ने पुल के ऊपर चढकर कहा, 'रास्ते से हट जा कोट्टी, जाने दे।'

'क्यों रे वेट्टे! तेरे बाप का है यह पुल ?'

प्रत्युत्तर मे एकाएक ईषवा के गाल पर तमाचा पडा। उसने भी नायर के गाल पर एक तमाचा जड दिया।

पूर्वी भाग से नायरो ने ललकारकर कहा, 'पकड लो उसे।'

'छोडना मत उसे।' पश्चिमी भाग के ईषवाओ ने गरजकर कहा।

नायर पिटकर पूर्वी दिशा की ओर और ईषवा पश्चिम दिशा की ओर भाग गया।

'कुचल डालना चाहिए—कोट्टियों का सिर कुचल डालना चाहिए' —पूर्वी भाग में नायरों ने चिल्लाकर कहा।

'इन नायरों को काट डालना है, मार डालना है।' पश्चिमी भाग के ईषवाओं ने गरजकर कहा।

शाम तक गाँव भर में ऐसे-ऐसे समाचार लहराने लगे जिससे सब जगह सनसनी फैल गई। वेलुन कुञ्ञु ने शहर जाते हुए बीच में ही शंकरन नायर को मारा। कोन्नन और परमु पिल्लै में मार-पीट हो गई। कोन्नन ने पूर्वी खेत में परमु पिल्लै को चाकू मार दिया। पैसे वसूल करने के लिए पश्चिमी भाग में गये हुए भास्करन पिल्लै की ईषवाओं ने मिलकर पिटाई की। नदी के किनारे के एक नायर के घर में घुसकर ईषवाओं ने एक नायर स्त्री के साथ बलात्कार किया।

इस प्रकार के समाचार चारों ओर फैल गए। नायरों का खून खौल उठा।

पश्चिमी भाग में भी यह समाचार पहुँचा। अत्ताणीमुक्क में कुट्टन का सिर कुञ्ञु पिल्लै ने फोड़ दिया। एक ईषवा स्त्री को कुछ नायर नौजवान पकड़कर ले गए। नारियल का रेशा बेचने वाले कुञ्ञुण्णी पर पाच्चन पिल्लै ने गडासे से वार किया। पच्चापी की जमीन पर रहने वाले ईषवाओं के घरों में आग लगा दी गई। इस प्रकार नायरों के विरुद्ध खबरें भी फैल रही थीं, ईषवाओं का खून भी खौल रहा था।

संध्या बीत जाने पर पश्चिमी भाग से ईषवाओं का एक दल पुल की ओर गया। बाज़ार और पच्चापी में एक-साथ आक्रमण होने लगे।

'पच्चापी खानदान में कुछ भी हरा-भरा नहीं रहना चाहिए।' ऐसा चिल्लाते हुए उन्होंने आक्रमण शुरू कर दिया।

'मार डालो—इन सब कोट्टियों को मार डालो।' इस प्रकार चिल्लाता हुआ माधव कुरुप ईषवाओं का सामना करने के लिए आगे कूद पड़ा। नायर लोगों के आने के पहले ही माधव कुरुप, अच्युत कुरुप और नीलकंठ कुरुप गिर चुके थे। घर में आग लगा दी गई थी, "किंतु

जल्दी ही बुझा दी गई।

बाजार में घमासान युद्ध हुआ। कई घायल हुए। कई दुकानें राख हो गईं। उनमें से दो दुकानें मुसलमानों की थीं। इस कारण मुसलमान लोग भी ईषवाओं के खिलाफ हो गए। 'कोट्टियों के घमंड का अंत करने के लिए' मुसलमान भी नायरों की सहायता करने आ गए। दोनों ने मिलकर ईषवाओं का सामना किया। ईषवाओं को पीछे हटना पड़ा। उन्होंने पुल के उस पार पहुँचकर पुल को तोड़ डाला।

आधी रात के बाद नायर और मुसलमान मिलकर ईषवाओं का अंत करने के लिए पश्चिमी भाग पर आक्रमण करने को तैयार हो गए। उस पार जाने के लिए जब वे पुल के पास पहुँचे तब उन्हें पता चला कि पुल तोड़ा जा चुका है। फिर भी बहुत-से लोग हथियार-बंद होकर नाव से पश्चिमी भाग में पहुँचे। वहाँ ईषवाओं ने पत्थरों की वर्षा की। पत्थरों की मार असह्य हो जाने पर वे नाव से वापस लौट गए।

इस प्रकार वह प्रत्याक्रमण पराजित हो गया।

दूसरे दिन दोपहर को पुलिस आई। पच्चापी के अच्युत कुरुप की लाश अभी तक वहीं पड़ी थी। उत्सव के झगड़े में माधव कुरुप लगभग बीस दिन तक अस्पताल में पड़े रहे थे। उन्हें दूसरी बार फिर अस्पताल में जाना पड़ा।

बाजार में एक नायर का और दो ईषवाओं के शव पड़े थे। घायल हुए एक मुसलमान, सात नायर और नौ ईषवाओं को अस्पताल पहुँचाया गया। कई दुकानें राख हो गई। पच्चाषी की बैठक का एक हिस्सा भी जल गया।

पुलिस ने अपनी कार्यवाही समाप्त करके मृत शरीर को पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल पहुँचाया। गाँव के पूर्वी और पश्चिमी दोनों भागों में कुछ लोगों को गिरफ़्तार करके पुलिस ले गई। गिरफ़्तार हुए लोगों में कल्याणी के भाई कोच्चुकुट्टन तथा दोनों बेटे वासु और दिवाकरन भी थे।

× × ×

छाती पीटकर रोती हुई कल्याणी मंगलश्शेरी गई। उसने पद्मनाभ पिल्लै से प्रार्थना की कि उसके भाई और बच्चों को पुलिस पकड़कर ले गई है, जिन्हें वे छुड़वाकर ले आयें। उसने कहा : मेरे बच्चों का पिता मंगलश्शेरी का है। वे भी…'

'उनके पिता इस घर के अंग है या नहीं' ऐसा हममें से कोई कहेगा नहीं। लेकिन कुञ्जन के बच्चों का मंगलश्शेरी से कोई संबंध नहीं है। होता तो…'

'अनजान बच्चे यदि कुछ कर डालें तो। सब समझने वाले छोटे मालिक आप उन्हें माफ कर दीजिये।'

'वे हमें और हमारे समुदाय को खत्म करने पर तुले हुए हैं न?'

'इस खानदान से उन्हें कोई दुश्मनी नहीं है मालिक। आप ही हमारी रक्षा कीजिए। कुञ्जन के बेटे हैं वे। बचाइए मालिक!'

पद्मनाभ पिल्लै धर्म-संकट में पड़ गए। कुञ्जन उस खानदान का नहीं है' ऐसा कोई सोच भी नहीं सकता। उसने इस परिवार की अभिवृद्धि के लिए अपना जीवन अर्पित किया है। कुञ्जन के अभाव में परिवार की अभिवृद्धि रुक गई और एक-एक करके लगातार मुसीबतें आने लगीं। कुञ्जन के बारे में बात किये बिना उस परिवार में एक क्षण भी नहीं जाता। कुञ्जन के रहते… ऐसा न होता। यदि कुञ्जन होता…ऐसे-ऐसे कर सकते थे'…इत्यादि-इत्यादि बातें हमेशा चलती थीं। ऐसे कुञ्जन की संतानों को पुलिस पकड़कर ले गई। उनकी सहायता किये बिना कैसे रह सकते हैं?

लेकिन क्या कुञ्जन के बेटे अपने पिता की तरह उस परिवार को चाहते हैं? या उस परिवार में उन्होंने किसी प्रकार की ममता दिखाई है? आंदोलन और हत्याएँ हुईं, खानदान के मालिक पुलिस के बन्धन में पड़े। जमानत लेने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा। ऐसा होने पर क्या कुञ्जन के बेटों ने वहाँ आकर दुःख और सहानुभूति प्रकट की है? जब पद्मनाभ पिल्लै अपवाद से क्रुद्ध होकर बहनों का

गला काटने दौड़े तब क्या कुञ्ञन की संतानें घर के बाहर खड़े होकर हँस नहीं रही थीं ? क्या उनकी सहायता करनी चाहिए ? क्या नाग को दूध पिलाना चाहिए ?

पद्मनाभ पिल्लै नायर हैं। वे नायरों के विश्वास, आचार और मर्यादा में स्थिर विश्वास रखने वाले है। ऊँची जाति वाले नायरों के अधिकारों का नीच जाति के लोग—ईषवा लोग विरोध करते हैं, यह उन्हें पसन्द नहीं। पश्चिमी भाग के ईषवाओं ने पूर्वी भाग के नायरों पर जो आक्रमण किया, उससे पद्मनाभ पिल्लै क्रुद्ध हैं, परन्तु इस झगड़े की जड़ पच्चावी वाले है जो मंगलेश्शेरी कुटुब के जानी दुश्मन हैं, इसलिए वे इस मामले मे नायरों की मदद नहीं कर सकते। इतना होने पर भी ईषवाओं के आक्रमण का नेतृत्व करने वाले कोच्चुकुट्टन, वासु आदि की मदद न करना ही उनका कर्त्तव्य है।

लेकिन वासु और दिवाकरन तो कुञ्ञन के पुत्र हैं। कल्याणी ने अति दयनीय स्वर में याचना की, 'इन दासों को बचाइए।'

'हाँ, मैं कोशिश करूँगा' पद्मनाभ पिल्लै ने कहा।

कल्याणी चली गई।

× × × ×

अस्पताल में पड़े-पड़े चार लोग मर गए। उनमें नीलकंठ कुरुप भी था। ऐसा लगा कि माधव कुरुप बच जायगा।

पच्चाषी की देवकी अम्मा ने रसोईघर में बैठकर कुञ्ञिक्कावम्मा से कहा, 'झगड़े की जड़ मंगलश्शेरी वाले हैं।'

'सो कैसे ? क्या उन्होंने मार-पीट की है और घर में आग लगाई है ?'

'उन्होंने मार-पीट नहीं की और आग भी नहीं लगाई। उन्होंने ईषवाओं से यह सब करवाया है।'

'ओह ! वे ऐसा करने वाले नहीं हैं। ईषवाओं से नायरों को पिटवाने के लिए क्या वे साथ देगे ?'

'साथ देंगे, पूछो तो—साथ देगे। मंगलश्शेरी वाले हमेशा इन अछूतों

के पक्ष में ही रहे हैं। उनको ईषवा लोग ही पसद है। नायरो को वे नहीं चाहते। कुञ्जिअक्काबु बहन, जरा सोचो, दर्जी वासु और दिवाकरन कुञ्जन के बेटे है न ?'

'हाँ है। तो ?'

'कोच्चुकुट्टन कल्याणी का भाई है न ?'

'जी हाँ।'

'इन तीनो ने मिलकर यह झगडा शुरू किया है न ?'

'जी हाँ।'

'मगलश्शेरी वालो की आज्ञा के बिना क्या कुञ्जन की सताने और उसका साला नायरो से झगडा करेगे ?'

'यह ठीक है। यदि मगलश्शेरी की ताकत उनके पीछे न होती तो वे झगडे मे आगे न आते।'

'कुञ्जिअक्काबु बहन, जरा सोचो ··मगलश्शेरी वालो मे और हममे दुश्मनी है न ?'

'है तो सही।'

'हमारा सर्वनाश करके मुखिया बनने की उनकी चाह रही है।'

'तब –उन्होने ही इन अछूतो को बहकाकर झगडे के लिए आगे बढाया है न ?'

'यह तो सच है। ऐसा ही हुआ होगा।'

उस दिन शाम को एक नायर सेना मगलश्शेरी की ओर गई। पद्मनाभ पिल्लै को मालूम हुआ कि नायर-सेना आ रही है। अब मगलश्शेरी तथा कुञ्जन के घर का नाश होगा। उत्सव के आन्दोलन के मुकदमे मे पद्मनाभ पिल्लै के साथ प्रतिवादी बने लोगो में से एक आदमी यह समाचार लाया। यह सुनकर वे जरा हँसे। कुर्सी छोडकर आगन मे उन्होने पुकारा —'दाक्षायणी, बडा गडासा ले आओ। सुनते है उस खानदान के सर्वनाश के लिए कुछ लोग यहाँ आ रहे है।'

'उसके लिए अब···'दाक्षायणी अम्मा जरा हिचकिचाकर खडी रही।

'ले आओ, कहा न।' उन्होने गरजकर कहा।

दाक्षायणी अम्मा ने बड़ा गंडासा लाकर पति को दे दिया।

'दालान की तरफ कोई न आये'—ऐसी आज्ञा देकर वे उस ओर चल पड़े।

गंडासे लेकर दाक्षायणी अम्मा के भाई रामन पिल्लै और दो गुण्डे भी आँगन में आ खड़े हुए। दाक्षायणी अम्मा और बहनें भी गंडासे लेकर आ खड़ी हुई।

'कोई घबराओ मत। यहाँ कोई भी नहीं आयगा।' पद्मनाभ पिल्लै ने ज़ोर से चिल्लाकर कहा।

कुञ्जन के घर में कोलाहल हुआ। वहाँ नायर-सेना एक साथ घुस गई। घर के आँगन में खड़े होकर एक नायर चिल्लाया—'कोट्टी के घर में आग लगाओ!'

पद्मनाभ पिल्लै ने गंडासे से चहारदीवारी काटी। वे कुञ्जन के घर की ओर दौड़ गए।

'आग लगाने की ताकत किसमे है!' उन्होंने गरजकर कहा। साधारण से अधिक लंबे हाथ से गंडासा उठाकर वे चिल्लाए—'क्या आग लगाओगे?'

जलते हुए आग के पलीते के साथ एक हाथ ऊपर उठा। पद्मनाभ पिल्लै एक छलाँग में वहाँ पहुँचे। पलीता पकड़ा हुआ हाथ कटकर शरीर से अलग जा गिरा। पद्मनाभ पिल्लै शैतान की तरह चिल्लाए—'अब भी आग लगाने की ताकत किसी में है?'

सब पीछे हट गए। एक नायर पीछे से बड़बड़ाया: 'मैंने पहले ही कहा था कि यहाँ मत खेलो।'

मार खाकर ज़मीन पर लेटने वाले नायर को लेकर सेना पीछे हट गई। एक नायर चिल्लाया—'कोट्टियों की मदद के लिए नायर को काटने वाले नायर को मार डालना चाहिए।'

'मारने के लिए जायें तो ऐसा ही होगा।' दूसरे नायर ने कहा।

घबराकर काँपती हुई बैठी कल्याणी और यशोधरा पेड़ के पीछे से

उठ ग्राईं। ग्राँखो में ऑसू भरकर कल्याणी ने कहा : 'छोटे मालिक ने हम दासो की रक्षा की।'

यशोधरा ने कल्याणी के कान मे कहा—'माँ, छोटे मालिक ग्रौर दास क्यों कहती हो ?'

१३. भूतकाल को लात मारकर पीछे ढकेल रहे हैं

कुञ्ञवरीन आज साढ़े चार एकड़ जमीन और कुछ बीघे धानकी खेती का मालिक है, लेकिन अपने आचार-व्यवहार, रीति-रिवाज या भाव से वह दूसरों को इतना धनी नहीं लगेगा। मुश्किल से घुटने तक की मैली धोती और अँगोछा पहनकर वह तब भी नाव लेकर जाता था। फटी हुई धोती और ब्लाउज पहनने वाली सारा अब भी मंगलश्शेरी में धान कूटने और झाड़ू लगाने जाती है। वह और बच्चे वही खाना खाते हैं। धान कूटने से निकली भूसी वगैरह और गोशाला का गोबर सारा अपने घर ले जाती थी।

संध्या के बाद ही कुञ्ञुवरीत के घर से धुआँ निकलना दिखाई पड़ेगा। रात के दस बजे तक उस छोटे घर में किसी को आराम नहीं मिलता था। इसी बीच सारा ने जिस शिशु को जन्म दिया था, उसे वह बड़े बच्चों के पास छोड़कर काम करने जाती थी। बीच-बीच में दूध पिलाने के लिए भागकर आती थी।

बड़े बेटे वर्की को भी बहुत काम था। सबेरे उठकर एक डलिया लेकर वह सड़क पर जाता। कहीं गोबर पड़ा देखता तो डलिया में डाल लेता। कूड़ा पड़ा देखता, वह भी डलिया में रख लेता। चहारदीवारी से रहित घरों के अहातों में घुसकर गोबर या लकड़ी के टुकड़े पड़े देखता तो उठाकर डलिया में डाल लेता। इस प्रकार अपनी डलिया भरकर ही वह घर वापस आता था।

कुञ्ञुवरीत ने दूसरे बेटे तोमा को स्कूल में भेजने का निश्चय किया। सारा को यह पसन्द नहीं था। कुञ्ञुवरीत ने पूछा : 'यह भी चार अक्षर नहीं पढ़े तो······'

'न पढ़े तो क्या होगा ? खाना नहीं पकेगा क्या ?'

'एकाध चिट्ठी आये तो कोई पढ़ने वाला होना चाहिए।'

'यहाँ चिट्ठी कौन भेजता है ? उसकी जरूरत ही क्या।'

'अरी! मान लो किसी ने पत्र लिखा ही! तब कौन पढ़ेगा ?'

'उसके लिए पड़ोस में चले जाना काफी है न ?···उसे अगर पढ़ने भेज दोगे तो छोटे बच्चे और मुर्गी को कौन देखेगा ?'

'वर्की का इस प्रकार बच्चे को देखते रहना काफ़ी है क्या ?'

'कुछ भी हो उसे चार अक्षर पढ़ाना ही है। पड़ोस के सब बच्चे पढ़ने जाते हैं, तब क्या अपने घर से भी कम-से-कम एक बच्चे को नहीं जाना चाहिए ?'

तोमस को स्कूल भेज दिया गया, इसलिए वर्की का काम बढ़ गया। तीस मुर्गियाँ और तीन-चार बकरियाँ हैं। पूरे अहाते में खेती है। जिसे मुर्गियों से बचाना है; बकरियों को पत्ते खाने से रोकना है। वर्की मुर्गियों को पड़ोस के अहातों में भगा देता था और बकरियों को बाहर निकालकर फाटक बंद कर देता था। अँधेरा होने के पहले ही सबको लिवा लाता था।

मुर्गियों के सारे अंडे और बकरियों का दूध बेच दिया जाता है। उससे प्रतिदिन दो, कभी-कभी ढाई और तीन रुपये तक की आमदनी हो जाती है; कुञ्ञुवरीत अपनी मजदूरी के पैसे खर्च नहीं करता। सारा रुपया एक पुरानी पेटी में जमा करके झोपड़ी के बीच में गड्ढा खोदकर उसे गाड़ देता है और उसके ऊपर चटाई बिछाकर सोता है।

कुञ्ञुवरीत की धान की खेती आश्चर्यपूर्ण विजय थी। उस ज़मीन से कभी दस गुने से अधिक धान नहीं मिला। कुञ्ञुवरीत ने दो बार ज़मीन जोतकर, खूब खाद डालकर खेती की। मौसम भी अनुकूल था। उस वर्ष अठारह गुना धान पैदा हुआ। कई लोगों ने कुञ्ञुवरीत से पूछा : 'इतना अधिक धान कैसे पैदा हुआ, कुञ्ञुवरीत ?'

'खेत में बीज फेंककर चले आयें···और समय पर फसल काटने लौट जायें तो हाथ लगेगा सिर्फ़ घास-फूस ही। धान पाने के लिए

लगकर काम करना पड़ता है।'

सारा धान बेच ही दिया जाता था, किन्तु कुञ्ञुवरीत फसल का मौसम बीत जाने के बाद जब धान का दाम बढ़ता है, तभी अपना धान बेचता था। उतने समय तक धान को सम्हालकर रखना उसके लिए एक समस्या बन गई। कुञ्ञुवरीत मंगलश्शेरी गया। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'कुञ्ञुवरीत, कुछ रुपया है क्या ?'

'इस समय तो नहीं है। यदि आपको जरूरत हो तो कहीं से···'

'तुम्हारे पास हो तो दे दो। उधार मत लाओ।'

'शायद सारा के पास कुछ होगा। मैं देख आऊँ···' वह भागता हुआ चला गया।

कुछ देर के बाद कुञ्ञवरीत कागज की एक पुडिया लेकर आया। उस पुडिया को पद्मनाभ पिल्लै के सामने रखकर वह कुछ दूर खड़ा हो गया।

'इसमे कितने रुपये हैं ?'

'शायद दो सौ के करीब होंगे। अंडे और दूध बेचकर उसने ये पैसे छिपाकर रखे थे।'

'आज यह मिला बहुत बड़ा उपकार हो गया, कुञ्ञुवरीत। कचहरी जाने पर कितना भी रुपया हाथ मे हो, पूरा नही पड़ता। खंभो को भी घूस देनी पड़ती है।'

'नही तो मंगलश्शेरी का मालिक क्या दूसरों के सामने छोटा बन सकता है ?···तब फिर···'

'कुञ्ञुवरीत को क्या चाहिए ?'

'कुछ धान काटकर लाया हूँ। कौए और मुर्गी अगर आकर खा गए तो······'

'बखारी के बरामदे में एक बड़ा बक्स पड़ा है। शायद दीमक लग गई हो।···चाहिए तो उसे ले जाओ।'

'यहीं ज़रूरत होने पर वापस ले आऊँगा।'

'यहाँ का धान बखारी मे रखा जाता है। वह बडा बक्स तुम ले लो।'

उसी दिन कुञ्जुवरीत दस-बारह लोगो को साथ लेकर वह बड़ा बक्स उठा लाया। उसने धान को उसमे सुरक्षित रूप से रख दिया। मूल्य बढने पर बेच भी दिया। धान और कन्द-मूल बेचने मे जो रुपये मिले उन्हे एक कागज मे लपेटकर पद्मनाभ पिल्लै के सामने रख दिया।

'ये कितने रुपये है कुञ्जुवरीत ?'

'शायद एक हजार होगे।'

पद्मनाभ पिल्लै ने कागज की पुडिया लेकर गहरी साँस लेते हुए कहा : 'अदालत मे कभी मत जाना, कुञ्जुवरीत ! अदालत मे जाने वालों का सब-कुछ उजड जायगा।'

'जाना ही पडे तो क्या किया जा सकता है ?'

'हाँ। फिर भी जहाँ तक हो सके, नही जाना चाहिए।'

ऐसा ही चाहिए,' कुञ्जुवरीत सिर खुजलाकर और कुछ कहने के भाव से खडा हो गया।

'कुञ्जुवरीत को क्या चाहिए ?'

'कुछ नही···लेकिन···जाकर देखते है तो बडा बुरा लगता है। कैसी दीखती थी वह जमीन ?'

'कौन-सी जमीन ?'

'नदी के किनारे पर आपकी कुछ जमीन और साथ ही एक बड़ा खेत भी है न ?···कुञ्जन तंडार जब थे तब वहाँ से वापस आने का मन नही करता था।'

'कुञ्जन था तब···' पद्मनाभ पिल्लै की आँखे भर आई। गद्गद् कंठ से उन्होंने कहा—'कुञ्जन के जाने के बाद से इस खानदान का अध:पतन हुआ। उसके बाद, देखो दो क्रिमिनल केस हुए है न ?'

'लेकिन···वह, यहाँ के किसी की गलती से गया है क्या ?···किसी ने कुछ कह दिया कि···'

कुछ देर मौन रहकर उन्होंने कहा, 'हम लोगों का नाश करने के लिए

पच्चाषी के लोग बहुत पहले से कोशिश कर रहे हैं। अन्त में झगड़ा करके और अपवाद फैलाकर वे हमको…'

'लेकिन एक बात है मालिक। पच्चाषी के लोगों का भी तो नाश ही हो रहा है।'

'हम लोगों को तबाह करने के लिए वे स्वयं भी नष्ट हो रहे हैं।' एक दीर्घ निःश्वास लेकर वे मौन हो गए। काफ़ी देर के बाद उन्होंने कहा : 'उस ज़मीन से कोई लाभ नहीं हो रहा है। पैदावार भी बहुत कम होती जा रही है।'

'ये खेती, जो खेती कहते हैं सो भगवान् हैं। निरन्तर प्रार्थना करते रहें, तभी भगवान् आँखें खोलता है, उसी प्रकार कृषि भी है। सदा खेती में लगे रहना चाहिए, तभी खेती से लाभ मिलता है…। नदी के किनारे के वे खेत मुझे दे दीजिए—चाहे गिरवी रख दीजिए या खेती करने की अनुमति देते हुए एक दस्तावेज़ लिखकर दे दीजिए।'

'ठीक है। कुञ्जुवरीत कल यहाँ आओ। हाँ तो कुछ रुपये भी लेते आओ।'

अगले दिन कुञ्जुवरीत ने दो सौ रुपये लाकर दिये। दो एकड़ उर्वर ज़मीन और चालीस पसेरी बीज बोने योग्य खेत कुञ्जुवरीत को रेहननामे से मिल गए।

× × × ×

नीलकण्ठ कुरुप अस्पताल में ही मर गया। मालिक माधव कुरुप न मरने पर भी मरे हुए के समान ज़िन्दा पच्चाषी वापस आ गया। कुञ्ञन के घर पर पद्मनाभ पिल्लै ने जिसका हाथ काटा था, उसका हाथ नष्ट हो जाने पर भी वह मरा नहीं।

पद्मनाभ पिल्लै भी गिरफ़्तार हो गए, लेकिन इस बार जमानत के लिए उच्च न्यायालय तक नहीं जाना पड़ा। सेशन्स न्यायालय में उनकी ज़मानत जमा की गई। इस प्रकार पद्मनाभ पिल्लै दो क्रिमिनल मुक़दमों के प्रतिवादी बन गए। वे दिन-भर मुक़दमों के काम में निमग्न

रहने लगे।

वासु और दिवाकरन की जमानत के लिए पद्मनाभ पिल्लै ने सभी प्रकार की सहायता की। दोनों के घर वापस आ जाने पर कल्याणी ने कहा : 'वहाँ जाओ बेटे—मालिक के पैर छू लो जाकर। जाओ बेटे—जाओ।'

वासु की आँखें भर आई। उसने दृढ स्वर में कहा : 'नहीं माँ ! नहीं ! मैं मालिक कहकर नहीं बुला सकता, न ही पैर छू सकता हूँ !'

मंगलश्शेरी परिवार, खासकर पद्मनाभ पिल्लै, ने कुञ्ञन के परिवार के लिए जो किया उसे जानने वाला है वासु। इसके अतिरिक्त वासु और दिवाकरन यह भी जानते हैं कि उस घर की रक्षा के लिए ही पद्मनाभ पिल्लै को एक और क्रिमिनल मुकदमे का प्रत्यार्थी होना पड़ा था, लेकिन उन्हें मालिक पुकारने और पैर छूने को वे तैयार नहीं।

दिवाकरन ने कहा : 'माँ ! इस देश-भर में, इन्सानियत सिर्फ एक ही व्यक्ति में है। वह व्यक्ति है मंगलश्शेरी के पद्मनाभ पिल्लै, लेकिन उनको भी 'तंपुरान' कहना और पैर पकड़ना मेरे लिए संभव नहीं है।'

यशोधरा ने भाइयों का अभिनन्दन किया। कल्याणी के गालों पर आँसू की धारा बह चली।

× × × ×

दंगे वाले मुकदमे के लिए ईषवा प्रत्यार्थियों का मुकदमा लड़ने के लिए ईषवाओं से चन्दा एकत्र किया गया। इसके लिए गोविन्दन वैद्य की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई। सब ईषा घरों से ज़बरदस्ती चन्दा लिया गया। बाहरी ईषवाओं ने भी हड़ताल करने वाले अपने बन्धुओं की आज़ादी के लिए धन भेजा।

नायर लोगों ने भी मुकदमे के लिए चन्दा एकत्र करने की कोशिश की, किन्तु असफल रहे। नायरों ने तर्क किया कि पच्चाषी खानदान के लिए हम लोग झगड़े में पड़े। इसलिए मुकदमा चलाना तथा झगड़े से पीड़ित लोगों की मदद करना पच्चाषी खानदान का कर्त्तव्य है।

ईषवाओं के घमण्ड का नाश करना नायरो का कर्त्तव्य है। उसके लिए पच्चाषी लोगों ने परिश्रम किया है, इसलिए पच्चाषी खानदान की प्रतिष्ठा और इज्जत को बनाये रखना नायरों का कर्त्तव्य है। पच्चाषों के बन्धुओं ने इस प्रकार तर्क किया, लेकिन इस तर्क का कोई मूल्य नहीं था। अन्त मे प्रत्येक व्यक्ति के अपनी-अपनी रक्षा पर ही निर्भर रहने का निर्णय लेकर नायरो की मंत्रणा-सभा विसर्जित हुई।

× × × ×

पुल तोड़ दिया गया। साथ-साथ दोनो तीरों का परस्पर संबंध भी टूट गया।

दोनों जातियों का सम्बन्ध ऊँच-नीच की भावना पर आधारित है। उनकी यह भावना कई सदियो मे रूढ़ मूल है; दोनों भागों ने इस संबंध में मजूरी दे रखी थी। इस संबंध का विच्छेद होने पर दोनों को परेशानी और वेदना होगी।

पश्चिमी भाग के ईषवा पूर्वी भाग मे दिखाई पड़ें तो मार पड़ेगी। इसी प्रकार पूर्वी भाग के नायर या मुसलमान यदि पश्चिमी भाग में दिखाई पड़े तो उनकी भी पिटाई होगी। पूर्वी भाग मे बसने वाले सब ईषवाओं ने पश्चिमी भाग में शरण ली। सिर्फ कुञ्जन का परिवार ही पूर्वी भाग मे रह गया। वासु और दिवाकरन को मारने की हिम्मत किसी मे नही थी।

पूर्वी भाग का बाज़ार नाम-मात्र का रह गया। आग से जली हुई दुकानें दुबारा बनाई गई। सब दुकानों में व्यापार शुरू हो गया। शाम को मछली और कन्द-मूल बेचने वाले आ जाते। बेचने का सारा सामान है, पर खरीदने के लिए कोई नही है। उस मंडी का सामान अधिकतर पश्चिमी भाग के लोग ही खरीदते थे। उनके न आने के कारण यहाँ का व्यापार रुक-सा गया।

पश्चिमी भाग में एक छोटा-सा बाज़ार शुरू हुआ। एक रात की मंडी। दुकानदार इस मंडी में जाने लगे। कुछ ईषवा भी दुकानदार बन

गए। इस प्रकार उस बाजार का धीरे-धीरे विकास होने लगा।

लेकिन पश्चिमी भाग के कुछ परिवार भूखों मरने लगे और कुछ गरीबी की चरम सीमा तक पहुँच गए। पूर्वी भाग से भाग आए ईषवा भी मुसीबत में पड़ गए। ये पूर्वी भाग के घरों और खेतों में काम करके जीने वाले थे। कुछ लोग पूर्वी भाग के खेतों को बटाई पर लेकर खेती करते थे। ये ही लोग गरीबी और मुसीबत में पड़े हैं।

पूर्वी भाग में सांपत्तिक अध:पतन के लक्षण स्पष्ट होने लगे। बरसात के प्रारम्भ होने पर भी खेत नहीं जोते गए। बटाई पर लेने वालों ने जमीन के लिए भाग नहीं दिया था। पूर्वी भाग के लोगों की पश्चिमी भाग में खेती है। वहाँ जाने का कोई रास्ता न होने के कारण वहाँ से इन घरों को कुछ नहीं मिल सका। पूर्वी भाग में बीमारी आने पर चिकित्सा के लिए प्राय: पश्चिमी भाग के कोच्चुरामन वैद्य और गोविंदन वैद्य को बुलाया जाता था। वैद्यों को बुलाने के लिए पश्चिमी भाग में न जा सकने के कारण और वैद्यों के पूर्वी भाग में न आ सकने के कारण मरीज और उनके परिवार वाले परेशान होने लगे।

इस प्रकार सैकड़ों वर्षों के पुराने सम्बन्धों का विच्छेद हो जाने पर दोनों पक्षों को परेशानियाँ हुईं; वेदनाएँ हुईं।

× × × ×

कल्याणी और उसके बच्चे पश्चिमी भाग में नहीं गये। सबको मालूम था कि झगड़े का नेतृत्व करने वाले वासु और दिवाकरन थे। लेकिन पद्मनाभ पिल्लै के डर से किसी ने उन्हें नहीं सताया; उनसे कुछ कहा भी नहीं।

पुल टूट जाने के कारण वासु और दिवाकरन को पश्चिमी भाग जाने में परेशानी हुई। वहाँ पर विचार-विमर्श में और चन्दा एकत्र करने में उनका होना अति आवश्यक था। यदि वे नाव में चढ़कर उस पार जायँ तो पूर्वी भाग के लोग उन्हें नाव नहीं देंगे। पश्चिमी भाग की नावों को पूर्वी भाग के घाटों पर लंगर डालने को नहीं मिलेगा।

इसके अलावा एक ही मार्ग और है। शहर में जाकर वहाँ से चक्कर लगाकर नदी पार करके पश्चिमी भाग में पहुँच सकते थे। इसलिए प्रतिदिन पश्चिमी भाग जाने में वे असमर्थ हो गए।

वे नायरों से नहीं बोलते थे। घर के बाहर निकलने पर उन्हें क्रूर दृष्टि का सामना करना पड़ता था। बड़े और छोटे भाई दोनों के पास कोई काम न होने से घर का खर्च चलाने में भी परेशानी हो गई। वासु की सिलाई की दुकान नहीं खुली। अगर खुले भी तो कोई फ़ायदा नहीं होगा, कोई भी नायर ईषवा से अपना कपड़ा नहीं सिलवायगा।

एक दिन पद्मनाभ पिल्लै वासु से रास्ते में मिले। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : मुकदमा कैसा चल रहा है वासु ?'

'ईषवाओं को दण्ड मिलेगा'—वासु ने कुछ गर्व से उत्तर दिया।

'दण्ड मिलेगा, यह बात तुझे कैसे मालूम ?'

'पुलिस और अदालत सवर्ण है न ? तुम लोग अवर्णों को जानवर ही समझते हो।'

पद्मनाभ पिल्लै पीले पड़ गए। रास्ते में सुनने वाले लोगों ने वासु और पद्मनाभ पिल्लै को घूरकर देखा। विषय बदलने के लिए पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'क्या तू अब सिलाई की दुकान नहीं खोलता ?'

वासु ने उसका उत्तर नहीं दिया। वह पद्मनाभ पिल्लै की ओर क्रोध से देख रहा था। उसकी आँखें लाल हो रही थीं। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'क्या तेरे भाई को कोई नौकरी नहीं मिली ?'

'तुम—मुझे 'तू' कहकर बुलाने वाले कौन होते हो ?' यह एक विस्फोट था।

पद्मनाभ पिल्लै एक क्षण के लिए स्तब्ध रह गए। सुनने वाले नायर हँस पड़े। एक आदमी ने चिल्लाकर कहा : 'ऐसे ही पूछ वासु—पूछ ! ईषवाओं को घर में और रसोई में घुसाने वाले हैं ना मंगलश्शेरी के लोग ! पूछ-पूछ—ऐसे ही पूछ।'

एक दूसरे नायर ने कहा : 'इसके घर में आग लगाने के लिए जाने

पर हाथ काटने वाला है न मंगलश्शेरी का मालिक···खूब सुना वासु—सुना ।'

वासु ने तनकर खड़े होकर कहा : 'आग लगाने के लिए आने पर हाथ काटने के लिए हम लोगों में से किसी ने नहीं कहा । किसी भी नायर की मदद हमें नहीं चाहिए । ईषवा नायरों की दया पर नही जीते ।'

पद्मनाभ पिल्लै की आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगी । वे आगे बढ़े । वह लम्बा हाथ ऊपर उठा—'नमकहरामी कोट्टी, तूने क्या कहा ?' उस दिन पहली बार उन्होंने कोट्टी शब्द जीभ से प्रयोग किया ।

वे और आगे बढ़े । वासु पीछे हट गया । उसने कहा : 'कोई भी कोट्टी किसी वेटला की दया पर नही जीता ।'

पद्मनाभ पिल्लै फिर आगे नही बढ़े । उन्होंने वासु को घूरकर देखा । उनका ऊपर उठा हाथ धीरे-धीरे नीचे आ गया—'तू—तू कुञ्ञन का बेटा है । तुझे···तुझे मैं नही मारूँगा ।'

'मेरा बाप मेरे लिए बोझ बन गया है ?'

ठीक तो है । आज़ादी की तरफ़ कूदकर चढ़ने वालों के लिए उनकी पहली पीढ़ियाँ बोझ ही होती है ।

× × ×

वासु ने घर जाकर माँ से कहा—'माँ, हमें यहाँ से जाना चाहिए ।'

'क्यों बेटा, इस घर से क्यों जाना चाहिए ?'

'हमको यहाँ से जाना है । नायरों के बीच में हमें नही रहना चाहिए । हम कोट्टी हैं । हमें कोट्टियों के बीच मे ही रहना चाहिए ।'

कल्याणी ने दृढ़ स्वर में कहा : 'नहीं बेटा, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी । छोटे मालिक की माँ ने हमारे विवाह में यह घर और ज़मीन दान मे दी थी । मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी ।'

'मालिक और मालकिन से दान में मिले घर में रहने को मैं तैयार नहीं हूँ ।'

दिवाकरन ने भी वही दोहराया—'मैं भी यहाँ नहीं रहूँगा । यह

घर गुलामी के प्रतिफल में मिला है। मैं यहाँ नहीं रहूँगा।'

'तुम हमारे साथ आ रही हो यशोधरा ?'—वासु ने पूछा।

'माँ'—उसकी आँखें भर आईं।

'तब तुम माँ के पास रहो, हम जाते हैं।'

कल्याणी फूट-फूटकर रोई—'मैं यहीं रहूँगी। मैं यहीं रहूँगी। जो चले गए, वे फिर वापस आयेंगे। नहीं आयेंगे तो मैं यहीं पड़ी-पड़ी मरूँगी।'

वासु और दिवाकरन उस घर से चले गए। वे भूतकाल को ठोकर मारकर आगे जा रहे हैं, भविष्य की स्वातंत्र्य-उषा में पहुँचने के लिए।

१४. चोर कुट्टन वापस आया

मुक्कोणक्करा के दक्षिणी भाग में एक घटना घटी। बीस साल पहले भाग जाने वाला कुट्टप्पणिक्कर वापस आया।

अंग्रेज़ी पोशाक में बड़ा-सा चुरुट पीते हुए, लोहे की चार-पाँच पेटियों के साथ, शहर के बस स्टेण्ड पर उतरते ही लोग कुट्टप्पणिक्कर को आश्चर्य से देखने लगे। सब पेटियाँ और बिस्तर एक बैलगाडी में लाद-कर वह पैदल ही दक्षिणी भाग की ओर चलने लगा। लोहे की पेटियों से लदी हुई बैलगाड़ी के साथ, सूट-बूट पहने लम्बे चुरुट से धुआँ निकालते हुए चलने वाले उस काले रंग के अतिकाय व्यक्ति को देखकर ग्रामवासी चकित होकर खड़े रह गए।

बहुतों ने पूछा,यह कौन है। कोई भी उत्तर नहीं दे सका।

अंत में एक छोटे घर के सामने गाड़ी रुक गई। वह उस घर के अन्दर चला गया। गाड़ीवान पेटी और बिस्तर उठाकर ले गया। रास्ते पर खड़े एक बूढ़े ने पूछा ; 'वह चोर कुट्टन है न ?'

'कौन चोर कुट्टन ?'

'चोरी करके छुपकर भाग गया था न चोर कुट्टन ! उसका नाम नहीं सुना ? वही है यह !'

एक पल में यह समाचार पूरे ग्राम में फैल गया कि चोर कुट्टन वापस आया है। ऐसा सुना जाता है कि अंग्रेज़ों की तरह आया है और सात-आठ पेटी भरकर रुपये लाया है। चोर कुट्टन को देखने के लिए ग्राम-वासियों की भीड़ लग गई।

आये हुए सब लोगों को उसने एक-एक उपहार दिया। कुछ लोगों को चुरुट, कुछ को बनियान, कुछ लोगों को कलम और कुछ को बिस्कुट —इस प्रकार कई उपहार दिए। कुछ लोगों को अन्दर बुलाकर चाय

पिलाई। उन सबको उपहार में रुपये भी दिए। अपने आगे के कार्यक्रमों के बारे में उसने कहा। बहुत-से खेत और जमीन खरीदना, एक बड़ा महल बनवाना और एक प्रतिष्ठित परिवार की लड़की से विवाह करना उसके कार्यक्रम थे। इसके लिए सहायता करने की उसने सबसे प्रार्थना की।

'चोर कुट्टन' से मिलने ले लिए आए हुए सब लोग उसके प्रचारक बनकर वापस गए। कुछ लोग उसके दलाल भी बन गए।

× × ×

दुबला और काला, कौए के समान आंखों वाला, एक गंदा आदमी था चोर कुट्टन। गोशाला के गोबर से लेकर संदूक के आभूषणों तक की वह चोरी करता था। चोरी करते समय मालिक द्वारा पकड़े जाने पर चुराई हुई चीज़ें वापस देकर वह उनके पैर पकड़कर माफ़ी मांग लेता था। फलस्वरूप कहीं भी चोरी हो जाय तो चोर कुट्टन ही है, ऐसी धारणा पूरे ग्राम में फैल जाती और ऐसी स्थिति आ जाती कि उसने चोरी की हो या न की हो, माल उसको ही वापस देना पड़ता था। उसने जो कुछ नहीं चुराया ऐसी वस्तु वापस न दे सकने के कारण उसे काफ़ी मार भी सहन करनी पड़ती थी।

अंत मे कुट्टन ने ग्राम से चले जाने का निश्चय किया। एक घर में घुसकर, वहाँ की पेटी तोड़कर काफ़ी रुपये और गहने चुराकर वह गांव से चला गया। उस समय उसकी आयु तेईस साल की थी। उसके बाद बीस वर्ष बीत गए।

बहुत धन और फिरंगी रोग साथ लेकर वह वापस आया। उस घर में सिर्फ उसका बड़ा भाई नाणुप्पणिक्कर, एक बहन और उनके बच्चे ही रह गए थे। उन्हें कुछ रुपये देकर, नदी के किनारे एक घर और ज़मीन खरीदकर वह वहाँ रहने लगा। ज़मीन और घर खरीदने के लिए तथा अपने लिए वधू ढूंढ़ने के लिए दलालों के साथ पूरे देश में घूम लिया।

कई घर वालों ने उसे विवाह के लिए निमंत्रित किया। निमंत्रण दिये गए सभी घरों में वह गया भी।

उसने इधर-उधर कुछ और खेत तथा ज़मीन खरीद ली। जिन-जिन घरों में विवाह के लिए बुलाया गया, उन सभी घरों में वह प्रतिदिन जाता रहा। बहुत बड़े धनिक के समान सब लोगों ने उसका आदर-सत्कार भी किया।

लेकिन ग्रामवासी उससे कुछ प्रश्न पूछने लगे : 'बीस साल तक कहाँ था ? वह कौन-सा काम करता था ? इतना अधिक पैसा उसको कहाँ से मिला ?' आदि।

कुछ लोगों ने ये प्रश्न कुट्टप्पणिक्कर से सीधे ही पूछ लिए, लेकिन उनका उत्तर दिये बिना वह होशियारी से टाल जाता था। मद्रास, बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता आदि बड़े-बड़े शहरों के बारे मे, बड़ी-बड़ी पहाड़ियों, घाटियों और मरुस्थलों का वह वर्णन किया करता। बर्मा, सीलोन, मलाया आदि विदेशी राज्यों की भू-प्रकृति और वहाँ के लोगों का वर्णन भी वह किया करता। इन वर्णनों से अरुचिकर प्रश्नों को वह दबा देता था।

मुक्कोणक्करा उत्सव का झगड़ा तथा उसके बाद नायर-ईषवा दंगा इसी समय हुआ था। दंगे के बाद कुट्टप्पणिक्कर ने निश्चय किया कि नायर-समुदाय की प्रतिष्ठा का संरक्षण करना उसका कर्तव्य है। उस कर्तव्य-पालन के लिए वह मुक्कोणक्करा की ओर चला।

कुट्टप्पणिक्कर पहले पच्चाषी गया। नायरों की प्रतिष्ठा और इज्ज़त का संरक्षण करने के लिए उन्होंने नीलकंठ कुरुप और अच्युत कुरुप की बलि दी है न। अस्पताल के पलँग से पच्चाषी के पलँग पर आ जाने वाले मालिक माधव कुरुप ने कुट्टप्पणिक्कर का प्रफुल्लता से स्वागत किया।

कुट्टप्पणिक्कर पहले माधव कुरुप के पलँग पर ही बैठ गया। ईषवाओं के बढ़ते हुए घमंड और नायरों की गिरती हुई प्रतिष्ठा तथा इज्ज़त के

बारे में उन लोगों ने बहुत देर तक बातचीत की। मांजे दामोदर कुरुप का मंदिर के झगड़े में मर जाना, नीलकंठ कुरुप और अच्युत कुरुप का नायर-ईषवा दंगे में मरना, इस प्रकार उसका अकेले रह जाना आदि बातों का माधव कुरुप ने वर्णन किया। मुकदमा चलानें की मुसीबत और पैसे की कमी की सूचना भी दे दी।

नायरों की प्रतिष्ठा और इज़्ज़त को बनाये रखने के लिए साहस के साथ लड़ते रहने वाले पच्चाषी वालों का कुट्टप्पणिक्कर ने अभिनन्दन किया। उसने माधव कुरुप को वचन दिया कि धन के लिए कोई परेशानी उठाने की जरूरत नहीं। जितना रुपया चाहिए, वह कर्ज़ देने को तैयार है। उसने यह भी बताया कि मुकदमा चलाने की जिम्मेदारी भी वह ले सकता है।

कुट्टप्पणिक्कर के भोजन का पच्चाषी में सुन्दर ढंग से प्रबन्ध किया गया था।

× × ×

परोसने वाली देवकी अम्मा थी। चटाई बिछी थी। उस पर कुट्टप्पणिक्कर बैठ गया। देवकी अम्मा सज-धज कर आई और परोसने लगी। बेटा रवीन्द्रन खंभे के पास खड़ा था। परोसने के बीच में देवकी अम्मा ने कहा : 'पता नहीं हमारी सब्जी आपको पसंद आयगी भी ?'

'अच्छे हाथ से परोसी गई सभी सब्जी अच्छी होती है।' कहकर कुट्टप्पणिक्कर तिरछे देखकर मंद-मंद मुस्कराया।

देवकी अम्मा नम्रमुखी हो गई।

'यहाँ की सब्जी में आज तक किसी ने दोष नहीं निकाला है।'

'परोसने वाली के बारे में भी कोई दोष नहीं निकाल सकता।'

देवकी अम्मा रोषपूर्वक देखती हुई बोली : 'मैंने सब्जी के बारे में कहा था।'

'मैंने परोसने वाली के बारे में कहा है।'

दोनों परस्पर तिरछे देखकर मंद-मंद मुस्कराये। देवकी अम्मा ने

बेटे से कहा : 'बेटे उधर जाओ। खाना वहाँ परोसा रखा है।'

रवीन्द्रन का मुख पीला पड़ गया। वह वही खड़ा रहा।

कुट्टप्पणिक्कर ने पूछा : 'मंगलश्शेरी पद्मनाभ पिल्लै का बेटा है न ?'

कठोर निराशा को प्रकट करती हुई देवकी अम्मा ने कहा : 'वह सब हो गया···मैं बिलकुल सहमत नही थी। मामा की जबरदस्ती से मेरा विवाह हुआ था।'

'एक ही बेटा है ?'

'हाँ, एक ही है। चौदह वर्ष का हो गया है।'

कुट्टप्पणिक्कर ने रवीन्द्रन से पूछा :

'क्या नाम है ?'

रवीन्द्रन ने कोई उत्तर नही दिया।

'रवीन्द्रन'—देवकी अम्मा ने कहा।

'पढ़ने जाते हो ?'—यह सवाल भी रवीन्द्रन से पूछा गया था।

उस प्रश्न का भी उत्तर नही मिला। देवकी अम्मा ने कहा : 'यह मैट्रिक के नीचे के दर्जे में पढ़ता है।'

'होशियार हो जायगा' कुट्टप्पणिक्कर ने आशीर्वाद दिया।

'बाप की तरह न हो तो बस !'

रवीन्द्रन ने कुछ परेशानी से मुख मोड़ लिया। देवकी अम्मा ने यह देख लिया। उसने फिर कुछ नही कहा।

कुट्टप्पणिक्कर ने खाना खाकर हाथ धोये। उसने कहा : 'इस प्रकार रोज कोई खाना परोसने को मिल जाय तो···' उसने तिरछी निगाह से देखा।

'मिलने को तमाम मिल जायेंगी। पैसे वाले आदमी को क्या मिलना मुश्किल है।'

'मनचाही मिलनी चाहिए न ?'

'ढूंढ़ने पर अवश्य मिलेगी।'

'तो मैं फिर यहाँ आऊँगा। खाना दोगी न ?'

'दूँगी।'

कुट्टप्पणिक्कर वहाँ से उठकर माधव कुरुप के पलँग पर जाकर बैठ गया।

माधव कुरुप उठ या चल नहीं सकता। उसकी रीढ़ की हड्डी मूसल की मार पड़ने से टूट गई थी। दाएँ पैर के घुटने पर लगी हुई चोट थोड़ी-सी सूख गई। बड़ी बहन हर समय पास बैठकर सेवा कर रही है। उनके पत्नियाँ और बच्चे भी हैं। वे लोग देखने के लिए भी वहाँ नहीं आए।

आकर क्यों देखें ? कुत्तों की बहुत-सी पत्नियाँ और बच्चे होते हैं। उस कुत्ते के मरने पर उसकी पत्नी और बच्चे उसे देखने जाते हैं क्या ?

इलाज के लिए खर्चा बहुत है। उत्सव के झगड़े का मुकदमा सेशन्स अदालत में और वर्णीय दंगे का मुकदमा मजिस्ट्रेट अदालत में चल रहा है। उसके लिए भी बहुत रुपया खर्च हो रहा है।

बखारी में धान का एक दाना भी नहीं है। खेतों में बोने के लिए भी धान पैसे देकर खरीदा जाता है। खेती के लिए मजदूर मिलना भी मुश्किल है। ईषवाओं का निर्णय है कि पच्चाषी में काम करने के लिए किसी भी ईषवा के जाने पर उसे मारना चाहिए।

सारे अहाते इखरे-बिखरे पड़े हैं। रात में पच्चाषी के अहातों मे संगठित आक्रमण होता है। अंत में माधव कुरुप के इलाज के लिए पैसा नहीं रहा। वकीलों को ठीक प्रकार से फ़ीस न देने के कारण वे पेशी के दिन अदालत में अनुपस्थित रहने लगे। पूरा परिवार भुखमरी की सीमा पर पहुँच गया। उस समय कुट्टप्पणिक्कर माधव कुरुप से मिलने आया था। जिस लता को वह खोज रहा था, वह पैरों पर आ पड़ी। इस प्रकार उनकी भेंट हुई। हर्षपूर्ण स्वागत और सुस्वादु भोजन सब इसीका परिणाम था।

माधव कुरुप ने सारा दायित्व कुट्टप्पणिक्कर को सौंप दिया। कुट्टप्प-णिक्कर ने सारा दायित्व अपने ऊपर ले लिया और कहा : 'अब किसी बात की चिन्ता मत कीजिए। सब मेरे ज़िम्मे है। मैं सब ठीक प्रकार से चला लूंगा।'

'मैं बीमारी से उठते ही सब कर्ज़ चुका दूंगा। गणिक्कर को कोई लिखा हुआ प्रमाण चाहिए तो लिखकर दे दूंगा, लेकिन एक गड़बड़ी है। मैं रजिस्ट्री के लिए कचहरी नहीं जा सकूंगा।'

'तो क्या? रजिस्ट्रार को यहीं बुलाकर रजिस्ट्री करा लेंगे।'

'तो फिर ऐसा ही करवाइए।'

वैसा ही किया गया। पहले सात एकड़ ज़मीन और सात पसेरी धान बोये जाने वाले खेत कुट्टप्पणिक्कर के पास दीर्घकाल के लिए रेहन रखे गए।

माधव कुरुप का इलाज फिर से शुरू हुआ। अदालत में वकील लोग बराबर उपस्थित होकर अपने पक्ष के लिए ज़ोरदार विवाद करने लगे। घर का कार्य पहले से अच्छी तरह चलने लगा। सबका करता-धरता कुट्टप्पणिक्कर ही है—आदमी और अर्थ उसका है। सिर्फ़ इतनी ही बात है कि कुटुंब के खेत और ज़मीन दीर्घकाल के लिए उसके पास रेहन रखी गए हैं।

रजिस्ट्रार फिर आया। एक और रेहननामा रजिस्ट्री किया गया।

ये समाचार पद्मनाभ पिल्लै के कानों मे भी पहुंचे। उन्होंने केवल इतना ही कहा : 'यही कहावत है कि खग जानें खग ही की भाषा।'

× × ×

दक्षिणी भाग में कानाफूसी होने लगी—मुडनवेली अम्मिणी को फिरंगी रोग है। शहर मे जाकर छिपकर डाक्टर का इलाज करा रही है।

अम्मिणी अम्मा एक अच्छे किन्तु सामान्य परिवार की युवती है। कुट्टप्पणिक्कर ने, जो रुपयों से भरे हुए चार-पाँच बक्सों के साथ आया हुआ व्यक्ति है,जब शादी का प्रस्ताव रखा तो घर वालों ने स्वीकृति दे

दी। यथाविधि वस्त्र-दान करके विवाह भी संपन्न हो गया। बाद में अम्मा को भी फिरंगी रोग हो गया।

पहले अम्मिणी अम्मा को पता नहीं चला कि यह किस तरह की बीमारी है। कुट्टप्पणिक्कर से कहने पर उसने कोई परवाह नहीं की। उसका रोज आना भी बंद हो गया।

रोग दुस्सह हो जाने पर अम्मिणी अम्मा ने यह बात अपनी माँ से बताई। माँ ने एक वैद्य से कहा। वैद्य ने कहा : 'यह एक गंदी बीमारी है। इसे फिरंगी रोग या उपदंश रोग कहते हैं।' बहुत दिन तक उस वैद्य से इलाज कराने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ, इसलिए गुप्त रूप से शहर जाकर वहाँ के डाक्टर का इलाज होने लगा।

इस रहस्य के धीरे-धीरे प्रकट होने के साथ ही एक दूसरा रहस्य भी बाहर आने लगा—आलिन चोट्टिल की मीनाक्षी अम्मा को फिरंगी रोग है। मीनाक्षी अम्मा युवती है। दो बार विवाह हो चुका है। प्रेमियों के उपद्रवों के कारण दोनों बार शादी टूट गई थी। अब आगे शादी कर लेने का वायदा करके कुट्टप्पणिक्कर प्रेमी बनकर पीछे लगा हुआ था। इस प्रकार मीनाक्षी अम्मा को भी यह रोग हो गया।

धनी कुट्टप्पणिक्कर के बारे में खुले रूप में किसी को कोई अपवाद कहने की हिम्मत नहीं थी, लेकिन सबको उसका रहस्य मालूम था। चाय की दुकान में बैठकर एक रसिक ने कहा :

'कुट्टप्पणिक्कर के पास पैसा भी है; उपदंश रोग भी।'

यह बात उस गाँव में सब कहने लगे। कुट्टप्पणिक्कर को देखने पर स्त्रियाँ भागकर छिपने लगीं।

लेकिन यह रहस्य नदी के उस पार मुक्कणोक्कारा में नहीं पहुँचा।

× × ×

पच्चाषी में फिर से रजिस्ट्रार आया। एक और रेहननामे की रजिस्ट्री कराई गई। अब तक पच्चाषी की संपत्ति का आधे से अधिक भाग कुट्टप्पणिक्कर के हाथों में जा चुका था।

बात यहाँ तक पहुँचने पर घर के अन्दर रसोई में फुसफुसाहट शुरू हुई।

'मामा इस प्रकार सब लिखे दे रहे है तो हम लोग क्या करेंगे ?'

'जायदाद बेचकर वकील और वैद्य को दे दी जायगी तो खानदान के लोग क्या भीख माँगने जायँगे ?'

'मगलश्शेरी और ईषवो से लडाई करने के कारण यह स्थिति आई है।'

इस प्रकार प्रतिषेध के शब्द दबी हुई फुसफुसाहट और बडबड़ाने के स्वर निकलने लगे। सिर्फ देवकी अम्मा ने इस प्रकट प्रतिषेध मे भाग नही लिया। कभी वह पूछती 'रुपया उधार लेकर खानदान के लिए ही खर्च किया जाता है न ?'

'वकील और वैद्य को देना खानदान का खर्च है क्या ?'—माधव कुरुप की छोटी बहन कात्यायिनी अम्मा ने पूछा।

कात्यायिनी अम्मा का बेटा भास्कर कुरुप क्रोध से काँप उठा। उसकी उम्र बाईस वर्ष की है। वह बुद्धिमान है। उसने कहा : 'आगे से खानदान की जमीन-जायदाद किसी को देने नही दूंगा।'—उसका स्वर गूंज उठा।

यह वाक्य माधव कुरुप के कमरे मे भी पहुँचा। उस रोग-शय्या से एक कमज़ोर स्वर फूटा। वह स्वर मौत का गर्जन था। उसके बाद माधव कुरुप के मुख से कुछ खरखराहट ही निकली। दूसरे दिन संध्या के बाद वह आवाज भी सदा के लिए बद हो गई।

× × ×

यह एक आश्चर्य की बात थी कि पद्मनाभ पिल्लै ने भी माधव कुरुप के शव-संस्कार मे भाग लिया। कई लोगो ने अनेक तरह की बातें कही। कुछ लोगो ने कहा · 'बला टल गई, ऐसा सोचकर संतोष प्रकट करने आया है।'

कुछ लोगों ने कहा—'वह एक सीधा और भला व्यक्ति है, तभी तो

दुश्मन होने पर भी मृत्यु की बात सुनकर दौड़ा आया है।'

चिता से धुआँ उठा। उस धुएँ को देखकर पद्मनाभ पिल्लै की आँखों मे आँसू बहने लगे। उन्होंने धीरे से कहा . 'हमारा नाश करने के लिए वे स्वयं नष्ट हो रहे हैं।'

किसी से बिना कुछ कहे या विदाई माँगे, वे वापस चलने लगे।

'पिताजी'—कहकर दो हाथों ने उन्हें पकड़ लिया।

'बेटा !' झुककर उन्होंने रवीन्द्रन के सिर पर चुंबन लिया।

'रवीन्द्रन !'- एक ज़ोर की चिल्लाहट।

पिता और पुत्र दोनों चौंक पडे।

'इधर आओ।'—माँ की कठोर आज्ञा !

पद्मनाभ पिल्लै ने बेटे के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। वे चले गए।

बेटा भरी आँखों से पिता का जाना खडा देखता रहा।

१५. एक टूटा, दूसरा उठा

चार वर्ष का कठोर दड—मेले के परिणामस्वरूप यह दड पद्मनाभ पिल्लै को मिला। उनके साले रामन पिल्लै को छ वर्ष और दोनो गुडो को तीन-तीन वर्ष का दड मिला। माधव कुरुप और अच्युन कुरुप के मर जाने के कारण उन लोगो को मुकदमे से हटा दिया गया था। झगडे मे उनके पक्ष के तीन गुडो को तीन-तीन वर्ष के कठोर कारावास का फैसला सुनाया गया।

पद्मनाभ पिल्लै के लोगो ने तुरत अपील की अनुमति माँग ली। सब जमानत देकर बाहर आ गए। पच्चाषी के पक्ष के गुडो की मदद के लिए कोई नही था, इसलिए वे दड स्वीकार करके जेल चले गए।

मुकदमे का फैसला सुनते ही पद्मनाभ पिल्लै की पत्नी और बहने बेहोश हो गईं। बीमारी मे पडी दाक्षायणी अम्मा चारपाई से फिर न उठी। बच्चे जोर से रो पडे।

पद्मनाभ पिल्लै मगलश्शेरी खानदान का सर्वस्व है। उनके अभाव को सहने की ताकत परिवार मे किसी मे नही है। इसी प्रकार पद्मनाभ पिल्लै को भी अपने अभाव मे अनाथ होने वाले मगलश्शेरी खानदान के विषय मे सोचने की ताकत नही है। अदालत मे अपील करने का निश्चय किया है। वकीलो ने उच्च न्यायालय के प्रत्यार्थियो को यो ही छुडाने का वचन दिया है आदि बाते पद्मनाभ पिल्लै द्वारा बताए जाने पर बहनो को सात्वना मिली, लेकिन बीमार दाक्षायणी अम्मा का दिल यह आघात नही सह सका। वे बच नही सकी।

कुञ्ञुवरीत और उसकी पत्नी समाचार पाकर मिलने दौडे आए। कुञ्ञुवरीत ने कहा 'बडे मालिक को अगर यहाँ के जज दड दे तो 'दंड मत दो' ऐसा कहने वाले न्यायाधीश उसके ऊपर बैठे है। उच्च न्यायालय

में पहुँचने पर दंड रद्द हो जायगा ।'

सारा ने भरी हुई आँखों से कहा : 'लेकिन यह निर्दय दंड है । चार मालकिनों के बीच में एक बड़ा मालिक है । इन जजों के माँ और बहनें नहीं हैं क्या ?'

कुञ्जुवरीत ने पद्मनाभ पिल्लै से कहा कि किसी तरह वह पैसा लाकर देगा, लेकिन पद्मनाभ पिल्लै के मन में अनेक संदेह हैं । अब तक मंगलश्शेरी के एक सौ आठ पसेरी बीज बोए जाने वाले खेत और सात एकड़ जमीन कुञ्जुवरीत के हाथ में पहुँच चुके हैं । कुञ्ञन के अभाव में खेती से मिलने वाली आमदनी कम हो गई है । मुकदमे की अपील हो जाने पर बहुत रुपयों की ज़रूरत है । इसके अतिरिक्त दूसरे मुकदमे का फैसला भी सेशन्स अदालत में हो रहा है । हाथ काटने वाला मुकदमा नायर-ईषवा दंगे से संबंधित है । उसके लिए भी खर्च चाहिए । कुञ्जुवरीत ने ढाढस बँधाते हुए कहा : 'जेल में दस दिन रहने पर कोई मर नहीं जाता, लेकिन अभिमान बड़ा है न ? मुकदमा हिम्मत से लड़ने पर दंड रद्द हो जायगा ।'

'पैसा चाहिए न कुञ्जुवरीत ?'

'रुपया चाहिए तो देने के लिए हम लोग हैं न ? अभिमान पैदा नहीं किया जा सकता है न ?'

'यह सब पूर्वजों की कमाई है । मैंने कुछ नहीं कमाया । बहुत नष्ट ही किया है । पूरा खत्म हो जाने पर मेरी बहनें और बच्चे बे-घर-बार हो जायँगे न ?'

'तब क्या अभिमान छोड़ सकते हैं ?'

पद्मनाभ पिल्लै दाक्षायणी अम्मा की रोग-शय्या पर जाकर बैठ गए । तीनों बहनों को बुलाकर उन्होंने कहा : 'खानदान का नाश करके, तुम्हें बे-घर-बार करके···'आगे कंठ भर आने से उनका कहना रुक गया । अपने को नियंत्रित करके उन्होंने कहा : 'मेरी बच्चियो ! मैं तुम लोगों को बे-घर-बार नहीं करूँगा । मैं जेल जाऊँगा ।'

सुमती अम्मा ने दृढ़ स्वर में कहा :' खानदान का नाश होता है तो होने दो ! खानदान का नाश हो या न हो, भैया के जेल जाने पर हम बे-घर-बार हो जायँगी ।'

'भैया का इस घर में रहना काफ़ी है । हम भूखी रह लेंगी ।' ऐसा सरोजिनी अम्मा ने कहा ।

कमलाक्षी अम्मा ने कहा : 'भैया के जेल में मिट्टी ढोते समय हमें यहाँ सुखी नहीं रहना है ।'

जेल-वास किसी को पसन्द नहीं होता । विशेषकर धनी और प्रतिष्ठित परिवार का मालिक पद्मनाभ पिल्लै तो कभी पसंद नहीं करेगा । समृद्धि मे पैदा हुआ, बडा हुआ, फिर समृद्धि का नायक बना । वे जेल के दंड के विषय में सोचते-सोचते चौंक पड़ते हैं ।

लेकिन जेल के दंड से बचने का प्रयत्न —चाहे वह सफल हो या न हो— खानदान के विनाश में ही जाकर रुकेगा । चार पीढ़ी के कठिन प्रयत्नों मे बना हुआ खानदान है वह । स्वाभिमान या दुरभिमान के लिए चार पीढी की कमाई को मिट्टी मे मिलाना ठीक है क्या ? पति-विहीन तीन बहनें, उनके छोटे बच्चे और बीमार पत्नी ! उनको बे-घर-बार करना क्या ठीक है ?

लेकिन जेल में रहना और मिट्टी ढोना ! उस ज़माने में यहीं विश्वास था कि जो जेल जाते हैं, उन्हें मिट्टी ढोनी पड़ती है । मंगलश्शेरी के मालिक के लिए जेल के कर्मचारियों की मार खाकर मिट्टी ढोने से अच्छा मर जाना है न ?

अन्त में पद्मनाभ पिल्लै ने दोनों मुकदमों से बचने के लिए एक बार फ़िर कोशिश करने का निश्चय किया । कुञ्ञुवरीत ने विश्वास दिलाया कि रुपयों की ज़रूरत जब भी पड़ेगी, वह अवश्य देगा ।

× × ×

कुञ्ञुवरीत और उसका परिवार बिना आराम किये दिन-रात अथक परिश्रम कर रहा है । उसके पास खेती करने के लिए एक सौ साठ पसेरी

बीज बोए जाने वाले खेत और सात एकड़ बाग-बगीचे हैं। उसका यही आग्रह है कि खेत और बाग-बगीचे सदा हरे-भरे रहें। उस ज़मीन में एक इंच जगह भी ऐसी नहीं है जहाँ कुञ्ञुवरीत के हाथ-पैर न पहुँचते हों। उसका कहना है : 'हम मिट्टी से प्यार करें तो मिट्टी हमसे प्यार करेगी। मिट्टी को खाना देने पर मिट्टी हमको भी खाना देगी। देव-पुत्र ने कहा है कि तुम दूसरों से वैसा व्यवहार करो जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुमसे करें।'

बीज का दस-बारह गुना पैदा करने वाले खेतों में कुञ्ञुवरीत ने पच्चीस-तीस गुना धान पैदा किया। आश्चर्य और ईर्ष्या से पड़ोसी उससे पूछा करते थे : 'कुञ्ञुवरीत जादू जानते हो क्या?'

'हूँ, जादू! खेत के किनारे खड़े होकर मंत्र पढ़ने से कोई फायदा नहीं। खेत खूब जोतकर खाद डालकर बो देने के बाद किनारे पर खड़े होकर मंत्र पढ़ना चाहिए, बस। एक से सौ गुना उत्पन्न होगा, समझे?'

अव्वल दर्जे के नारियल के पेड़, केला, काली मिर्च, कंद-मूल और ज़मीनकंद आदि देखने हों तो कुञ्ञुवरीत के बगीचों में जाना पड़ेगा। ये धान, नारियल, केला, काली मिर्च, कंद-मूल और ज़मीनकंद उसकी अपनी ज़रूरत के लिए नहीं बल्कि सब बेचने के लिए हैं। बेच-बेचकर वह रुपया इकट्ठा करता है और फिर खेत तथा बाग-बगीचे खरीदता है।

फ़सल कटते ही कुञ्ञुवरीत धान नहीं बेचता। धान सुखाकर साफ़ करके पेटियों में भरकर रखता और बीज के लिए ही बेचता है। कुञ्ञु-वरीत के बीजों का दाम दुगुना है। दुगुना दाम होने पर भी किसान कुञ्ञुवरीत से ही बीज खरीदते हैं। इसका कारण भी है। कुञ्ञुवरीत के बीजों में एक भी बीज बेकार नहीं होता। बीज खरीदने वाले कहते हैं : 'कुञ्ञुवरीत के हाथ से बीज खरीदें तो बरकत होती है।'

नाव का काम छोड़ने के लिए कुञ्ञुवरीत मजबूर हो गया। प्रतिदिन दो रुपये की मजदूरी छोड़ने में उसे बहुत दुःख हुआ, लेकिन नाव का काम करने पर खेती नहीं देख सकता था। खेती न होने पर उतने दिन

तक की सारी कमाई उड़ जायगी, इसलिए नाव का काम छोड ही दिया।

सारा अब मंगलश्शेरी नहीं जाती। कैसे जाय? सबेरे चिड़ियों के साथ उठती है और फिर आधी रात होने पर लेट पाती है। बीस-तीस मुर्गियाँ हैं। उन्हें बगीचों में जाने से रोकना है। मुर्गियों को अंडे देते देखना है। उन्हें एकत्रित करके अच्छे दामों पर बेचना है। दो गाएँ और दो जोड़ी बैल हैं। उन्हें ठीक समय पर दाना-पानी देना है। दूसरों के बगीचों में घास वाली जगह पर उन्हें बाँधना है। गायों को दुहकर दूध होटल में ले जाकर पैसा लेना है। फ़सल कट जाने पर धान खूब साफ करके सुखाना है। खाना बनाना है। संक्षेप में कहा जाय तो आधी रात तक सारा को एक पल बैठकर पान खाने का समय भी नहीं मिलता। इन सबके अतिरिक्त सारा चौथी बार गर्भवती भी हो गई।

कुञ्ञुवरीत और कुञ्जन दोनों ने मिलकर जो झोंपड़ी बनाई थी अब भी वह उसीमे रह रहा है। छप्पर जीर्ण-शीर्ण होने लगा है। पुराने बाँसों से पीला चूर्ण गिरने लगा है। पुराना छप्पर बीच-बीच में पत्तों से ढक दिया गया है, लेकिन कुञ्ञुवरीत ने एक बुखारी और गोशाला बना ली है। मंगलश्शेरी से मुफ़्त मिले बक्स के अलावा दो बक्स और बनवा लिए हैं। बुखारी और गोशाला बहुत साफ और मजबूत है। वह अब भी लकड़ी की उसी पुरानी पेटी मे रुपया जमा करता है। धान से भरे एक बक्स में उसने रुपयों की पेटी गाड दी है। उसीके ऊपर वह सोता है।

वर्की एक वर्ष तक पाठशाला में पढा। फिर नहीं जा सका। उसे पिता के साथ खेत पर जाना है। बाग-बगीचों और खेती में भी उसकी ज़रूरत पड़ती है। उसने हल जोतना, बीज बोना और धान काटना सीख लिया है। पूरे गाँव में घूमकर खेत में खाद डालने के लिए घास इकट्ठी करनी है। जोतने के बाद बैलों को नहलाना, बैलों और गायों के लिए घास लाना, फ़सल कटने के बाद खलिहान पर पहरा देना, बाजार से सामान खरीदना आदि उसके काम हैं। इन सब कामों के बीच में वह पाठशाला कैसे जा सकता है?

तोमस पाठशाला जाता है। पढ़ना उसे पसन्द है। कुञ्ञुवरीत ने यह प्रबन्ध किया कि उसे अन्य किसी काम के लिए न बुलाया जाय। तोमस की छोटी बहन रीता आशान पाठशाला में लिखना सीख रही है।

सारा का चौथा बच्चा पैदा हुआ। वह लड़का था। उसका नाम चेरियान रखा गया।

× × ×

पद्मनाभ पिल्लै ने अपील की। तब एक मुकदमा उच्च न्यायालय में और दूसरा सेशन्स न्यायालय म शुरू हुआ। दोनों में बहुत रुपया खर्च करना पड़ा। पद्मनाभ पिल्लै को धनी होने के कारण सबको रुपया देना पड़ा। बहुत-सी जमीन और खेत कुञ्ञुवरीत के वश में हो गए। बची हुई जमीन से अच्छी आमदनी भी नहीं हो रही है। हाथी दुबला होने लगा किन्तु हाथी के दुर्बल हो जाने पर भी क्या उसे गोशाला में बांधा जा सकता है?

जरूरत के अनुसार कुञ्ञुवरीत पैसा देता रहा। मंगलश्शेरी से खरीदे गए खेत और बाग-बगीचे बेंक मे गिरवी रखकर वहाँ से रुपया निकाल-निकालकर वह पद्मनाभ पिल्लै की ज़रूरतें पूरी कर रहा था। खेतों और बाग-बगीचों से हुई आमदनी को अपनी ज़रूरतों के लिए खर्च न करके पहले की तरह चावल का पानी और कंद-मूल खाकर यथासमय बेंक में रुपया जमा कर रहा है।

पद्मनाभ पिल्लै मुकदमे के कार्य से हर समय इधर-उधर दौड रहे हैं, इसलिए खेती और घर का शासन अव्यवस्थित हो गया है। कभी-कभी घर के खर्च के लिए भी धान रुपयों से खरीदना पड़ता है। इस दशा में मुकदमे के लिए उधार लिये हुए रुपयों को घर के खर्च के लिए भी व्यय करना पड़ रहा है। इस प्रकार कर्ज़ बढ़ने लगा। महीने में दो-तीन रेहननामे रजिस्ट्री होने लगे। इस प्रकार मंगलश्शेरी की चार पीढ़ियों की कमाई कुञ्ञुवरीत की छोटी झोंपड़ी की ओर बहने लगी।

इसी बीच दाक्षायणी अम्मा की बीमारी बढ़ गई। पूरे परिवार

का ध्यान उनकी रोग-शय्या की ओर केन्द्रित हो गया।

मातृ-प्रधान खानदानों में सबसे अपूर्व दीख पडने वाले एक उत्तम मालिक की उत्तम पत्नी है दाक्षायणी अम्मा। भाई-बहन और मामा-भाजों में परस्पर स्नेह और विश्वास को स्थापित करने और बढाने में स्नेह-संपन्न तथा बुद्धिमती वह स्त्री प्रयत्नशील थी। उस परिवार के सभी सदस्य इस सत्य को जानते थे।

वह दीप न बुझें इसके लिए परिवार के सभी सदस्यों ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी। गाँव के सभी वैद्यो को बुलाया गया। शहर के डाक्टर को भी बुला लाए।

लेकिन मौत ने अपने कठोर कर्तव्य का पालन किया। पति की गोद मे सिर रखकर उनका मुख देखते-देखते वे आँखें सदा के लिए बन्द हो गई।

उसके बाद उस परिवार मे कोई हँसा ही नही!

× × ×

धीरे-धीरे वह रहस्य खुल गया। पच्चाषी की देवकी अम्मा कुट्टप्पणिक्कर की रखैल है। वह खबर पद्मनाभ पिल्लै के कान मे भी पहुँची। वे बहुत देर तक मौन बैठे रहे।

कमलाक्षी अम्मा ने दरवाजे के पीछे खडी होकर कहा: 'रवीन्द्रन को यहाँ बुला लाइए। वहाँ रहकर वह खराब हो जायगा।'

पद्मनाभ पिल्लै उसी समय पच्चाषी पहुँचे। फाटक मे उन्होंने घर के अन्दर देखा। सामने की बैठक मे कोई नही था। पुरानी और फटी हुई एक बडी चटाई लपेटी हुई वहाँ रखी थी। इधर-उधर कटहल और आम के छिलके बिखरे हुए थे। किसी समय प्रतापशाली पच्चाषी के मालिकों द्वारा 'लूटमार' का दमन करने के लिए बनवाया गया शासन-मंडप है वह।

बैठक के आगे की मुडेर पर पच्चाषी का चीता कहलाने वाला कुत्ता सिकुडा पडा था। थका-माँदा, बीमार, रोम-रहित सिकुड़कर लेटा हुआ

वह कुत्ता सिर ऊँचा करके द्वार की ओर देखकर फिर पूर्ववत् लेट गया। आँगन के फूले हुए आम के पेड़ के पत्ते और छोटे-छोटे आम बिखरे पड़े हैं। बैठक के सामने के तुलसी-मंडप के तुलसी के पौधे सूखकर लकड़ी के समान खड़े हैं।

द्वार पर खड़े होकर पद्मनाभ पिल्लै फुसफुसाए : 'हम लोगों का नाश करने के प्रयत्न में वे स्वयं नष्ट हो गए।'

उस चौकोर बड़े घर के अन्दर से स्त्रियों की ज़ोर-ज़ोर की बात-चीत सुनाई पड़ रही है। शाप, ललकार और बदला लेने की प्रतिज्ञाएँ चल रही थीं। चौकोर घर के बाहर वहाँ स्त्री का स्वर उन्होंने पहले कभी नहीं सुना था। पद्मनाभ पिल्लै नाक पर उँगली रखकर खड़े हैं।

'पिता जी !'—एक पुकार और एक दौड़ !

'बेटा !' पद्मनाभ पिल्लै ने एक कदम द्वार के अन्दर रखा।

'ठहरो' देवकी अम्मा रवीन्द्रन के पीछे भागकर आई। उन्होंने उसे पकड़ लिया।

'पिताजी !'—उसने दयनीय स्वर में पुकारा।

'कौन है तेरा पिता ?' देवकी अम्मा ने चिल्लाकर पूछा। उन्होंने बेटे को पीछे खींच लिया।

'मेरे पिता ! मेरे पिता !' वह आगे की ओर लपका।

एक गर्जन और रवीन्द्रन के मुख पर एक तमाचा।

पद्मनाभ पिल्लै ने आगे बढ़ाया हुआ कदम पीछे खींच लिया। आँसू पोंछकर वे लौट आए।

× × ×

उच्च न्यायालय में मुकदमे का निर्णय सुनाया गया। दंड-प्राप्त व्यक्तियों का दंड दो-दो वर्ष कम कर दिया गया। सब कैदियों को सेण्ट्रल जेल ले जाया गया।

जेल जाने के पहले पद्मनाभ पिल्लै ने बहनों के नाम चिट्ठी भेजी। उसमें इतना ही लिखा था—'बच्चियो ! मैं जेल जा रहा हूँ। ईश्वर

तुम्हारी रक्षा करेंगे।'

सबने चिट्ठी पढ़ी पर किसी ने कुछ नहीं कहा।

संध्या हो गई। कमलाक्षी अम्मा ने बैठक मे पद्मनाभ पिल्लै की आराम-कुर्सी के सामने दीपक जलाकर रखा। सब आराम-कुर्सी के चारों ओर आ खड़े हुए। सुमती अम्मा ने एक गीत गाया :

अञ्जन श्रीचोर! चारुमूर्ते! कृष्ण!

अञ्जली बाँध मैं वन्दना करूँ कृष्ण!

आनन्द सुन्दर! वासुदेव! कृष्ण!

आतङ्कतापादि दूर करो हे कृष्ण!

वह संध्या-गीत गद्गद् स्वरों में चलता गया और अंत में रोदन में परिवर्तित हो गया।

× × ×

'तुम वहाँ तक हो आओ।' कुञ्ञुवरीत ने सारा से कहा।

–पद्मनाभ पिल्लै जेल चले गए है, ऐसा मालूम होते ही कुञ्ञुवरीत ने सारा से वहाँ जाने के लिए कहा। सारा ने भी कुञ्ञुवरीत से वहाँ जाने को कहा। दोनों को फुरसत ही नहीं मिली। वह दिन ऐसे ही बीत गया। रात होने पर सारा ने कहा- -

'अब कल उठते ही उधर जाना है।'

सवेरे उठते ही कुञ्ञुवरीत ने कहा : 'तुम वहाँ तक हो आओ। मैं खलिहान में जाता हूँ। मेरे खलिहान पहुँचने पर ही वे लोग धान कुचलेंगे।'

'मैं गाय और बकरी को दुहकर, मुर्गियों का पिंजरा खोलकर उन्हें बाहर निकालने के बाद जाऊँगी!'

कुञ्ञुवरीत खलिहान चला गया। सारा ने गाय और बकरी दुहकर वर्की से होटल के लिए दूध भिजवा दिया। इतने में बाहर निकलने के लिए मुर्गियाँ पिंजरे में हलचल मचाने लगीं। पिंजरा खोलकर सारा ने मुर्गियों को पड़ोस के बगीचों की ओर भगा दिया।

कल शाम से पशु-शाला में बँधे पशुओं को बाहर निकालने में देर हो रही थी। फ़सल काट लिये गए खेतों में बाँधा जाय तो वे पेट भरकर खा सकेंगे। सारा ने पशुओं को खेतों में लाकर बाँध दिया। वापस आकर देखा, बच्चा रो रहा है। उसे दूध पिलाते ही वर्की दूध बेचकर आ गया। उसे नाश्ता देकर खलिहान भेजना था। उसके भेजने के बाद ही कुञ्ञुवरीत नाश्ता करने आयगा। सारा ने वर्की, तोमस और रीता को बासी चावल दे दिया। वर्की खलिहान चला गया। तोमस स्कूल गया। रीता लिखने की पाठशाला में चली गई।

सारा ने सोचा कि अब मंगलश्शेरी जाकर दुःख प्रकट कर आए। बच्चे को गोद में लेकर जैसे ही चलने को हुई, केलों का व्यापारी आ गया। पिछले दिन भाव तय करके गया वह पूरे चार गुच्छे केले काटने आया है। तब वह मंगलश्शेरी कैसे जा सकेगी? व्यापारी ने कैले काट लिए, रुपए गिनते समय कुञ्ञुवरीत आ गया। नाश्ता करते-करते उसने पूछा: 'तुम वहाँ हो आईं?'

'कैसे जाऊँ? अभी तक साँस लेने का भी समय नहीं मिला।'

'तब हम लोग शाम को साथ चलेंगे।'

संध्या होने पर कुञ्ञुवरीत के घर में काम के कोलाहल ने वेग पकड़ा। पशुओं को पशु-शाला मे बाँधना है; मुर्गियों को पिंजरे में बन्द करना है। कुचले हुए धानों का ढेर आँगन में रखा है। रसोई में अब आग जलाई गई है। दूध पीने के लिए बच्चा रो रहा है। कुञ्ञुवरीत ने कहा: 'तुम अभी मत जाओ। मैं हो आता हूँ।'

कुञ्ञुवरीत मंगलश्शेरी के दक्षिणी आँगन में पहुँचा। दीपक जलाकर सब आराम-कुर्सी के चारों ओर खड़े होकर गीत गा रहे थे। पिछले दिन की तरह ही वह संध्या-गीत कंठ गद्गद् हो जाने से अस्पष्ट-सा था।

'आतङ्कतापादि दूर करो हे कृष्ण!'—सब फूट-फूटकर रो पड़े।

धीरे-धीरे रोना-सिसकना बंद हो गया। कुञ्ञुवरीत जरा खाँसा।

सबने मुड़कर देखा। कमलाक्षी अम्मा ने पूछा : 'कौन है ?'

'मैं हूँ।'

'क्या है कुञ्ञुवरीत ?'

'हाँ। कल से यहाँ तक आने की सोच रहा था।'

'हूँ।'

'मुझे सब मालूम हो गया है।'

'हूँ।'

'घर मे बहुत काम है।'

'हूँ।'

'मैं यहाँ फिर आऊँगा।'

'हूँ।'

कुञ्ञुवरीत थोड़ी देर तक उसी प्रकार खडा रहा। उसने कुछ संकोच मे पूछा : तो मैं जाऊँ ?'

'हूँ।'

वह चला गया।

१६. दुर्बल होने पर भी हाथी गोशाला में नहीं बाँधा जाता

एक महीने बाद नायर-ईषवा दंगे के मुकदमे का फैसला सेशन्स अदालत में सुनाया गया। नायर, ईषवा और मुस्लिम मिले हुए प्रत्यर्थियों को तीन वर्ष से दस वर्ष तक का कठोर कारावास मिला। कल्याणी के भाई कोच्चुकुट्टन और उसके बड़े बेटे वासु तथा दिवाकरन को तीन-तीन वर्ष का कारावास मिला।

दंड का पता लगते ही कुञ्ञन के घर से एक चीख सुनाई पड़ी। मंगलश्शेरी से सब लोग उत्तरी भाग की बाड़ के पास आ खड़े हुए। फिर कोई शब्द सुनाई नहीं पड़ा।

'कल्याणी!' कमलाक्षी अम्मा ने पुकारा।

कोई उत्तर नहीं मिला।

'यशोधरा!' सुमती अम्मा ने पुकारा।

आँसू पोंछती हुई यशोधरा बेड़े के पास आई। कमलाक्षी अम्मा ने पूछा: 'माँ कहाँ है?'

'माँ लेटी है।'

'सहन करो यशोधरा, और क्या किया जा सकता है?' सरोजिनी ने सांत्वना देने की कोशिश की।

यशोधरा फूट-फूटकर रोई। सुमती अम्मा ने कहा: 'हम लोग सह रहे हैं न? तुम लोग भी सहन करो। माँ से उठकर खाना बनाने को कहो।'

रोती हुई यशोधरा वापस चली गई। कमलाक्षी अम्मा ने कहा:

'और भी एक मुकदमा है न?'

'सहना है दीदी—सहना है।' सुमती अम्मा ने दृढ़ स्वर में कहा।

दूसरे दिन दोपहर के बाद भी उत्तरी भाग की ओर से कोई शब्द नहीं सुनाई पड रहा है। झोंपडी के ऊपर धुआँ भी नहीं दिखाई पड़ा। सुमती अम्मा ने बाड़ के पास जाकर पुकारा। किसी ने पुकार नहीं सुनी।

बाड का पूर्वी भाग टूटा पड़ा है। उत्तरी भाग के घर मे आग लगाने के लिए नायर-सेना के आने पर पद्मनाभ पिल्लै ने वह बाड़ तोडी थी। उसी रास्ते से सुमती अम्मा दूसरी तरफ पहुँची। पीछे-पीछे कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा भी गईं। बच्चे माताओ के पीछे ही लिए।

आँगन से सुमती अम्मा ने यशोधरा को पुकारा। ज़मीन पर सिकुड-कर लेटी हुई यशोधरा उठकर आई। कमलाक्षी अम्मा ने पूछा . 'माँ कहाँ है यशोधरा ?'

'माँ लेटी है, माँ को बुखार है।'

सुमती अम्मा अंदर चली गई। सब उसके पीछे-पीछे गए। सुमती अम्मा ने कल्याणी के माथे पर हाथ रखा। माथा बुखार से तप रहा था।

'बुखार है दीदी। आग-जैसा बुखार ! घर से चार गोली ले आओ और कुछ जीरा भी।'

सरोजिनी अम्मा भागकर गई। कमलाक्षी अम्मा ने कल्याणी के पास बैठकर पुकारा—'कल्याणी !'

कल्याणी ने आँखे खोली।

'कौन ?···कौन ?···मेरी छोटी मालकिन ''—कल्याणी की साँस फूल गई। वह फूट-फूटकर रोने लगी। तदनंतर हकलाती हुई बोली—'हमारा···नही···कोई नही··· अवलंब के लिए कोई नही···हम···'

यशोधरा का माथा सिकुड़ गया।

सुमती अम्मा ने कल्याणी का हाथ पकड़ा।

'हैं कल्याणी, हम लोग हैं···तुम्हारे लिए हम है और हमारे लिए तुम लोग।' सुमती अम्मा के आँसू कल्याणी के हाथ पर गिर रहे थे।

सब लोग रो रहे थे।

कल्याणी ने रोते-रोते आँखें बंद कर लीं। सरोजिनी अम्मा बुखार

की गोली और जीरा ले आईं। सुमती अम्मा ने कहा : 'आग जलाकर थोड़ा पानी चूल्हे पर रखो यशोधरा !'

यशोधरा जल्दी से जीरे का पानी उबालकर ले आई। सुमती अम्मा ने जीरे के पानी में गोली घिसकर कल्याणी के मुख में डाल दी। कल्याणी ने आँखें खोलकर चारों ओर देखा—

'मेरी—मेरी छोटी मालकिनें।·· मेरी···छोटी मालकिनें !'—वह फिर फूट-फूटकर रोने लगी।

'मत रोओ कल्याणी—मत रोओ।' कमलाक्षी अम्मा ने सांत्वना दी।

'रोने दो दीदी—रोने दो। रोने से ही सांत्वना मिलेगी।' सुमती अम्मा ने कहा।

सब लोग रोये। सभी को सांत्वना मिली।

एक सप्ताह के बाद हाथ काटने के मुकदमे का फैसला भी सुनाया गया। कुञ्ञन के घर में आग लगाने की कोशिश करने वाले तीन नायर व्यक्तियों को केवल छः-छः महीने का दंड दिया गया था। एक नायर का हाथ कंधे से काट डालने के कारण पद्मनाभ पिल्लै को तीन वर्ष की जेल का कठोर दंड दिया गया। मंदिर के झगड़े के मुकदमे का फ़ैसला दो वर्ष का दंड कम करके उच्च न्यायालय में सुनाया गया था। इस मुकदमे से मिला दो वर्ष का दंड और हाथ काटने वाले मुकदमे से मिला तीन वर्ष का दंड—इस प्रकार पद्मनाभ पिल्लै को पाँच वर्ष का कठोर कारावास मिला।

मंगलश्शेरी के सब लोग यह समाचार स्वीकार करने को तैयार थे इसलिए यह समाचार पाकर किसी को कोई घबराहट नहीं हुई। दु.ख का अंगारा चबा-चबाकर निकालते हुए सुमती अम्मा ने कहा : 'भैया के वापस आने तक इस घर में कोई भात मत खाना।'

'फिर कैसे ?'—कमलाक्षी अम्मा की बड़ी बेटी विलासिनी ने पूछा।

फिर कैसे ?—कञ्जी[1] पीकर रहेंगे।' कमलाक्षी अम्मा ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया।

'कञ्जी पीकर रहना मंजूर न हो तो ?' विलासिनी के स्वर में धृष्टता भरी थी। वह वहाँ से उठकर चली गई।

यह प्रथम प्रतिषेध था। इस प्रकार उस घर में पहली बार ढिठाई का स्वर उठा था।

माताओं के मुख पीले पड़ गए।

विलासिनी की उम्र सोलह वर्ष की ही है, लेकिन देखने में वह बीस वर्ष की लगती थी। उसकी आँखें और ओठ मादकता से भरे हुए हैं। उसे हर समय अच्छी साड़ी और ब्लाउज़ पहनना है; काजल और बिंदी लगानी है; सुख और समृद्धि से भोजन करना है। इन सबमें यदि कोई कमी हुई तो वह सहन नहीं करेगी।

बड़ी भांजी होने के नाते उसकी सारी इच्छाओं की पूर्ति पद्मनाभ पिल्लै करते थे। मामा से सीधे अपनी जरूरत कहने की उसे पूरी स्वतंत्रता थी, लेकिन परिवार में क्लेश बढ़ने और आर्थिक स्थिति दिन-पर-दिन गिरते जाने से खर्च पर नियंत्रण होने लगा। उसकी यौवन-प्राप्ति से नियंत्रण और बढ़ने लगे।

रसोइये को जवाब दे दिया गया। सारा भी वहाँ नहीं आती थी। आँगन में झाड़ू लगाने और धान कूटने के लिए कोई नहीं था। सब अपने-आप करने की स्थिति आ गई। घर के कामों में माताओं को मदद देने का उत्तरदायित्व विलासिनी पर था, इसलिए उसके मन में दिनों-दिन अमर्ष और प्रतिषेध बढ़ने लगा।

मुँह फुलाकर वह इधर-उधर बैठ जाती थी। क्रोध से बड़बड़ाती हुई वह कोई काम किया करती थी। आगे खाने के लिए भी अब कञ्जी

---

१. कञ्जी—पानीदार भात (केरल के गरीबों का भोजन)। बहुत अधिक पानी में थोड़ा चावल पकाया जाता है।

ही मिलेगी—यह बात सुनकर उसका सारा धीरज खत्म हो गया। मन में रोका हुआ क्रोध और प्रतिषेध इस प्रकार फूट पड़ा था।

'वह—वह—' सरोजिनी अम्मा ने कुछ कहना चाहा। उनकी दृष्टि एकदम कमलाक्षी अम्मा के मुख पर पड़ी। दीदी की आंखों में आंसू-भरे देखकर वह जो कुछ कहना चाहती थी, नहीं कहा।

उस दिन से उस घर में रोज कञ्जी ही बनती थी, लेकिन विलासिनी उसमें से पानी निकालकर चावल ही खाती थी।

× × ×

विलासिनी और गोपालकृष्णन एक ही उम्र के हैं। विलासिनी की छोटी बहन नंदिनी और गोपालकृष्णन के भाई राजशेखरन की तेरह वर्ष की उम्र है। सुमती अम्मा के बड़े बेटे रामचन्द्रन की पन्द्रह वर्ष और उसकी छोटी बहन वसुमति की आठ वर्ष की उम्र है।

गोपालकृष्णन और रामचन्द्रन शहर की एक अंग्रेजी पाठशाला में पढ़ रहे थे। गोपालकृष्णन के फेल हो-होकर आठवें में पहुंचने पर रामचन्द्रन भी उसकी कक्षा में पहुंच गया। गोपालकृष्णन ने अपनी पढ़ाई यहीं पर छोड़ दी। पाठशाला ले जाने वाली गाड़ी के दिये जाने पर उसने पैदल पाठशाला जाना शर्म की बात कहकर अपनी पढ़ाई बंद कर दी। रामचन्द्रन ने आगे पढ़ाई जारी रखी। वह दसवें दर्जे में है। दोपहर का खाना साथ लेकर वह पैदल ही स्कूल जाता है।

विलासिनी ने पास की मलयालम पाठशाला में चौथे दर्जे तक पढ़कर पढ़ना बंद कर दिया है। नंदिनी ने पाँचवें दर्जे तक पढ़कर पढ़ाई समाप्त कर दी है। राजशेखरन को अंग्रेजी पाठशाला में भेजने का निश्चय किये जाने पर उसने मलयालम पढ़ना पसन्द किया। वह छठे दर्जे में पढ़ता है। साथियों के साथ खेलना ही उसे अच्छा लगता था। नंदिनी की गीत में अभिरुचि है। वह अकेली इधर-उधर बैठकर गीत गाती थी। किसी के आने पर वह तुरंत गाना बंद कर देती थी।

वसुमति ने चौथा दर्जा पास कर लिया। उसकी अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने की विशेष इच्छा है। रामचन्द्रन की पुरानी पाठ्य-पुस्तकों से वह

अंग्रेज़ी वर्णमाला सीख चुकी है। रामचन्द्रन की मदद से उसने बहुत-कुछ अंग्रेज़ी शब्द भी सीख लिए हैं। सुमती अम्मा की भी इच्छा वसुमति को अंग्रेज़ी स्कूल में भेजने की है।

लेकिन अब तक उस घर से लड़कियों को शहर की पाठशाला मे नही भेजा गया है। इस परिवार का यह विश्वास है कि लड़कियों का सज-धज कर स्कूल में लड़कों के साथ बैठना कुलीन और प्रतिष्ठित परिवार के लिए उपयुक्त नहीं है। अपनी बेटी के लिए उस विश्वास के प्रतिकूल काम करने के लिए कहने की हिम्मत सुमती अम्मा मे नहीं हुई।

परिवार के आचार-विचार और विश्वासों का उल्लंघन करने की इच्छा होने पर भी बच्चों को स्कूल भेजने की आर्थिक स्थिति अब नही है। शुल्क देना, किताबें खरीदना, कपड़े खरीदना आदि कई खर्च हैं। ठीक प्रकार से खेती करने पर परिवार का खर्च मुश्किल से चल पाने के योग्य कुछ ज़मीन और बाग-बगीचे ही बचे हैं। सुमती अम्मा को मालूम है कि सिर्फ़ रामचन्द्रन की पढ़ाई के लिए विशेष खर्च खानदान की सार्वजनिक संपत्ति में से लेने में परिवार मौन रूप से प्रतिषेध करने लगा है। इस अवस्था में वसुमति को भी अंग्रेज़ी स्कूल में भेजने के लिए कहे तो क्या दशा होगी ?

विद्यालय खुलने वाले हैं। वसुमति माँ के पास बैठकर रोने लगी। सुमति अम्मा भी बेटी के साथ रोई। और वह कर ही क्या सकती है ? अंत में उन्होंने रामचन्द्रन से कहा : 'बेटा, पिताजी के घर हो आओ।'

'क्यों माँ पिताजी के घर क्यों जाना है ?'

'वहाँ जाकर कहो कि तुम दोनों को अंग्रेज़ी पढ़नी है। अपनी दोनों बुआओं से कहोगे तो वे कुछ मदद करेंगी।

'नहीं माँ, नहीं। उन लोगों की मदद हमे नही चाहिए। उनकी मदद से हमें नहीं पढ़ना है।'उसके वाक्यों में अपूर्व दृढ़ता थी।

'फिर कैसे पढ़ोगे, बेटे ?'

'पढ़ूंगा—किसी भी तरह मैं पढ़ूंगा।'

'वसुमती ?'

'वह भी पढ़ेगी।'

'बिना पैसे के कैसे पढ़ोगे बेटे ?'

'पढ़ेंगे माँ —हम पढ़ेंगे—'उसने यह बात बिना सोचे कही थी—सिर्फ़ अभिलाषा और आवेश से !'

बच्चों की पढ़ने की इच्छा सुमती अम्मा ने अपनी दोनों बड़ी बहनों को बताई। उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। वे क्या कहें ?

स्कूल खुलने के पहले दिन सबेरे बाहर के दरवाजे से विलासिनी ने पुकारकर कहा : 'देखो माँ, रामचन्द्रन धान उबालने का ताँबे का बड़ा बर्तन लिये जा रहा है।'

कमलाक्षी अम्मा दौड़कर दरवाजे पर आई। पुकारकर पूछा : 'तुम यह बर्तन लेकर कहाँ जा रहे हो, रामचन्द्रन ?'

रामचन्द्रन मुड़कर देखे बिना ताँबे के उस बर्तन को लेकर फाटक के बाहर चला गया। सुमती अम्मा घबराकर दौड़ आई। वह फाटक की ओर भागी। बाहर खड़े होकर उन्होंने पुकारा : 'बेटा, बेटा।'

रामचन्द्रन मुड़कर देखे बिना दौड़ा जा रहा था। सुमती अम्मा सिर झुकाकर वापस लौट आई। कमलाक्षी अम्मा ने कहा : 'यह खानदान ऐसा हो गया। इस तरह तो नमक का मटका तक बेच डालेगा'—उस वाक्य में क्रोध और व्याकुलता भी थी।

सुमती अम्मा ने सिर ऊपर उठाया। उनका माथा सिकुड़ गया : 'आज तक जो नहीं हुआ, ऐसी कई बातें यहाँ हो रही हैं। आपकी बेटी जो करती है, ऐसा काम इस खानदान में पहले कभी हुआ है ?'

'मेरी बेटी—उसने क्या किया ?' कमलाक्षी अम्मा ने विलासिनी की ओर मुड़कर देखा।

'उससे ही पूछो, उसने क्या किया है ?' सुमती अम्मा ने कहा।

'तुमने क्या किया ? बता री।'—कमलाक्षी अम्मा का स्वर तेज हो गया।

विलासिनी ने लापरवाही से कहा : 'सुमती मौसी अपने ... के अपराध को छिपाने के लिए मेरे ऊपर दोष लगा रही है।'

सुमती अम्मा भी चिढ़ गई : 'पिछवाड़े की बाड़ के पास खड़ी होकर हँसते, मटकते बातें करना क्या मैंने देखा नहीं ?'

'अच्छा हो गया ! तो किसी का क्या बिगाड़ा ?' विलासिनी अन्दर चली गई।

कमलाक्षी अम्मा स्तब्ध रह गई। मानो उन पर बिजली गिर पड़ी हो। फिर किसी ने कुछ नहीं कहा।

उस दिन से उस खानदान में कई काम ऐसे होने लगे, जो पहले कभी नहीं हुए थे। परिणामस्वरूप स्नेह और परस्पर विश्वास की पवित्रता से भरे हुए उस तालाब में विद्वेष का विष घुल गया।

× × × ×

रामचन्द्रन ने तांबे का बर्तन बेचकर अपने और वसुमती के कपड़े खरीदे। फीस और किताबों के लिए रुपया लेकर वह वापस आया। उसने वसुमती से कहा : 'कल मैं अंग्रेजी स्कूल में तुम्हारा दाखिला कराऊँगा।'

वह आह्लाद में सुध-बुध भूल गई।

रामचन्द्रन ने माँ से अपने अपराध की क्षमा मांगी : 'क्षमा करो माँ। दूसरा कोई रास्ता नहीं था।'

सुमती अम्मा ने आँसू पोंछकर कहा : 'यह खानदान का अपमान है न बेटा ?'

उसने उसका कोई उत्तर नहीं दिया।

दूसरे दिन गोपालकृष्णन एक कड़ाहा सिरपर रख कर बाहर चला गया। सबने देखा। किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर के बाद सरोजिनी अम्मा ने कहा : 'उसका बेटा तांबे का बर्तन बेच सकता है तो मेरे बेटे के कड़ाहा बेच देने में क्या बुरा है ?'

सुमती अम्मा ने यह बात सुनी-अनसुनी कर दी।

रामचन्द्रन और वसुमती स्कूल गए। वे खाना साथ नही ले गए। भात नही है तो क्या ले जाते ?

दोपहर के समय कुञ्ञुवरीत उत्तर भाग के आँगन में आया। उसने पूछा : 'हाथी दुबला हो तब भी क्या गोशाला मे बाँधा जा सकता है ?'

'कुञ्ञुवरीत ऐसा क्यों पूछ रहे हो ?' कमलाक्षी अम्मा ने पूछा।

'लोग तरह-तरह की बातें कह रहे है।'

'क्या कहते है ?'

'मगलश्शेरी के बच्चे नमक रखने का कटोरा तक बेचते है। यह बेइज्जती की बात है न ?'

'हाँ, बेइज्जती है।'

'यहाँ कुछ बेचना हो तो मुझसे कह देते। मै ही लेकर उसका पैसा दे देता।'

'हूँ।'

'आगे कुछ बेचना हो तो मुझसे कहिए।'

कुञ्ञुवरीत चला गया।

शाम को रामचन्द्रन और वसुमती स्कूल से आए। पूरे दिन वे भूखे रहे थे। थके थे, फिर भी खुशी से भरे हुए थे।

संध्या हुई। प्रतिदिन की तरह पद्मनाभ पिल्लै की आराम-कुर्सी के सामने दीपक जलाया गया। सब लोग आराम-कुर्सी के चारों ओर बैठ गए। केवल दो लोग वहाँ नही दिखाई पड़े--गोपालकृष्णन और विलासिनी।

गोपालकृष्णन सवेरे कड़ाहा ले जाने के बाद अभी तक वापस नही आया। 'विलासिनी कुछ देर पहले पश्चिमी भाग की ओर देखती हुई खड़ी थी। कमलाक्षी अम्मा ने पुकारा—'विलासिनी।'

उत्तर नही मिला।

'वह कहाँ है, देखकर आओ।' कमलाक्षी अम्मा ने नंदिनी से कहा।

नंदिनी उठकर चली गई। राजशेखरन भी उसके साथ गया।

सुमती अम्मा ने कीर्तन शुरू किया :

'अञ्जन श्रीचोर ! चारुमूर्ते ! कृष्ण !'

राजशेखरन पश्चिमी भाग की ओर से दौड़ता हुआ आया और कहा : 'विलासिनी दीदी खड़ी हुई वहा एक आदमी से बातें कर रही थी। हमारे वहाँ पहुँचने पर वह भाग गया।'

सब लोग उठकर आँगन मे आए। नदिनी ने हाँफते हुए कहा : 'माँ दीदी एक आदमी से···हमारे पहुँचने पर···वह भाग गया।'

विलासिनी बिना किसी प्रकार के मनोभाव के आगन में आई।

कमलाक्षी अम्मा ने गरजकर पूछा : 'तुम किससे बातें कर रही थीं री ?'

'जिससे मेरी मर्जी···। मुझसे पूछने वाला कौन है ?'

क्या कहा, कौन पूछेगा ?' कमलाक्षी अम्मा का हाथ उठा। विलासिनी के गाल पर एक थप्पड़ पड़ा।

'मारो मत दीदी, मारो मत' सरोजिनी अम्मा और सुमती अम्मा दोनों ने एक-साथ कमलाक्षी अम्मा का हाथ पकड़ लिया।

'ऐसी भी—ऐसी भी—मिर्थात आ गई इस खानदान में।' कमलाक्षी अम्मा फूट-फूटकर रोने लगी। छोटी बहनें भी रोईं।

विलासिनी लापरवाही से अन्दर चली गई।

द्वार पर एक गीत

'अञ्जन सी चोर···जारुमूत्ते ! किण्णा !'

एक अट्टहास !

गोपालकृष्णन धीरे-धीरे फाटक से अन्दर आ रहा है।

'जारुमूत्ते किण्णा···' एक उल्टी !

'अरे बेटे !' सरोजिनी अम्मा ने दौड़कर बेटे को पकड़ लिया।

उल्टी ! उल्टी ! उल्टी ! ताड़ी की दुर्गंध !

'सर्वनाश हो गया। सब कुछ नष्ट हो गया।' कमलाक्षी अम्मा आँगन में गिर पड़ी।

१७. अधःपतन के गर्त में

पच्चाषी का परिवार नष्ट-भ्रष्ट हो गया। अधिकाश खेत और बाग बगीचे कुट्टप्पणिक्कर के पास गिरवी रखे जा चुके हैं। ये सब गिरवी रखने में माधव कुरुप का एक उद्देश्य था। मुकदमा और झगड़ा खत्म होने पर, बीमारी से उठने के बाद लिया हुआ धन वापस देकर या न देकर भी अपनी सारी चीज़ वापस ले लेने की उसकी उम्मीद थी, परन्तु उसकी मृत्यु के साथ वह आशा भी खत्म हो गई। उनकी मृत्यु के पहले ही उस परिवार में आपसी झगड़ा शुरू हो गया था।

परिवार में नाथ कहने योग्य पुरुष का अभाव हो गया। पुरुष के न होने से स्त्रियाँ परस्पर लड़ने-झगड़ने लगीं। इस खानदान में पाँच स्त्रियाँ और उनके बच्चे है। वे पाँच शाखाओं में बँटकर आपस मे गाली-गलौच करने लगीं। खानदान की सम्पत्ति जिसके हाथ मे जो कुछ आए, वही ले ले, यही नियम बन गया। बाग-बगीचों के पेड़ काटकर जितने में बिके, बेच दिए जाने लगे। थोड़े-से जो खेत बचे थे उनको जोतने के लिए न आदमी था, न पैसा; इसलिए वह सब उजाड़ ही पड़ा रहा।

हर एक स्त्री के पास अपनी व्यक्तिगत कमाई है। पति के द्वारा दिये जाने और चुराने से एकत्रित की जाती है। सबके पास अलग-अलग आभूषण हैं, इसलिए हर एक ने अलग-अलग रहने की इच्छा प्रकट की। सबका खाना अलग-अलग बनने लगा। एक ही घर में दो रसोइयाँ बनने लगी। अन्दर के चौकोर घर में तीन चूल्हे बन गए।

उस परिवार मे एक ही युवक था, भास्कर कुरुप। बाकी सब नाबालिग थे। स्त्रियों का आपस में गाली-गलौच सुन सकने मे असमर्थ भास्कर कुरुप हर समय कहीं बाहर जाकर बैठा करता था। उस परिवार के अधःपतन मे सबसे अधिक दुःख उसको ही था; लेकिन

यह अधःपतन क्यों हुआ ? इसका उद्धार हो सकता है तो कैसे ? आदि बातें उसकी समझ मे नही आ रही थी। उसका विश्वास था कि मंगलश्शेरी खानदान से स्पर्धा करना, मेले मे झगडा करना, नायर-ईषवा दगा करना, सब गलत कार्य थे। परिवार के बड़े लोग मामा, बडे भाई आदि मिलकर जो काम करते थ उन सबका खुल्लम-खुल्ला विरोध करने की शक्ति उसमें नही थी। यदि वह विरोध करता भी तो उससे कोई फायदा नही होता।

इस प्रकार वह विषादमग्न होकर कभी बाजार मे जा बैठता, कभी कचहरी की मुंडेर पर जा बैठता, कभी पूरे शहर का चक्कर लगाकर वापस आ जाता। इस प्रकार घूमते समय उसे एक मित्र मिल गया--सुकुमारन नायर। दोनो समवयस्क थे।

सुकुमारन नायर के पिता एक सुप्रसि.. मुनीम थे। मुनीमी के काम मे उन्होंने काफी कमाया। उनकी अपनी भी बहुत सपत्ति थी। उस गाँव मे समुदाय के आचार-विचार के विरुद्ध होकर पत्नी और बच्चो के साथ अलग रहने वाला वही एक आदमी था। नायर-ईषवा दगे मे उसे अचानक हाथ डालना पडा। हृदय मे एक कटार का प्रहार पडने से वह तत्क्षण मर गया। उसके बाद परिवार की स्थिति मुश्किल मे पड गई। सुकुमारन नायर उसका बडा बेटा था।

सुकुमारन नायर साहित्य-रसिक और अखबार पढने वाला है। वल्लत्तोल, आशान और उल्लूर की बहुत-सी कविताएँ उसे कठस्थ थी। महात्मा गाँधी, इडियन नेशनल काग्रेस और स्वराज्य-आन्दोलन के सबंध मे उसे कुछ बातें मालूम थी। महात्मा गाँधी जैसे महापुरुष के छुआछूत के विरोधी होने के कारण सुकुमारन नायर भी उस विचार से सहमत हो गया। नायर और ईषवा झगडे मे पिता की मृत्यु हो जाने पर उसे यह मालूम हुआ कि छुआछूत और जाति-भेद ऊची और नीची दोनों जातियों के लोगों के लिए एक समान अहितकर है।

भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर बहुत निकटतम मित्र बन

गए। सुकुमारन नायर से मिले ज्ञान में भास्कर कुरुप जोश में आ गया। जाति-विश्वास के कारण सुकुमारन नायर से अधिक विनाश का अनुभव करने वाला व्यक्ति है भास्कर कुरुप, इसलिए जिन बातों को कहने में सुकुमारन नायर संकोच करता था, वे बातें भास्कर कुरुप खुलकर कहने लगा। पूर्वी भाग में भास्कर कुरुप के अनुरूप एक विचार-धारा उत्पन्न हुई।

इसी समय शहर में अस्पृश्यता-निवारण का एक सम्मेलन हुआ। उस सम्मेलन में नायर और ईषवा नेता लोग भाषण देंगे, यह जानकर भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर भाषण सुनने गए। वह एक विशाल सम्मेलन था। विभिन्न स्थानों से बहुत-से नायर और ईषवा लोग उस सम्मेलन में भाग लेने के लिए आए थे। एक ईषवा नेता ने भाषण देते हुए कहा कि कुत्ते और बिल्लियाँ जिन पर चल सकते हैं उन रास्तों पर मनुष्यों के संचार का निषेध करने वाले हैदवाचारों को समूल नष्ट कर देना चाहिए। एक नायर नेता ने अपने वक्तव्य में कहा कि ईषवा आदि अछूत जातियों को दूर खड़ा करने वाले नायर भी जातीय विशेषताओं से मुक्त नहीं है और वे ब्राह्मणों के चरण-सेवक हैं, इसलिए छुआछूत और जाति-भेद का उन्मूलन करना नायरों के लिए भी जरूरी है। एक वक्ता ने अपने भाषण में पुराणों के उदाहरण देते हुए कहा कि हिन्दुओं के वेदशास्त्र, उपनिषदों आदि में वर्णाश्रम धर्म का प्रतिपादन किया गया है, लेकिन छुआछूत के बारे में कुछ भी नहीं कहा गया है। दूसरे एक वक्ता ने कहा कि जाति-धर्म और ईश्वर से विरोध करके उन्हें पराजित कर देने पर ही मनुष्य भाईचारा निभाकर जी सकेंगे।

'आँसू क्यों बहाती है हे भारत भूमि तू,
दी है परतंत्रता जब इस विधि ने तुझे!'

एक वक्ता ने आशान के उपर्युक्त पद्य को उद्धृत करते हुए सिद्ध किया कि भारत की गुलामी का कारण जातीय भिन्नता है। दूसरे एक वक्ता ने महात्मा गांधी के हरिजनोद्धार और अछूतोद्धार के बारे में

एक लम्बा भाषण दिया।

भास्कर कुरुप का जोश बढ गया। मुक्कोणक्करा की मंडी में पहुँचकर लोगों के बीच में खड़े होकर उसने कहा कि छुआछूत और जाति से किसी को कोई फायदा नही। वह सबको अध:पतन की ओर ले जायगा। पच्चाषी खानदान का उल्लेख करते हुए उसने कहा कि पवित्रता और प्रतिष्ठा स्थायी नही है। उसने जोर देते हुए कहा, 'समय के परिवर्तन के साथ यदि हम स्वयं नही बदलेंगे तो समय हमें हटाकर आगे बढता जायगा।'

सुकुमारन नायर ने कहा : महात्मा गांधी महान् है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, अमीर और गरीब सब तरह के लोग उनकी पूजा करते है। छुआछूत पाप है, ऐसा वे कहते है। उनका कहना है कि जाति-पाँति ने ही हिंदू-समुदाय को गिराया और भारत को गुलाम बनाया।

'काती-काती (गांधी-गांधी) कहलाने वाला यह व्यक्ति कौन-सी जाति का है ?'—एक नायर ने पूछा।

'वह कोई ईषवा या चांडाल होगा। नही तो क्या वह छुआछूत और जाति का विरोध करता ?'—एक दूसरे बूढे नायर ने उत्तर दिया।

दूसरा एक व्यक्ति दुस्सह भाव दिखाकर वहाँ से चला गया। जाते-जाते वह बडबड़ाया—'ईषवा लोग इन्हे ताड़ी और पैसा देगे। इसी-लिए ये लोग कहते है—छुआछूत नही चाहिए।'

बहुत कम लोगो ने चुपचाप भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर का समर्थन किया।

× × ×

पच्चाषी की स्त्रियों के बारे मे कई अफवाहे फैलने लगी। रात के समय जाति-धर्म आदि भेद-भाव के बिना कई पुरुषो का पच्चीषी मे आना-जाना बहुत-से लोगो ने देखा है। एक ऐसी अफवाह भी फैली कि वहाँ पर कई बार धक्का-मुक्की हुई है।

इसी बीच एक और अफ़वाह भी फैल गई कि देवकी अम्मा को फिरंगी रोग हो गया है। इसी समय अम्मिणी अम्मा और मीनाक्षी अम्मा की बीमारी की कथा भी मुक्कोणक्करा में फैल गई। दक्षिणी और उत्तरी भाग की कहानियों को मिलाकर कुछ महाकवियों ने फिरंगी रोग के संबंध मे एक इतिहास ही लिख डाला। उस रोग की उत्पत्ति, विकास, रूप-भेद, चिकित्सा-विधि आदि लोगों की चर्चा का विषय बन गया। फिरंगी रोग के इतिहास के वीर कथा-नायक कुट्टप्पणिक्कर से लोगों को डर लगने लगा। किसी घर मे उसके जाने पर वहाँ के लोग उठकर उससे दूर खड़े हो जाते। उसके पास बैठने की हिम्मत किसी मे नहीं थी। उसे देखते ही स्त्रियाँ दूर हट जातीं और उसके पास पहुँचने पर दौड़कर छिप जातीं।

यह अफ़वाह भी फैली कि रात में वह घरों का दरवाज़ा खटखटाता है, कोई दरवाज़ा नहीं खोलता, और कुछ घरों मे उसकी पिटाई भी हुई है। इस प्रकार कुट्टप्पणिक्कर देश का एक डरावना स्वप्न और चर्चा का मुख्य विषय बन गया।

इसी समय एक रात को पच्चाषी के घर में भयंकर शोर-गुल सुनकर आस पास-के सब लोग दौड आए। देवकी अम्मा के सामने गंडासा उठाकर रवीन्द्रन गरज रहा था: 'तू मेरी माँ नहीं। तुझे मैं मार डालूंगा।'

देवकी अम्मा पिशाचिनी की तरह चिल्लाई: 'काट रे, काट।··· मैं तेरी माँ नहीं हूँ ··मार रे, मार।'

उठा हुआ हाथ वैसा ही उठा रहा। पागल की तरह देवकी अम्मा फिर चिल्लाई—'मार रे, मार।···तू भी अपने बाप के रास्ते पर चला जा।'

रवीन्द्रन का उठा हुआ हाथ नीचे गिर गया। वह तुरंत मुड़कर चल दिया। वह आँगन के अँधेरे में खड़ा रहा। हाथ का गंडासा फेंककर वह बड़ी उग्रता से हुंकारा। द्वार पार करके वह रास्ते पर निकल

आया। सिर ऊँचा करके हाथ हिलाता हुआ चलते-चलते वह उस अंधेरे में विलीन हो गया।

× ×

पच्चाषी मे बँटवारा हुआ।

घरेलू झगड़े को निपटाने के लिए भास्कर कुरुप ने सुझाव दिया कि परिवार की संपत्ति का बँटवारा हो जाय। सबने यह मत स्वीकार किया। बँटवारा हो गया।

परिवार के व्यक्तियों की गणना करके उसी के आधार पर संपत्ति का बँटवारा किया गया। फिर अलग-अलग शाखा के लोगों की गणना करके संपत्ति बाँटकर उस शाखा को दे दी गई। कुट्टप्पणिक्कर के पास रेहन में रखी गई जायदाद भी सब शाखाओं में बाँट दी गई। रेहन की रकम देकर उनको वापस लेने के अधिकार भी बँटवारे के विधि-पत्र में लिख दिए गए।

खानदान का घर किसको देना है, इस संबंध में बड़ा वाद-विवाद हुआ। देवकी अम्मा ने हठ किया कि खानदान का घर उसे ही मिलना चाहिए, और बाहर निकले हुए पुत्र का हिस्सा भी उसी को मिलना चाहिए, नहीं तो बँटवारा नहीं होगा। अंत में भास्कर कुरुप के कहने से सब उससे सहमत हो गए। खानदान का घर तोड़कर बँटवारा करने का निश्चय हुआ। बँटवारा हो भी गया।

पच्चाषी खानदान के बँटवारे को देखने के लिए गाँव के लोग इकट्ठे हो गए। कुछ लोग अपनी हँसी को रोककर खड़े रहे। कुछ ने क्रोध में दाँत पीसे; कुछ व्यंग्य में मुस्कराए; कुछ लोगों ने आँसू बहाए।

उस खानदान की लंबी-लंबी कहानियाँ सुनानी हैं वीरता और साहस की कहानियाँ। हर एक खम्भ, शहतीर और पत्थर को अपनी कहानी कहनी है। पुराने राजस्व अधिकार की क्रूर कहानियाँ!--जब उसका आधार नष्ट होने को हुआ तो प्रेक्षक लोग मुख मोड़कर चले

गए । आँसू पोंछते हुए एक बूढा बडबडाया—'कुञ्ञु नायर की हत्या के लिए कुट्टन नायर ने नौका डुबो दी। कुञ्ञु नायर और कुट्टन नायर दोनों डूबकर मर गए।'

घर और घर के सामान का बँटवारा हो गया। हर चीज का बँटवारा हो जाने पर पाँच स्त्रियाँ और उनकी सताने पाँच हिस्सो मे विभक्त हो गई।

देवकी अम्मा अकेली रह गई। जिस स्थान पर खानदान था, वहाँ उसने एक घर बनाया। बाँट म मिली धन्नी, शहतीर और ईट-पत्थर आदि एकत्र करके उस घर के एक कोने मे उसन रहना शुरू किया।

बाजार मे एक ने दूसरे से कहा · 'सुना, पच्चाषी मे अब फिरगी रोग वाली रहती है।'

आचार और विश्वास दैनिक जीवन म स्पर्धा करके साधारणतया नही जीतते। आचारो को भगाकर, विश्वासो को दूर करके मानव की जिजीविषा ऊपर उठती है। मुक्कोणक्करा मे रहने वाले और उसके पश्चिमी भाग वाले इस बात के अपवाद नही है। दोनो भागों मे आपस का सामाजिक सबध-विच्छेद हो जाने पर दोनो को उतनी अधिक मनोवेदना न होने पर भी आर्थिक सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने पर दानो को बडा दु ख हुआ।

पूर्वी भाग के नारियल और काली मिर्च का व्यापार करके जीवन बिताने वाले पश्चिमी भाग मे बहुत है। पूर्वी भाग की जमीन और बाग-बगीचो मे काम करके जीवन बिताने वाले भी पश्चिमी भाग मे बहुत है। बाहर से व्यापारी आकर नारियल और काली मिर्च खरीदे तो कम दाम ही मिल पाते थे। बाहर से नौकरो का बुलाने पर अधिक मजदूरी देनी पडेगी, इसलिए पश्चिमी भाग से सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने से पूर्वी भाग वालो को बहुत नुकसान और कष्ट हुए।

पूर्वी भाग के बाजार के व्यापारियो को सबसे अधिक कष्ट हुआ। नागर-ईषवा-कलह मे कई व्यापारियो को अनेक नुकसान होने पर भी यदि व्यापार बराबर चलता रहता तो नुकमान का परिहार किया जा मकता था। अगर पहले की तरह व्यापार चलता है तो पश्चिमी भाग के लोगो को विना रुकावट के पूर्वी भाग मे आने को सुविधा मिलनी चाहिए। सारी धमकियाँ समाप्त हो गई तो भी पुल के नष्ट हो जाने मे यातायात को सुविधा नही रही। पश्चिमी भाग के विद्यार्थियो को पूर्वी भाग के विद्यालयो म भेजना था, इसलिए किसी-न-किसी प्रकार यातायात की पुन स्थापना करने की जबरदस्त इच्छा सरक्षको मे हुई।

वहाँ दो नौकाएं चलने लगी, लेकिन दोनो नाविको ने ऐसा किराया माँगा जो गरीबो की सामर्थ्य से ऊपर था। इसलिए आवागमन की पुनः स्थापना नही हो सकी। तब भास्कर कुरुप ने एक बडी नाव खरीदकर घाट पर डालकर समस्या सुलझाई। उसीके साथ आवागमन पहले की तरह हो सका। बाजार की अभिवृद्धि हुई। खेतो और बाग-बगीचो मे फसल भी पहले की तरह हो गई। भास्कर कुरुप की स्थिति भी कुछ सुधर गई।

कई लोग भास्कर कुरुप के बारे म कहने लगे—'जवान है, फिर भी समझदार है।'

पच्चाषी की पाँच शाखाओ मे से चार शाखाओ के लोग दिवालिया हो गए। सपत्ति का जो हिस्सा उन्हे मिला था, उसे बेचकर उन्होने खा लिया। लडके जवान होते होते गाँव छोड जाते थे। युवतियो ने जाति और धर्म के भेद-भाव के बिना अपने प्रेमियो को स्वीकार किया। एक अत्यन्त सुन्दर युवती को कही दूर रहने वाला नायर विवाह करके ले गया।

जो शाखा दिवालिया नही हुई, वह थी एक-मात्र भास्कर कुरुप की शाखा। भास्कर कुरुप की माँ कात्यायनी अम्मा बुद्धिमती और विवेक-शीला थी। एक्साइज आफिस के एक छोटे अफसर ने उससे विवाह

किया था। उस समय के छोटे अफसरो को बहुत पैसे मिलते थे। घर में कोई निकट संबंधी न होने के कारण उन्हें जो कुछ मिलता था, सब अपनी पत्नी को सौंप देते थे। उनके तीन बच्चे हुए—पहला पुत्र और दूसरी तथा तीसरी पुत्रियाँ थी। लाइसेन्स के बिना शराब बनाने के किसी एक मुकदमे मे लोगों को पकड़ने के लिए जाते समय एक झगड़ा हुआ। झगड़े में छोटे अफसर को सिर फोडकर मार डाला। उसके वाद से कात्यायनी अम्मा और भी ज़्यादा विवेक से जिंदगी व्यतीत करने लगी। उसके पास व्यक्तिगत प्रयत्न से एकत्रित किया हुआ बहुत धन था।

कात्यायनी अम्मा की इच्छा बच्चो को पढा-लिखाकर योग्य बनाने की थी। पच्चाषी कुटुंब से केवल भास्कर कुरुप को शहर के अँग्रेजी स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा जाता था। भास्कर कुरुप ने स्कूल की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण भी कर ली। इसी समय कुटुम्ब मे कलह और विद्रोह बढ़ जाने के कारण उसकी शिक्षा-दीक्षा आगे के लिए बंद कर दी गई। भास्कर कुरुप की बहनें राजम्मा और सरसम्मा मलयालम पाठ-शाला में सातवें दर्जे तक पढी। यह भी पच्चाषी कुटुम्ब की पहली घटना थी।

बँटवारे के वाद भास्कर कुरुप ने गृह-कार्य सँभाला। उसने एक सुन्दर घर बनवाया। बहन राजम्मा का विबाह एक मास्टर के साथ किया। दूसरी बहन सरसम्मा के विवाह के प्रस्ताव आ रहे हैं। इस प्रकार एक हद तक घर का कार्य संभाल लेने पर भास्कर कुरुप को गाँव के मामलों में प्रवेश करने का अवसर मिला। माँ ने बेटे के इस प्रकार के कार्यो में विघ्न भी नहीं डाला।

× × ×

देवकी अम्मा का रोग बढने लगा। अपने हिस्से की ज़मीन बेचकर चिकित्सा करवाने पर भी उन्हें तात्कालिक आश्वासन ही मिला लेकिन रोग लगातार बढ़ता ही रहा। उसके बाद चिकित्सा के लिए, और जीवन-

यापन के लिए उन्होंने अपना घर भी बेच दिया।

सीलोन मे बसकर बहुत धन कमाकर आने वाले रामुण्णी ने देवकी अम्मा का घर खरीदा। खानदानी घर बेचने, विशेषकर दूसरी जाति वालो के हाथ बेचने का प्रबल विरोध किया गया। एक समय लूट-मार का दमन कर अधिकार जमाने वाले पच्चीषी खानदान के बुजुर्ग पुरुषो का अपमान नही करना चाहिए, ऐसा उपदेश बहुतो ने देवकी अम्मा को दिया था। देवकी अम्मा इस बात से अनभिज्ञ नही थी, लेकिन घर बेचे बिना चिकित्सा संभव नही थी; जीना भी मुश्किल था। उसे खरीदने के लिए नायर के पास रुपये भी नहीं थे। रामुण्णी उसी समय रुपये देने को तैयार था। फिर क्या किया जाय?

भास्कर कुरुप को सारी बातें पता चली, किन्तु उसने कुछ नही कहा।

घर खरीदते समय रामुण्णी ने देवकी अम्मा से एक वायदा किया था कि वह मरण-पर्यंत वहाँ रह सकता है। कमाने के लिए सीलोन चले जाने के कारण और देवकी अम्मा अब ज्यादा दिन जियेगी नही, इस विचार से भी उसने वैसा वायदा कर लिया था। फिर सीलोन चला गया।

देवकी अम्मा सभी से नफरत करती थी; वे सब लोग भी उससे घृणा करते थे। वह किसी को भी वहाँ नही आने देती थी; कोई वहाँ जाता भी नही था।

एक दिन कुट्टप्पणिक्कर देखते-देखते उस रास्ते से आ रहा था। देवकी अम्मा ने उसे देख लिया। हाथ में एक हँसिया लेकर वह सड़क पर उसके पीछे भागी।

'खड़ा रह रे--खड़ा रह वही!' उन्होने गरजते हुए कहा।

कुट्टप्पणिक्कर भाग गया। देवकी अम्मा चिल्लाती हुई उसके पीछे भागी---'मैं तेरे टुकड़े-टुकड़े कर डालूँगी!'

कुट्टप्पणिक्कर दौड़ता हुआ छिप गया। देवकी अम्मा एक पत्थर

की ठोकर लग जाने से छाती के बल गिर पडी। गिरी हुई उस अवस्था मे भी उन्होने हँसिए से जमीन को काट-काटकर कहा : 'तुझे मैं इस प्रकार काटूँगी रे।'

देखने वाले ताली बजाकर हँस पडे।

× × ×

एक वर्ष के बाद रामुण्णी सीलोन से लौट आया। गाँव मे स्थायी निवास करने के लिए वह आया था। अपनी खरीदी हुई जमीन पर एक घर बनवाने का उसने निश्चय किया। घर खाली कर देने के लिए उसने एक दूसरे व्यक्ति द्वारा देवकी अम्मा के पास सदेश भेजा। सारे शरीर मे घावो से भरी देवकी अम्मा घर मे खडी होकर चिल्लाई 'मुझे निकालने के लिए उसस यहाँ आने को कहो।'

कहने के लिए आया हुआ व्यक्ति डरकर भाग गया।

नष्ट होने के लिए देवकी अम्मा के पास अब कुछ भी शेष नही था। एक पुत्र था, वह भी गाँव छोडकर चला गया। उसे जो हिस्सा मिला था, बेच दिया है। घर और गाँव वाले उससे नफरत करने लगे है। उसके पास कोई नही आता था, देखने पर भी अनदेखे चले जाते। फिर नष्ट होने के लिए क्या बाकी है?

रामुण्णी वहाँ पहुँचा। वह धीरे से खाँसा। देवकी अम्मा हँसिया लेकर बाहर आई—'अरे, तू मुझे यहाँ से निकालने के लिए आया है क्या?'

रामुण्णी वहाँ से भाग गया। उसने भास्कर कुरुप के पास जाकर कहा . 'मुझे जमीन नही चाहिए। दिये हुए रुपए लौटा देना काफी है।'

भास्कर कुरुप ने घर के आभूषण बेचकर रामुण्णी से वह जमीन खरीद ली। यह बात जानकर देवकी अम्मा चिल्लाई : भास्कर ने खरीदी है क्या? आने दो उसको यहाँ मुझे निकालने के लिए—'

देवकी अम्मा को निकालने के लिए वहाँ कोई नही गया।

१८. खानदान की प्रतिष्ठा

पच्चाषी के खेत और बाग-बगीचे रेहन लेने मे कुट्टप्पणिक्कर का एक उद्देश्य था। मूल्य का आधा देने पर चीजे हाथ मे आ जायँगी। बाद म धन वापस करके ऋण-मुक्त होने की पच्चाषी वालों में क्षमता नही है। इस प्रकार सारी चीजे हमेशा के लिए प्राप्त कर लेगा—यही था कुट्टप्पणिक्कर का उद्देश्य।

लेकिन हाथ के रुपए खत्म हो जाने पर कुट्टप्पणिक्कर झमेले मे पड़ गया। गाँव-भर मे उसके लिए लड़कियों की खोज मे घूमने वाले लोगों को देने के लिए घूस का खर्च बहुत अधिक था। फिरंगी रोग न बढ़ने तथा प्रकट न होने की चिकित्साओं का खर्च भी बहुत अधिक था। गिरवी म प्राप्त चीजो की आमदनी से वह बड़ा खर्च चल नहीं पाता था।

इसलिए उसने एक-एक करके खेत और बाग-बगीचे बेचकर रुपया बनाया। बहुत-सी जमीन माम्मन मालिक ने खरीद ली। कुछ कुञ्ञुरामन वैद्य के पुत्र तथा माधवन वैद्य ने खरीदी। बहुत-सी जमीन कुञ्ञुवरीत ने खरीदा।

एक दिन सध्या के समय कुट्टप्पणिक्कर मस्तरशेरी के फाटक पर पहुँचा। चबूतरे पर दीप जलाकर सब लोग पद्मनाभ पिल्लै की आराम-कुर्सी के चारो ओर बैठकर कीर्तन कर रहे थे। प्रार्थना के बाद सबके उठने पर कुट्टप्पणिक्कर ने आँगन म प्रवेश किया।

'कौन है ?' कमलाक्षी अम्मा ने गभीरता से पूछा।

'मै हूँ—कुट्टप्पणिक्कर।'

'हूँ ? कुट्टप्पणिक्कर' इस समय यहाँ क्यों आए ?

'हम सब पुराने रिश्तेदार है न ?' वह दीपक के प्रकाश के पास खड़ा हो गया।

'रिश्तेदार ? तुम मंगलश्शेरी के रिश्तेदार कैसे हो सकते हो ?'

'आपके दादा के मामा की माँ के भाई ने मेरी नानी की माँ की बड़ी बहन से विवाह किया था।' वह कामुकतापूर्ण मुस्कराहट के साथ और भी पास आकर खड़ा हो गया।

'तो हम क्या करें ?' इस प्रश्न मे अवज्ञा और क्रोध भरा था।

'पुराने संबंधियों को देखने की इच्छा से आया हूँ। पद्मनाभ पिल्लै भैया के जेल जाने का समाचार पाते ही यहाँ आने को सोचा था'—वह फिर कामुकतापूर्ण मुस्कराहट के साथ दहलीज़ पर चढ़कर पुनः कहने लगा: 'मुसीबत के समय आपकी सहायता करना मेरा कर्त्तव्य है न ?'

'हम पर कोई मुसीबत नहीं आई। हमें तुम्हारी सहायता भी नही चाहिए।'

'कोई सहायता नही चाहिए कहने पर मैं कर ही क्या सकता हूँ ! फिर भी बंधुत्व भुलाया जा सकता है क्या ?' वह बैठक की ओर बढ़ने लगा।

'इधर मत बढो !' सुमती अम्मा गरज पड़ी।

'तेरी सहायता नहीं चाहिए। तू यहाँ से चला जा। इसीमें तेरी कुशल है।' सरोजिनी अम्मा ने गरजते हुए कहा।

'निकल जा, ऐसा कहने पर भी कुट्टप्पणिक्कर निकलने वाला नही है।' उसने गंभीर स्वर मे आगे कहा: 'बेटे को भेजकर मेरे पास से रुपए मँगवाकर अब चले जाने को कहती है, क्या यही है मगलश्शेरी की मर्यादा ?'

सरोजिनी अम्मा जरा चौंकी। सभी ने उनके मुख की ओर देखा।

'अपने बेटे को भेजकर तुम्हारे पास से रुपया मँगाया ?'—सरोजिनी अम्मा का मुख सूख गया। उनकी जीभ स्तंभित हो गई।

'तुझसे रुपए लिये होंगे, तो वापस करवा दूँगी। तू यहाँ से चला जा।' कमलाक्षी अम्मा ने कहा। उनके स्वर मे प्रार्थना का भाव था।

'वापस देने की जरूरत नही है। मैं रुपये लेने नही आया हूँ।'

'फिर किसलिए ?'

'फिर किसलिए कहूँ तो···' उसने लंपटता की मुस्कराहट बिखेरी।

सुमती अम्मा का हाथ उठा। उस हाथ में झाड़ू थी। तेज आवाज में गरजते हुए उन्होंने कहा : 'जा रे कुत्ते बाहर।'

कुट्टप्पणिक्कर ने पीछे हटते हुए कहा : 'ऐसे क्यों चिल्ला रही हो ? मैं चला जाऊँगा।'

वह मुड़कर फाटक से बाहर निकल गया।

उस रात को उस घर में किसी ने भोजन नहीं किया। किसी ने कुछ कहा भी नहीं। आधी रात के समय सरोजिनी अम्मा के कमरे से एक दीर्घ निःश्वास निकली। कमलाक्षी अम्मा और सुमती अम्मा के कमरों में उसकी प्रतिध्वनि गूँज उठी।

× × ×

सरोजिनी अम्मा के बड़े बेटे गोपालकृष्णन ने कुट्टप्पणिक्कर से रुपए लिए थे, यह बात सच थी, लेकिन उसने माँगे नहीं थे। कुट्टप्प-णिक्कर ने बुलाकर स्वयं दिए थे। रुपए चाहिएँ क्या, ऐसा पूछने पर 'चाहिए', ऐसा उत्तर दिया; देने पर ले भी लिए।

देने पर अवश्य लेगा, वापस देने की क्षमता उसमें नहीं है, इस विश्वास के कारण ही कुट्टप्पणिक्कर ने गोपालकृष्णन को रुपये दिए थे। इस प्रकार मंगलश्शेरी में प्रवेश पा सकेगा, फिर स्त्रियों को रुपये देगा, यही उसका उद्देश्य था। सफल न होने पर भी उसे निराशा नहीं हुई। निराश होने की प्रकृति उसकी नहीं थी।

गोपालकृष्णन को जो रुपया मिला था, वह उसी दिन खत्म हो गया। वह शहरी जीवन व्यतीत करता था। उसके समान बड़े घर में जन्मे उससे भी अधिक आयु के बहुत लड़के वहाँ थे। हरएक के घर से माँगकर, चोरी करके या हड़पकर लाए रुपयों के द्वारा आनंद के साथ जीवन बिताना उनका काम था। पिता या मामा के नाम पर वे लोग दुकानों से उधार भी लेते थे।

उत्सव होने वाले मंदिर, नाटक खेलने वाले नाटक-घर, रात के बाजार, चाय की दुकान आदि उनके विहार के स्थान थे। पुलिस और बड़े-बड़े बदमाशों के साथ वे सब अपने हित के अनुसार चलने वाले हैं; यह बोध सभी में पैदा करना; झगड़ा, कलह और मार-पीट में किसी के पक्ष में खड़े होकर बोलना या बीच-बचाव करना आदि कई चातुर्य उनके पास थे। उनमें आयु में सबसे छोटा गोपालकृष्णन था, लेकिन मामा और नाना का पता मालूम होने के कारण गोपालकृष्णन को विशेष सम्मान प्राप्त था।

कुट्टप्पणिक्कर से रुपये लेने के दो दिन बाद गोपालकृष्णन मंगलश्शेरी पहुंचा था। उसे देखते ही सभी का चेहरा लाल हो गया। सरोजिनी अम्मा कमरे में लेटी थी। कमरे में जाकर गोपालकृष्णन ने पूछा : 'माँ लेटी क्यों हो?'

कोई उत्तर नहीं।

'माँ क्या बीमार हैं?'

'तू ही— तू ही मेरी बीमारी है। इस खानदान की बीमारी है तू।' वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

गोपालकृष्णन ने गंभीरता से कहा : 'मैं इस खानदान की बीमारी नहीं हूँ। आप सब लोगों ने मिलकर इस खानदान को बीमार बनाया है। आप सबके भाई हैं न— मेरे मामा— वे ही इस खानदान की बीमारी हैं।'

'क्या कहा रे कुत्ते?' सरोजिनी अम्मा उछलकर उठी। 'खानदान के शान और मान के लिए—।'

'जरा रुकिए।' गोपालकृष्णन गरज पड़ा—'

'शान और मान! बहनों और भांजों को अनाथ बनाकर—

गोपालकृष्णन के गालों पर जोर का थप्पड़ पड़ा। पुनः हाथ उठा-कर सरोजिनी अम्मा गरजी—'द्रोही!—परम द्रोही! कहीं पर चलते-फिरने बदमाशों के पास से रुपए माँगकर उन्हें घर पर भेजने वाला बेशरम!'

'उसे मारो मत ! मारो मत दीदी, मारो मत।' सुमती अम्मा ने सरोजिनी अम्मा के हाथों को बलपूर्वक पकड़ लिया।

'कुट्टप्पणिक्कर से तूने रुपया लिया था बेटा ?' कमलाक्षी अम्मा ने पूछा।

'हाँ, क्या वह यहाँ आया था ?'

'आया था। वेश्या के घर में जाने की तरह वह यहाँ आया था।'

गोपालकृष्णन आँगन की ओर उछला। फाटक पार करके वह भाग गया।

दूसरे दिन सवेरे गोपालकृष्णन ने कुट्टप्पणिक्कर के घर जाकर उसे मारा यह खबर गाँव भर मे फैल गई।

X X X

मुहम्मद एक बिसाती है। कहने का मतलब साबुन, कंघा, शीशा, इत्र, सुगंध, कंगन आदि सड़क के किनारे रखकर बेचने वाला व्यापारी है वह। वह सुन्दर युवक है। बाजारों और मेलों मे उसका व्यापार सुचारु रूप से चलता है। कभी-कभी वह अपनी सौदे की चीजें एक संदूकची मे रखकर गांवों के घरों मे भी जाकर बेचता है।

इस प्रकार वह कभी-कभी मंगलश्शेरी भी जाता था। वहां जाने पर उसका कुछ सामान अवश्य बिक जाता था— कंघा, चूड़ियाँ, सिंदूर आदि कुछ-न-कुछ।

एक दिन विलासिनी के विशेष आग्रह पर कमलाक्षी अम्मा ने कुछ काँच की चूड़ियाँ खरीद देना मंजूर कर लिया। चूड़ियाँ अपने अनुरूप और सुन्दर हैं, यह देखने के लिए उसने चार चूड़ियाँ उठाकर अपने हाथों मे पहन ली। पहनने में उसे बहुत कठिनाई हुई थी। पहनकर देखने पर वे उसे अपने अनुरूप और सुन्दर नहीं लगीं। उतारने की कोशिश करने पर नहीं उतार सकी। बलपूर्वक उतारने पर वे टूट जायँगी और टूट जाने पर मुहम्मद को मूल्य भी देना पड़ेगा।

मुहम्मद आसानी से चूड़ी उतार देगा। उसके उतारने पर टूट

जायेंगी तो उसका मूल्य भी नहीं देना पड़ेगा। लेकिन बिलासिनी के हाथों में पड़ी चूड़ियाँ उसके द्वारा कैसे उतारी जायेंगी ? साबुन, कंघा आदि बेचने वाला एक इस्लामी युवक एक अभिजात नायर खानदान की सुन्दर युवती का हाथ कैसे पकड़ सकता है ?

मुहम्मद ने विलासिनी के मुख की ओर देखा। विलासिनी ने भी उसकी आँखों में देखा। तुरंत उसने उसका हाथ पकड़ा और चूड़ी उतार दी। सब-कुछ एक बिजली के समान हो गया। विलासिनी का मुख पीला पड़ गया। फिर भी उसे रोमांच हो आया। मुहम्मद ने दूसरी चार चूड़ियाँ उठाकर दिखाते हुए कहा, 'इन्हें मैं पहना दूंगा। पसंद न आने पर उतार भी दूंगा। यदि टूट जायें तो मूल्य मत देना'—उसने तिरछी दृष्टि से विलासिनी की ओर देखा।

'नहीं चाहिए। अरी तू यहाँ से उठकर चली जा। चूड़ियाँ नहीं खरीदनी हैं।'—कमलाक्षी अम्मा ने डाँटा।

विलासिनी वहाँ से उठकर चली गई।

दूसरे दिन भी मुहम्मद संदूकची लेकर वहाँ आया।

'इतर, सुगन्ध चाहिए मालकिन ?' उसने संदूकची खोलकर सेंट की शीशी निकाली—'नमूने के लिए लगा दूंगा, मालकिन !' पास खड़े हुए राजशेखरन का हाथ पकड़कर उसने सेंट लगा दी। फिर रामचन्द्रन के हाथ में लगाई। तदनंतर दूर खड़ी हुई विलासिनी का हाथ पकड़कर सेंट लगा दी।

कमलाक्षी अम्मा ने क्रोध में भरकर आज्ञा दी : 'तू आगे से इस घर में पैर मत रखना। अपनी संदूकची उठाकर चला जा यहाँ से !'

मुहम्मद को कोई भय नहीं हुआ। संदूकची उठाकर वह फाटक की ओर चल दिया। फाटक पर पहुँचकर उसने मुड़कर देखा। विलासिनी उसकी ओर देखती हुई खड़ी थी।

दूसरे दिन भी जैसे कुछ हुआ ही नहीं, मुहम्मद संदूकची लेकर आ पहुँचा। फाटक से ही उसने जोर से आवाज लगाई—'सिंदूर—सिंदूर !

—कई प्रकार के सिंदूर हैं, मालकिन !—लाल, पीला, हरा, नीला-सब रंग के हैं।'

आँगन के उत्तरी भाग में खड़ी विलासिनी ने फाटक की ओर झाँककर देखा। जब वे दोनो आपस में इस प्रकार देख रहे थे, सुमती अम्मा ने आँगन में आकर गंभीरता से कहा : 'तुझसे यहाँ न आने के लिए कहा गया था न ?'

'मैं अन्दर नही आया, माँ ! सिंदूर चाहिए तो मैं इधर आऊँगा; नही तो चला जाऊँगा।'

'यहाँ कुछ नहीं चाहिए।'

मुहम्मद मुडकर चला गया।

फिर भी मुहम्मद रोज उसी समय वहाँ आ जाता। फाटक पर खडे होकर जोर से आवाज लगाता। विलासिनी उसकी प्रतीक्षा मे पहले से खडी रहती। दोनो एक-दूसरे को देखते। दूसरे लोगों ने उधर ध्यान देना छोड़ दिया।

कुछ दिनों बाद फाटक पर मुहम्मद की आवाज नही सुनाई दी। सभी लोग वे घटनाएँ भूल गए। यही समय था जब कि पश्चिमी बाड के पास संध्या के समय विलासिनी किसी से बातें कर रही है, यह आरोप हुआ।

मुहम्मद गली से और विलासिनी चहारदीवारी के भीतर से खडे-खडे बातें कर रहे थे। घर-वालो और पड़ोस के कुछ लोगों ने उन्हें देख लिया। कमलाक्षी अम्मा ने बेटी को सख्त चेतावनी दी। दो बार उसे मारा भी, लेकिन विलासिनी ने उसकी परवाह नहीं की।

एक दिन सबेरे कमलाक्षी अम्मा ने जोर से पुकारा 'विलासिनी !......विलासिनी !'

घर-वाले जाग उठे। घर और अहाते मे तलाश शुरू हुई। विलासिनी दिखाई नहीं पड़ी। पड़ोस के घरों में पूछा गया। वहाँ कहीं गई ही नहीं थी।

सबेरा होते ही गाँव भर मे यह बात फैल गई कि मंगलश्शेरी की विलासिनी को एक मुस्लिम भगा ले गया। फिरंगी रोग से पीड़ित देवकी अम्मा ने धीरे-धीरे बाड़ के पास आकर ज़ोर से कहा—'आज तक वे ईषवा की औरतें थीं। अब उन लोगों को मुस्लिम ही भगाकर ले जायँगे।

× × ×

कोई ढूंढ़ने नही गया। जाने वाला वहाँ कौन है ?

उत्तरी भाग से कल्याणी और उसकी बेटी आईं। वे बहुत देर बाद लौट गईं। सहानुभूति दिखाने के अलावा वे कर ही क्या सकती थीं ?

उस दिन उस घर मे चूल्हा नही जला। रामचंद्रन खाली पेट स्कूल चला गया। रास्ते में न जाने किस-किसने उसको देखकर क्या-क्या कहकर हँसी उड़ाई। उन सबको अनदेखा-अनसुना करके वह चला गया।

कमलाक्षी अम्मा बीमार पड़ी हैं। नंदिनी माँ के पलंग के पास विषादमग्न बैठी है। राजशेखरन और वसुमती आँगन के उत्तरी भाग में आम के पेड़ के नीचे शून्यता की ओर ताकते हुए स्तब्ध बैठे हैं। सरोजिनी अम्मा रसोईघर के बरामदे में ठोढ़ी पर हाथ रखे बैठी हैं। सुमती अम्मा उनके सोने के कमरे की चौखट पर बैठकर रामचन्द्र का फटा कुर्ता सी रही है। दोपहर बीत गई है।

'यहाँ कोई नहीं है क्या ?' किसी ने पूर्वी आँगन से ज़ोर से पुकारकर पूछा।

'वहाँ कौन है, देख तो बेटा'—सरोजिनी अम्मा ने राजशेखरन से कहा।

वह उठकर चला गया, लौटकर कहा : 'पच्चाषी का भास्कर कुरुप आया है।'

भास्कर कुरुप उत्तरी आँगन में पहुँचा। सरोजिनी अम्मा और सुमती अम्मा खड़ी हो गईं। भास्कर कुरुप ने पूछा : 'कहाँ है, पता चला ?'

'तलाश नहीं किया' सरोजिनी अम्मा ने सिर झुकाए हुए धीमे स्वर में कहा।

'तलाश नहीं करनी है क्या ?'

'कौन है तलाश करने को ?' सुमती अम्मा ने पूछा।

'मैं खोज करूँगा।'

'नहीं—कोई न ढूंढे'—कमलाक्षी अम्मा उठकर आ गईं।

'बिना खोजे ही मुझे कुछ खबर मिली है। सुना है कि विलासिनी मुहम्मद के यहाँ है।'

'उसका घर कहाँ है ?' सुमती अम्मा ने पूछा।

'यहाँ से चार-पाँच कोस जाना पड़ेगा।'

'वह मुसलमान हो गई क्या ?' कमलाक्षी अम्मा ने पूछा।

'हो गई है, ऐसा लगता है।'

'फिर क्यों पता लगाओगे ? धुंआ भरी मशाल बाहर !' वे अन्दर जाने को हुईं।

'तब मेरी सहायता की आवश्यकता नहीं है ?' भास्कर कुरुप ने पूछा।

'तुम्हारे मामा और भाइयों ने मिलकर हमारी सहायता करते-करते हमें इस हालत में पहुंचा दिया। अब सहायता की ज़रूरत नहीं है। तुम जाओ।' वे अन्दर चली गईं।

भास्कर कुरुप ने सरोजिनी अम्मा के पास जाकर कहा .

'विलासिनी को मैं लिवा लाऊँगा।'

'लिवा लाकर···?' सरोजिनी अम्मा का मुख गंभीर हो गया।

'लाकर······मैं उसके साथ विवाह करूँगा। मैं मामा और भाइयों के अपराधों का प्रायश्चित करूँगा।'

'कोई किसी के लिए प्रायश्चित्त न करे। पच्चाषो वालों से हमें किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं जोड़ना है।'

'वह अभी गया नहीं ?' भीतर से कमलाक्षी अम्मा ने पूछा।

भास्कर कुरुप थोड़ी देर सिर झुकाए खड़ा रहा। जल्दी ही उसने सिर ऊपर उठाया; आँसू पोंछे; और वापस चला गया।

× × ×

संध्या होने वाली थी। रामचन्द्रन स्कूल से आकर थका हुआ लेटा है।

उस दिन वहाँ चावल नहीं पकाया गया था। पकाने की किसी की इच्छा ही नही हुई—इच्छा होने पर भी उसके लिए कुछ था ही नही।

सुमती अम्मा पश्चिमी अहाते के कटहल के पेड़ से कटहल काट लाईं। उसके बीज और खोया वे उबालने लगीं।

दक्षिणी भाग से कुञ्जुवरीत आगे-आगे और सारा पीछे-पीछे रसोई-घर के आँगन में पहुँचे। कुञ्जुवरीत के सिर पर एक टोकरी थी। टोकरी को रसोईघर की मुंडेर पर रखकर कुञ्जुवरीत ने कहा : 'जब सुना कि लड़की किसी के साथ चली गई, तभी यहाँ आने को सोचा था। अब समय मिला।'

'अरी वह कौन है ? भीतर से कमलाक्षी अम्मा ने पुकारकर पूछा।

'कुञ्जुवरीत है।' सरोजिनी अम्मा ने उत्तर दिया।

कमलाक्षी अम्मा उठकर बाहर आ गई और गंभीर स्वर मे बोली : 'क्या है कुञ्जुवरीत ? यहाँ क्यों आए ?'

'जब सुना कि लड़की कही चली गई, तभी यहाँ आने को सोचा था।'

'हूँ।'

'थोड़ा धान भी लाया हूँ।'

'धान किसके लिए ?'

'फसल कट जाने के बाद—बहुत कम है। इस बार फसल अच्छी नहीं हुई।'

'यहाँ नही चाहिए। वापस ले जाओ।'

'भाई की अनुमति के बिना हम किसी से कुछ भी नही लेंगी, कुञ्जु-वरीत।'—सुमती अम्मा ने शांतिपूर्वक कहा।

'ऐसा है तो क्या किया जाय ?'

'हाथी कितना भी दुबला हो जाय पर क्या उसे खूंटे से बांधा जा सकता है, कुञ्जुवरीत ?'

'नहीं बांधा जा सकता।' उसने टोकरी उठाकर सिर पर रख ली।

'तो मैं जाऊँ ?'

'हूँ।'

वह मुड़कर चला गया, उसके पीछे सारा भी।

१९. एक गई, अब एक ही बाकी है।

उस दिन शाम को दीप जलाने के लिए तेल नहीं था। खाने-पीने की बात जाने दो। संध्या के समय दीप जलाए बिना कैसे रह सकते? एक चिमनी है। उसमें थोड़ा मिट्टी का तेल है, लेकिन संध्या के समय बैठक में मिट्टी के तेल का दीप क्या जलाया जा सकता है? सुमती अम्मा ने उत्तरी बाड़ के पास जाकर कल्याणी को पुकारा। कोई मुसीबत आ पड़ी है, सोचकर उत्कंठा के साथ कल्याणी दौड़कर आई : 'क्या है छोटी मालकिन ?'

'नारियल का तेल है कल्याणी ?'

'नही है मालकिन। इस समय तेल किसलिए चाहिए ? सब्जी छोंकने के लिए ?'

'नही, दीपक जलाने के लिए चाहिए।'—सुमती अम्मा ने शोक-भाव से मुस्कराकर कहा।

'दीप जलाने के लिए ? मंगलश्शेरी खानदान में—'उसने पूरी बात नहीं कही। अवरुद्ध कंठ को नियंत्रित करते हुए उसने पुनः कहा : 'मैंने सिर-दर्द के लिए थोड़ा तेल खरीदा था। उसमें आधा बाकी है। क्या वह दीप जलाने के लिए काफ़ी होगा ?'

'उसे यहाँ ले आओ।'

कल्याणी दौड़कर एक छोटी शीशी ले आई और बाड़ के ऊपर से सुमती अम्मा के हाथ में पकड़ा दी। सुमती अम्मा ने उस औषधियुक्त तेल को दीपक में डालकर उसे जलाया, और बैठक में लाकर रख दिया।

सभी पद्मनाभ पिल्लै की आराम-कुर्सी के चारों ओर बैठ गए। उस दिन नंदिनी ने कीर्तन गाया था। उससे किसी ने कहा नहीं था। उसके हृदय से प्रार्थना का गीत उसी प्रकार बह निकला जैसे बाँध से पानी फूट

पड़ा हो।

'अञ्जन श्रीचोर ! चारुमूर्ते ! कृष्ण !'

शोकपूर्ण वह गान सध्या की शीतल पवन द्वारा अंतरिक्ष में व्याप्त हो गया। धीरे-धीरे गीत की लय ऊपर उठी। वातावरण नि.शब्द हो गया। ऐसा लगा मानो संध्या और संध्या का शीतल समीर जम गया हो।

'दिल में भरे हैं सन्ताप हरे ! कृष्ण !

वाल गोपाल तुम रक्षक बनो कृष्ण !'

वे ताल-बद्ध सिसकियाँ थी। क्षण भर के लिए किसी को कुछ पता नही चला।

'कौन है ?···कौन है ?' द्वार की ओर देखते हुए कमलाक्षी अम्मा ने इस प्रकार पुकारकर पूछा।

द्वार के भीतर से सफेद वस्त्र पहने एक व्यक्ति ने अपने पैरों को जल्दी से बाहर की ओर खींचा।

'वह कौन है ?'—सुमती अम्मा आँगन में आ गईं।

शुभ्र वस्त्रधारी तेजी से निकलकर सड़क पर चला गया। सुमती अम्मा ने दरवाज़ा बन्द करके कुडी लगा दी।

× × ×

रामचन्द्रन को स्कूल की अंतिम परीक्षा मे बैठना है जिसके लिए फ़ीस जमा करनी है। फ़ीस देने के लिए रुपये कहाँ से मिलेंगे ? रामचन्द्रन ने सुमती अम्मा से कहा। सुमती अम्मा किससे कहे ? बहनों से कहने से क्या फ़ायदा ?

दो दिन के बाद फ़ीस देनी है। वे दोनों दिन छुट्टी के हैं। फ़ीस जमा हो जाने की बात में संदेह होने पर भी रामचन्द्रन पढ़ाई में मग्न था। कोई रास्ता न देखकर घबराई हुई सुमती अम्मा अहाते में टहल रही थी।

दक्षिण के घर म से छेनी पर हथौड़े मारने की आवाज़ गूंज रही

थी। सुमती अम्मा उधर देखती हुई खड़ी हो गई। वहाँ एक बड़े घर की दीवारें ऊँचाई पर चुनी जा रही हैं। द्वार और खिड़कियाँ भी बन रही हैं। उन दीवारों पर बढ़ई की मार, राज का पुकारकर कुछ कहना और बीच-बीच में कुञ्ञुवरीत की आज्ञाएँ तथा सारा की शिकायतें सब कुछ मिलकर वहाँ कोलाहल मच रहा था। वह नए ढंग का घर है। मंगलश्शेरी के घर से भी बड़ा है वह।

सुमती अम्मा विस्फारित नेत्रों से देखती रह गई। दस वर्ष पहले झाड़ी और कुबड़े नारियल से भरे उस अहाते में प्रेत की शंका से कोई घुसता नहीं था। मंगलश्शेरी के लिये गए नारियल के पत्तों और बाँसों से झोंपड़ी बनाकर कुञ्ञुवरीत और उसके छोटे परिवार ने रहना शुरू किया था। उस घर में आज लक्ष्मी नृत्य कर रही है। प्रयत्न-शक्ति की विजय-ध्वनि के समान हथौड़े की मार गूंज रही है।

छोटी पहाड़ियों के समान फूस के ढेर, घने व्याप्त गुच्छों को पहन-कर संतुलन के लिए मानो चारों ओर हाथ फैलाए जैसे खड़े नारियल के पेड़, आम और बबूल के पेड़, रुई के पेड़ों में छाए हुए कनक-मोतियों के समान काली मिर्च उपजाने वाली बेल, उनके बीच में परिश्रम के कारण पसीने से अस्त-व्यस्त होकर तेज़ी से चलने वाले कुञ्ञुवरीत, सारा और बच्चे—सब मिलाकर वह घर एक छोटे स्वर्ग के समान प्रतीत हो रहा था।

प्रकृति के कोप का शिकार होकर, एक झोंपड़ी के लिए जगह खोजते हुए, मान और आभिजात्य तथा धन से परिपूर्ण एक खानदान का फाटक खटखटाकर करुणा से भीख माँगकर आए हुए लोग! उन्हें आश्रय देने में करुणा उँडेल दी गई थी। उसके साथ उस खानदान का ऐश्वर्य भी गिर-कर चला गया। देने वाले का विनाश हुआ, लेने वाले की समृद्धि हुई।

क्या चुराकर लिया था? हड़प लिया था क्या? क्या धोखा देकर प्राप्त किया था?

नहीं; नहीं; नहीं।

बांध का जल यदि फूटकर बहेगा ता वह ऊपर नहीं नीचे की तरफ ही बहेगा।

कुञ्ञुवरीत ने किसी का कुछ नहीं चुराया, हड़पा भी नहीं, धोखा देकर भी नहीं हथियाया। श्रम की शक्ति और अनदबे उत्कर्ष की इच्छा ही उसका मूल धन है।

मंगलश्शेरी खानदान था एक तालाब। उससे एक छोटा नाला बना। कुञ्ञुवरीत द्वारा खोदकर बनाया गया नाला है वह? आभिजात्य की स्पर्धा के धक्के से एक द्वार खुला। उस द्वार से पानी बह-बहकर एक नाला बन गया। उस नाले को दक्षिणी भाग के घर की ओर उसने मोड़ दिया। यही कुञ्ञुवरीत का अपराध है। यदि वह उस ओर न मोड़ता तो क्या वह दूसरी दिशा की ओर नहीं मुड़ जाता?

कुञ्ञुवरीत को मालूम है कि उसने न तो किसी का चराया, न हड़पा और न धोखा देकर हथियाया है, इसलिए उसे यह भी मालूम है कि मंगलश्शेरी अथवा दूसरे किसी खानदान का उस पर विशेष आभार नहीं। झोंपड़ी बनाने की जगह देने से वह कृतज्ञ है। उस कृतज्ञता की सूचना के रूप में पांच पसेरी धान लेकर मंगलश्शेरी जाने पर उसने कहा: 'हाथी कितना भी दुबला हो जाय तब भी वह गोशाला में बांधा नहीं जा सकता; फिर वह क्या करे?'

दक्षिण की ओर आंखें खोलकर खड़ी सुमती अम्मा की आंखों में आंसू आ गए। क्या वह ईर्ष्या है? क्या उसे अपने ठगे जाने का ज्ञान है? उत्तर में हां या ना कहना संभव नहीं। वह आंसू पोछकर चलने को हुई।

पश्चिमी भाग की गली में एक खांसी! सुमती अम्मा ने मुड़कर देखा। गली की चहारदीवारी के ऊपर एक लम्पट हंसी के साथ खड़ा कुट्टप्पणिक्कर उसकी ओर देख रहा है।

सुमती अम्मा जल्दी से मुड़कर घर के अंदर चली गई।

समस्या बाकी ही रही—रामचन्द्रन की परीक्षा का शुल्क देने के

लिए रुपया कहाँ से आयगा ?

सुमती अम्मा ने कमलाक्षी अम्मा के पलंग पर बैठते हुए पूछा—'दीदी, माँ का नेकलेस था न।'

'हाँ। वह भाई के बक्स में रखा है।'

'कुंजी किसके पास है ?'

'मेरे पास है, किसलिए ?'

'रामचन्द्रन का परीक्षा-शुल्क देना है।'

'सब-कुछ बेचने के बाद भी भाई ने उस नेकलेस को नहीं बेचा।'

'इतनी पढ़ाई करने के बाद यदि वह परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो सका तो—'

काफ़ी देर मौन रहने के बाद कमलाक्षी अम्मा ने कहा : 'वहाँ है। उस बक्स में कुंजी रखी है।'

× × ×

उस दिन भी संध्या को नंदिनी ने ही कीर्तन गाया। दीपक जलाकर जब सब बैठक में बैठ गए तो पिछले दिन जिस धवलवेशधारी को देखा था, वही द्वार के सामने सड़क पर दिखाई पड़ा।

नंदिनी गाने लगी। वह धवलवेशधारी द्वार के अन्दर आ गया। गाना तालबद्ध सिसकियों में समाप्त होने पर वह धवलवेशधारी द्वार के अन्दर पैर रखे खड़ा था।

'कल देखा हुआ है न वह ?' कमलाक्षी अम्मा ने भयमिश्रित क्रोध के साथ पूछा।

धवलवेशधारी जल्दी से पीछे के रास्ते में चला गया। द्वार के सामने सड़क पर एक छोटा जन-समूह और था। कमलाक्षी अम्मा ने कहा : 'सुमती दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगाओ।'

सुमती अम्मा ने द्वार बंद करके कुंडी लगा दी।

'किस लड़की ने गाया था ?' मार्ग में खड़े लोगों में से एक ने पूछा।

'कमलाक्षी अम्मा की छोटी लड़की है'—किसी ने जवाब दिया।

'कमलाक्षी अम्मा की ही बड़ी लड़की मुसलमान के साथ भाग गई है न ?'

'उससे छोटी है यह ।'

इसे भी······'

'यह भी गा-गाकर किसी के साथ भाग जायगी ।'

× × ×

दूसरे दिन धवलवेशधारी वह आदमी कल्याणी के घर पहुंचा। कल्याणी पहले उसे पहचान नहीं सकी । उसने थोड़ी तमिल से प्रभावित मलयालम भाषा में पूछा : 'मुझे पहचानती हो ?'

'नहीं ।'

'वासु ।'

'कौन वासु ?'

'लक्ष्मी का बेटा वासु ।'

कल्याणी उसे पहचान गई ।

'बैठो······तुम अब तक कहाँ थे ? तुम कब आए ?' कल्याणी के पिता पप्पु की छोटी बहन पारु है । पारु की बेटी लक्ष्मी का पुत्र है वासु । वह बचपन से ही संगीत में रुचि रखता था । दस-पंद्रह वर्ष की अवस्था में वह एक तमिल नाटक कंपनी वालों के साथ गांव छोड़कर चला गया था ।

उस जमाने में शहर से आकर नाटक खेलने वाली एक नाटक कंपनी वाले वासु को साथ ले गए । घर की अनुमति के बिना नाटक देखने गए वासु ने नाटक की समाप्ति पर नाटक वालों के डेरे में जाकर प्रार्थना की कि उसे नाटक कंपनी में शामिल कर लिया जाय । उन लोगों ने उससे गाना गवाया । उस दिन के नाटक में गाया गया एक गीत गाकर उसने गायक को भी आश्चर्य में डाल दिया था । यद्यपि वासु को न तो तमिल मालूम थी और न नाटक के अनुरूप आकार-सौष्ठव ही प्राप्त था, फिर भी उसके संगीत की रुचि देखकर उन्होंने उसे अपनी कंपनी में

ले लिया। वासु अपने माँ-बाप की अनुमति लेकर उनके साथ चला गया।

दो वर्ष तक वह रोज घर पर पत्र भेजता रहा। कभी-कभी रुपये भी भेजता था। बाद में रुपये और पत्र दोनों आने बंद हो गए। वह कहाँ है, क्या करता है, यह मालूम न होने के कारण घर वाले घबरा गए। अंत मे पिता उसकी खोज में निकला।

वह नाटक-कंपनी नष्ट हो गई थी। वासु के पिता ने नष्ट हुई कंपनी के नटों से मिलकर वासु का पता पूछा। कंपनी के नाश के बाद से वासु के संबंध मे उन्हें कुछ मालूम ही नहीं था। वासु के पिता निराश होकर वापस लौट आए।

वासु एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ का शिष्य होकर संगीत का अभ्यास कर रहा था। नौ वर्ष के अभ्यास के बाद उसने गुरु की अनुमति और आशीर्वाद के साथ कुछ संगीत के कार्यक्रमों के लिए संगीत-सभाएँ चलाईं। संगीत के विद्वानों की बधाइयाँ भी उसे प्राप्त हुईं। बाद मे माता-पिता के दर्शन के लिए वह गाँव आया था।

दो या तीन दिन घर में रहने के बाद उसका विचार तमिलनाडु जाने का था, लेकिन पश्चिमी भाग से आकर पूर्वी भाग में उदासीन होकर जाते हुए वासु को संयोग से नंदिनी का प्रार्थना-गीत सुनाई पड़ा। गान के अंत में वह भी रोया। उसके बाद वह अलौकिक नाद उसकी आत्मा में भी प्रतिध्वनित होने लगा।

दूसरे दिन भी नंदिनी का शोकपूर्ण प्रार्थना-गान सुनने के लिए वह द्वार पर जा खड़ा हुआ। बैठक में घुस जाने की इच्छा होने पर भी उसे साहस नहीं हुआ। दूसरे दिन मंगलेश्वरी खानदान के अधःपतन के संबध में तथा विलासिनी के एक मुस्लिम के साथ भाग जाने के बारे में उसने सुना।

उस दिन उसने तमिलनाडु जाने के लिए अपना सामान तैयार कर लिया था, लेकिन जाने के लिए उसके मन ने अनुमति नहीं दी, जैसे कोई उसे रोक रहा हो। यात्रा स्थगित करके वह कल्याणी के घर

पहुंचा था।

वासु सगीत कुशल होकर गांव लौट आया और अपने घर पर भी आया। इस पर कल्याणी बहुत खुश हुई। इससे अधिक खुशी उसे इसलिए हुई कि यशोधरा भी सयानी हो गई थी। सगीतज्ञ वासु से बाते करने के बीच उसके विवाह के बारे मे भी कल्याणी ने पूछा। अभी कोई विचार नही है ऐसा उसने जवाब दिया।

सध्या का समय हो गया है। मगलेश्शेरी की बैठक से निकला वह शोकपूर्ण प्रार्थना गान अतरिक्ष मे परिव्याप्त हो गया। सगीतज्ञ वासु दक्षिणी आँगन मे जाकर खडा हो गया। उस अलौकिक नाद की मान्त्रिक शक्ति से वह मुख ऊपर किये निश्चल खडा रह गया। उसके पीछे कल्याणी और यशोधरा भी आश्चर्य मे खडी थी।

रोज के समान वह गान सिसकियो मे समाप्त हो गया। सगीतज्ञ वासु की आँखो से आँसू बह रहे थे — जैसे मूर्ति रो रही हो।

'अञ्जन श्रीचोर ! चारुमूर्ते ! कृष्ण !

............मूर्ति गा रही है। उस सुशिक्षित गान ने नीरव वातावरण मे अत्यन्त कोमल कपन पैदा कर दिया। घनीभूत दुःख क्रमशः गलता हुआ-सा प्रतीत हुआ।

'वह कौन झाक रहा है माँ ?' यशोधरा ने कल्याणी से पूछा।

'दक्षिणी भाग की गाने वाली है न वह ?'

चहारदीवारी के पास नदिनी के पीछे खडी समती अम्मा ने सरोजिनी अम्मा से पूछा 'फाटक पर खडा होने वाला व्यक्ति ही वहाँ खडा है न ?'

'वही है। कल्याणी का कौन है वह ?'

नदिनी ने यह कुछ नही सुना। वह उस गान के शोक-समीर मे उडी जा रही थी। उस दिन पहली बार उसे शोक के माधुर्य की अनुभूति हुई :

दिल मे भरी हुई वेदना, यन्त्रणा —
आनन्दरूप तुम दूर करो हे कृष्ण !

वह गान अन्तरिक्ष की विस्तृती में व्याप्त हो गया।

संध्या के शीतल समीर के साथ धवल मेघ धीरे-धीरे उड़ रहे हैं। नीले आकाश से पंचमी का चन्द्र नंदिनी के विकसित नेत्रों को देखकर मुस्कराया।

'नंदिनी!' बैठक से जोर की पुकार आई।

नंदिनी चौंककर मुड़ी! वह बैठक में पहुँची।

'तुम-तुम-तुम आगे से मत गाना! तुम आगे से गाना मत सुनना।' कमलाक्षी अम्मा ने आज्ञा दी। फूट-फूटकर रोते हुए उन्होंने पुत्री को गले से लगा लिया। 'एक—एक गई। अब—अब एक-मात्र यही बाकी है। बेटी, तू आगे से मत गाना! गाना मत सुनना।'

दूसरे दिन जब संध्या हुई तब रोज की तरह मंगलश्शेरी की बैठक में दीपक जलाया गया; सब लोग आराम-कुर्सी के चारों ओर बैठ गए। उस दिन सुमती अम्मा ने कीर्तन गाया। नंदिनी माँ के पास चुपचाप बैठी रही।

कीर्तन समाप्त हुआ। सभी लोग उठ गए।

'अञ्जन श्रीचोर चारुमूर्ते! कृष्ण!'—उत्तर की ओर से यह गान हवा में खेलने लगा।

नंदिनी बैठक से आँगन में निकल आई। स्वप्न में चलने के समान वह उत्तरी भाग की ओर चली।

'अरी रुक जा'—कमलाक्षी अम्मा ने नंदिनी का हाथ पकड़ा। 'अरी तू वहाँ कहाँ जा रही है?'

नंदिनी माँ के साथ कमरे में आ गई। कुछ देर बाद कमरे से सिसकियाँ सुनाई पड़ीं।—'एक गई—अब एक ही बाकी है।'

दूसरे दिन सबेरे सुमती अम्मा ने उत्तरी बाड़ के पास जाकर कल्याणी को पुकारा। कल्याणी और यशोधरा बाड़ के पास आईं। सुमती अम्मा ने पूछा: 'कल और परसों यहाँ से किसने गाया था कल्याणी?'

'संगीतज्ञ वासु था ।' कल्याणी ने अभिमान के साथ कहा ।

'कौन है संगीतज्ञ वासु ?'

'वह ? वह मेरी फुफेरी बहन का बेटा है । दस-पंद्रह वर्ष तमिलनाडु में रहकर संगीत की शिक्षा प्राप्त करके आया है······उसने कहा कि नंदिनी मालकिन अच्छा गीत गाती है । सिखाने पर बडी अच्छी गायिका बनेगी ।'

वह तमिलनाडु से कब आया ?'

'उसे आए तीन-चार दिन हो गए हैं । यहाँ वह कल और परसों आया था ।'

'क्या आज आयगा ?'

'पता नही ।'

'वह किस दिन जायगा ?'

तीन-चार दिन के अन्दर चला जायगा, ऐसा कल कहा था ।

'हाँ' सुमती अम्मा चिंता में पड गई ।

'क्या है ? क्या उससे नंदिनी मालकिन को गाना सिखवाओगी ?'

'नहीं, नही । मैंने यो ही पूछा था ।'

सुमती अम्मा ने वापस आकर चुपचाप कमलाक्षी अम्मा से कहा : 'दीदी, वह तीन-चार दिन के अन्दर चला जायगा ।'

'वह कौन है ?'

'कल्याणी का कोई है ।'

२०. त्याग का आरम्भ

'गीदड की आँखें मरने पर भी मुर्गों के पिंजरे मे' ऐसी एक कहावत है। फिरंगी रोग-इतिहास के वीर कथानायक कुट्टप्पणिक्कर की आँखें स्त्रियों के पीछे है। जाति-धर्म और उम्र की भिन्नता कुट्टप्पणिक्कर को परेशान नही करती। कहीं भी लडकी दिखाई पडी, वह उसे घूरता हुआ खडा रहेगा। अगर आस-पास कोई न हो तो खाँसकर या खटखटाकर उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेगा; फिर उसकी ओर लम्पटता की हँसी हँसेगा। अवसर मिल जाने पर कुछ छेड़-छाड भी करेगा।

कुट्टप्पणिक्कर के बहुत खर्च है। केवल चिकित्सा के लिए ही एक बड़ी रकम चाहिए। एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक यूनानी आदि न जाने कौन-कौन-सी औषधियों का एक साथ प्रयोग करने मे भी उसे कोई हिचक नही होती। फिरंगी रोग होने के कारण चिकित्सा गुप्त होनी चाहिए। गुप्त रूप से होने वाली चिकित्सा में अधिक धन खर्च होना स्वाभाविक है। कुट्टप्पणिक्कर का दूसरा खर्च एजेण्टो पर होता है। उपेक्षित, गरीब, गरीबी के परिहार के लिए तैयार स्त्रियाँ कहाँ है, उन्हे खोज-खोजकर बताना ही एजेण्टों का काम है। फिर बीमारी बाहर प्रकट न हो, इसके प्रयत्न मे उपयुक्त कपडे पहनना तथा पाउडर और सुगंध खरीदना—इन सबके लिए काफी पैसा खर्च होता है।

कुट्टप्पणिक्कर के हाथ का पूरा रुपया पच्चाषी की जमीन और खेत गिरवी लेने में खर्च हो गया। गिरवी पर ली गई वस्तुओं को एक-एक करके दूसरों के हाथ रेहन करने लगा। कुछ बाग-बागीचों को कोच्चुरामन वैद्य के बेटे ने खरीदा और कुछ गोविन्दन वैद्य ने। खेत माम्मन मालिक और कुञ्जुवरीत दोनों ने मिलकर खरीदे थे।

कुट्टप्पणिक्कर रेशमी कपड़े पहनकर पाउडर और इत्र-सुगंध लगाकर

गाँव में घूमता था। सब घरों में झाँककर या छिपकर देखता। स्त्रियों को देखने पर खाँसता, खखारता तथा विकट हँसी हँसता; अवसर मिलने पर वह कुछ कहता भी; उन्हें कोई दुःख हो तो दूर भी करता था।

मंगलश्शेरी की पीछे की गली में वह रोज बहुत देर खड़ा रहता था। कष्ट सहने वाले और कष्ट के परिहार के लिए मना करने वाले उन घर वालों के प्रति कुट्टप्पणिक्कर को सहानुभूति है, लेकिन वह निराश नहीं हुआ। उसने अपने यत्न कम नहीं किए।

एक दिन सुमती अम्मा लकड़ी बीनने पश्चिमी अहाते मे गई। गली में खड़े हुए कुट्टप्पणिक्कर ने जरा खाँसा। इस प्रकार की खाँसी रोज सुनने के कारण सुमती अम्मा ने उधर नही देखा। कुट्टप्पणिक्कर ने फिर खखारा। फिर भी सुमती अम्मा ने नहीं देखा। बाड के ऊपर से अंदर की ओर झाँककर कुट्टप्पणिक्कर ने कहा. 'एक बार इधर देखिए।'

सुमती अम्मा ने पणिक्कर की ओर देखा। विकट हँसी के साथ पणिक्कर ने पूछा : 'क्या बेटा पास हो गया ?'

बेटे के बारे मे पूछने पर सुमती अम्मा कुछ नरम पड गई। उसने जवाब दिया—'अभी पता नही चला।

'प्रथम श्रेणी में पास होगा, ऐसा कहा था।'

'किसने कहा था ?' सुमती अम्मा जिज्ञासा से बाड के पास पहुँची।

'हेडमास्टर ने कहा था।'

'किससे ? क्या आपसे कहा था ? प्रथम श्रेणी में पास होगा, ऐसा ही कहा ?'

हेडमास्टर और मैं पुराने मित्र हैं। कल जब मैं उनसे मिला तब उन्होंने कहा : 'अब तक जितने विद्यार्थियो को मैंने पढ़ाया, उन सबमें सबसे समर्थ और बुद्धिमान रामचन्द्रन है। और यह भी कहा है कि उसे आगे पढाया जाय तो वह हाईकोर्ट का न्यायाधीश बनेगा। हम लोग आपस में संबंधी हैं, इसलिए आपसे यह बात कहने के लिए उन्होंने मुझसे

कहा था ।'

सुमती अम्मा की आँखों में आनन्द के आँसू भर आए । पणिक्कर की आशा पूर्ण हो गई । उसने पूछा : 'बेटे को आगे नहीं पढ़ाओगी क्या ?'

'आगे भी पढ़ाना है । मेरा बेटा···मेरा बेटा···'सुमती अम्मा की साँस फूल गई ।

'कालेज में पढ़ाने का बहुत खर्च है । तिरुवनन्तपुरम् में है न कालेज······'

'कहीं भी हो, सब-कुछ बेचकर भी बेटे को कालेज मे पढ़ाना है ।'

'रुपये आदि की ज़रूरत हो तो····· '

सुमती अम्मा का मुख एकदम लाल हो गया । उन्होने कुछ कहना चाहा, लेकिन एक पल सोचने के बाद उन्होंने अपने को सँभाल लिया ।

'माँ, माँ' घर के अंदर से रामचन्द्रन बुला रहा है ।

सुमती अम्मा दौड़ती हुई घर मे चली गई ।

'पास हो गए क्या, बेटे ?'

'पास हो गया माँ, प्रथम श्रेणी मे पास हुआ हूँ । हेडमास्टर ने मुझे ···' पूरा कहने के पहले ही मा ने बेटे का आलिंगन करके माथे पर चुंबन लिया ।

× × ×

कुट्टप्पणिक्कर के कथन में आधी सचाई थी । हेडमास्टर ने स्कूल के फाटक पर खड़े होकर किसी दूसरे व्यक्ति से रामचन्द्रन के बारे मे कहा था । रामचन्द्रन स्कूल का सबसे योग्य विद्यार्थी है और प्रथम श्रेणी मे पास हुआ है, ऐसा उन्होने कहा, यह सच ही था ।

तब उस रास्ते से जाता हुआ कुट्टप्पणिक्कर रामन्द्रन और मंगलश्शेरी के बारे में सुनकर दूर खड़ा हो गया । उसने अंदाज़ लगाया कि यह खबर सुमती अम्मा को देने में उसका मनोरथ सफल होगा । उसने निश्चय किया कि यह खबर वहाँ पहुँचने के पहले ही वहाँ पहुँच जाऊँ तो सुमती अम्मा से बातचीत करने का अवसर मिल जायगा । हेडमास्टर

उसका मित्र है और रामचन्द्रन के बारे में हेडमास्टर ने उससे ही कहा है, ऐसा झूठ मिलाकर बात कहने से उसकी महत्ता बढ़ जायगी। वह उसी दम यह खबर सुनाने के लिए वहाँ से दौड़ा था। उसका तीर ठीक निशाने पर ही जाकर लगा।

'रुपये आदि की ज़रूरत हो तो···' सुमती अम्मा की सबसे कमज़ोर नाड़ी की तरफ फेंका गया पासा थी यह सूचना। प्रथम श्रेणी में पास हुए बेटे को कालेज में पढ़ाने के लिए कोई भी माँ किसी भी प्रकार का त्याग नहीं करेगी क्या? रुपया माँगने पर मिलेगा, ऐसा सूचित कर देने पर भी सुमती अम्मा ने पणिक्कर को फटकारा नहीं—यह भी आशा की बात है न?

कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा को इस बात का दुःख हुआ कि उनका कोई बच्चा इस प्रकार पढ़कर योग्य नहीं बना। फिर भी सुमती अम्मा और वसुमति की प्रसन्नता में वे भाग लिये बिना न रह सकी। नंदिनी भी संतुष्ट हुई। कमलाक्षी अम्मा ने कहा: 'कम-से-कम एक तो अच्छा निकला, यह खानदान का सौभाग्य है।'

सरोजिनी अम्मा ने कहा: 'एक का अच्छा निकलना भी खानदान की उन्नति का मार्ग बन सकता है।'

राजशेखरन कहीं से बहुत सारी सुपारी और काली मिर्च लाया। रामचन्द्रन की सफलता के बारे मे सुनकर उसने कोई भाव प्रकट नहीं किया।

'पढने वाले कभी पास होते हैं तो कभी फेल। उसके लिए मैं क्या करूं?'

'अगर तू भी पढता तो परीक्षा मे इसी प्रकार होता न?'—सरोजिनी अम्मा ने पूछा।

'पास होकर—पास होने से क्या मिलता?'

'पास होने से नौकरी मिलती।'

'नौकरी मिलने से क्या मिलता?'

'वेतन मिलता ।'

'वेतन से मतलब पैसा है न ?'

'पैसा नहीं, रुपया ।'

'पास हुए बिना और नौकरी किये बिना भी रुपया ला सकूंगा कि नहीं, मैं देखता हूँ'—उसके शब्दो में असाधारण दृढ़ता थी ।

फिर किसी ने कुछ नहीं कहा ।

सुमती अम्मा चिन्ता में पड़ गई । उसने सोचा कि रामचन्द्रन यदि तिरुवनन्तपुरम् के कालेज में भर्ती करके पढ़ाया जाय तो प्रथम श्रेणी में पास होगा । फिर जल्दी ही वह कोई बड़ा आफ़िसर बनेगा—जज या पेशकार । कितनी बड़ी नौकरी ? सुमती अम्मा के पिता ग्रामाधिकारी थे । ग्रामाधिकारी के अधिकार और महिमा पाकर बड़े हुए थे । उससे भी कहीं दूना अधिकार और महिमा न्यायाधीश और पेशकार में होगी । अपने पुत्र रामचन्द्रन को उसने कल्पना में अपने पिता से भी बडे पद पर अधिष्ठित हुए देखा । लेकिन···यह लेकिन बहुत बड़ा है । बड़ा आफ़िसर होने के लिए कालेज में पढ़ना होगा । कालेज में पढ़ने के लिए तिरुवनन्तपुरम् में रहना होगा । उसके लिए पैसा ?

माँ का नेकलेस बेचकर परीक्षा-शुल्क भरा था । और कुछ बेचने के लिए हो तो दीदी नहीं रोकेंगी, ऐसा उसे विश्वास है । मगर बेचने के लिए है ही क्या ? थोड़े खेत और बाग-बगीचे ही शेष बचे है । उन्हें बेचने का अधिकार रखने वाले खानदान के मालिक जेल में हैं । तब क्या किया जाय ? कहाँ से रुपया प्राप्त किया जाय ?

रात में रामचन्द्रन ने माँ से कहा : 'हेडमास्टर ने मुझे बुलाकर कालेज में जाकर पढ़ने के लिए कहा है । क्या ऐसा हो सकेगा माँ ?

'हो सकेगा, मैं कोशिश करूँगी । बेटा, तुम चिन्ता न करो ।'

सभी सो गए । केवल सुमती अम्मा को नींद नहीं आई । वह नहीं सोई । बीच-बीच में वह गहरी सांस लेती रही । उसे किसी ने नहीं सुना ।

× × ×

दूसरे दिन सबेरा हुआ। रामचन्द्रन पश्चिमी भाग की ओर गया। वापस आकर उसने माँ से कहा : 'माँ बालकृष्णन कालेज मे प्रवेश ले रहा है।'

'कौन बालकृष्णन, बेटे ?'

'कोच्चुरामन वैद्य के सबसे बडे बेटे का नाती है। फिर जयचन्द्रन भी प्रवेश ले रहा है।'

'कौन जयचन्द्रन ?'

'गोविन्दन वैद्य का नाती। फिर माम्मन मुतलाली का छोटा बेटा एण्टणी भी कालेज मे जा रहा है।'

'इस भाग से कोई नही जा रहा है क्या ?'

'दस्तावेज लिखने वाले वेलुपिल्लै का पुत्र चन्द्रशेखरन भी कालेज मे जायगा, ऐसा सुना है।'

सुमती अम्मा सिर झुकाए मौन खडी रही। रामचन्द्रन ने आतुरता से पूछा : 'माँ, क्या मैं भी कालेज मे पढ सकूँगा ?'

'मैं जरा कोशिश करके देखूं बेटे! धीरज धर।'

दोपहर हो गई। सुमती अम्मा आँगन मे पहुँचकर पश्चिम की ओर देखने लगी। तभी पश्चिमी गली से एक खाँसी सुनाई पडी। सुमती अम्मा पश्चिमी बाड के पास चली गई। उसका जाना देखती हुई सरोजिनी अम्मा कमलाक्षी अम्मा के कमरे मे गई। उसने कमलाक्षी अम्मा से कहा, 'दीदी पश्चिमी गली मे किसी ने खाँसा। सुमती उधर दौडी गई है।'

'किसी के खाँसने पर वह वहा क्यो गई ?'

'वही तो मैं भी पूछ रही हूँ ?'

'तू जाकर देख कि किसने खाँसा था।'

'देखने की जरूरत नही। कुट्टप्पणिक्कर ने खाँसा था।'

'कौन ? कुट्टप्पणिक्कर ?' कमलाक्षी अम्मा पलंग से एकाएक उठकर बैठ गईं। उन्हें क्रोध आ गया—'कुट्टप्पणिक्कर के गली में खडे होकर

खाँसने पर सुमती वहाँ चली गई क्या ? वह।···वह···!···'वे कमरे से बाहर निकलकर पश्चिमी आँगन में पहुँची। पीछे-पीछे सरोजिनी भी।

सुमती अम्मा बाड़ के पास से लौटकर आ रही थी। कमलाक्षी अम्मा ने ऊँचे स्वर में पूछा : 'तू···अरी तू कहाँ गई थी ?'

'दीदी, नाराज़ क्यों हो रही हैं ?' सुमती अम्मा ने शांत भाव से पूछा।

'तू कहाँ गई थी, यही पूछ रही हूँ।'

'गली में किसी ने खाँसा था। कौन है, यही देखने मैं उधर गई थी।'

'गली में किसी के खाँसने पर उसे जानने की तुझे क्या जरूरत ?'

'सुमती अम्मा ने उत्तर नहीं दिया। वह रसोईघर में चली गई।

'वह भी···वह भी···' कमलाक्षी अम्मा फूट-फूटकर रोने लगी।

शाम हो गई। हाई स्कूल का एक अध्यापक मुक्कोणक्करा के पूर्वी भाग में अपने एक रिश्तेदार के यहाँ से लौटते वक्त मंगलश्शेरी में आया। रामचन्द्रन के बुद्धिबल और पढ़ने की इच्छा के बारे में सुमती अम्मा से उसने कहा। अध्यापकों को भी मुश्किल लगने वाला एक सवाल रामचन्द्रन ने आसानी से हल कर दिया। कोई भी किताब एक बार पढ़ लेने पर फिर उसे वह कभी नहीं भूलता। स्कूल की प्रत्येक प्रतियोगिता में उसने हमेशा प्रथम स्थान पाया है। रामचन्द्रन को उच्च शिक्षा के लिए भेजना न केवल उसके और उसके खानदान के लिए अति आवश्यक है, बल्कि देश के लिए भी। इस प्रकार उसने सुमती अम्मा को समझाया। सुमती अम्मा आनंदाश्रु बहाने लगी।

अध्यापक ने पूछा : 'रामचन्द्रन को कालेज में भेजने का आपका निश्चय है न ?'

'हाँ' सुमती अम्मा ने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।

अध्यापक के चले जाने के बाद रामचन्द्रन ने पूछा : 'माँ क्या मैं कालेज में प्रवेश ले सकूँगा ?'

'ले सकेगा बेटा—ले सकेगा।'

'रुपए हैं ?'

'हैं।'

'रुपए कहाँ से मिले ?'

'यह जानने की तुझे कोई ज़रूरत नहीं। रुपए हैं। बेटा, तू तैयारी कर ले।' वह फिर चिन्ता में लीन हो गई।

'क्या धोती और कुर्ता धो डालूं ?' रामचन्द्रन ने आह्लाद से पूछा।

'हाँ, बेटी, दादा की धोती और कुर्ता धो डाल।'

'दादा कब जायेंगे माँ ?' वसुमती ने पूछा।

'कल सबेरे।'

'तब तक धोती और कुर्ता सूख जायगा क्या ?'

'सूख जायगा। जल्दी से धो डाल।'

वसुमती धोती और कुर्ता धोने चली गई। रामचन्द्रन ने अपनी पुस्तकें ठीक से बाँधकर रखीं।

संध्या के पहले दस्तावेज़ लेखक वेलु पिल्लै आया। उसने सुमती अम्मा से पूछा : 'क्या रामचन्द्र तिरुवनन्तपुरम् जा रहा है ?'

'हाँ।'

'कब ?'

'कल।'

'कल किस समय ?'

'कल किसी भी समय···क्यों पूछ रहे हो ?'

'मेरा बेटा भी कालेज मे प्रवेश लेने के लिए जा रहा है। उसे मैं लेकर जा रहा हूँ।'

'हूँ। रामचन्द्रन वहाँ पहुँच जायगा।'

वेलु पिल्लै चला गया। वहाँ खड़ी सब सुनती हुई सरोजिनी अम्मा ने पूछा : 'रामचन्द्रन को कालेज में भेजने के लिए रुपया कहाँ है सुमती ?'

'रुपए ?···रुपए हो जायेंगे।

'कहाँ से ? कैसे ?'

'ज़रूरत हो तो कटहल की जड़ में भी फ़ल लग जायगा।'

'लेकिन जड़ में होने वाला फल—'

'क्यों, जड़ में लगा फल कटहल नहीं होता ?'

सरोजिनी अम्मा कमलाक्षी अम्मा के कमरे में गई। दीदी और छोटी बहन वापस आईं। कमलाक्षी अम्मा ने गरजते हुए कहा : 'अरी इस खानदान में जड़ में कटहल नहीं हुआ है।'

'अगर नहीं हुआ है तो क्या आगे नहीं हो सकता दीदी ?' सुमती अम्मा में किसी प्रकार का भाव-भेद नहीं हुआ।

'अरी, आज तक जो नहीं हुआ वह आगे भी नहीं होगा।'

'जो नहीं हुआ है, वह हो चुका है न दीदी ?' सुमती अम्मा ज़रा-सा मुस्कराई।

कमलाक्षी अम्मा क्रोध में काँपने लगी : 'अरी हुआ है—हुआ है। ···मेरी बेटी···नहीं। वह मेरी बेटी नहीं। वह इस खानदान में नहीं जन्मी···वह मुसलमान के साथ चली गई···जाने दो ! बुरी थी तो बाहर चला जाना अच्छा ही हुआ।···लेकिन आगे से इस ख़ानदान में वैसा नहीं होगा री। मैं होने नहीं दूंगी।'

सुमती अम्मा मौन खड़ी रही।

× × ×

संध्या हो गई। सुमती अम्मा ने मंदिर जाने के लिए वस्त्र पहने। वह दीपक लेकर बैठक में आई। दीपक रखकर उसने पद्मनाभ पिल्लै की आराम-कुर्सी के आगे दंडवत् किया। वहाँ से उठने पर उसके मुख पर एक असाधारण भाव था—शांति और गंभीरता से मिश्रित भाव।

सब लोग आराम-कुर्सी के चारों ओर बैठ गए। सुमती अम्मा ने प्रार्थना-गीत शुरू किया :

'अञ्जन श्रीचोर···'

मुख के भाव के समान ही उस स्वर मे भी एक असाधारण अन्तर हुआ—प्रशात गंभीर भाव !

दिल मे भरी हुई वेदना यन्त्रणा
आनन्द रूप तुम दूर करो हे कृष्ण।

समतल मे प्रशान्त गंभीर होकर बहने वाली नदी जैसे सागर मे विलीन हो जाती है उसी प्रकार वह प्रार्थना-गीत सध्या के शीतल धुंधले प्रकाश मे लीन हो गया।

× ×

सवेरा होने को था। सुमती अम्मा ने रामचन्द्रन को पुकारकर जगाया—'उठो बेटा, स्नान करके आओ।'

रामचन्द्रन स्नान करके आ गया और वसुमती द्वारा धोकर रखे गए धोती और कुर्ते को पहन लिया। किताबो का गट्ठर लेकर वह बैठक मे आया। उसे भेजने के लिए सभी लोग बैठक मे आ गए।

कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा ने कुछ पूछने के भाव से एक-दूसरे को देखा। नंदिनी कुछ सोच रही है। राजशेखरन ने आलस्य के कारण जमुहाई ली। भाई के वियोग के दु.ख को दबाती हुई वसुमती माँ के पास ही खडी रही।

'मौसियो को नमस्कार करो बेटे।' सुमती अम्मा ने कहा।

रामचन्द्रन ने दोनो के पाँव छूकर प्रणाम किया। दोनो ने उसको आशीर्वाद दिया।

'आराम-कुर्सी के सामने प्रणाम करो बेटा।' सुमती अम्मा ने कहा।

रामचन्द्रन ने आराम-कुर्सी के आगे दण्डवत् प्रणाम किया। वह उठकर सुमती अम्मा के पास पहुँचा। माँ का आलिंगन करने के लिए उसने हाथ बढाया। सुमती अम्मा जल्दी से पीछे हट गई। फेंटे से एक कागज़ की पुडिया निकालकर बेटे के हाथो मे देती हुई बोली : 'इतना ही है बेटा और कुछ नहीं।'

'इतना काफ़ी है माँ, और कुछ नही चाहिए'—वह माँ के पैर छूने

के लिए झुका।

सुमती अम्मा जल्दी ही पीछे हट गई। उन्होंने कहा : 'बेटे खानदान को मत भूलना।'

'मैं कुछ नहीं भूलूंगा मां !'—उसने किताबों का गट्ठर हाथों में उठा लिया।

वसुमती फूट-फूटकर रो पड़ी—'पत्र डालिएगा भैया।'

उसने उसके आंसू पोंछे और सीने से लगाया—'पत्र लिखूंगा'—वह आंगन में उतरकर फाटक पर पहुँचा। गली में उतरकर वह अदृश्य हो गया।

'मां···' फूट-फूटकर रोई हुई वसुमती मां के गले लगने को हुई। सुमती अम्मा जल्दी ही वहां से दूर हट गई। वसुमती ज़मीन पर बैठकर मुख बंद करके खूब रोई। नंदिनी अब भी चिंता में निमग्न खड़ी है। राजशेखरन वहां से जा चुका था।

कमलाक्षी अम्मा ने सुमती अम्मा की ओर मुड़कर पूछा : 'कागज़ की पुड़िया में क्या था सुमती ?'

'रुपये थे दीदी'—सुमती अम्मा ने शांत होकर कहा।

'कितने थे ?'

'दो सौ !

'ये रुपए तुझे कहां से मिले ?'

सुमती अम्मा मौन होकर खड़ी रही। कमलाक्षी अम्मा को क्रोध आ गया—'कह री—दो सौ रुपए तुझे कहां से मिले ? तुझे किसने रुपए दिए ?'

सुमती अम्मा ने उत्तर नहीं दिया।

'तू···तू बतायगी नहीं क्या ?'···वे रुपए तुझे कैसे मिले, बतायगी नहीं क्या ?'—कमलाक्षी अम्मा क्रोध से कांपने लगी।

'बता सुमती—तुझे वे कैसे मिले ?' सरोजिनी अम्मा ने प्रार्थना की।

'बता री—बता !' कमलाक्षी अम्मा गरज रही थी . 'नही बताया तो तुझे मैं ··'उन्होंने समती अम्मा का गला दबाने के लिए दोनो हाथ बढाए ।

समती अम्मा जल्दी ही पीछे हट गई । वह बैठक से आँगन में उतर-कर पीछे की ओर चली गई ।

२१. बच्चों ने घर छोड़ा; माँ ने देह त्यागी

कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा दोनों बीमार पड़ गई। सुमती अम्मा रसोईघर के बरामदे में दीवार का सहारा लेकर किसी विदूर भूमि में आँख लगाए बैठी हैं। दीवार के सहारे बैठी हुई वसुमती माँ को कभी-कभी छिपकर देख लेती है। वह भी सोच रही है कि माँ को वे रुपये कहाँ से मिले थे।

कर्ज़ लिया क्या? उसकी माँ ने किसी से कभी उधार नहीं माँगा; उधार माँगेगी भी नहीं अथवा माँगने पर देने वाला है ही कौन? यदि उधार लिया तो बता क्यों नहीं सकी? नहीं—उधार नहीं लिये होंगे। भाई की पढ़ाई के लिए किसी ने मुफ्त में दिए थे क्या? दो सौ रुपये यों ही देने वाला कौन है इस गाँव में? यदि किसी ने इस प्रकार दिए तो माँ को कह देने में संकोच क्यों हो रहा है? क्या कुछ बेचा था? बेचकर दो सौ रुपये पा सकें, ऐसी इस घर में कौन-सी चीज़ है? कुछ नहीं—सब-कुछ बेचा जा चुका है। यदि बेचकर प्राप्त किया था तो क्या वे इस बात को छिपाकर रख सकती हैं?

वह बार-बार माँ के मुख की तरफ देखती है। उसे माँ का मुख अपरिचित-सा लगता है। पहले कभी न देखा गया, ऐसा एक भाव, जिसके प्रति उसके दिल में अत्यधिक आदर उत्पन्न हो रहा है; ऐसा एक भाव वहाँ दीखता है। माँ से वह कुछ पूछ नहीं सकती, बता नहीं सकती। वे मानो अपने से दूर, बहुत दूर चली गई।

दोपहर हो गई। बहुत-से पैसे लेकर राजशेखरन आया। रसोई के अन्दर जाकर वह वापस लौट आया। उसने पूछा: 'क्या खाना कुछ नहीं बनाया, सुमती मौसी?'

'नहीं बेटा।'

'माँ कहाँ है ?'

'लेटी हैं ।'

'और बड़ी मौसी ?'

'लेटी हैं ।'

'चावल नहीं है क्या ?'

'है ।'

'फिर क्यों नहीं बनाया ?'

कोई उत्तर नहीं ।

'सुमती मौसी, क्या आप रसोई में नहीं जा सकती ?'

'नही जा सकती बेटे ।'

'तो मैं चावल पकाऊँ ?'

'हाँ ।'

राजशेखरन रसोई मे चला गया । सुमती अम्मा ने वसुमती से कहा : 'वसुमती, बेटी तुम भी रसोई में जाओ ।'

रसोई से राजशेखरन ने पूछा : 'वसुमती, नंदिनी कहाँ है ?'

'बहुत देर पहले यहीं खड़े देखा था ।'

सुमती अम्मा जल्दी से उठी । उन्होने घर के चारों ओर नदिनी को खोजा । अन्त में दरवाज़े पर गई । नंदिनी वहाँ भी नहीं थी । तब उन्होने सडक पर पहुँचकर देखा तो नंदिनी दूर से चली आ रही थी, मानो स्वप्न में चल रही है ।

वह पास आ गई । सुमती अम्मा ने पूछा : 'नंदिनी तू कहाँ गई थी ?'

'मैं ?···मैं तो···' उसने फाटक में प्रवेश किया मानो स्वप्नाटन कर रही है ।

'बेटी, तू कहाँ गई थी बता ।'

'सुमती मौसी क्या मैं गाऊँ ?'

'हाँ, बेटी गा ।'

'माँ अनुमति देंगी ?'

'मैं अनुमति देती हूँ। तू गा बेटी।'

कुछ देर वह स्तब्ध खड़ी रही, फिर कहा : 'नहीं, अभी नहीं···मैं फिर गाऊँगी।'

वह अन्दर चली गई। सुमती अम्मा उसके पीछे-पीछे हो ली।

कञ्जी और चटनी तैयार हो गई। राजशेखरन ने पेट भर खाया। उसने पूछा : 'तू कञ्जी नहीं पियेगी वसुमती ?'

'माँ के पीने के बाद मैं पी लूंगी।'

'अच्छा—ठीक है।'

एक बोरी लेकर वह फाटक से बाहर चला गया। सुमती अम्मा ने पूछा : 'वसुमती, तुमने कञ्जी पी ली क्या ?'

'आप पी लीजिए, बाद में मैं पिऊँगी।'

'तो मौसियों को बुलाओ।'

वसुमती कमलाक्षी अम्मा और सरोजिनी अम्मा के कमरे में जाकर निराश होकर वापस लौट आई और बोली : 'बुलाने पर वे बोली भी नहीं।'

सुमती अम्मा ने उठकर कमलाक्षी अम्मा के कमरे के दरवाज़े के पास पहुँचकर बुलाया : 'दीदी, दीदी, कुछ खाने के लिए आओ···उठो दीदी, आओ।'

'कौन है—री तू ?—अरी तू किसे खाना खाने को बुला रही है ? कौन है, तेरी दीदी ?' ऐसा गरजती हुई कमलाक्षी अम्मा कमरे के दरवाज़े पर आ गई—'जा-जा मेरे सामने से चली जा। तुझे···तुझे मैं देखना नहीं चाहती। तू मेरी छोटी बहन नहीं—जा—चली जा !'

सुमती अम्मा सिर झुकाये निश्चल खड़ी रही। उनकी आँखों से झर-झर आँसू की बूंदें उनके चरणों पर गिर रही थीं।

सरोजिनी अम्मा उठकर आई। उन्होंने दयनीय स्वर में कहा : 'सुमती, बताओ—वे रुपये तुम्हें कैसे मिले थे ?'

'उसे मत जानो दीदी। वह मैं नहीं बताऊँगी।' सुमती अम्मा मुड़कर चली गई।

\+ \+ \+

उत्तरी बाड के बाहर से कल्याणी ने जोर-जोर से पुकारा—'छोटी मालकिन······छोटी मालकिन····· क्या वहाँ कोई नहीं है ?'

किसी ने भी पुकार नहीं सुनी। कल्याणी ने फिर नहीं पुकारा।

दक्षिणी बाड की ओर से सारा ने झाँककर देखा। नाग घर के बरामदे में कुञ्जुवरीत ने चिल्लाकर कहा 'अरी तू यहाँ आ। हाथी कितना भी दुबला हो जाय पर क्या गोशाला में बाँधा जा सकता है ?'

सारा लौट गई।

पूर्वी आँगन की ओर से किसी ने खाँसा। रसोई के बरामदे में दीवार के सहारे बैठी हुई सुमती अम्मा ने वसुमती से कहा 'बाहर किसने खाँसा, देखकर आओ बेटी।'

भास्कर कुरुप ने उनके आँगन की ओर झाँककर देखा। सुमती अम्मा ने पूछा :

'कौन है ?'

'मैं हूँ।' भास्कर कुरुप उनके आँगन में पहुँचा।

सुमती अम्मा उठकर खड़ी हो गई। उन्होंने पूछा 'आप कैसे आए यहाँ ?'

'रामचन्द्रन को कालेज में भेजा है न ?'

'हाँ।'

'वह पढ़ने में होशियार है।

'हाँ।'

'फीस वगैरह के लिए रुपयों की जरूरत हो तो।

'कुछ नहीं चाहिए कुरुप।'

'नंदिनी कहाँ है ?'

'वह कहीं बाहर है।'

'अरे कौन है ! --अरे वहाँ कौन है !' कमलाक्षी अम्मा गरजती हुई बाहर आई—नंदिनी की खोज मे कौन आया है ?·· ···पञ्चाषी वालों का यहा क्या काम है रे !'

भास्कर कुरुप सिर झुकाकर चला गया ।

+ + +

उस दिन सध्या को मगलश्शेरी की बैठक मे दीप नहीं जलाया गया । सुमती अम्मा रसोई के बरामदे मे ही बैठी है । वसुमती भी बैठे हुए स्थान से नही हिली । कमलाक्षी अम्मा के कमरे से एक सिसकी सुनाई पडी और सरोजिनी अम्मा के कमरे से एक दीर्घ नि.श्वास !

दक्षिणी आँगन मे बैठी हुई नदिनी उठी । वह पूर्वी आँगन मे पहुँची । बैठक के आगे के बरामदे की मुँडेर पर कही से आया एक कुत्ता बैठा था । नदिनी को देखते ही वह गुरगुराया । बैठक मे जाने का उसको साहस नही हुआ । वह फाटक की ओर देखती हुई आँगन मे ही खडी रही ।

'अञ्जन श्री चोर ! चारुमूर्ते ! कृष्ण······' नदिनी वही खडी होकर प्रार्थना-गीत गा रही थी ।

फाटक के बाहर की सडक पर एक सफेद कपडा लहराया ।

'दिल मे भरी हुई वेदना यन्त्रणा
आनन्द रूप ! तुम दूर करो हे ! कृष्ण'

वह प्रार्थना-गीत ऐसा समाप्त हुआ ।

वासु भागवतर का हाथ उसके कधे पर पडा । वह कुछ फुसफुसाया । वासु ने हाथ हटा लिया । वह मुडकर चल दिया । फाटक पार करके सडक पर पहुँचा और अदृश्य हो गया ।

+ + +

सुमती अम्मा अपने बैठे हुए स्थान पर ही करवट लेकर सो गई । वसुमती बैठी हुई जैसी ही लेट गई । नंदिनी दक्षिणी आँगन मे आम के पेड़ के नीचे बैठी है ।

घना अंधकार है ! बैठक के सामने के बरामदे की मुंडेर पर लेटा हुआ कुत्ता कभी-कभी भोंकने लगता है।

राजशेखरन बोरा भर काली मिर्च लेकर फाटक से अंदर आया। वह कुत्ता ज़ोर-ज़ोर से भोंकने लगा। राजशेखरन ने एक सूखी लकड़ी से उसे मारा। कुत्ता चिल्लाता हुआ भाग गया। राजशेखरन पिछवाड़े की ओर गया। उसने पूछा : 'यहाँ दिया-बत्ती कुछ है ही नहीं क्या ?'

'क्या, क्या है ?' सुमती अम्मा जाग पड़ी। वसुमती भी जागकर उठ बैठी।

'क्या दिया-बत्ती नहीं है, सुमती मौसी ?'

'रसोई में मिट्टी का दिया है।'

'दियासलाई है ?'

'नहीं।'

'चूल्हे में आग है ?'

'शायद नहीं है।'

उसने कंधे पर रखी हुई काली मिर्च की बोरी मुंडेर पर रख दी। वसुमती ने पूछा : 'यह क्या है भैया ?'

'यह ? यह काली मिर्च है।'

'कहाँ से ?'

'खरीदकर लाया हूँ।'

'इतनी सारी काली मिर्च किसलिए ले आए ?'

'बेचने के लिए।'

'बेचने के लिए ? खरीदकर क्या बेचने के लिए लाए हो ?'

'हाँ। बेचने पर लाभ मिलेगा।' उसने बोरी उठाकर अन्दर रख दी। उसने पूछा : 'माँ और बड़ी मौसी कहाँ है ?

'लेटी हैं।' सुमती अम्मा ने उत्तर दिया।

'क्या अभी तक उठी नहीं ?'

'तू जाकर बुला।'

'तुममें से किसी ने बुलाया नहीं क्या ?'

'मेरे बुलाने पर नहीं आई।'

'तो फिर······' उसने पूरा नही कहा। आँगन में उतरकर वह चला गया।

'बेटी, नंदिनी कहाँ है ?' सुमती अम्मा ने पूछा।

'मौसी के कमरे में होगी।'

'मैं यहाँ हूँ मौसी !' नंदिनी दक्षिणी आँगन से उठकर आ गई।

'तू अँधेरे में वहाँ क्या कर रही थी ?'

'मैं वहाँ यों ही बैठी कुछ सोच रही थी।'

'अन्दर जाकर लेटो, बेटी !'

'मौसी और वसुमती क्या इस बरामदे में लेटेंगी ?'

'वसुमती तुम अन्दर जाकर लेटो।'

'और माँ ?'

'मैं यहीं सोऊँगी।'

'तो मैं भी यहीं सोऊँगी।'

'तू अन्दर जाकर लेट नंदिनी !'

'मैं लेट जाऊँगी।' वह फिर दक्षिणी आँगन में चली गई।

राजशेखरन एक लकड़ी जलाकर लाया और रसोई में जाकर मिट्टी का दिया जलाया। फिर पूछा : 'कुछ है ?'

'दोपहर की कञ्जी रखी है बेटा।'

'तुम लोगों में से किसी ने पी नहीं क्या ?'

'नहीं बेटा। तू परोसकर पी ले।'

उसने पूरी कञ्जी पी ली। कुल्ला करके चतुरशाला के दरवाज़े के पास चटाई बिछाकर लेट गया।

\+ \+ \+

कौआ ज़मीन पर उतरा। सुमती अम्मा उठकर पश्चिमी अहाते में गई। वसुमती सिकुड़ी लेटी सो रही है। राजशेखरन भी जाग गया।

काली मिर्च का बोरा कंधे पर रखकर वह बाहर चला गया।

पश्चिमी गली में खड़ाऊँ की आवाज़ सुनकर सुमती अम्मा ने उस ओर देखा। लम्बी सफेद दाढ़ी, गले से पैर तक गेरुआ वस्त्र तथा खड़ाऊ पहने एक साधू बाड़ के ऊपर से अहाते में झाँककर 'खट्-खट्' आवाज़ करता हुआ चला जा रहा है। सुमती अम्मा को देखते ही साधु ने तुरन्त मुख मोड़ लिया। सुमती अम्मा बहुत देर तक उसे देखती खड़ी रही।

वसुमती ने उठकर कमलाक्षी अम्मा के कमरे के दरवाज़े पर जाकर पुकारा : 'नंदिनी दीदी!'

कमलाक्षी अम्मा उठी। वसुमती ने पूछा : 'नंदिनी दीदी कहाँ हैं मौसी?'

'वह कल तेरे पास सोई थी न?'

'नहीं। माँ ने उससे अन्दर जाकर लेटने के लिए कहा था, तो लेटूंगी कहकर इधर आई थी।'

'तो……' कमलाक्षी अम्मा घबराकर बाहर विकली।

'नंदिनी!' उन्होंने ज़ोर से पुकारा।

किसी ने पुकार नहीं सुनी।

'नंदिनी दीदी!' वसुमती ने ज़ा॰ से पुकारा।

कोई उत्तर नहीं मिला।

सरोजिनी अम्मा उठकर दौडती हुई आई। पश्चिमी अहाते से सुमती अम्मा भी दौडकर वहाँ पहुँची।

'कहाँ है—वह कहाँ है?'

'नंदिनी……नंदिनी!'

'नंदिनी दीदी, नंदिनी दीदी!'

'हाय!'

'धोखा दिया।'

कमलाक्षी अम्मा अपनी छाती पीटती हुई धड़ाम से गिर पड़ी।

\+ \+ \+

कोई भी नहीं चिल्लाया—चिल्लाने की ताकत किसी में नहीं थी।

मृत शरीर को स्नान कराकर भस्म और चन्दन से अलंकृत करके श्वेत वस्त्र उढ़ाकर लिटाया गया है। सरोजिनी अम्मा दीदी के मृत शरीर के पैर पकड़े सिकुड़ी लेटी हैं। कहीं दूर दृष्टि लगाए मूर्ति के समान सुमती अम्मा बैठी है। वसुमती कोमल पत्ते की तरह मुरझाई पड़ी है। काली मिर्च लेकर गया हुआ राजशेखरन मौसी की मृत्यु का समाचार पाकर दौड़ा हुआ आ पहुँचा। वह भी बैठक के बरामदे की मुंडेर पर ठुड्डी पर हाथ रखे बैठा है।

पूर्वी भाग के सब लोग आ गए हैं। पच्चाषी खानदान के प्रतिनिधि के रूप में केवल भास्कर कुरुप ही आया है, लेकिन शव-संस्कार का सारा उत्तरदायित्व उसीने वहन किया। किसी को कुछ बताए बिना मृत शरीर के दाह-संस्कार का सारा खर्च वही कर रहा है।

चिता तैयार हो गई। शव को कंधा देने के लिए पुरुष होने चाहिएँ। कौन ले जाएगा ?

भास्कर कुरुप ने राजशेखरन का हाथ पकड़कर कहा : 'आ राजशेखर !'

वह उठकर आया। भास्कर कुरुप ने मृत शरीर के पैरों को सरोजिनी अम्मा की पकड़ से छुड़ाया। राजशेखरन ने मृत शरीर का सिर तथा भास्कर कुरुप ने पैर उठाए। तब पूर्वी भाग के अन्य लोगों ने भी शव को सहारा दिया।

सरोजिनी अम्मा उठकर फूट-फूटकर रोती हुई सुमती अम्मा के पास जाकर गिर पड़ी। सुमती अम्मा उठकर जल्दी से दूर हट गई।

'माँ !' वसुमती माँ के गले लगने के लिए उठकर वहाँ दौड़ आई।

सुमती अम्मा जल्दी से पीछे हट गई। वसुमती गिर पड़ी। सुमती अम्मा दक्षिणी आँगन में जाकर खड़ी हो गई।

चिता से धुआँ उठा। उस धुएँ को देखती हुई सुमती अम्मा स्तब्ध खड़ी हैं।

पूर्वी भाग में खड़ाऊँ की आवाज़ हुई। सभीने घूमकर देखा। श्वेत लम्बी दाढ़ी को सहलाता हुआ एक साधु रास्ते में खड़ा होकर आसमान में उडते हुए धुएँ को देख रहा है।

दोनों बच्चे घर छोड़कर चले गए; धुआँ बनकर आकाश की ओर जा रही है माँ !

+ + +

'सुमती मौसी चावल हैं ?'—राजशेखरन ने पूछा।

'हाँ।'

'पकाऊँ ?'

'हाँ।'

राजशेखरन ने कञ्जी बनाई। चटनी भी पीसी। उसने वसुमती का हाथ पकडकर आज्ञा के स्वर में कहा . 'वसुमती चलकर खाना खाओ !'

'माँ।'

'माँ आयगी। तुम आओ।'

वह सुमती अम्मा के पास गया—'सुमती मौसी, कुछ खा लीजिए'—कहते हुए वह उनका हाथ पकडने लगा।

सुमती अम्मा ने दूर हटकर कहा : 'मुझे छूना मत, बेटा ! मैं आ रही हूँ।'

फिर उसने सरोजिनी अम्मा के कमरे में जाकर उन्हें उठाया—'माँ आइए'—माँ को उठाकर दलिया के सामने बैठाया।

सबने कञ्जी पी।

+ + +

आधी रात हो गई। वसुमती कमरे मे और सुमती अम्मा बरामदे में सोती थीं।

पूर्वी आँगन में खड़ाऊँ की आवाज़ हुई। सुमती अम्मा जाग पड़ी। जल्दी ही आवाज़ बन्द हो गई। फिर दक्षिणी भाग से वह आवाज

सुनाई पड़ी । सुमती अम्मा ने उठकर देखा ।

वह साधु दक्षिणी अहाते की ओर जा रहा है । तब भी धुआँ निकालने वाली उस चिता के पास थोड़ी देर देखता खड़ा रहा । सुमती अम्मा आँगन में पहुँचकर आम के पेड के पीछे छिप गई ।

साधु ने सिर झुकाया । वह मुड़कर चल दिया । पूर्वी आँगन में जाकर बैठक से सटकर थोड़ी देर खड़ा रहा । बैठक में पड़ी आराम-कुर्सी के सामने उसने सिर झुकाया । फिर मुड़कर फाटक से बाहर निकलकर सड़क पर चला गया ।

'कौन है यह ?'

२२. माँ का त्याग

रामचन्द्रन का पत्र आया। सुमती अम्मा ने पत्र खोलकर पढ़ने के लिए बेटी से कहा। वसुमती ने बड़ी आतुरता के साथ पत्र पढ़ा। उसमें लिखा था कि वह आराम से तिरुवनन्तपुरम् पहुँच गया है। खाना और निवास एक होटल में है। शुल्क देकर जरूरत की किताबें तथा कापियाँ खरीदकर बाकी रुपया होटल में एडवांस जमा कर दिया है। पढ़ाई में बड़ी रुचि है। माँ के उपदेश को वह कभी नहीं भूलेगा। रुपये भेजने की आवश्यकता नहीं है। किसी भी प्रकार अपने परिश्रम से पढ़ाई पूर्ण करने का विचार है। माँ और वसुमती के छूट जाने का दुःख है। मौसियों और राजशेखरन के लिए अभिवादन लिखा है। अन्त में पत्र का उपसंहार इस प्रकार किया था—'माँ ने मुझे जो दो सौ रुपये दिए थे, वे कहाँ से मिले थे ? यहाँ आने की जल्दी में यह बात पूछना भूल गया। उत्तर में यह बात अवश्य लिखिएगा।'

क्षण-भर के लिए सुमती अम्मा का मुख एकाएक पीला पड़ गया। फिर उनके मुख पर शांति और गंभीरता छा गई। वसुमती ने पूछा : 'मौसी की मृत्यु और नंदिनी का भाग जाना भैया को लिखना है न माँ ?'

'नहीं बेटी। उसे दुःख देने वाली कोई भी बात नहीं लिखनी चाहिए।'

'रुपये कहाँ से मिले यह लिखना है न ?'

'नहीं। कोई उत्तर नहीं देना है।' सुमती अम्मा तुरंत ही वहाँ से उठकर चली गई।

रामचन्द्रन के पत्र पर वसुमती के आँसू गिर पड़े।

× × ×

रामचन्द्रन के जाने के बाद सुमती अम्मा का व्यवहार उस घर में

सभी को आश्चर्य, संदेह और दुःख देने वाला था। सुमती अम्मा किसी को भी नहीं छूती हैं। अगर कोई जानकर या अनजाने उन्हें छूने लगे तो वे जल्दी ही दूर हट जाती हैं। वे घर के अन्दर नहीं जातीं। पहले रसोई घर के बरामदे में उनका बैठना और लेटना था। अब घर की अन्न कूटने वाली कोठरी में उन्होंने अपना निवास बदल दिया है। नारियल के पत्तों और फटी हुई चटाइयों से उन्होंने अपना बिस्तर बना लिया। उस कोठरी के भीतर ही वे बैठतीं और लेटती हैं।

मासिक-धर्म के समय स्त्रियों के भोजन के लिए दो-तीन बर्तन अलग रखे हुए थे। उन्हींमें वसुमती अम्मा भोजन करती हैं। कभी खाना माँगती नहीं। वसुमती भात या कञ्जी लेकर आती है तो खा लेती हैं। कोई कुछ पूछे तो एक-दो शब्दों में ज़रूरी जवाब दे देती हैं।

किसी स्थान पर बैठ जाने पर घंटों वहीं बैठी रहती हैं। स्वप्न में जैसी कभी-कभी बड़बड़ाती हैं—'मेरा बेटा···वह पढ़कर योग्य बनकर आयगा। वह इस खानदान की रक्षा करेगा।'

रसोई का काम अब वसुमती की जिम्मेदारी पर है। वह विषाद की चलती हुई मूर्ति बन गई है। उसको लगता था कि उसकी माँ उसे भूल गई और उससे बहुत दूर चली गई है। वह कभी-कभी अन्न कूटने वाली कोठरी के पास जाकर खड़ी होती और माँ को पुकारती है। कई बार पुकारने पर सुमती पूछती : 'क्या है बेटी ?'

'माँ ऐसे······' वह फूट-फूटकर रोने लगती।

'मेरी बेटी ! रो मत। तेरा भैया पढ़कर बड़ा होकर आयगा। तुम्हारी और इस खानदान की वह रक्षा करेगा। मेरी बेटी ! रो मत।'

'मेरी बेटी'—वसुमती के लिए इतना सुनना काफ़ी है। वह संबोधन सुनने पर उसे ऐसा लगता है मानो माँ के अगाध हृदय से सौरभ निकलकर उसके हृदय में घुस गया हो।

पुत्र की उन्नति की अभिलाषाओं का महल बनाकर ऊपर उठा रही है वह माँ ! उस अभिलाषा के महल में बेटी को आश्रय देकर उस माँ

को मरना है। उसके लिए उससे न जाने क्या किया है। उस काम का औचित्य या अनौचित्य, पाप या पुण्य का विचार उसने नहीं किया। उसने केवल भविष्य की नींव डाली है। उसे किसी प्रकार की निराशा नहीं है। पाप का विचार भी नहीं है।

उसे मालूम है कि वह स्वयं एक संक्रामक रोग की शिकार बनी हुई है। उसे यह भी मालूम है कि हर क्षण वह बीमारी उसके शरीर में फैलती जा रही है। वह मृत्यु के पास जा रही है—भयभीत होकर नहीं, गंभीरता और शांति से।

लेकिन यह छूत की बीमारी बेटी को नहीं लगनी चाहिए। उस घर के किसी भी सदस्य को यह बीमारी न लगे। सबसे अपमानजनक बीमारी उसे लग गई है। उसकी एक-मात्र प्रार्थना है, यह बात किसी को पता लगने के पहले ही वह मर जाय।

सरोजिनी अम्मा सुमती अम्मा से कुछ नहीं बोलती। सुमती अम्मा की ओर कभी देखती भी नहीं। एकाएक दीख जाने पर जल्दी ही मुख फेर लेती है।

दो सौ रुपये।—वे कैसे मिले? यह प्रश्न अब भी शेष रह गया है। वे कैसे मिले, यह सरोजिनी अम्मा को मालूम है। इस प्रकार का अपराध करने वाली बहन से उसे अत्यन्त घृणा है, लेकिन अपराध को स्वीकार करने पर शायद वह उसे माफी देने के लिए तैयार हो जायगी।

क्या वह अपराध को स्वीकार करेगी?

× × ×

राजशेखरन ने कुटुंब का दायित्व अपने ऊपर ले लिया। किसी ने उसे सौंपा नहीं था; उसने स्वयं ले लिया था। वह बचपन से यौवन में अभी प्रवेश कर ही रहा था।

मंगलश्शेरी के घर और अहाते के अतिरिक्त तीन छोटे बाग और चालीस पसेरी धान बोए जाने वाले खेत ही शेष बचे थे। जुताई-खुदाई के अभाव में खेत-बाग सब अनाथ-से पड़े थे। खेती पहले एक ईषवा

किसान को बटाई पर वचन की शर्त पर दी गई थी। कर्ज़ लेकर खेती करने के कारण उत्पन्न अन्न से कर्ज़ चुकाने और बटाई का हिस्सा देने के बाद उसके पास कुछ बाकी नहीं बचता था, इसलिए वह हमेशा कोई-न-कोई कारण बताकर समय पर बटाई का अन्न पूरा नहीं देता था। राजशेखरन ने बगीचों को खुदवाकर खाद डाली। खेत बटाई वालों से वापस ले लिए। बटाई वालों ने कोई लाभ न होने से खेतों को सहर्ष वापस दे दिया।

लेकिन कृषि के लिए बीज और बैल नहीं हैं। कुञ्ञुवरीत से मांगा जाय तो? मांगने पर शायद बैल और बीज मुफ़्त में दे दे, लेकिन कौन मांगे? कैसे पूछे? राजशेखरन ने मां के साथ इस बात पर विचार-विमर्श किया—'कुञ्ञुवरीत से क्या बीज और बैल मांगे जा सकते हैं? कर्ज़ लेना काफ़ी है। फसल काट लेने पर धान दे देंगे।'

'हाथी कितना भी दुबला हो जाय तो क्या उसे गोशाला में बांधा जा सकता है बेटे?'

'हाथी, घोड़े···सोचकर बैठे पर खेती नहीं हो सकेगी। मैं उससे पूछने जा रहा हूं कि क्या वह बीज और बैल उधार दे देगा?'

सरोजिनी अम्मा ने फिर कुछ नहीं कहा।

राजशेखरन कुञ्ञुवरीत के घर गया। नए घर के विशाल बरामदे में, आराम-कुर्सी पर बैठा कुञ्ञुवरीत पान खा रहा था। बड़ा पुत्र वर्की पिता से कुछ कह रहा था। तोमस और गीता अन्दर बैठे सबक रट रहे थे। सारा रसोईघर में थी।

राजशेखरन को देखते ही कुञ्ञुवरीत आश्चर्य और आह्लाद के साथ उछलकर खड़ा हो गया—'अरे! कौन आया है।···मंगलश्शेरी के बाबू हैं न!···बैठिए, बैठिए।'

राजशेखरन बैठा नहीं। उसने पूछा: 'मुझे कुछ बीज की ज़रूरत है, कुञ्ञुवरीत। एक जोड़ी बैल भी। उधार ही देना। फसल काटने के बाद ही बीज और बैल का किराया दे दूंगा।'

कुञ्ञुवरीत ने विनय के साथ कहा : 'क्यों ऐसा क्यों कहते हैं। कुञ्ञुवरीत से मंगलश्शेरी के बाबू को बीज और बैल माँगने के लिए यहाँ तक आने की क्या जरूरत थी ? उस बाड़ के पास खड़े होकर पुकारकर कह देते तो अगर यहाँ होता तो मैं जल्दी ही भेज नहीं देता क्या ?'

रसोई से निकलकर सारा बरामदे में आ गई। कुञ्ञुवरीत ने सारा से कहा : 'तूने सुना री ? मंगलश्शेरी के लिए बीज और बैल चाहिएँ।'

'हाँ तो देना चाहिए।'

'वही तो मैं कह रहा हूँ—होता तो क्या दिये बिना रहता······ हमारी आवश्यकता के बाद जो कुछ था, उसे तूने ही बेचा था न ?··· अब क्या करूँ ! बीज चाहिए, ऐसा पहले कहते तो रख लेता।'

'जुताई हो गई क्या बाबू ?' सारा ने राजशेखरन से पूछा।

'जुताई के लिए बैल भी चाहिएँ, यही कहने मैं आया हूँ।'

अत्यधिक निराशा के साथ कुञ्ञुवरीत ने कहा : 'हमारे यहाँ तीन ही जोडी बैल हैं। वे खेत में हैं। हमारे खेतों की जुताई शुरू हो गई है··· आपको बीज और बैल के लिए पहले ही कहना चाहिए था न ?'

'तो मैं चलता हूँ कुञ्ञुवरीत।' उतरे हुए मुख के साथ राजशेखरन ने विदा माँगी।

'क्या किया जाय। होता तो क्या मैं कभी 'ना' कहता ?'

राजशेखरन आँगन में उतरकर चला गया। कुञ्ञवरीत ने चिल्ला-कर कहा : 'बुखारी साफ़ करने से दस-बीस किलो धान मिल जायगा। अगर खर्च के लिए जरूरत हो तो भेज दूँ।'

राजशेखरन ने मुड़कर नहीं देखा। पीछे से कही बात अनसुनी-सी कर दी।

सारा ने कहा : 'भगवान् ऊपर से देख रहा है। भूल नहीं भूलनी चाहिए। बीस पसेरी बीज दे नहीं दिया। यह अच्छा नहीं किया।'

'नहीं री—उस हाथी को इस गोशाला में नहीं बाँधना है। कुञ्ञु-

वरीत ने गंभीरता के साथ कहा।

× × ×

निराशा और अपमान! राजशेखरन को यह पता नहीं चला कि उसकी आँखों में आँसू बह रहे हैं। यह जाने बिना कि कहाँ जा रहा है, वह सड़क पर चला जा रहा था।

'क्या है? राजशेखरन तू रो क्यों रहा है?' सामने से आते हुए भास्कर कुरुप ने पूछा।

तब उसकी समझ में आया कि वह रो रहा है। आँसू पोंछकर उसने भास्कर कुरुप के मुख की ओर देखा। फिर निस्संकोच उसने पूछा: 'मुझे कुछ बीज दे सकोगे, कुरुप भैया?'

'क्या बीज न मिलने के कारण तू रो रहा था?'

वह मौन खड़ा रहा। कुरुप ने पूछा: 'जुताई हो गई है क्या?'

'नहीं। बैल भी चाहिएँ।'

'बीज भी दूंगा और बैल भी। बीज और बैल न होने से ही तू रोया था?'

'रोया था? रोया तो—' उसने पूरा नहीं कहा।

'कहो। क्यों रोए थे?'

'मैं कुञ्ञुवरीत के घर गया था।'

'क्या बीज और बैल माँगने के लिए?'

'हाँ।'

'नहीं जाना था। उसकी आदत देने की नहीं; लेने की ही है। अब किसी से यह बात मत कहना कि तुमने उसके घर जाकर बीज और बैल माँगे थे। तू घर जा। मैं ज़मीन जुतवाकर बीज डलवा दूंगा।'

'धान कटने के बाद बीज और बैलों का किराया दे दूंगा।'

'देखा जायगा। अब तुम जाओ।'

राजशेखरन ने घर जाकर माँ से कहा: 'बीज भी मिल गया और बैल भी।'

'कुञ्जुवरीत कृतज्ञ है। रहने की जगह न होने पर वह यहाँ आया था। अब वह धनी हो गया है और हम कगाल; फिर भी वह कृतज्ञ है।'

'कुञ्जुवरीत ने बीज और बैल नही दिया माँ!'

'फिर किसने ?'

'पच्चाषी के भास्कर कुरुप भैया ने देने को कहा है! कुरुप भैया ने यह भी कहा है कि जमीन जुतवाकर बीज डलवा देगे।'

'नही, नही – पच्चाषी वालो की सहायता हमे नही चाहिए।' सरोजिनी अम्मा ने गभीरता के साथ कहा।

'ऐसा क्यो ? कुञ्जुवरीत की सहायता ले सकते है तो पच्चाषी वालो से क्यों नही ले सकते ?'

'वे हमारे दुश्मन है। उन्होने हमारे खानदान का नाश किया है।'

'किसी ने भी किसी का नाश नही किया दीदी! सब स्वयं ही नष्ट हुए। पच्चाषी वाले नष्ट-भ्रष्ट हुए और मगलश्शेरी वाले भी'— अन्न कूटने वाली कोठरी से सुमती अम्मा ने तेज आवाज़ मे कहा।

'अरी तू ही है— तूने ही खानदान का नाश किया है, तूने!'— सरोजिनी अम्मा चिल्ला उठी।

सुमती अम्मा ने फिर कुछ नही कहा।

'नष्ट होने वाले नष्ट होंगे। मुझे अब नष्ट नही होना है।'—दृढ स्वर मे ऐसा कहकर राजशेखरन उठकर चला गया।

× × ×

रामचन्द्रन का पत्र फिर आया। इस पत्र मे पहले पत्र का जवाब न मिलने के कारण उत्कठा प्रकट की थी। माँ और बहन की कुशलता पूछने के बाद मौसियो, नंदिनी और राजशेखरन की कुशलता भी पूछी थी। उसने ऐसा लिखा था कि पढाई अच्छी तरह से चल रही है। सभी अध्यापक उसको बहुत मानते है। निवास और भोजन की असुविधाओ के सबंध मे उसने लिखा था—'होटल मे भोजन प्राप्त करके बाद मे रुपया दे सकने का कोई उपाय नही, इसलिए होटल मे भोजन नही

करूँगा। रहने का कोई स्थान न होने पर भी किसी प्रकार रह लूंगा। दुकानों की मुंडेर पर लेटकर भी मैं सो सकता हूँ। दिन में सूर्य का प्रकाश और रात में सड़क का दीपक होने से पढ़ने में कोई कष्ट नहीं है।'

पत्र पढ़कर सुमती अम्मा चिन्ता में निमग्न हो गई। वसुमती की आँखें भर आई। अवरुद्ध कंठ से उसने पूछा : 'मेरे भैया को खाना कौन देगा माँ ? भाई दुकानों के बरामदे में या पुलिया पर सोता है क्या ?'

सुमती अम्मा चिंता में लीन रही।

'मेरा--मेरा भाई'···वसुमती फूट-फूटकर रोने लगी।

सुमती अम्मा चिंता से जाग उठी—मेरी बेटी रोओ मत। तुम्हारे भाई पर कोई आपत्ति नहीं आयगी। मेरा बेटा पढ़कर लायक बनकर लौटेगा।'

माँ की शांत और दृढ़ आवाज़ वसुमती के कानों में गूंज उठी। उसने रोना बंद कर दिया और आँसू पोंछ डाले। वह स्वयं बड़बडाई—'मेरा भाई पढ़कर लायक बनकर लौटेगा।'

उस दिन शाम को सुमती अम्मा पश्चिमी बाड़ के पास खड़ी होकर किसी से बातें करती दिखाई दी। संध्या होने पर वह नदी में स्नान करने गई।

सरोजिनी अम्मा ने वसुमती से पूछा : 'तेरी माँ कहाँ गई थी वसुमती ?'

'नदी में स्नान करने गई थी।'

'हाँ—। इस घर में संध्या के समय अकेली कोई भी लड़की अब तक नदी में स्नान करने नहीं गई है। आगे से वह बाज़ार में भी जायगी !'

× × ×

अगले दिन रामचन्द्रन को सौ रुपये का मनीआर्डर सुमती अम्मा ने भेजा। पत्र में लिखा था—

'बेटा, सौ रुपये और भेज रही हूँ। आगे पैसा भेजने का कोई उपाय नही है। बेटा, पढकर योग्य बनकर आना।. खानदान को मत भूलना। वसुमती को भी यहाँ पर बार-बार पत्र मत लिखना। पढाई पूरी करके आना काफी है।— तुम्हारी प्रिय माँ।'

सुमती अम्मा और बेटी दोनो मिलकर मनीआर्डर करने तथा पत्र डालने डाकघर गई थी—यह खबर जल्दी ही गाँव-भर मे फैल गई। उसे सुनकर पच्चाषी की देवकी अम्मा झोंपडी के बाहर आई। फिरंग-रोग के घावों को महलाते हुए उसने चिल्लाकर जोर से कहा : 'उसे सौ रुपये कहा से मिले ? दाने-दाने के लिए मुहताज वह यदि पुत्र को सौ रुपये भेजती है तो उसकी गोरी चमडी देखकर किसी ने दिया होगा। एक तो मुसलमान के साथ चली गई है और दूसरी ईषवा के साथ भाग गई है। अब यह चाडाल के साथ भागेगी, इसीलिए तो बेटे को दूर भेज दिया है।'

बाजार में खडे एक ने उपहास की हँसी के साथ कहा : 'सुमती अम्मा की इतनी अधिक उम्र तो नही हुई न ? सौ रुपये माँगने पर कौन नही देगा ?'

पास ही खडे एक बूढे ने गहरी साँस लेकर कहा : 'कैसे रहने वाले थे वे मगलश्शेरी और पच्चाषी वाले। सुख के पालने में पले थे न ?'

इस प्रकार कई लोगो ने अनकों बातें कही।

सरोजिनी अम्मा को क्रोध आ गया। वे सुमती अम्मा की कोठरी मे गई। उन्होने गरजकर पूछा : 'तुझे कहाँ से मिले थे सौ रुपए।'

'कोई उत्तर नही।'

'बता, नही बताया तो···' वे दौडकर आँगन मे एक हँसिया उठा लाई।

'तेरा मै गला काट डालूंगी···बता ! री, बता' उन्होने सुमती अम्मा की ओर हँसिया बढाया।

'हाय ! मौसी।' वसुमती ने मौसी के हाथो को बलपूर्वक पकड़

लिया ।

'छोड बेटी, छोड ! मेरी दीदी मेरा गला काट डालें'— सुमती अम्मा ने शात भाव से कहा ।

'नही री, तू ही मेरा गला काट । मुझे मारकर तू वेश्या बन जा ! उन्होंने हँसिया सुमती अम्मा को देते हुए कहा ।

सुमती अम्मा पीछे हट गई ।

'इसके लिए ।— इसके लिए ही मेरी माँ ने तुझे जन्म दिया था ।' सरोजिनी अम्मा फूट-फूटकर रोने लगी ।

× × ×

आधी रात हो गई । सुमती अम्मा अन्न कूटने वाली कोठरी में सिकुड़ी लेटी हैं । वह सो नही रही है; झपकियाँ ले रही है ।

'खट खट'—खडाऊँ की आवाज़ ! सुमती अम्मा उठी । खडाऊँ की आवाज़ द्वार पार करके पूर्वी आँगन मे आ पहुँची ।

'कौन है वह ?' दबे स्वर मे सुमती अम्मा ने पूछा ।

कोई उत्तर नही मिला। धुँधली चाँदनी म वह साधु एक उग्र मूर्ति के रूप में प्रतीत हुआ । जटा का भार, लंबी दाढी तथा भस्म लगाया हुआ उसका मुख है । गले से पैर तक लटकता हुआ गेरुआ वस्त्र पहने है ।

'कहो, कौन हो ?'—उन शब्दों में आज्ञा की भावना थी ।

'हूँ ?'—वह लंबी हुंकारी विकृत हो गई ।

'दीदी की मृत्यु के दिन तुम क्यों यहाँ आए···फिर दूसरे दिन तुमने आराम-कुर्सी के पास क्यों नमस्कार किया था ? कहो कि तुम कौन हो ।'

एक गहरी सांस लेकर साधु लौट गया । उसकी खडाऊँ की आवाज़ फाटक पार करके दूर चली गई ।

सुमती अम्मा स्तब्ध खड़ी रही ।

२३. एक विद्यार्थी की दुनिया

रामचन्द्रन ने कालेज में प्रवेश ले लिया। उसने शुल्क जमा कर दिया। जरूरत की पुस्तकें और कापियाँ खरीद ली। फिर थोड़ा-सा पैसा ही बचा। बचे हुए पैसे उसने होटल मे जमा कर दिए।

सबसे कम खर्च वाला होटल उसने ढूंढ लिया। एक महीने के भोजन के रुपए पहले ही जमा कर दिए थे। एक धोती और कुर्ता खरीदने की इच्छा होने पर भी पैसों के अभाव मे वह इच्छा छोड़ दी। आगे रुपये मिलने का कोई मार्ग नहीं है यह उसे मालूम है। माँ के कहे वाक्य उसे अब भी याद है—'केवल इतने ही है। इनसे मेरे बेटे पढकर योग्य बन जाना।'

कहाँ रहेगा? यही सबसे कठिन समस्या थी। दस्तावेज-लेखक के पुत्र पंकजाक्षन ने रामचन्द्रन से कहा कि वे दोनों मिलकर रहेंगे। लेकिन किराया देने के लिए रामचन्द्रन के पास रुपये नही थे। रुपये नही है, यह बात दूसरों को मालूम होना शर्म की बात है। इस कारण से उसने पंकजाक्षन से कहा कि रहने के लिए दूसरा स्थान मिल गया है।

किताबों, पुरानी धोती और कुर्ते से भरी एक गठरी होटल के एक कोने में रखी थी। कालेज से निकलकर काम के लिए वह पूरे शहर में घूमता रहा। अंत मे थककर होटल लौट आया।

सडक के पास एक झोंपड़ी मे है वह होटल। होटल के मालिक का नाम कुञ्ञु पिल्लै है। वहाँ भोजन और चाय दोनो मिलता है। बाहर की तरफ एक कमरा तथा पिछवाड़े मुर्गी के घोसले के समान दो कमरे हैं। साथ ही एक छोटा बरामदा और रसोईघर है। कुञ्ञु पिल्लै, उसकी पत्नी, तीन बच्चे, एक बहन और माँ वहाँ रहते है। होटल के उपकरणो और लोगों को मिलाकर अच्छा खासा शोर-गुल वहाँ रहता है।

कई पुलिस वाले और चपरासी लोग उस होटल मे स्थायी रूप से

भोजन करते है। कम पैसों मे भोजन मिलने के कारण कई मजदूर और गाड़ी वाले वहाँ आकर भोजन करते है। लोगों का कहना है कि पुलिस वाला और चपरासियों का स्थायी रूप से वही भोजन करने का कारण पैसा कम होना नही, बल्कि कुञ्ञु पिल्लै की बहन है।

रामचन्द्रन भोजन करके कोने मे रखे एक बक्स पर बैठ गया। कुञ्ञु पिल्लै ने पूछा : 'रहने के लिए जगह नही मिली क्या ?'

'नही।'

'यहाँ घर मिलने की बहुत परेशानी है। मिले तो किराया बहुत अधिक होता है।'

रामचन्द्रन ने कुछ नही कहा। कुञ्ञु पिल्लै रामचन्द्रन को सूक्ष्म दृष्टि से देखता हुआ भीतर चला गया। कुछ देर के बाद कुञ्ञु पिल्लै की माँ रसोई से निकलकर आई और रामचन्द्रन से बोली, 'बेटे ! क्या रहने की जगह नहीं मिली ?'

'नहीं।'

'तब आज कहाँ रहोगे ?'

'कहीं भी सो जाऊंगा।'

'तो बेटा, ऐसा करो। वहाँ एक पलँग है। उस पर लेट जाओ। कल वहाँ एक आड बना दूंगी। बेटे, वहाँ बैठकर पढ-लिख भी सकोगे और लेट भी जाया करना। इतना काफी है क्या ?'

'हाँ।' उसने अनुमति दे दी।

उस बूढ़ी के पीछे से कुञ्ञु पिल्लै की बेटी राजम्मा ने झाँककर देखा। राजम्मा की उम्र दस-पंद्रह वर्ष की है। वह अपनी उम्र से अधिक की लगती है---मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों मे। सामान्य सुन्दर लड़की है वह। पढती भी है।

बरामदे के एक ओर एक पलँग और एक डेस्क डाल दी गई। पलँग पर एक चटाई और तकिया रख दिया गया। बूढ़ी ने रामचन्द्रन को पुकारा : 'बेटा, तू इधर आ जा !'

कोने में रखी गठरी लेकर रामचन्द्रन वहाँ पहुँचा। वह पलँग पर बैठ गया। गठरी पलँग के नीचे रख दी। राजम्मा ने एक लालटेन डैस्क के ऊपर रख दी। बूढ़ी ने कहा : 'आपको यहाँ पसन्द हो तो यहीं रहें। किराया-विराया मत देना। यह मेरे बेटे की बेटी है। अँग्रेजी स्कूल मे पढ़ती है। आपको समय मिले तो इसे कुछ सिखा-पढ़ा देना। इतना काफ़ी है।'

रामचन्द्रन ने मंजूर कर लिया। उसने इसे एक आशीर्वाद समझा। वह लेट गया। बहुत थका होने के कारण जल्दी ही सो गया।

दूसरे दिन सबेरे रामचन्द्रन के शरीर पर कई चमेली के फूल गिरे। वह चौंककर जाग उठा। राजम्मा खिलखिलाकर हंसती हुई भाग गई। वह नहीं हँसा। उसे यह अच्छा नहीं लगा। दैनिक कार्य से निवृत्त होने पर राजम्मा ने चाय और डोसा लाकर डेस्क पर रख दिया। उसने चाय पीते समय उससे स्कूल की बातें पूछी। उसने उन प्रश्नों का उत्तर न देकर उससे उसके घर की बातें पूछीं।

चाय पीने के बाद वह कालेज का पाठ पढ़ने लगा। बाहर के 'हाल' कहलाने वाले कमरे में चाय पीने के लिए आए हुए लोगों का शोर-गुल, पुकार, वाद-विवाद और ज़ोर की हँसी तथा अन्दर रसोई में खड़खड़ाहट, चीत्कार और डांट-फटकार शुरू हो गई। यहाँ कैसे पढ़ सकता है? वह किताबें लेकर बाहर निकल गया।

कुछ दूर गली के पास एक विशाल वट वृक्ष है। रामचन्द्रन उस वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गया। वहीं बैठकर पढ़ने लगा। रास्ते से जाने वाले लोगों ने उस विद्यार्थी की ओर आश्चर्य से देखा। उसने उन सबको अनदेखा कर दिया।

कालेज जाने का समय हो जाने पर वह होटल में आया। राजम्मा ने एक बर्तन मे गरम दूध लाकर डेस्क पर रख दिया। रामचन्द्रन ने पूछा : 'यह मेरे लिए है क्या ?'

'हाँ।'

'इसका मूल्य क्या है ?'

'इसका मूल्य नही चाहिए।'

उसने उठाकर पी लिया। किताबें लेकर कालेज चला गया। दोपहर को आने पर राजम्मा केले का पत्ता बिछाकर रामचन्द्रन को भोजन परोसने के लिए तैयार खडी थी। वह भोजन करके कालेज चला गया। शाम को कालेज से आने पर भी राजम्मा चाय और नाश्ता लिये प्रतीक्षा में खडी थी। उसने चाय पी ली।

राजम्मा अपनी किताबें ले आई। जब उसने पाठय-पुस्तकों से प्रश्न पूछा तो वह उसके घर की और गाँव की बातें पूछने लगी। उसे क्रोध आ गया, लेकिन क्रोध करने पर उसे वहाँ से निकाल दिया गया तो ? कहाँ रहेगा ? उसने सब-कुछ सहा।

संध्या हो गई। राजम्मा लालटेन जलाकर दादी के साथ मंदिर चली गई। रामचन्द्रन ने पढ़ने के लिए किताबें उठाई, लेकिन वहाँ बैठ-कर कैसे पढ़ सकता है ? पढ़ने पर क्या कुछ समझ मे आयगा ? वह किताबें लेकर बाहर चला गया।

होटल के दाई ओर की गली में मुड़ने पर एक स्थान पर एक पुलिया है। उसके पास सड़क पर बत्ती जलती है। रामचन्द्रन इसी पुलिया पर जाकर बैठ गया। सड़क की बत्ती के प्रकाश में उसने अपनी पढ़ाई शुरू की।

दो बच्चे रामचन्द्रन के पास आये—पाच्चन और अप्पु। वे बोझ ढोने वाले बच्चे हैं। दोनों की उम्र पन्द्रह वर्ष से ऊपर नही है। कुञ्ञु पिल्लै के होटल में वे भोजन करते हैं। होटल में सब्जी और अन्य चीजें लाकर देने पर वे मजदूरी नही लेते है, इसलिए भोजन और चाय के लिए उन्हे आधा मूल्य देना पड़ता है। उस होटल का सारा रहस्य वे जानते हैं।

पाच्चन ने रामचन्द्रन से पूछा : 'आप यहाँ क्यों बैठे है साहब ?'

रामचन्द्रन ने उत्तर नहीं दिया। उसने उन्हें सूक्ष्म दृष्टि से देखा।

अप्पु ने कहा . 'वहाँ हमेशा शोर-गुल और चीख-पुकार होती है न ? वहाँ बैठकर पढना संभव नही। है न, बाबूजी ?'

'हाँ।'

'बाबूजी को रहने के लिए दूसरी जगह नही मिली क्या ?' पाच्चन ने पूछा।

'नही।'

'दूसरा स्थान है बाबूजी। कालेज के साहबो के रहने के घर है। चाहिए तो मैं प्रबन्ध कर दूंगा।'

'नही चाहिए।'

'इसमें एक बात है र ाच्चा। मानिक को ··'अप्पु ने अर्थ-सूचक हँसी के साथ सिर खुजलाया।

रामचन्द्रन ने अपनी पढाई जारी रखी। पाच्चन न कहा 'बाबूजी को पढने दो, हम लोग चलते है।'

वे चले गए।

दूसरे दिन रामचन्द्रन ने घर पर पत्र भेजा। रहने की असुविधाओ और आर्थिक कष्टो के बा म उसने कुछ नही लिखा था। उस दिन भी राजम्मा ने ही चाय और नाश्ता लाकर दिया, भोजन भी परोसा। स्नान क लिए कुए म पानी खीचकर दिया। शाम को जब वह कालेज मे वापस आया तब वह अपनी पुस्तके लेकर उसके पास जाकर बैठ गई और प्रश्न पूछने लगी। सध्या हो जाने पर रामचन्द्रन किताबे लेकर पुलिया पर जा बैठा और अपनी पढाई करने लगा।

इस प्रकार कुछ दिन बीत गए। एक दिन शाम को जब रामचन्द्रन कालेज से वापस आया तो उसने इस्क पर एक कागज का बडा पेकेट रखा हुआ देखा। उसने उसे खोलकर देखा। दो धोती और दो कुर्तों का कपडा उसमे रखा था। उसने पैकेट वही पर उसी प्रकार रख दिया। जब राजम्मा चाय लेकर आई तो उससे उसने पूछा 'यह पैकेट यहां किसने रखा है ?'

'मैंने रखा था'—उसने रामचन्द्रन को तिरछी नज़र से देखा।

रामचन्द्रन ने फिर कुछ नही पूछा। उसने चाय पी ली। राजम्मा ने पूछा: उस पैकेट में क्या है, मालूम है?'

'मालूम है, मैंने उसे खोलकर देखा था।'

'कुर्ते का कपडा अच्छा है क्या?'

'अच्छा है।'

'पिताजी ने खरीदा है।'

'हूँ।'

'पिताजी ने खरीदकर मुझे दिया था।'

'हूँ।'

'यह किसके लिए है, मालूम है?'

'नही।'

'यह···'—मटककर हँसते हुए उसने रामचन्द्रन की ओर उँगली से इशारा किया।

रामचन्द्रन का मुख पीला पड गया। वह चिन्ता मे निमग्न हो गया।

×

रामचन्द्रन रात को जिस पुलिया पर बैठता है, उसके सामने एक छोटा-सा सुन्दर घर है। उस घर के बरामदे मे दो स्त्रियो को अपनी ओर देखते हुए और कुछ कहते हुए उसने देखा। कभी-कभी वे फाटक से बाहर निकलकर उसे देखती है। पाच्चन और अप्पु का कभी उस घर मे जाना और उन स्त्रियों से बातचीत करना भी उसने देखा।

वे स्त्रियाँ माँ और बेटी है। विधवा जानकी अम्मा लगभग पचास वर्ष की है। बेटी सुदर्शिनी अम्मा तेईस-चौबीस से अधिक आयु की नहीं है। नष्ट हुए एक नायर खानदान के सदस्य है वे। जानकी अम्मा के पति एक मलयालम स्कूल के अध्यापक थे। उनके दो बच्चे हुए—एक लडका और एक लड़की।

खानदान के हिस्से का बंटवारा हुआ। पति मर गया। तब बेटी सुदर्शिनी तिरुवनन्तपुरम् के कालेज में पढ़ती थी। बेटा बालचंद्रन हाई स्कूल मे पढता था। उन माता-पिता का उद्देश्य अपने बच्चों को डिग्री दिलाकर नौकरी करने योग्य बनाना था, लेकिन उस उद्देश्य की पूर्ति के पहले ही पिता चल बसे। लेकिन माँ ने उस उद्देश्य को नहीं छोड़ा। अपने हिस्से मे मिला घर बेचकर वह तिरुवनन्तपुरम् मे रहने लगी—बच्चों की पढ़ाई के लिए। अनेक कष्टो को झेलते हुए सुदर्शिनी की पढाई पूरी हुई। वह बी० ए० पास हो गई। उसे अंग्रेजी हाई स्कूल में अध्यापिका की नौकरी भी मिल गई। बालचन्द्रन ने कालेज मे पढना शुरू किया।

इस प्रकार जब वह कुटुम्ब कष्टों से दूर हट रहा था, तभी एक दिन अचानक ही बालचन्द्रन का देहान्त हो गया। उसके साथ कुटुम्ब फिर दु:ख मे निमग्न हो गया। उसके बाद माँ और बेटी दिल खोलकर कभी नहीं हंस सकी।

रात में घर के बाहर की पुलिया पर बैठकर रास्ते के दीपक के प्रकाश में पढने वाले रामचंद्रन ने माँ और बेटी का ध्यान खींच लिया। जब कभी वे उसे देखतीं, उनके मन मे बालचन्द्रन की स्मृति उभर आती। पाच्चन और अप्पु ने उन्हें बताया कि वह एक कालेज का विद्यार्थी है और कुञ्ञु पिल्लै के होटल के बरामदे मे रहता है। होटल मे दस-ग्यारह बजे तक शोर-गुल और भीड़ के कारण वह पुलिया पर बैठकर पढ़ता है, यह भी उन्होंने उन स्त्रियों को बताया। इस विद्यार्थी को अपने यहाँ रखने में कुञ्ञु पिल्लै का कोई उद्देश्य है, यह अभिप्राय भी उन लड़कों ने प्रकट किया।

इस प्रकार एक महीना बीत गया। होटल में रुपये देने हैं। कालेज में फ़ीस जमा करनी है। उसने माँ को पत्र लिखा। पहले लिखा कि वह स्वस्थ है और पढ़ाई अच्छी तरह चल रही है। फिर माँ, वसुमती, मौसी, नंदिनी तथा राजशेखरन की कुशल पूछी। इतना लिखना ही उसका उद्देश्य था। फिर उसने कालेज में फ़ीस और होटल में रुपये देने के बारे

मे लिखा। इतना लिखने पर उसे लगा कि माँ दुखी होगी। अंत मे लिखा कि मै स्वयं किसी-न-किसी प्रकार रुपया कमा करके होटल में दे दूंगा; माँ इस विषय मे चिंतित न हों। उसने वह पत्र भी भेज दिया।

उस दिन शाम को वह कालेज आया तो राजम्मा ने कहा . 'पिताजी वहां बुला रहे है।'

रामचन्द्रन घबरा गया। उसका विश्वास था कि रुपये माँगने के लिए बुलाया है। पूछने पर क्या कहेगा, यह उसे मालूम नही था। जो भी हो, बुलाने पर बिना जाए कैसे रह सकता है? वह उठकर कुञ्ज पिल्लै के पास गया।

'कालेज मे फ़ीस जमा कर दी क्या, बेटे?' उस प्रश्न मे वात्सल्य की छाया थी।

'नही।'

'रुपये हैं क्या?'

'नहीं।'

'घर से रुपये आयेंगे क्या?'

'हाँ।'

'रुपये न मिले तो मुझसे कहना। फीस के लिए रुपया मैं दूंगा।'

'न मिले तो कहूँगा'—वह घूमकर लौट गया और चिंता में निमग्न हो गया।

वह पलँग पर जाकर बैठ गया। उसे एक संदेह है। उसकी फीस के लिए कुञ्ज पिल्लै रुपये क्यों दे रहा है? उस पर उसकी वात्सल्य-भावना का क्या कारण है? उसके द्वारा खरीदी दोनों धोती अरगनी पर पडी हैं। दर्जी द्वारा सिला गया कुर्ता लपेटा हुआ डेस्क पर रखा है। उससे किसी प्रकार का संबंध न रखने वाले इस होटल वाले ने क्यों यह सब खरीदकर उसे दिया। उस पर उसकी इतनी अधिक ममता का कारण क्या है?

राजम्मा ने उससे बहुत-कुछ पूछा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

संध्या होने पर किताबें लेकर वह पुलिया पर जा बैठा। पाच्चन और अप्पु उसके पास पहुँचे। पाच्चन ने पूछा : 'साहब, आप इस प्रकार कष्ट क्यों उठाते हैं ?'

'कैसा कष्ट ?'

'रोज इस पुलिया पर बैठकर पढ़ने में कष्ट होता है न ? किराया देने पर साहब को पढ़ने के लिए क्या एक कमरा नहीं मिलेगा ?'

अप्पु ने कहा : 'साहब कहते नहीं इसीलिए। कहते तो क्या वे साहब के लिए किराये पर कमरा लेकर नहीं देते ?'

'आपको कहने में सकोच हो तो हम कहेंगे।'

रामचन्द्रन ने तुरन्त ही कहा : 'नहीं, वे हमारे लिए कमरा क्यों किराये पर लेंगे ? क्या वे मेरे कोई लगते हैं !'

'साहब के कोई लगते हैं, पूछें तो...'—पाच्चन ने पूरा नहीं कहा। वह अर्थपूर्ण हँसी हँसा।

इस सबका क्या अर्थ है, रामचन्द्रन की समझ में कुछ नहीं आया।

रात को दस बजे के बाद वह होटल में पहुँचा। रसोई में कुञ्ञु पिल्लै की बहन और राजम्मा का आपस में क्रोध के साथ बातचीत करते देखकर वह ध्यान से सुनने लगा। बहन राजम्मा से कह रही है : 'लड़की की ढिठाई तो देखो ! बी० ए० वाले की पत्नी बनने जा रही है। इसीलिए क्या सिर पर चढ़ती जा रही है ?'

इसका क्या अर्थ है ? रामचन्द्रन ने कुछ अंदाज़ लगाया। उसने उस दिन रात को भोजन नहीं किया। पेट में दर्द है, ऐसा कहकर लेट गया।

दूसरे दिन वह उठकर चला। उस होटल में जितनी जल्दी चला जाय उतना ही अच्छा है, ऐसा उसने सोचा। लेकिन कहाँ जायगा ? कौन उसे भोजन देगा ? बिना शोर-गुल का, धूप और वर्षा में बचाव का स्थान मिलना उसके लिए काफ़ी है। जीवन-निर्वाह के लिए थोड़ा ही भोजन पर्याप्त है। इतने से वह सतृप्त हो जायगा। लेकिन यह सब देने के लिए कौन है ?

अब फ़ीस भी देनी है ? और किताबें तथा कापियाँ भी खरीदनी हैं ? वह सोच रहा है कि यह सब कहाँ मिलेगा ? छोटे-छोटे संदेहों के कारण होटल बदलना मूर्खता नहीं होगी ?

वह लौटकर होटल में गया। राजम्मा ने पूछा : 'कहाँ गए थे सबेरे-सबेरे ?'

'यों ही टहलने चला गया था।'

वह रोज़ की तरह स्नान करके गरम दूध पीकर कालेज गया। शाम को राजम्मा ने उससे पूछा : 'फ़ीस जमा कर दी क्या ?' पिताजी ने पूछने के लिए कहा है।

रामचन्द्रन ने उत्तर नहीं दिया।

'चुप क्यों हो ? पिताजी ने कहा है कि अगर फ़ीस न दी हो तो रुपये वे दे देंगे।'

'उनसे कहो, बाद में बताऊँगा।'

'अभी कहने में क्या है ?' उसने मटककर पूछा।

'अभी कहने का मन नहीं है।' रामचन्द्रन ने गंभीरता से ऐसा कहा था।

राजम्मा उसे मज़ाक समझकर मटकती-हँसती चली गई।

रामचन्द्रन किताबें लेकर बाहर निकला। वह पुलिया पर जाकर बैठ गया। अभी संध्या नहीं हुई थी। सामने वाले घर के बरामदे में जानकी अम्मा और सुदर्शिनी उसे ध्यान से देख रही थीं। उसने भी उन्हें देखा।

संध्या बीत गई। रामचन्द्रन ने सड़क की बत्ती के प्रकाश में पढ़ना शुरू किया। पाच्चन और अप्पु पुलिया के पास आ खड़े हुए। अप्पु ने कहा : 'साहब की धोती और कुर्ता फटा है।'

'हाँ।'

'आपके पास दूसरी धोती और कुर्ता नहीं है क्या ?'

'सब फटे हैं।'

'आप उनसे क्यों नही कहते ? जितने भी चाहिएँ वे खरीद देंगे।' पाच्चन ने कहा।

रामचन्द्रन को क्रोध आ गया—'वे क्यो मेरे लिए धोती और कुर्ता खरीदकर देगे ? वे मेरे कौन है ?'

'कोई नही हैं तो फिर क्यो वे रुपये खर्च करके आपको पढा रहे हैं ?' पाच्चन भी चिढ गया।

रामचन्द्रन गुस्से से खडा हो गया। वे रुपये खर्च करके मुझे पढा रहे हैं, ऐसा किसने कहा रे ?'

'किसने कहा ? कुञ्ञु पिल्लै की माँ ने कहा था कि साहब को पढाकर बी० ए० बनाकर कुञ्ञुपिल्लै की बेटी से विवाह करायँगे।'

रामचन्द्रन होटल की ओर दौड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने पुरानी धोती और कुर्ता तथा किताबें इकट्ठी करके एक गठरी बनाई। राजम्मा घबराहट के साथ दौडी आई। उसने पूछा . 'यह सब क्यों बाँध रहे हो ;'

'यहाँ से जाने के लिए।'

'गठरी लेकर कहाँ जा रहे हो बेटे ?' दादी ने पूछा।

'अब मैं यहाँ नही रहूँगा।'

'क्यो ?···तूने कुछ कहा है री ?'

'मैंने कुछ नही कहा दादी'—उसने उत्कंठा के साथ उत्तर दिया।

'कुञ्ञु ने कुछ कहा ?'

'क्या है, क्या है ?—कुञ्ञु पिल्लै दौडकर आ गया।

'मै यहाँ से जा रहा हूँ'—रामचन्द्रन ने दृढता से कहा।

'यहाँ से जाने का क्या कारण है ? क्या किसी ने कुछ कहा है ?'

'मेरा विवाह कराने के लिए आपने मुझे यहाँ रखा है न ?'

कुञ्ञु पिल्लै का मुख-भाव उसी क्षण बदल गया। उसने गरजकर कहा : 'हाँ रे, तेरा मन नही है तो यहाँ से चला जा।'

'मै जा रहा हूँ।' रामचन्द्रन गठरी उठाकर चलने को हुआ।

कुञ्ञु पिल्लै ने रोका।—'अपनी गठरी यहाँ रख जा। जो यहाँ देना

बाकी है, वह देकर गठरी लेकर चला जा। तुझे जो गरम दूध पिलाया, उसकी भी कीमत है। दो बार भोजन और एक बार चाय के लिए ही तूने रुपया जमा किया था। एक बार की चाय अधिक है। फिर यहाँ रहने का किराया भी देना है।

रामचन्द्रन निर्जीव हो गया। उसने कुछ नहीं कहा। कुछ कहने के लिए उसकी जिह्वा हिली ही नहीं। गठरी डेस्क पर रखकर सिर झुकाए वह वहाँ से बाहर निकल गया।

वह पुलिया पर जाकर बैठ गया। ठुड्डी पर हाथ रखकर वह बैठा रहा। उस होटल से निकल आने में उसे संतोष ही है। लेकिन कापियाँ और पुस्तकें वहाँ रखी हैं। उन्हें वापस लेने के लिए कुञ्ञु पिल्लै को रुपये देने हैं। उसके पास एक पैसा भी नहीं है। कहाँ जायगा? कहाँ थोड़ा-सा आराम करेगा। कालेज में फ़ीस जमा करनी है। एक सप्ताह बाद जुर्माने के साथ जमा कर सकता है। लेकिन एक सप्ताह में भी रुपये कहाँ से आयँगे? इस प्रकार अनेकों प्रश्न उसके मन में दौड़ने लगे। अंत में थककर वह पुलिया पर लेट गया।

पाच्चन और अप्पु सड़क के दीपक के नीचे दुखी खड़े हैं। अप्पु ने कहा: 'हमारे कारण इनको कष्ट हुआ है न?'

'हमने क्या किया? जैसा सुना था वैसा ही कहा है न? सुने-अनसुने इनको क्या सूझी कि जाकर एकदम अपनी गठरी बाँध ली?'

'फिर भी ये साहब पानीदार हैं। जाल तोड़कर बाहर निकल ही आए।'

'देखने में मालूम पड़ता है कि किसी बड़े घर के बेटे हैं।'

'पाच्चा'!—फाटक से जानकी अम्मा ने पुकारा। पाच्चन और अप्पु उस घर की ओर दौड़ गए। कुछ देर बाद दोनों पुलिया के पास आए। पाच्चन ने कहा—'आपको बुला रही हैं।'

'कौन?' रामचन्द्रन ने सिर उठाकर पूछा।

'उस घर की माँ।'

'क्यों ?'

'आपसे कुछ पूछने के लिए।'

रामचन्द्रन उठा। वह घर में गया। फाटक से ही उसने पूछा : 'क्या मुझे बुलाया है ?'

'हाँ। बेटा, यहाँ आओ।' जानकी अम्मा ने वात्सल्य के साथ कहा।

वह बरामदे में गया।

'क्या नाम है ?'—सुदर्शिनी अम्मा ने पूछा।

'रामचन्द्रन'

'बालचन्द्रन !'—जानकी अम्मा फुसफुसाई। क्षण-भर के लिए जानकी अम्मा और सुदर्शिनी अम्मा मौन खडी रही। जानकी अम्मा ने पास जाकर उसके हाथ पकडे— बेटे ने कुछ खाया-पिया है ?'

उसने उत्तर नही दिया। उस वात्सल्य के सामने वह स्तब्ध खडा रह गया।

'आ खाने के बाद हम लोग बाते करेंगे'—जानकी अम्मा उसे अंदर लेकर चली गई। पीछे-पीछे सुदर्शिनी अम्मा भी।

रामचन्द्रन को एक आसन पर बैठाया। सुदर्शिनी अम्मा ने भात और सब्जियाँ परोसी। रामचन्द्रन तब भी दोनो के मुख की ओर एकटक देख रहा है। जानकी अम्मा ने कहा . 'खाओ बेटा —खाओ !'

रामचन्द्रन ने भोजन करके हाथ धोए। वे सब बरामदे मे पहुँचे। बरामदे के बाई ओर एक छोटा कमरा है। उस कमरे मे एक मेज, कुर्सी और पलँग है। सुदर्शिनी अम्मा ने उस कमरे म घुसकर लालटेन जलाई। जानकी अम्मा भी उस कमरे मे गई। वहाँ से उन्होने पुकारा : 'बेटा रामचन्द्रन, इधर आओ।'

कमरे मे पहुँचकर उसने जानकी अम्मा के मुख को आश्चर्य से देखा। दीवार पर लगी एक फोटो की ओर देखकर जानकी अम्मा ने कहा · यह ···यह···मेरे बेटे का····'

रामचन्द्रन को गले लगाकर वह माँ फूट-फूटकर रोई।

आँसू पोछते हुए सुदर्शिनी अम्मा ने कहा . 'रामचन्द्रन यह कमरा तुम्हारा है।'

२४. कुञ्ञन का कुटुम्ब

साँझ बीत चुकी जब वे आए। दो वर्ष के कारावास के बाद वे तीनों एक-साथ वापस आए—कुञ्ञुकुट्टन, वासु और दिवाकरन। यशोधरा आनन्द मे सब-कुछ भूल गई। उसने पुकारकर कहा : 'आ गए माँ, आ गए।'

'कहाँ···कहाँ···कहाँ ?' रसोई से दौड़कर आई हुई कल्याणी को वासु और दिवाकरन ने गले लगा लिया।

आनंद गलकर आँसू की धारा में बहने लगा। बरामदे मे जलते दीपक के प्रकाश में सबने एक-दूसरे को देखा। उमड़ते हुए सौ सौ प्रश्न बाहर फूट पड़े।

'आ गए क्या कल्याणी—आ गए क्या ?' दक्षिणी बाड़ के उस तरफ से सुमती अम्मा ने बुलाकर पूछा।

'आ गए छोटी मालकिन—आ गए।' कल्याणी ने ज़ोर से उत्तर दिया। फिर वासु और दिवाकरन से कहा—'जाओ बेटे—छोटे मालिक की खबर छोटी मालकिन से कह आओ।

वासु का मुख सिकुड़ गया—'कौन मालिक ? कौन मालकिन ?'

'कुत्ते की पूंछ बारह वर्षों तक लोहे की नली में डालने पर भी सीधी नहीं होगी भैया।' दिवाकरन मे समझाया।

'उस अहसान को मत भूलो बेटे।' कल्याणी आँसू पोंछती हुई दक्षिणी बाड़ के पास गई।

'छोटी मालकिन—छोटी मालकिन !' कल्याणी ने पुकारा। किसी ने जबाब नहीं दिया। उसने बाड़ के ऊपर झाँककर देखा। वहाँ कोई नहीं था। कल्याणी वापस चली गई।

'खट् खट्···! —' रास्ते पर दूर से खड़ाऊँ की आवाज़ पास आती

रही। कल्याणी ने ध्यान दिया। उसके चेहरे पर विषाद छा गया।

'कौन है माँ, वह खडाऊं पहने जा रहा है ?'—वासु ने पूछा।

'वह एक साधु है। कभी-कभी इस रास्ते से जाता दिखाई पड़ता है।

'साधु सब चोर होते हैं। सावधान रहना चाहिए।'

'जीवन-निर्वाह के लिए वे गेरुआ वस्त्र पहनकर घूमते फिरते हैं'
—कोच्चुकुट्टन ने अपनी राय प्रकट की।

'धर्म बेचने के लिए घूमने वाले सौदागर हैं वे'—दिवाकरन ने कहा।

कल्याणी कुछ नही बोली। वह गैर ... विषादमय स्वप्न देखने के समान शून्य की ओर देखती रही।

उस घर के पास से वह खडाऊँ की आवाज़ दूर होती चली गई।

'अगर यहाँ होते तो······' कल्याणी ... पडी।

'कौन मा ? पिताजी ?' दिवाकरन ने उत्कंठा से पूछा।

'हाँ···तीन बच्चो को देकर कही चले गए···अगर यहाँ होते ··'
—वह फूट-फूटकर रोने लगी।

सभी ने आंसू पोछ लिए।

× × × ×

दूसरे दिन सवेरे तमाम ईषवा लोग टोलिया बना-बनाकर कल्याणी के घर गए। समुदाय की विवशताओ को दूर करने के लिए जेल-जीवन भोगकर लौटे नेताओ को देखने और बधाई देने तथा प्रशसा करने के लिए वे आए थे। कोच्चकुट्टन, वासु और दिवाकरन को ही नही, बल्कि कल्याणी को भी उन्होंने बधाई दी, जिसने दो वीर सन्तानो को जन्म दिया।

किसी ने कुञ्ञन के बारे मे कुछ नही कहा।

दूसरे दिन कोच्चुकुट्टन, वासु और दिवाकरन का एस० एन० डी० पी० संघ की शाखा ने आफ़िस मे स्वागत किया और रुपयों की थैली

भेंट की। स्वागत-समारोह में दूसरी जाति वालों को निमंत्रित नहीं किया गया था, लेकिन जब भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर बिना निमंत्रण के ही समारोह में भाग लेने आए, तब सभी को आश्चर्य हुआ। समारोह की भीड़ में एक तरफ़ से किसी ने कहा : 'ये बदमाश नायर कुछ गड़बड़ी करने आए होंगे।'

भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर को मुख्य स्थान पर बैठाया गया। गोविंदन वैद्य के दामाद केशव की अध्यक्षता में समारोह सम्पन्न हुआ। समुदाय की स्वतंत्रता तथा न्याय के लिए इस संग्राम के वीर सेनानियों की प्रशंसा करते हुए अध्यक्ष और दो ईषवा युवकों ने भाषण दिए। उसके बाद सुकुमारन नायर ने उठकर अध्यक्ष और सदस्यों की अनुमति लेकर भाषण दिया। उन्होंने कहा : 'यहाँ के नायर-ईषवा दंगे में कई लोग मारे गए। उसमें मेरे पिता भी मर गए। धनी और यशस्वी कई कुटुंब नष्ट हो गए। उसके साथ ही मेरे मित्र भास्कर कुरुप का खानदान भी नष्ट-भ्रष्ट हो गया। आप लोगों में से कुछ लोगों के पिता और भाई झगड़े मे मारे गए। इन सबका कारण हमारी जातिगत आस्था है। जातिगत आस्था में हम किसी को दोष नहीं दे सकते। नंपूतिरी और चांडाल दोनों के लिए अहितकर इस जाति-व्यवस्था का हम एक-साथ खड़े होकर अपनी सारी शक्ति से विरोध करें। जातिगत संग्राम में जेल-जीवन भोगकर लौटे हुए मित्रों का मैं अपने मित्र की ओर से और अपनी ओर से अभिनंदन करता हूँ।'

सभी लोगों ने एक साथ ताली बजाकर उस भाषण की प्रशंसा की। प्रशंसा करने वालों के लिए दिवाकरन ने कृतज्ञता प्रकट की। उसने इस प्रकार कहा : 'प्रशंसा और रुपयों की थैली के लिए हम आभार मानते है। भविष्य में यहाँ इस प्रकार के जाति-प्रधान दंगे न हों इसलिए और सभी समाजों की परस्पर मैत्री स्थापित करने के लिए यह उच्च-नीचत्व कायम रखने वाली जाति-प्रथा को समाप्त करना आवश्यक है। जाति के नाश और समुदायों की मित्रता के लिए हमारे साथ प्रयत्न करने मे

मिस्टर मुकुमारन नायर और मिस्टर भास्कर कुरुप का तैयार हो जाना शुभ सूचक है। मैं विशेष रूप से उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।'

सभी ने एक साथ तालियाँ बजाई। अध्यक्ष ने उपसंहार-भाषण मे सामुदायिक एकता के द्वारा सारे देश की भलाई को लक्ष्य बनाकर काम करने के लिए सभी का आह्वान किया।

समारोह के बाद कोच्चुरामन वैद्य के पुत्र माधवन ठेकेदार के घर मे चाय की पार्टी थी। उस पार्टी मे भी सुकुमारन नायर और भास्कर कुरुप ने भाग लिया। इस घटना ने नायरो के बीच मे बडी खलबली पैदा कर दी। पच्चाषी के भास्कर कुरुप ने एक ईषवा के घर बैठकर दूसरे ईषवाओ के साथ काफी पी, इस समाचार ने पच्चाषी मे बँटवारा करके अलग हुई स्त्रियो का क्रोध भडका दिया। वे सब मिलकर भास्कर कुरुप के घर मे गई और कात्यायनी अम्मा को झगडे के लिए ललकारा।

भवानी अम्मा की माँ कुट्टी अम्मा ने सबसे अधिक रोष-प्रदर्शन किया। उस गाँव मे यह सभी जानते थे कि भवानी अम्मा -- जिसकी आयु बीस-पच्चीस साल से अधिक नही थी -ग। हो जाने के बाद किसी भी जाति के पुरुष का स्वागत करने के लिए तत्पर रहती थी। लेकिन भास्कर कुरुप ने जब माधवन ठेकेदार के घर मे चाय ी तो कुट्टी अम्मा को क्रोध आ गया। वह बाल खोलकर उछलती हुइ कात्यायनी अम्मा के पास आकर गरजने लगी—'काट डालूंगी री—तुझे और तेरे बच्चो को डालूंगी। पच्चाषी खानदान मे आज तक किसी ने काट ईषवाओ का छुआ नही खाया है। तेरे बेटे ने ही अब खानदान मे कलंक लगाया है। यह बेइज्जती हम नहीं सहेंगी री। काट डालूंगी —तुझे और तेरे बच्चो को काट डालूंगी।'

कात्यायनी अम्मा को भी गुस्सा आ गया। उन्होने भी वैसे ही चिल्लाकर कहा : 'मुझे और मेरे बच्चों को काटने वाला पच्चाषी मे कोई भी नही पैदा हुआ री···मेरे बेटे ने ईषवा का छुआ खाया है तो

इस बेइज्जती को हम सह लेंगी। तेरी बेटी रात होने पर ईषवाओं और मुसलमानों को···नहीं···मुझसे कुछ मत कहलवाओ।'

इसके साथ ही कुट्टी अम्मा का क्रोध शांत हो गया। सब लोग कुछ-न-कुछ बड़बड़ाते हुए चले गए।

सारे शरीर में फिरंगी रोग से भरी देवकी अम्मा पलँग से उठकर खिसकते-खिसकते आँगन में आई। 'उसने ईषवा का छुआ खाया है। अब ईषवा लड़की से ब्याह भी करेगा। अपनी बहनों को भी ईषवाओं को देगा।' वह बड़बड़ाई।

रास्ते में खड़े लोग उसका बड़बड़ाना सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़े।

भास्कर कुरुप ने जब घर में जाकर सब बातें सुनीं तो उसे क्रोध आया। 'झाड़ू लेकर उसके मुख पर क्यों नहीं मार दी माँ?' नष्ट-भ्रष्ट होकर लाज-शरम सब खत्म कर देने वाले उन लोगों को घर में क्यों घुसने दिया?'

भास्कर कुरुप की बहन राजम्मा ने कहा: 'अच्छी तरह पूजा करने के लिए झाड़ू लेकर आई ही थी कि तब तक सब चली गईं दादा?'

राजम्मा की छोटी बहन सरसम्मा ने पूछा: 'आगे ईषवाओं के घर में चाय-नाश्ता या दावत होने पर हमें भी निमंत्रण देंगे क्या दादा?'

'निमंत्रण मिलने पर जाओगी क्या?'

'निमंत्रण मिलने पर जाने में क्या हर्ज है?'

'अरी, ईषवा दावत के लिए निमंत्रण दें तो तू जायगी?' कात्यायिनी अम्मा ने क्रोध के साथ पूछा। उन्होंने आगे कहा: 'लड़के सब जगह जायेंगे। बहुतों के साथ बैठकर बहुत-कुछ खाएँगे-पिएँगे। अरी, उसी प्रकार लड़कियाँ भी जा सकती हैं क्या?'

'उसने यों ही कहा था माँ।'—भास्कर कुरुप ने माँ को आश्वासन दिया। वास्तव में सरसम्मा का कथन उसे भी पसन्द नहीं आया था।

× × × ×

कल्याणी के घर की मरम्मत की गई। घर के सामने का छप्पर गिराकर वहाँ दो कमरे बनवाए गए। दक्षिणी भाग मे एक बैठक और बरामदा भी बनाया गया। मेज, कुर्सियाँ, पलंग आदि घर का सामान खरीदकर घर को सुसज्जित और सुविधाजनक बना दिया। इस प्रकार पुरस्कार मे मिले हुए रुपयो को घर के काम मे लगा दिया। बचे हुए रुपयों से वासु ने फिर से दर्जी की दुकान शुरू कर दी।

दिवाकरन एक अच्छा वक्ता था। युक्तियुक्त बोलने का ढग और श्रोताओ मे जोश भर देने वाली भाषा उसे सुलभ थी। एस० एन० डी० पी० सघ के वार्षिक समारोह मे शाखा-सघ का प्रतिनिधि होकर उसने भाग लिया। समारोह मे एक औद्योगिक प्रस्ताव के विरोध करने वाले एक नेता को जवाब देते हुए दिवाकरन ने जो भाषण दिया, वह उस समारोह मे हुए भाषणो मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था। उसके साथ ही दिवाकरन को नेतृत्व का स्थान भी मिल गया।

नेतृत्व के उत्तरदायित्व के सम्बन्ध मे दिवाकरन का अच्छा ज्ञान था। उसने अधिक अध्ययन और मनन भी किया। अँग्रेजी न जानना एक बहुत बडी कमी समझकर उसने लगन से अँग्रेजी सीखना भी शुरू कर दिया। घर मे नई बनाई हुई बैठक मे ही उसका वास-स्थान था। ईषवा युवक सब वही इकट्ठे होते है। इस प्रकार जाति का नाश तथा सामाजिक कार्यो का केन्द्र बन गई वह बैठक।

कल्याणी, वासु और यशोधरा को गर्व हुआ। दिवाकरन का सुख और अभिवृद्धि ही उस कुटुम्ब मे सबका लक्ष्य बन गई। उसकी हर बात को आज्ञा के रूप मे स्वीकार किया जाने लगा। दूर देश से उसे देखने, उससे विचार-विमर्श करने और समारोहो मे आमत्रण देने आने वाले लोगो का सत्कार करने के लिए सब लोग उत्सुक हो गए।

सुकुमारन नायर, भास्कर कुरुप और दिवाकरन रोज बाजार मे वासु की दुकान पर मिलते थे। कभी-कभी भास्कर कुरुप दिवाकरन और सुकुमारन नायर को अपने घर मे ले जाता था। उनको चाय पिलाता

था। राजम्मा और सरसम्मा उनसे बातचीत भी करती थीं। कभी भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर को दिवाकरन अपने घर में आमंत्रित करता था। दिवाकरन के घर की नई बैठक में बैठकर चाय पीते हुए विभिन्न सामुदायिक और राष्ट्रीय प्रश्नों के बारे में वे चर्चा करते थे। इस प्रकार वे तीनों जिगरी दोस्त बन गए।

बाज़ार में कई लोग बड़बड़ाने लगे—भास्कर कुरुप की बहन का दिवाकरन से और दिवाकरन की बहन का भास्कर कुरुप से विवाह होने जा रहा है। लेकिन किसी ने अपनी कोई राय प्रकट नहीं की। दिवाकरन और भास्कर कुरुप से उसके बारे में पूछने की किसी को हिम्मत नहीं हुई। पच्चाषी की स्त्रियाँ क्रोधित हुईं। कुट्टी अम्मा अपने घर के आँगन में खड़ी होकर कुछ चिल्लाने लगी। देवकी अम्मा फिरंगी रोग के व्रणों को सहलाती हुई धीरे-धीरे रेंगती हुई बाड़ के पास आकर चिल्लाई: 'पकड़कर दे दो—पकड़कर दे दो! नायर स्त्रियाँ ईषवाओं और मुसलमानों को पकड़ें और तुम लोग ईषवा और पुलयों की औरतों को लाकर रखो।'

रास्ते में जाने वाले लोग खिलखिलाकर हँस पड़े।

× × × ×

यशोधरा के लिए विवाह के कई प्रस्ताव आए। उनमें से दिवाकरन को एक भी पसन्द नहीं आया। दिवाकरन को पसन्द न आने वाला कोई भी काम वहाँ नहीं होगा। लेकिन कल्याणी अधीर हो उठी। एक दिन वासु और दिवाकरन के सामने कल्याणी ने कहा: 'वहाँ की छोटी मालकिनों के समान किसी के साथ भाग जाने के पहले विवाह कर देना चाहिए।'

'नष्ट होकर बिगड़े लोग ही भाग जाते हैं। आपकी बेटी किसी के साथ नहीं भागेगी'—वासु ने हर्षपूर्वक कहा।

'कैसे रहने वाले थे मंगलश्शेरी के लोग!' कल्याणी ने गहरी साँस ली।

'कैसे रहने वाले थे ? दलित लोगो को दूर रखकर उन्हे दबाकर रहने वाले थे वे। उन्हे भागना ही चाहिए। वे भागेगी !'—वासु को क्रोध आ गया।

दिवाकरन ने वासु को समझाया—'ऐसी कटु बात मत कहो भैया ! जाति-व्यवस्था उनकी बनाई हुई नही है। शताब्दियो से चली आ रही है। उस विश्वास का नाश होने के साथ ही-साथ और भी बहुत-कुछ नष्ट होगा। उनकी गलती नही, हमारी भी गलती नही।'

वास ने फिर कुछ नही कहा।

सुदर्शन दिवाकरन का आराधक एक ईषवा युवक है। तीस-चालीस कोस दूर नदी के किनारे एक धनी ईषवा का बेटा है वह। अच्छी नौकरी पाने योग्य परीक्षा पास होने पर भी अपना ही कोई काम करने की उसकी इच्छा है। समुदाय की सेवा उसका दृढ व्रत है।

दिवाकरन के घर वह कई बार जा चुका है। दिवाकरन से अपना नाता दृढ करने के लिए यशोधरा से विवाह करने की उसकी अभिलाषा हुई। उसने अपनी अभिलाषा पत्र द्वारा दिवाकरन को बताई। दिवाकरन और दूसरे लोग भी इस बात से सहमत हो गए। लेकिन कल्याणी का एक विरोध है—'वह मेरी एकलौती बेटी है। उसे मैं दूर कही नही भेजूंगी। विवाह करके वह यही रहे।'

दिवाकरन ने सुदर्शन को पत्र लिखकर बुलाया। सुदर्शन अपने पिता के साथ आया। पिता ने स्वीकार किया कि सुदर्शन के विवाह के बाद वह यही रहे इसमे उन्हे कोई विरोध नही है। साथ ही घर और बाग-अहाता खरीदने के लिए रुपये भी देने का उन्होने वायदा किया। व्यापार वगैरा शुरू करना हो तो उसके लिए भी रुपये देना मजूर किया। अन्त मे उन्होने कहा 'उसे दस लोग जानें। वह ऊँचे पद पर पहुँचे, यही है मेरी अभिलाषा।'

विवाह की तिथि निश्चित हो गई। कल्याणी ने वासु और दिवाकरन से मगलश्शेरी मे जाकर निमन्त्रण देने के लिए कहा। दोनो ने उसे

अनसुना कर दिया। कल्याणी की आँखें भर आईं—'मेरा विवाह होने पर यह घर और अहाता मेरी बड़ी मालकिन ने मुझे दिया था। किसी चीज की कमी और तकलीफ़ मैंने नहीं जानी। बेटे, तुम्हारे पिता ने यह घर नहीं सम्हाला। बड़ी मालकिन ने मरने तक यहाँ का खर्च चलाया था। माँ के समान ही थे बेटे भी। अब बस उस अहसान को मत भूलो, बेटा। जाकर कह आओ!'

वे नहीं गए।

कल्याणी मंगलश्शेरी गई। अन्न कूटने की कोठरी के पास खड़ी होकर उसने सुमती अम्मा से पूछा: 'यह क्या है। छोटी मालकिन। यहीं बैठती और सोती हो क्या?'

'हाँ...कल्याणी, इस समय यहाँ कैसे आईं? यशोधरा, वासु और दिवाकरन तो कुशल से हैं न?'

'सभी कुशल से हैं, छोटी मालकिन...और एक बात कहने के लिए मैं यहाँ आई हूँ...बेटी का ब्याह है।'

सुमती अम्मा ने खुशी से पूछा: 'यशोधरा का? कौन है लडका?'

कल्याणी ने सारी बातें विस्तार से कहकर अन्त में कहा: 'उसे वहाँ नहीं ले जायगा। ज़मीन खरीदकर घर बनवाकर यहीं रहेगा।'

'यही अच्छा है। तुम्हारी एक ही लड़की है न?'

'वह बाज़ार मे कोई व्यापार भी शुरू करेगा?'

'यही अच्छा है। समझदार है क्या?'

'योग्य है, ऐसा दिवाकरन ने कहा था।'

थोड़ी देर चुप रहकर सुमती अम्मा ने कहा: 'उसके ब्याह मे यहाँ कुछ देने के लिए...'

'कुछ नहीं चाहिए छोटी मालकिन। जब था तब आपने दिया ही था।'

'यदि भाई होते तो...'—सुमती अम्मा का कंठ अवरुद्ध हो गया।

'छोटे मालिक होते...'—कल्याणी की आँखों में आँसू आ गए।

'मुझे विवाह तो देखना ही है, कल्याणी ।'

'बाड के पास खडे होकर सब-कुछ दिखाई पडेगा ।'

'दीदी से भी कहो ।'

सरोजिनी अम्मा से भी विवाह की बात कहकर कल्याणी लौट गई ।

विवाह की तैयारियाँ धूम धाम से हुई । केशवन और माधवन ठेकेदार आदि सबने उदारता पूर्वक दान दिया । युवको ने अपनी ओर से मडप बनाकर अलकृत किया । भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर ने घर वालो के समान विवाह का प्रबध किया ।

मुक्कोणक्करा और आस-पास के सभी जाति तथा धर्म के प्रमुख व्यक्तियो को विवाह का न्योता दिया गया । सभी ईषवा नेताओ को निमत्रण-पत्र भेजे गए । अतिथियो को योग्यता के अनुसार बैठाने का इन्तजाम किया गया ।

रात को आठ और साढे आठ बजे के बीच लग्न का मुहूर्त था । सध्या होते ही मडप, घर और घर के आस-पास गैस की बत्तियाँ जला दी गई । विवाह-वाद्य बजने लगे । अतिथि आकर सम्मिलित होने लगे । कल्याणी ने दक्षिणी बाड के पास जाकर झाककर देखा । सुमती अम्मा, वसुमती अम्मा और सरोजिनी अम्मा दूसरी ओर खडी थी । कल्याणी ने पूछा : 'दिखाई पडता है क्या ? छोटी मालकिन—दिखाई पडता है क्या ?'

'हाँ । दिखाई पडता है'—सुमती अम्मा ने धीमे स्वर मे उत्तर दिया ।

कल्याणी लौट गई । कुछ देर बाद वह दुबारा आई । एक टोकरी बाड के ऊपर से उठाकर दिखाते हुए उसने कहा 'इस ले लीजिए, छोटी मालकिन ।'

'क्या है यह ?'—सरोजिनी अम्मा ने अवज्ञा के साथ पूछा ।

'एक गुच्छा बडा केला और थोडा चिवड़ा है ।'

मंगलश्शेरी का नाश होने पर भी ईषवाओं की जूठन हम नहीं खायेंगी री'···सरोजिनी अम्मा ने नाराज़ होकर कहा।

'दीदी···!' सुमती अम्मा ने रोकने की कोशिश की।

सरोजिनी अम्मा की आवाज़ तेज़ हो गई—'तो जा तू और तेरी बेटी वहाँ चली जा। वहाँ जाने पर इषवाओं और उनकी औरतों के साथ बैठकर खा सकोगी।'

सुमती अम्मा कुछ कहने को थी, लेकिन कहा नहीं।

कल्याणी ने टोकरी पीछे हटा ली। वह सिर झुकाकर चली गई।

× × ×

ईषवाओं के कई नेता आ गए। विभिन्न जाति-धर्म वाले गाँव के नेता लोग भी आ गए।

आठ बज गए। लग्न का समय हो गया। वधू और वर विवाह-मंडप में बैठ गए। कल्याणी विवाह-मंडप के पास खड़ी थी।

नाद-स्वर के वाद्य-माधुरी के साथ माला पहनाई गई। अँगूठी बदली गई। कई लोगों ने वधू और वर के लिए पारितोषिक दिए।

वही खड़ाऊँ की आवाज़! वह घर के आगे के रास्ते से दूर होती चली गई। बहुत लोगों ने उसे नहीं सुना।

कल्याणी ने सुना। उसने सिर उठाकर कान लगाए। कुछ पता नहीं चला—कल्याणी की आँखें भर आईं।

२५. टूटे हुए पुल

तालबद्ध प्रवाह ही जीवन है। व्यक्तियो के ही नही, समाज के प्रवाह से सबधित ताल-क्रम मे भी अतर आता ही रहता है।

मुक्कोणक्करा मे, लोगो के और समाज के जीवन-क्रम मे भी बहुत जल्दी अतर आ रहा था।

सवर्णो मे मरुमक्कत्तायम की स्वाभाविक कृत्रिमता, निरुत्तरदायित्व और खानदानो की आपस मे नेतृत्व के लिए स्पर्धा जब बढ रही थी तब नीची जाति वालो न स्वातन्त्र्य के लिए कठिन प्रयत्न प्रारभ किया था। इस प्रकार धक्का-मुक्की के परिणामस्वरूप पतन के छोर तक पहुँचने वाले नायर-खानदान के प्रति सदस्य बँटवारे के नियम के प्रहार से छिन्न-भिन्न हो गए।

हैदव सामाजिक सगठन के विभिन्न मडलो से मार्गभ्रष्ट होने वाले लोग, एक विश्वास मे बँधे हुए लोग और कठोर सामाजिक अनुशासन के अधीन हुए ईसाई लोग चारो ओर चल रही इस सामाजिक क्रान्ति मे भाग लिये बिना दूर खडे होकर अपने प्रयत्न से धनी हो गए। नई आर्थिक मेखलाओ मे इन्होने प्रवेश किया। इतना ही नही, पुरानेपन के नाश से इन्होने पूरा पूरा लाभ उठाया।

पीढियो मे भोगते हुए सामाजिक दासत्व को फेक देने के साथ ही ईषवाओ ने एक सामाजिक क्रान्ति का तूफान उठा दिया। आर्थिक दृष्टि से अधिक उपलब्धियाँ न होने पर भी विचार-वीथी और सास्कारिक मडलो मे उन्होने नवीनताएँ बिखेर दी। पुरातन की स्मृतिया परतत्रता की स्मृतियाँ होने के कारण प्राचीनता मे उन्हे अत्यधिक घृणा हो गई। नूतनता को स्वतत्रता का प्रतीक मानकर त्याज्य और ग्राह्य का विवेचन किये बिना ही अपना लिया।

मुक्कोणक्करा के नायर खानदानों की जमीन-जायदाद के अधिकांश, उन परिवारों के नष्ट-भ्रष्ट होने पर, ईसाइयों के हाथ में आ गए। थोड़ा बहुत ईषवाओं के भी अधीन हो गया। नायर-खानदान प्राचीनता के कब्रिस्तान बनकर रह गए। भूख दबाने के लिए धोती कसी बाँधकर, प्रताप और प्रभाव के अभिनय मे सिर ऊंचा करके चलने वाले नायर लोग प्राचीनता के प्रेत के समान सड़कों पर दिखाई देते थे। मजदूरी करके जीविका उपार्जन करना अपमान मानने वाले नायर युवक काम ढूंढते हुए देश-विदेशों मे चले गए। 'देश छोडकर जाने मे ही भलाई है।' यही उन दिनों नायरों का सिद्धांत-वाक्य बन गया।

शहर जाने वाले रास्ते के दोनो ओर नए घर बन गए। उनमे कुछ ईसाईयो के और कुछ ईषवाओ के थे। नारियल, सुपारी आदि के पेड़ और काली मिर्च की बेल दिन-दूने रात-चौगुने बढने लगे।

विद्यालय और माल अदालत के सामने, रास्ते के एक ओर कोच्चु-रामन वैद्य का बेटा माधवन ठेकेदार एक महल बनवाकर रहने लगा। बँटवारे के हिस्से मे मिली एक नायर युवक की थी वह जमीन। उसे वह माधवन ठेकेदार के हाथ बेचकर कही चला गया।

माधवन ठेकेदार पहले शराब की दुकानों का ठेकेदार था। कई शराब की दुकानो को एक साथ नीलाम मे लेकर उसने बहुत पैसा कमाया था। बाद में वह ठेकेदारी छोडकर सरकारी ठेकेदारी करने लगा। अंत में पुल और सरकारी मकान बनाने की ठेकेदारी उसे मिली। इस प्रकार पूर्वी भाग के प्रमुख स्थान मे दुमजिले घर मे उसका निवास भी हो गया।

माम्मन मालिक भी पूर्वी भाग मे बाजार के पास नदी के किनारे एक मकान बनवाकर रहने लगा। वह अहाता पावलत्तु खानदान का था। मंगलश्शेरी और पच्चापी वालो के समान संपत्ति और प्रताप न होने पर भी पावलत्तु वालों का नायरो के बीच प्रतिष्ठित स्थान था। खानदान में कर्ज बढने मे जब पतन होने को था, तब चिट-फड से कर्ज लेकर छुट-कारा पाने का निश्चय बुजुर्ग नीलकंठ पिल्लै ने किया था। पहले मिले

धन से भारी कर्ज़ चुकाने का उसका उद्देश्य था।

चिट-फंड में कई लोग शामिल हुए। पहले नंबर के रुपए भी वसूल हो गए। लेकिन वे रुपए कर्ज़ चुकाने के काम में नहीं लाए गए। धूम-धाम से एक ब्याह किया; एक गणपति हवन और देवी पूजा भी की। रुपए भी समाप्त हो गए। दस नंबर तक बहुत मुश्किल से धक्का-मुक्की से पहुँचा। फिर चिट-फंड का दिवाला निकल गया। लोगों ने अदालत में मुकदमा दायर किया जिससे जमीन-जायदाद नीलाम की जाने लगीं। नदी के पास का वह बड़ा अहाता माम्मन मालिक ने अदालत में नीलाम में लिया था। वहीं पर उसने मकान बनवाया।

माधवन ठेकेदार का महल उस गाँव का पहला महल था। दूसरा माम्मन मालिक का था। तब गोविन्दन वैद्य को लगा कि उसे भी एक महल बनवाना चाहिए।

वैद्य ने बाजार में महल बनवा लिया। नीचे वाली मंज़िल में चार कमरों की दुकान और ऊपर वाली मंजिल में दो बड़े हाल भी थे। दुकान के कमरों में से एक बड़े कमरे में वैद्य ने वैद्यशाला बनाई। दूसरे कमरे में वैद्य की बेटी के पति केशव ने कपड़ों की दुकान खोली। तीसरे में यशो-धरा के पति सुदर्शन ने पंसारी की नई दुकान खोली। चौथे कमरे में भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर ने मिलकर स्वीकृत सहकारी ऋण-संस्था खोली। ऊपर वाली मंज़िल के एक हाल में वैद्य रोगियों को देखा करते थे। दूसरा हाल एस० एन० डी० पी० शाखा संघ के आफ़िस के लिए खाली छोड़ दिया गया था।

भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर ने मिलकर जिस क्रेडिट सोसा-इटी का श्रीगणेश किया उसमें कई सदस्य थे। अपना हिस्सा प्राप्त किये हुए नायर लोग और छोटे व्यापारी कर्ज़ लेने के लिए संस्था में आने वालों में सबसे अधिक थे। ठेकेदार माधवन संस्था का प्रेसिडेंट और सुकुमारन नायर सेक्रेटरी था। संस्था जल्दी ही उन्नति प्राप्त कर गई।

शाखा संघ के आफ़िस और सहकारी संस्था में रोज अखबार और

मासिक पत्रिकाएँ मंगाई जाती थीं, इसलिए कई युवक वहाँ बैठकर पढ़ने और विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद करने लगे। उन वाद-विवादों में कई प्रकार का मतभेद प्रमुख रूप से उभर आया था। भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी तथा महात्मा गांधी राष्ट्र की स्वतंत्रता के पक्षपाती थे। फिर भी ब्राह्मण-धर्म के गुलाम थे, ऐसा एक समूह ने तर्क किया। निम्न जाति वालों तथा गरीबों के यथार्थ बंधु कांग्रेस और गांधी जी हैं। भारत से अँग्रेज़ी-शासन के जाने से ही सामाजिक समता होगी, ऐसा दूसरे समूह ने तर्क किया। ईश्वर और धर्म की आवश्यकता है और नहीं है, इसके बारे में दूसरा मतभेद था। कांग्रेस के गांधी जी और ईश्वर तथा धर्म के सारे पक्षपाती खद्दर पहनने वाले थे। विरोधी खद्दर की हँसी उड़ाने वाले थे।

इस प्रकार मुक्कोणक्करा मे बाह्य और आंतरिक रूप से गंभीर परिवर्तन हो रहा था।

× × ×

मुक्कोणक्करा मे दो कमियां प्रमुख थीं—सड़क और पुल। दोनों चीज़ों की आवश्यकता को दोनों भागों के लोग महसूस करते थे, लेकिन मुसीबत मोल लेने के लिए आगे आने को कोई तैयार नहीं था।

इसी बीच बाज़ार के नौघाट में नाव डूब गई। वर्षा ऋतु होने के कारण नदी मे बाढ़ आई हुई थी। प्रवाह की तेज़ी भी बढी हुई थी। सवेरे नौ बजे के बाद पश्चिमी भाग से पूर्वी भाग में पढ़ने के लिए जाने वाले विद्यार्थी नाव मे बैठ गए। बाज़ार जाने वाले भी नाव मे चढ़ गए। नाव जल के तल मे डूब गई। नाविक ने पहले ही कहा था कि यदि थोड़े-बहुत लोग उतर नहीं जायेंगे तो वह नाव नहीं खोलेगा। चढ़े हुए लोगों में से कोई भी नाव मे उतरने को तैयार नहीं था। उन्होंने नाविक को धमकियाँ दी कि अगर वह नाव नहीं खोलेगा तो मारा जायगा। अंत में नाव खोलने के लिए नाविक विवश हो गया।

जब नाव नदी के बीच में पहुंची तो अपनी हठ की विजय से आह्लाद

मरे विद्यार्थियों ने उठकर हो-हल्ला मचाया। परिणामस्वरूप नाव एक ओर को झुकने लगी। झुके हुए भाग की ओर नाव के लोग भी झुक गए। नाव डूब गई। एक साथ सभी की चीत्कारें उठीं।

कुछ लोग तैरकर पार आ गए। किनारे पर खड़े हुए लोगों ने जाकर कुछ लोगों को बचाया। नाविक भी तैरकर बच गया।

एक बूढ़ी औरत और दो विद्यार्थी नहीं दिखाई पड़े। उनके घर वाले और बंधु घाट पर जाकर छाती पीटने और रोने-चीखने लगे। दोपहर होते ही विद्यार्थियों और बूढ़ी औरत के मृत शरीर मिल गए।

अत्यंत बूढ़ा कोच्चुरामन वैद्य लाठी टेकता हुआ नौघाट पहुँचा। रोष और दुःख के साथ वैद्य ने जोर से पूछा : 'पुल तोड़ने वाले सब अब कहाँ गए रे ?···आदमियों के आपस में झगड़ा करने पर क्या पुल तोड़ना चाहिए —तोड़ना चाहिए क्या, यही मैं पूछ रहा हूँ।'

सब चुपचाप सिर झुकाए खड़े रह गए। वैद्य ने एक उग्र चेतावनी दी—'अब भी यदि पुल नहीं बनवाया गया तो और भी नावें डूबेंगी, आगे भी बच्चे मरेंगे।'

वैद्य लौटकर चला गया। वह चेतावनी दोनों भागों में गूंज उठी।

'कौन पुल बनवायगा ?'

'तोड़ने वाले बनवाएँ'—बाज़ार से एक आवाज़ उठी।

'किसने पुल तोड़ा था ? जिन्होंने पुल तोड़ा था क्या वे मान लेंगे कि उन्होंने ही तोड़ा था ? मान लेने पर क्या वे पुल बनवा सकते हैं ?'

'जिन्होंने तोड़ा, वे तोड़ना ही जानते थे'—बाजार में से किसी ने कहा।

'तो बनाना जानने वाले बनायें।'

उस दिन शाम को सहकारी संस्था के आफिस में विचार-विमर्श के लिए एक सम्मेलन हुआ। भास्कर कुरुप, सुकुमारन नायर और दिवाकरन ने मिलकर इस सम्मेलन का आयोजन किया था। विभिन्न जाति और

धर्म के नेताओं ने सम्मेलन में भाग लिया। उसमें कुञ्ञुवरीत और पावलत्तु नीलकण्ठ पिल्लै भी थे।

सबसे बुजुर्ग व्यक्ति कोच्चुरामन वैद्य के होने के कारण सुकुमारन नायर ने राय प्रकट की कि उनको ही अध्यक्ष बनना चाहिए। वैद्य के अध्यक्ष के स्थान पर बैठते ही पावलत्तु नीलकण्ठ पिल्लै ने उठकर कहा : 'ईषवाओं को इस प्रकार का बड़प्पन नहीं देना चाहिए। नायरों की अब कुछ बुरी दशा होने पर भी ईषवा उनके सिर पर चढ़कर बैठ नहीं सकेंगे। मै जा रहा हूँ।'

नीलकण्ठ पिल्लै चला गया। वासु उठकर कुछ कहने को था। दिवाकरन ने इशारे से वासु को रोक दिया।

दिवाकरन ने अपने स्वागत-भाषण में कहा कि सभी जाति तथा धर्म के नेता पहली बार ही गाँव की सार्वजनिक आवश्यकताओं के लिए मंत्रणा करने के लिए बुलाए गए हैं और सड़क तथा पुल सभीके लिए समान रूप से आवश्यक होने के कारण सब लोगों को एक साथ विचार-विमर्श करना है और काम भी करना है। अपना उपक्रम भाषण देते हुए कोच्चुरामन वैद्य ने कहा कि किसी को किसी पर दोष लगाने से कोई फायदा नहीं है, जितनी जल्दी हो सके पुल और सड़क कोबनाना चाहिए। बच्चों का नदी में डूबकर मरना दुःख की बात है। फिर क्या करना चाहिए, इस पर विचार किया गया।

दोनों भागों से रुपये इकट्ठे करके सरकार की अनुमति लेकर पहले के समान लकड़ी का पुल बनाना काफ़ी होगा। सड़क न होने पर भी कोई विपत्ति नहीं आयगी—ऐसा मत प्रकट किया गया। भास्कर कुरुप ने ज़ोरदार तर्क दिया कि सड़क और पुल दोनों गाँव के लिए आवश्यक हैं तथा पुल नए ढंग का होना चाहिए। खर्च अधिक होने के कारण यह काम सरकार से करवाने की कोशिश करनी चाहिए। कुरुप के मत से सहमत होकर दिवाकरन के बोलते ही सब उस मत से सहमत हो गए।

सुकुमारन नायर की राय के अनुसार अधिकार-स्थानों में निवेदन करने के लिए एक समिति बनाई गई। ठेकेदार माधवन, दिवाकरन, केशवन, माम्मन, कुञ्ञुवरीत, भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर थे उस समिति के सदस्य। जब नाम पढ़े गए तब अभी तक चुपचाप बैठे कुञ्ञुवरीत ने उठकर पूछा : 'उसके लिए मुझे क्या करना है ?'

'हमारे साथ आपको भी आना चाहिए'—माधवन ठेकेदार ने कहा।

'किसलिए ?'

'पेशकार और दीवानजी से भेंट करके अपनी अर्ज़ी पेश करने के लिए।'

'आप लोगों के साथ आऊँगा; बात भी कहूँगा, लेकिन इन सबके लिए खर्च भी होता है।'

'खर्च तो होगा ही। हर एक को अपना-अपना खर्च वहन करना चाहिए।'

'मुझे अब सड़क और पुल की ज़रूरत नहीं है। सड़क और पुल पर चलने वाले मिलकर जायँ। मुझे दूसरा काम है।' वह चला गया।

माम्मन मालिक ने उठकर कहा : 'सड़क और पुल हमें चाहिए ही। निवेदन करने के लिए मैं भी साथ आऊँगा। पैसे के लिए मुसीबत का समय है। फिर भी खर्च उठाऊँगा, लेकिन इसमें यदि गांधी या कांग्रेस हुए तो मैं नहीं आऊँगा।'

'इसमें गांधी और कांग्रेस का क्या काम है साहब ?' ठेकेदार ने पूछा।

'सुकुमारन नायर जी गांधी धोती पहनते हैं न ? गांधी धोती पहनकर वहाँ बात करने जायँ तो सड़क और पुल दोनों नहीं मिलेंगे; हमें पकड़कर जेल में बन्द भी कर देंगे।'

उस कथन में कुछ सचाई थी। खद्दर पहनना भी उस समय सरकार के खिलाफ़ माना जाता था। अंग्रेज ईसाई होने के कारण अंग्रेजी शासन का विरोध करना धार्मिक द्रोह है, ऐसा इस राज्य के ईसाई लोग विश्वास

करते थे। इसलिए सुकुमारन नायर ने उठकर कहा : 'पुल और सड़क बनाना ही हमारी आवश्यकता है। मेरी उपस्थिति उसके लिए बाधक नहीं होनी चाहिए। इस तरह से मैं इस निवेदन-समिति से बाहर हुआ जाता हूँ।'

अच्छा न लगने पर सबने यह मान लिया।

× × ×

निवेदन के फलस्वरूप सरकार की ओर से सड़क पर पत्थर डालने और पक्का पुल बनाने की स्वीकृति मिल गई। दोनों की ठेकेदारी माधवन ठेकेदार को ही मिल गई।

काम शुरू हो गया। पहले सड़क का काम शुरू हुआ। सड़क का काम पूर्ण होने पर उस सड़क से पुल बनाने का सामान लादकर उस गाँव में पहली बार एक लारी भरभराती हुई आई। स्त्रियाँ और बच्चे सब-के-सब लारी देखने के लिए खुशी के साथ दौड़े आए। बाद में रोज़ लारियाँ और इंजीनियर की मोटर भी वहाँ आने लगी।

इस प्रकार पुल का काम भी पूर्ण हो गया। नायर-ईषवा-दंगे में तोड़े गए पुल के स्थान पर ही नया पुल बनाया गया था। उस पुल के टूटने के साथ-साथ अनेक पीढ़ियों से चले आने वाला एक सामाजिक सम्बन्ध, जो अन्धविश्वास और उच्च-नीच भाव की नींव पर बना था और सड़ने लगा था, टूट गया। उसके बाद उसी स्थान पर एक दूसरा सामाजिक सम्बन्ध बना। एक मजबूत और विस्तृत पुल। केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, गाड़ियों के लिए भी यातायात के योग्य था वह नया पुल।

मंत्री महोदय द्वारा पुल का उद्घाटन करवाने का निश्चय किया गया। उनसे अनुकूल जवाब भी मिला। मंत्री महोदय का गंभीर स्वागत करने की तैयारियाँ शुरू हुईं। सड़क पर कई स्थानों को तोरण बाँधकर अलंकृत किया गया। सड़क के पास के घरों के आगे पंडाल बनाकर सजाया गया तथा दीपक और धान रखने का प्रबंध किया गया। पुल के पूर्वी भाग में एक विशाल सभा-मंडप और एक भाषण-वेदी सजाई

गई ।

दोपहर होते ही आस-पास के लोगों की मुक्कोणक्करा मे भीड लग गई—मंत्री तथा नया पुल दोनों को देखने के लिए सडक पर बहुत भीड जमा हो गई । सभा-भवन मे भी भारी भीड जम गई ।

चार बजने पर मत्री जी की मोटर मुक्कोणक्करा के मार्ग मे पहुँची । उस मोटर का अनुगमन करने वाली दस-बारह मोटरें और थी—अन्य अधिकारियो की मोटरें । पडाल डालकर सजाए गए घरो के बाहर रुकते-रुकते पांच बजते-बजते मत्री जी की मोटर ने सम्मेलन के मंडप मे प्रवेश किया । लोगो ने महाराजा और मत्री महोदय का जय-जयकार किया । मत्री महोदय वेदी पर आए । मालाएँ पहनाई गई । वे बैठ गए । पुल का उद्घाटन करने के लिए महान् अतिथि से प्रार्थना करते हुए भास्कर कुरुप ने छोटा-सा भाषण दिया । मत्री महोदय ने अपने उद्घाटन-भाषण मे प्रजावत्सल पूज्य महाराजा के गुणो का वर्णन किया और वायदा किया कि यदि प्रजा पूर्णरूप से राजभक्त बनी रहे तो राज्य का ऐश्वर्य और समृद्धि बढती ही रहेगी । उसके बाद मत्री महोदय ने औपचारिक रूप से पुल का उद्घाटन किया ।

दिवाकरन ने मत्री महोदय के प्रति कृतज्ञता प्रकट की । नायर-ईषवा-दगे का स्मरण दिलाते हुए उसने कहा कि यदि समाज मे समता होगी तभी परस्पर सौहार्द टिक सकेगा । आशान और वल्लत्तोल की कविताओ का उद्धरण देते हुए जाति के नाश के लिए उसने जोरदार तर्क दिया । अन्त मे अपना भाषण समाप्त करते हुए उसने गाया—'परस्पर विरोध न करो, भिन्न-भिन्न वर्ग सभी एक ही धागे मे पिरोए पुष्प है ।'

कल्याणी और यशोधरा भाषण सुनने गई थी । उनके लौटकर घर जाते समय कल्याणी ने कहा : 'पिता के समान पुत्र भी है । चलना, खडे होना, बातें करने समय हाथ उठाना, सब-कुछ उसी प्रकार ही है । वे अगर यहाँ होते तो···'

कल्याणी के मुख पर दुःख छा गया। यशोधरा ने पूछा : 'पिताजी इन सबके खिलाफ़ थे न माँ ?'

खिलाफ़ होते हुए भी बेटे को मंत्री महोदय के साथ खड़े होकर भाषण देते हुए देखते तो पसंद नहीं आता क्या बेटी ?'

'यह ठीक है।'

× × ×

सुदर्शन की पंसारी की दुकान पर शहर के दाम पर माल मिलता था। इसके कारण छोटे-छोटे पंसारी व्यापारी सुदर्शन की दुकान से ही माल खरीदा करते थे। इतना ही नहीं, अन्य दुकानों में मिलने वाला सब सामान भी सुदर्शन की दुकान मे मिल जाता था। संक्षेप में, शहर में जाने से मिलने वाली कई चीज़ें सुदर्शन की दुकान में मिलने लगीं। इस प्रकार उसने व्यापार में बड़ी जल्दी प्रगति पा ली।

बाज़ार के पास उसने एक ज़मीन खरीदी, उसमें सारी सुविधाओं से युक्त एक घर बनवाया। यशोधरा के साथ उसने वहाँ रहना भी शुरू कर दिया। दिवाकरन के बहनोई के नाते उसका सम्मान भी बढ़ा।

कल्याणी ने जिद्द की कि वासु और दिवाकरन को विवाह कर लेना चाहिए। दिवाकरन ने दृढ़ता से यह कहकर टाल दिया कि विवाह के बारे में सोचने के लिए समय नहीं है। क्योंकि उससे गुरुतर अनेक काम अभी बाकी हैं।

वासु की विवाह करने की इच्छा थी। कई प्रस्ताव भी आए थे। पर वासु को एक भी पसन्द नहीं आया—'या तो रुपया चाहिए या फिर रूप चाहिए।' विवाह के सम्बन्ध में वासु का यही नारा था। अब तक जो प्रस्ताव आए थे वे सब न तो पैसे वाले थे, न ही लड़कियों के सौंदर्य से युक्त थे, इसलिए वासु ने किसी को स्वीकार नहीं किया।

उसी समय सिंगापुर में रहने वाला नाणु गाँव में आया। बेटी नलिनी का विवाह तय करने के लिए वह आया था। वह जानता था कि बेटी में सौन्दर्य न होने के कारण उसे देखकर कोई भी उससे विवाह

नहीं करेगा। इस वजह से विवाह करने वाले लड़के को एक बड़ी रकम, एक घर तथा अहाता दहेज के रूप में देने की उसने घोषणा की। वह संदेश-वाहक के माध्यम से पहले दिवाकरन के पास गया। पन्द्रह तोले स्वर्ण, तीन हजार रुपये, घर जमीन—इतना था दहेज। वासु सहमत हो गया।

विवाह की तिथि निश्चित होने पर, बात बताने के लिए कल्याणी मंगलश्शेरी गई। अन्न कूटने की कोठरी में सुमती अम्मा सारा शरीर ढके बैठी थी। उसके पूरे शरीर में फिरंगी-रोग फैल गया था। कल्याणी ने उसके मुख पर ध्यान से देखकर पूछा : 'क्यों छोटी मालकिन ! मुख पर सूजन कैसी है ?'

'ओह ! जुकाम है कल्याणी।'

कल्याणी को विश्वास नहीं हुआ। उसने कुछ सुन रखा था। लेकिन उसने कुछ जानने का भाव प्रकट नहीं किया। उसने पूछा : 'छोटे मालिक जेल से कब आयेंगे, छोटी मालकिन ?'

'आने वाले हैं, ऐसा राजशेखरन से भास्कर कुरुप ने कहा था।'

'छोटे मालिक के आने के बाद वासु का विवाह हो सकेगा क्या ?'

'वासु का विवाह निश्चित हो गया ?'

'हाँ। सिंगापुर के नाणु की बेटी है। दस-पंद्रह तोले सोना, दो-तीन हजार रुपए, घर और अहाता देने का वादा किया है

'अच्छा हुआ कल्याणी। इतने समय तक विवाह न करने से अब एक धनवती तो मिल गई न।'

'छोटी मालकिन से छः महीने छोटा है वासु'—भूतकाल की ओर मुड़कर देख रही थी कल्याणी। 'उसके जन्म के समय उसके बाप खेत में थे। जब तकलीफ़ शुरू हुई तो बड़ी मालकिन दाई को बुलाने के लिए आदमी भेजकर हमारे घर में चली आई थीं। दाई के आने तक बड़ी मालकिन मेरे पास बैठी रही···बच्चा होते ही उसे सबसे पहले बड़ी मालकिन ने ही उठाया था···'कल्याणी की आँखों में आँसू भर आए। उसका कंठ गद्गद्

हो उठा—'बड़े मालिक, उसे छोटा कुञ्ञन कहकर पुकारते थे।'

सुमती अम्मा दूर की तरफ़ देखते हुए चुपचाप बैठी रही। कल्याणी ने अवरुद्ध कंठ के साथ कहा—तीनों बच्चों को मैंने केवल जन्म दिया था—छोटी मालकिन, बड़ी मालकिन और बड़े मालिक ने ही उनको पाला-पोसा और पढ़ने भी भेजा था। आज अब ···'—वह फूट-फूटकर रो पड़ी।

दूर से अपनी दृष्टि को न हटाते हुए सुमती अम्मा ने कहा : 'पहाड़ हो तो गड्ढे भी हैं कल्याणी।'

कल्याणी को लगा, उन आँखों में अलौकिक शांति खेल रही थी।

× × ×

वासु का विवाह हो गया। विभिन्न जाति और धर्म के लोगों ने विवाह में भाग लिया। नव दम्पति के स्वागत के लिए कुञ्ञन का घर भी सजाकर तैयार किया गया था। वासु ने नलिनी का हाथ पकड़कर घर में प्रवेश किया।

– मंगलश्शेरी की उत्तरी बाड़ के ऊपर से वसुमती ने झाँका —नव-वधू को एक बार देखने के लिए।

नववधू के साथ आई एक स्त्री ने पूछा : 'मंगलश्शेरी में अब भी लोग रहते हैं क्या ?'

वही खड़ाऊँ की आवाज !—रास्ते से वह आवाज़ दूर चली गई।

२६. संन्यासी और सुमती अम्मा

फसल कट गई। मंगलश्शेरी की बैठक के दक्षिणी भाग में बखारी के सामने फसल के छोटे-छोटे गट्ठे बांधकर आंगन में लाकर रखे गए —मानो हाथी की जगह मच्छर को बैठाया गया हो।

पहले फसल की कटाई खत्म होने के बाद सारा भूसा ढेर लगाकर रखने तक रास्ते वालों को मंगलश्शेरी घर नहीं दिखाई पडता था। एक के ऊपर एक, घर के चारों ओर गट्ठे रखे रहते थे। कटाई और कुचलने के समय वहां एक मेला हो जाता था।

कण्डम्पुलयन उस समय के पुलयों का मुखिया था। उसके पहले उसके पिता भी वह काम संभालते थे। मंगलश्शेरी में कृषि न होने पर कण्डम्पुलयन, कुञ्जुवरीत और दूसरों के कृषि का काम ले लेने के लिए बाध्य हो गया था। लेकिन कण्डम्पुलयन कहा करता है—'मंगलश्शेरी में कृषि न होने के बाद मैं दस गट्ठे झोंपडी में नहीं ले जा सका हूं।'

राजशेखरन के द्वारा खेती शुरू करने पर कण्डम्पुलयन संतुष्ट हुआ। दस गट्ठे मंगलश्शेरी से ले जाने की बात से नहीं, बल्कि यह सोचकर कि मंगलश्शेरी के आंगन में पुलयों का मुखिया होकर गट्ठे कुचल सकेगा। यही उसके आनन्द की बात थी। कटाई के दिन दूसरे कामों को छोडकर कण्डम्पुलयन, अय्यप्पचचोवन और पप्पुच्चोवन मंगलश्शेरी वालों का खेत काटने के लिए पहुंचे।

खेत के गट्ठर लाकर आंगन में डालकर कण्डम्पुलयन ने आकाश की ओर देखकर गहरी सांस ली। अय्यप्पचचोवन ने पूछा : 'क्यों कण्डम्पुलयन, गहरी सांस क्यों छोड़ रहे हो?'

'यह भी देखना पड़ा ऐसा सोचकर···'

'जहां बकरी रहती थी, वहां रोम पड़ी है, यही ना?'

'बड़े मालिक और मालकिन के समय की कटाई और कुचलने के समय एक मेला-जैसा लगता था—मेला। पहाड़ों जितनी ऊँचाई तक गट्ठर लाकर इकट्ठे करते थे। दिन और रात यहाँ रहकर कुचलने पर भी धान पेटी में पहुँचने के लिए एक महीना लगता था। अब तो···'

भूतकाल की ओर दृष्टि डालते हुए बूढ़े पप्पुच्चोवन ने कहा : 'मालिक उस आराम-कुर्सी पर बैठकर पान खाते थे। कुञ्ञन देख-रेख करने वाला था और कण्डम्पुलयन था मुखिया पुलयन।'

'कुञ्ञुच्चोवन के जाने के बाद ही गिरावट शुरू हुई—' कण्डम्पुलयन ने कहा।

'उसके देहली लांघते ही लक्ष्मी रूठ गई। उसके बाद ही मार-पीट, झगड़ा और मुकदमा सब-कुछ शुरू हुआ था'—अय्यप्पच्चोवन ने कहा।

'कुञ्ञुच्चोवन के जाने का कारण क्या है ?'—कण्डम्पुलयनि ने पूछा—

'क्या कहा जाय कण्डम्पुलयन ! झूठ बात सही जा सकती है क्या ? उसकी गोद में लेकर खिलाए बच्चे हैं वे छोटी मालकिनें। वे उसकी औरतें है कहे तो कैसे सहा जा सकता है ?'

'ऐसी झूठ बात फैलाने वाले शरीर मे कीड़े पड़कर मरेंगे।' कण्डम्पुलयन ने शाप दिया।

'कीड़े पडकर मरना देखना है तो पच्चार्षा में जाओ। फिरंगी-रोग के घावों में कीड़े पड़कर लेटी है वह झोंपड़ी मे।'

बूढ़े पप्पुच्चोवन ने एक दार्शनिक चिन्तक के भाव से कहा : 'अब यह सब क्यों कहते हो अय्यप्पा ? लक्ष्मी भी मनुष्य के लिए अस्थिर है, रामायण मे ऐसा कहा गया है न ?'

वसुमती बैठक के बरामदे से यह सब सुन रही थी। वहां से वह उठकर चली गई।

किसान गृहस्वामी के जैसा राजशेखरन फाटक के अन्दर आया।

× × ×

बीज और मजदूरी के बाद बचा हुआ धान का आधा हिस्सा राज-शेखरन ने माँ को दिया और कहा : 'अब मुझसे कुछ मत माँगना।'

'इससे क्या खर्च पूरा होगा बेटा ?'

'न पूरा हो तो न हो' उसने काटने के जैसे जवाब दिया।

आगे कुछ विरोध में कहने का सरोजिनी अम्मा को साहस नहीं हुआ।

राजशेखरन खानदान की ज़मीन पर खेती करता है और फल भी पाता है लेकिन खेती-बाड़ी में उसकी उतनी अधिक रुचि नहीं है। व्यापार में उसका ध्यान अधिक है। उसके व्यापार में भी एक नवीनता है। वह रोज़ घर-घर जाता। किसी भी घर में कुछ बेचने के लिए होता तो वह उसे खरीद लेता। जो कुछ खरीदता उसे दुगुने दाम पर बेचने की उसमें क्षमता है। दो या तीन अथवा चार रुपयों से ज़्यादा का व्यापार नहीं है, इतना ही बस।

राजशेखरन केवल एक व्यापारी नहीं है। मंगलश्शेरी खानदान के पुराने प्रताप और आभिजात्य का गौरव उसे प्राप्त है। मंगलश्शेरी खान-दान का छोकरा जाति-धर्म आदि भेद-भाव के बिना सभी घरों में जाता है और सभीके साथ समान रूप से व्यवहार करता है, इस वजह से गाँव वालों की सहानुभूति उसे मिल गई। काली मिर्च, नारियल, कटहल, आप, घुइयाँ, कचालू, अंडा, छोटी-छोटी मुर्गी—इतना ही नहीं जो भी बिकने के लिए होता, सब वह खरीद लेता। लेकिन उसका खरीदने का दाम है—'हाथी के लिए आधा पैसा' और बेचने की कीमत है 'गुंजा के लिए एक ढेर पैसा'। कुछ घरों से जो कुछ खरीदता, उसे दूसरे घरों में बेचता है। घरों में जो कुछ नहीं बिक पाता, उसे बाजार में ले जाकर बेचता है। वहाँ भी न बिकने पर शहर के बाज़ार में ले जाता है। किसी-न किसी प्रकार यदि रोज चार-पाँच रुपए न कमा लेता तो राजशेखरन को नींद नहीं आती। किसी-किसी दिन उसे पाँच और छः रुपयों की भी आमदनी हो जाती।

'कमाई करना पुण्य और खर्च करना पाप है।'—यही है राजशेखरन का सिद्धान्त। भूख-प्यास से तड़पने पर भी एक प्याला चाय खरीदकर नहीं पीता है। वह कहीं भी जाय, घर में वापस आने के बाद ही भोजन करता है। घर से जो कुछ भी मिलता है, खा लेता है। कञ्जी, कन्द-मूल, रतालू, घुइयाँ—जो कुछ भी हो—पेट-भर मिलना चाहिए, बस। घर मे भूखे आने पर भोजन न तैयार हुआ तो रसोईघर में जाकर खाना पकाने में सहायता करने के लिए भी वह तैयार रहता है।

राजशेखरन की दूसरी विशेषता यह है कि वह दूसरे किसी घर में भोजन नहीं करता। केवल खानदान का अभिजात्य ही उसका कारण नहीं है। बिना लिहाज़ किये कीमत लेना है तब अहसान न लेना उसके व्यापार की एक ज़रूरत भी है।

प्राय: सभी गाँव वालों की राजशेखरन के बारे में अच्छी राय बन गई। बाज़ार में से प्रकट हुआ एक मत इस प्रकार है—'बच्चा होने पर भी बड़ा होशियार है।'

इतने बचपन में ही इतनी होशियारी दिखाने के कारण दूसरे एक आदमी को ईर्ष्या और उत्कंठा हुई। उसने तमिल मे अपनी उत्कंठा प्रकट की थी—'अभी ऐसा है तो बड़ा होने पर कैसा होगा ?'

'लक्षण तो ऐसा लगता है कि यह बच्चा गांव-भर को अधीन करेगा।' यह था दूसरा मत।

'मंगलश्शेरी खानदान पुण्य वाला है। एक मूल का रहना काफी है, उससे अंकुर फूटेगा'—यह एक दूसरा मत था।

भास्कर कुरुप कोई राय नहीं प्रकट करता। एकान्त में राजशेखरन को देखकर कुरुप पूछता कि उसे कोई सहायता चाहिए। राजशेखरन कहता : 'कुरुप भैया को कुछ बेचना हो तो मुझसे कहना। कुछ खरीदना हो तो भी मुझसे कहना—यही सहायता है।'

भास्कर कुरुप वैसा ही करता है।

विद्यालय, डाकघर तथा जिला कचहरी के पास मंगलश्शेरी वालों

की थोड़ी ज़मीन और उसमें एक छोटा घर भी है। पद्मनाभ पिल्लै के पिता ग्रामाधिकारी नारायण पिल्लै ने वह छोटा-सा घर बनवाया था। घर में न ले जाने योग्य अतिथियो के आ जाने पर उनका सत्कार करने के लिए बनवाया था। कभी ग्रामाधिकारी नारायण पिल्लै वहाँ जाकर विश्राम भी करते थे। ग्रामाधिकारी की मृत्यु के बाद वह घर काम में नहीं आता था।

राजशेखरन ने उस घर को खोलकर झाड़ू लगाकर साफ़ किया। आँगन की घास काटकर सफ़ाई की। रोज़ वह अन्य घरों से खरीदकर लाई चीज़ें उस घर में रखता था। मंगलश्शेरी से रुपए की संदूकची और बिस्तर आदि वह उस छोटे घर में ले आया। वह वहीं बैठने और सोने लगा। केवल भोजन करने और खानदान की खोज-खबर रखने के लिए ही वह मंगलश्शेरी जाता था।

उसने एक बैलगाड़ी खरीद ली। दो अच्छे बैल भी खरीदे। खेती के समय उन बैलों को जोतने के काम में लाता है। खेती में ज़रूरत न होने पर गाड़ी में जोतता है। फिर गाँव से खरीदा गया सामान वह शहर में ले जाकर बेचने लगा। सामान भरकर जाने वाली यह गाड़ी, शहर से खाली लौटती थी।

एक दिन शहर से लौटकर आने पर भी उसमें सामान ऊपर तक भरा था। जो ले गया था वह सामान नहीं, शहर से खरीदकर लाया हुआ माल था। एक छोटी पंसारी की दुकान शुरू करने की चीज़ें उसमें थीं।

दूसरे दिन वह छोटा घर एक पंसारी की दुकान के रूप में बदल गया। घर के जैसी सुविधाएँ होने के कारण सामान्य अच्छे परिवार की स्त्रियाँ भी वहाँ आकर चीज़ें खरीद और बेच सकती थीं। इस प्रकार राजशेखरन की दुकान स्त्रियों की दुकान बन गई। लेकिन रोज दोपहर के बाद ही यह दुकान खुलती है। दोपहर तक राजशेखरन खेती के काम-काज में समय लगाता था। खेती का काम न होने पर घरों में जाकर

व्यापार करता था।

× × ×

उस गाँव में कोई नहीं रोया। यह खबर सुनने पर किसी ने सहानुभूति भी नहीं प्रकट की। कीड़ा पड़कर जिसे मरना चाहिए था, वह कीड़ा पड़कर मर गई—ऐसी थी पच्चाषी की देवकी अम्मा की मृत्यु पर गाँव वालों की प्रतिक्रिया।

'झूठी बात बनाकर कुञ्ञन को गाँव से भगाने वाली है न वह!' —बाजार से एक ने पूछा।

'अपने बेटे को गाँव से भगाने वाली थी वह'—दूसरे ने स्वर में स्वर मिलाकर कहा।

सुनते खड़े दूसरे एक आदमी ने धीरे से कहा : 'सुना है कि मंगलश्शेरी की सुमती अम्मा को भी यही बीमारी है।'

'ठीक है क्या?'

'ऐसा कुछ कहते हैं। 'स्त्रीणां च चित्तम्' ऐसा पुराने ज़माने के लोग कहा करते थे न?'

'वह है न—वह कुट्टप्पणिक्कर—उसे मारकर भूसा भर देना चाहिए। अगर इस गाँव की भलाई चाहते हो तो।'

इस प्रकार बाज़ार में बहुतों ने अनेक प्रकार की बातें कहीं।

मंगलश्शेरी की दहलीज पर खड़ी वसुमती से रास्ते में जाने वाली एक स्त्री ने कहा कि पच्चाषी की देवकी अम्मा मर गई। वसुमती ने दौड़कर माँ से कहा। सुमती अम्मा यह सुनकर चौंक पड़ी।

यह सुनकर खड़ी सरोजिनी अम्मा ने कहा : 'आगे तेरी माँ भी कीड़े पड़कर मरेगी···उसी की बीमारी है न इसको भी।'

बैठी हुई सुमती अम्मा पीछे गिर पड़ी।

× × ×

आधी रात हो गई। सुमती अम्मा अन्न कूटने वाली कोठरी में पीठ के बल लेटी हैं। वह सोई नहीं हैं। झपकियाँ ले रही हैं।

खट् खट् खट् खट् ··दूर से वही खड़ाऊँ की आवाज़ पास आ रही है। सुमती अम्मा चौंककर बैठ गई। खडाऊँ की आवाज़ दहलीज पार करके उस कोठरी के पास पहुँची। सुमती अम्मा कोठरी से बाहर निकली। उन्होंने गंभीरता से पूछा : 'कौन ?···बताओ कौन हो···नही बताया तो···'

'श् श् श् ! धीरे···मै हूँ—मैं'—सन्यासी फुसफुसाया।

'कौन ? कुञ्जन है क्या ?··· कुञ्ञा !···'

'श् श् श् ! धीरे बोलो, छोटी मालकिन···आ—छोटी मालकिन आ !'—कुञ्जन पश्चिमी अहाते की ओर चला। सुमती अम्मा ने उसका अनुगमन किया।

अच्छी चाँदनी का प्रकाश है। पश्चिमी अहाते मे सघन काली मिर्च के पौधे, आम तथा छोटी झाडियों के बीच कुञ्जन खडा हो गया। उसने कहा · 'छोटी मालकिन बैठो। कुञ्जन यही खडा रहेगा।'

'मैं बैठूंगी। कुञ्जन तुम भी बैठो। फिर···'

दोनों बैठ गए। सुमती अम्मा ने कहा : 'मुझे पहले ही सदेह हुआ था कुञ्ञा !'

'कैसे ?'

'दीदी की मृत्यु के दिन रात को कुञ्जन चिता के पास खड़े थे न ?'

'हाँ।'

दूसरे दिन रात को बैठक मे आकर भैया की आराम-कुर्सी के पास नमस्कार किया था न ?'

'हाँ।'

'फिर यशोधरा के विवाह के समय इस रास्ते से गए थे न ?'

'हाँ।'

'वासु के विवाह के बाद वधू को लिवा लाने के समय इस रास्ते से गए थे न ?'

'हाँ।'

'फिर कैसे संदेह नही होता ?'

'और किसी को संदेह है क्या, छोटी मालकिन ?'

'पता नही।...कुञ्जन साधु क्यो बन गए ? कुञ्जन यहाँ से क्यों चले गए थे ?'

'यहाँ से क्यो गया ?...यहाँ से गया...'—कुञ्जन के गले में शब्द रुँध गए।

'हममे से किसी ने कुछ नही कहा था न कुञ्जा। किसी ने कही बैठकर कुछ कहा तो उसमे हमारी गलती है क्या ?'

'नही छोटी मालकिन—किसी के कहने-सुनने से मैं नही गया था... नही —छोटे मालिक और छोटी मालकिन ने कुछ नही कहा'—बाध फूटकर बहने के समान कुञ्जन लगातार बोलता गया। उसने आगे कहा : 'मैं यहाँ से इसलिए गया था कि छोटे मालिक और छोटी मालकिनो ने कुछ नही कहा था।'

सुमती अम्मा कुछ कहने वाली थी। कुञ्जन ने उन्हे रोकते हुए कहा —'नही छोटी मालकिन कुछ मत पूछिये। मै ही सब-कुछ बता दूंगा... उस दिन सवेरे मै आया तब मुझे देखते ही छोटी मालकिनें अन्दर क्यो चली गई ?...मेरे छोटे मालिक मुझे देखने पर सिर झुकाकर क्यो रोये थे ? मै...मै...'—कुञ्जन का कंठ अवरुद्ध हो गया। आँखो मे अश्रु-धारा बहने लगी। फिर भी शब्दो का प्रवाह रुका नही—'इस खानदान मे इधर-उधर भटकता हुआ भिखमगे के जैसे आया था कुञ्जन। यह खाल, यह मास, यह रक्त सब यही का है। यही का न होकर कुञ्जन कुछ भी नही है...'

सुमती अम्मा फिर कुछ कहने वाली थी।

कुञ्जन ने रोकते हुए आगे कहा : 'छोटे मालिक और छोटी मालकिनों को गोद मे बैठाकर कुञ्जन ने पाला था...फिर कुञ्जन को देखकर छोटे मालिक और छोटी मालकिने...'—कुञ्जन फूट-फूटकर रो पडा।

सुमती अम्मा मुख छिपाकर सिसक-सिसककर रोने लगी। रोना बंद करके कुञ्ञन ने कहा : 'यह मेरा खानदान है···कल्याणी और बच्चे नहीं, छोटे मालिक और मालकिनें मेरे खानदान की है।'

सुमती अम्मा ने गद्गद् स्वर मे कहा : 'माफ़ करो कुञ्ञा—माफ़ करो। कुञ्ञन के जाने के बाद···'

'कुछ मत कहिए छोटी मालकिन। मैं सब-कुछ—सब-कुछ—जान गया हूँ।'

'कुञ्ञन इतने समय तक कहाँ रहे? कुञ्ञन संन्यासी क्यों बन गए?'

'क्यों? इसलिए···'

मंगलश्शेरी से जाने के बाद की पूरी कहानी कुञ्ञन ने संक्षेप मे कही।

'इधर-उधर भटकते हुए कहीं जाकर मरने के लिए मैं यहाँ से गया था'—इस प्रकार कुञ्ञन ने कहानी शुरू की।

कहीं पड़कर मरने के लिए कुञ्ञन केरल में कई स्थानों पर भटकता फिरा। भिक्षा माँगने की सुविधा के लिए धोती को गेरुवे रंग में रँगकर पहना। मरने के पहले मोक्ष के माग का उपदेश पाने के लिए एक गुरु मिले, यह भी कुञ्ञन की इच्छा थी।

इस प्रकार जाते-जाते एक छोटे गांव मे पहुँचा। एक मंदिर के सामने बरगद के पेड़ के नीचे के चबूतरे पर एक नग्न साधु बैठा सुना। उस दिगम्बर साधु से मोक्ष मार्ग जानने की उम्मीद में कुञ्ञन वहाँ पहुँचा। जब वह पहुंचा कुछ भक्तजन वहाँ एकत्रित थे। उनसे जाना कि साधु दिगम्बर और मौनी है। कुञ्ञन समाधिस्थ साधु के सामने जाकर बैठ गया।

भक्त लोगों के जाने के बाद साधु ने आंखें खोलीं। उसने कुञ्ञन से शारे से पूछा कि वह क्यों इस प्रकार बैठा है। कुञ्ञन ने विनयपूर्वक

प्रार्थना की कि उसे मोक्ष पाने का उपदेश दे। साधु ने एक हाथ की मुट्ठी बांधकर फिर एक उँगली उठाकर दिखाई और वैसे ही इशारे से पूछा कि समझ गया। कुञ्जन ने कहा कि वह समझ नहीं पाया। साधु ने एक और उँगली उठाकर दिखाई। कुञ्जन ने कहा कि वह समझ नहीं पाया। साधु ने फिर एक और उँगली उठाकर कुञ्जन की नाक की ओर दिखाई। कुञ्जन ने तब भी कहा कि वह समझ नहीं पाया। साधु को क्रोध आ गया। उसने संकेत में कुञ्जन से वहाँ से उठकर जाने को कहा। कुञ्जन उसकी धमकी को माने बिना वहीं बैठा रहा।

भक्तों द्वारा भेंट किये गए सब रुपये साधु ने एकत्र करके थैली में रख लिए। फिर भक्तों के द्वारा दिये गए फल और दूध खा-पी लिया। कुञ्जन वहाँ बैठा है, इस पर भी साधु ने ध्यान नहीं दिया। दूध और फल खाकर साधु फिर समाधिस्थ हो गया। कुञ्जन ने उठकर घर-घर जाकर भिक्षा माँगकर भोजन किया। वह फिर बरगद के नीचे पहुँचकर साधु के पीछे छिपकर बैठ गया।

रात को कुञ्जन चुपचाप बरगद के नीचे ही सोया। आधी रात बीतने पर वह लघुशंका के लिए उठा। उठकर देखने पर साधु नहीं दिखाई दिया। कहाँ है, यह जानने के लिए वह बिना सोये प्रतीक्षा करता रहा। सबेरा होते ही श्वेत वस्त्र पहने एक आदमी को आते देखकर कुञ्जन सोने के भाव से लेटा रहा। वह नग्न मौनी साधु बरगद के नीचे आकर कपड़े उतारकर उन्हें तह करके झोले में रखकर फिर ध्यान-निमग्न हो गया। कुञ्जन को लगा कि वहाँ शराब की गंध फैली है।

दूसरे दिन भी भक्त लोगों ने आकर इस अवधूत योगी को दूध, फल तथा रुपये भेंट में दिए। कुञ्जन ने भीख माँगकर भोजन किया। फिर वहीं आकर बैठ गया लेकिन वह सोया नहीं। सोने का अभिनय करके लेटा रहा।

बहुत देर के बाद वह साधु उठकर देर तक कुञ्जन को देखता खड़ा रहा। फिर थैली से श्वेत वस्त्र निकालकर पहन लिए। थैली से रुपये

लेकर चमड़े की म्यान से एक कटार निकालकर खोंसते हुए वह बरगद के नीचे से चला गया। साधु के कुछ दूर पहुँचने पर कुञ्जन भी उठकर चल दिया। साधु एक गली में मुड़ गया। कुञ्जन ने अनुगमन किया। इस प्रकार बहुत दूर तक चलने पर कुञ्जन को खांसी आ गई। दबाने पर भी न दबने से उसने खाँसा।

तुरंत साधु घूमकर खड़ा हो गया। कुञ्जन भी खड़ा हो गया। साधु ने कुञ्जन के पास जाकर उग्र स्वर मे पूछा : 'तुम कौन हो ?'

मै हूँ गुरुजी'— कुञ्जन न विनय भाव से उत्तर दिया।

'तू है क्या ? तू मेरे पीछे क्यो आया ?'

'गुरु के पीछे जाने पर मोक्ष का मार्ग देख सकूँगा, इस विचार से आया था।'

'तो तुझे अभी मोक्ष का मार्ग दिखाता हूँ!'—साधु कुञ्जन को कटार दिखाकर आगे बढ़ा।

कुञ्जन अपने स्थान से नही हटा; उसने कटार के साथ गुरु के हाथों को दबाकर पकड़ लिया। साधु के हाथो को बलपूर्वक पीछे की ओर ले जाते हुए कुञ्जन ने पूछा : गुरुजी, क्या यही मोक्ष का मार्ग है ?'

साधु वेदना को न सह पाने से चिल्ला उठा। हाथ को छुड़ाने का उसका सारा प्रयत्न निष्फल हो गया। कुञ्जन ने साधु को पीछे धकेला। साधु पीठ के बल गिर पड़ा। कुञ्जन ने उसके सीने और पेट पर पाँच-छ बार पैर से प्रहार किया और दूर गिरी हुई कटार उठाकर चला गया। कटार एक तालाब मे फेककर कुञ्जन उस गाँव से भी चला गया।

फिर उसने कई गाँवो की यात्रा की—तमिलनाड, तेलंगाना—सब कही गया लेकिन कुञ्जन हमेशा अस्वस्थ और दुखी रहा। वह सुमती अम्मा से कह रहा था—'मुझे हमेशा यहाँ की चिंता थी।—मेरे छोटे मालिक और मेरी छोटी मालकिन···बड़ी मालकिन ने मरने के पहले मुझसे कहा, कुञ्जा मेरे बच्चो को देखना···लेकिन मै सब छोड़कर

चला गया ! यही चिन्ता थी मेरी ।'

बाँसों के फटने के समान भर्राये कंठ से सुमती अम्मा ने कहा . 'कुञ्ञन के जाने के बाद इस खानदान का नाश हुआ ।'

'नाश हुआ, छोटी मालकिन—नाश हुआ । मैं होता तो खानदान की संपत्ति का नाश नहीं होता । मैं होता तो झगड़ा-वगड़ा नहीं होता । मैं होता तो मेरे छोटे मालिक को जेल नहीं जाना पड़ता···मैं होता तो मेरी छोटी मालकिन की इस प्रकार की स्थिति नहीं होती ।'

सुमती अम्मा चौंककर काँप गई । उन्होंने पूछा : 'केवल मेरा ही नहीं—इस पूरे खानदान का नाश हुआ है न ?'

तुरंत कुञ्ञन का भाव बदल गया । उसने गंभीर स्वर में कहा : 'छिपाइये मत, छोटी मालकिन—छिपाइये मत । मैंने सब-कुछ जान लिया ।···फिर भी···फिर भी—खानदान का नाश होने पर भी, मटक-कर भोजन करने पर भी—वैसा नहीं करना चाहिए था ।'

'क्या ? क्या नहीं करना चाहिए था,' सुमती अम्मा ने फिर छिपाने की कोशिश की ।

कुञ्ञन के स्वर में परुषता आ गई । उसने कहा : 'न जाने योग्य स्थान पर नहीं जाना चाहिए; न छूने लायक को नहीं छूना चाहिए; न खाने लायक को नहीं खाना चाहिए···दो छोटी मालकिनें किसी के साथ भाग गईं न ? आपने भी न खाने लायक चीज खाई नहीं क्या ?'

'कुञ्ञा ! कुञ्ञा !'—अपराध-बोध से सुमती अम्मा तड़प रही थी।

'नहीं चाहिए था छोटी मालकिन —वह नहीं चाहिए था । खानदान का नाश होने पर भी वह ऊपर उठ सकता है । बदनामी होने पर क्या फिर मिटाने से मिट जायगी ? छिपाने पर क्या छिप सकेगी ?'

'अपने बेटे के लिए—अपने बेटे के लिए है कुञ्ञा !' सुमती अम्मा फूट-फूटकर रोईं ।

'छोटी मालकिन के बेटे के लिए, छोटी मालकिन के बेटे के बाप को

'''नहीं, मुझसे कुछ मत कहलवाओ !'—कुन्जन ने आसमान की ओर देखा'''

'हाय मेरे भगवान् ! मेरे छोटे मालिक यह जाने तो फिर—मंगलश्शेरी खानदान की छोटी मालकिन को फिरंगी-रोग लग गया तो, मेरे छोटे मालिक'''

देर की चुप्पी के बाद, सुमती अम्मा ने शांत और दृढ़ स्वर में पूछा : 'भैया कब आयेंगे, मालूम है कुन्जा ?'

'दो-तीन दिन के भीतर छोटे मालिक जेल से आयेंगे।'

कुन्जन उठा। सुमती अम्मा भी उठी। कुन्जन ने विदा माँगी—'मैं जाऊँ, छोटी मालकिन ! यह कुन्जन है, ऐसा किसी से मत कहना।'

'नहीं।'

'मैं फिर आऊँगा।'

'हाँ।'

कुन्जन चला गया।

२७. त्याग का अन्त

'हाय रे !' एक चीत्कार !

'हाय रे क्या हुआ ?' ऐसा पूछते हुए वसुमती बरामदे से आँगन में दौड़ती हुई आई। वह पश्चिमी अहाते की ओर दौड़ी। वह दक्षिणी बाड़ के पास वाले कटहल के पेड़ के पास पहुँची, जहाँ सरोजिनी अम्मा गिरी पड़ी थी। कटहल के पेड़ की शाखा पर टँगा हुआ वह अत्याहित उसने देखा—'हाय मेरी माँ !' वह चिल्लाई और गिर पड़ी।

सवेरे उठकर मुर्गीखाना खोलकर मुर्गियों को बाहर छोड़ने गई हुई सारा चिल्लाहट सुनकर बाड़ के पास आई। वह जोर से चीखी—'दौड़कर आओ ! दौड़कर आओ !···कटहल के पेड़ पर कोई फाँसी लगाकर लटका है···दौड़कर आओ ! दौड़कर आओ।'

उत्तरी भाग से कल्याणी बाड़ को तोड़कर दौड़ती हुई कटहल के पेड़ के नीचे पहुँची। वह छाती पीटती हुई चिल्ला उठी—'मेरी छोटी मालकिन !···मेरी प्यारी छोटी मालकिन !···ऐसा धोखा दिया छोटी मालकिन !'

क्षण-भर में पड़ोस के सब लोग कटहल के पेड़ के नीचे आ गए। पेड़ की शाखा पर बँधी हुई रस्सी के छोर पर लटकती हुई मृत देह को सभी ने देखा। कुछ सिसक-सिसककर रोये, कुछ ने आँसू पोंछे; कुछ ने पुराने प्रभाव की स्मृतियों को दुहराया। कुछ मंगलश्शेरी-परिवार के अध.पतन की गहराई में झाँककर नाक पर उँगली रखे खड़े रहे।

'मंगलश्शेरी की सुमती अम्मा फाँसी लगाकर मर गई'—यह खबर प्रभात की शीतल पवन से चारों ओर फैल गई। सुनते ही लोग मंगलश्शेरी की ओर दौड़ पड़े।

नींद से जागकर आँगन में आया हुआ भास्कर कुरुप यह खबर

सुनकर स्तब्ध खड़ा रह गया।

'दौड़कर जा बेटे!' कात्यायिनी अम्मा ने बेटे से कहा।

भास्कर कुरुप ने अन्दर जाकर कपड़े बदले। कुछ रुपये लेकर बिजली की तरह दौड़ा गया। उसके मंगलश्शेरी पहुँचने से पहले ही आँगन और अहाता लोगों से भर चुका था। कल्याणी और यशोधरा, सरोजिनी अम्मा और वसुमती के पास बैठी रो रही है। वासु और दूसरे किसी से कुछ विचार-विमर्श कर रहे है। सारा और बच्चे अलग मौन खड़े हैं। कुञ्जुवरीत ने सारा से धीरे से फुसफुसाकर कहा: 'तुम लोग यहीं खड़े रहो। मैं खेत पर होकर आता हूँ।'

वह चला गया। उसके जाने पर किसी ने ध्यान नही दिया। भास्कर कुरुप ने आते ही दिवाकरन से विचार-विमर्श करके एक आदमी शहर भेजा—पुलिस-स्टेशन में खबर देने।

अपने व्यापार के स्थान में सोता हुआ राजशेखरन सबेरे उठकर व्यापार-सम्बन्धी किसी मामले के लिए पश्चिमी भाग मे गया था। वहाँ उसने सुना कि छोटी माँ ने फाँसी लगा ली है। वह वहाँ से घर पहुँचा। बेहोश पड़ी सरोजिनी अम्म' को हिलाकर उसने पुकारा—'माँ, माँ, माँ!'

सरोजिनी अम्मा ने आँखें खोलीं। भय से विह्वल होकर वह उछल-कर खड़ी हो गई। कटहल के पेड़ की शाखा पर लटकती हुई बहन की मृतदेह की ओर उसने स्तब्ध होकर देखा। किसी उग्र मूर्ति को देखने के समान वह भय से काँपती हुई चिल्लाई: 'नहीं···नहीं···मुझे मुझे मत मारो···मुझे, मुझे, मुझे,···मुझे···'

असह्य पीड़ा के साथ वे पीछे की तरफ भागीं। भास्कर कुरुप, दिवाकरन तथा राजशेखरन पीछे-पीछे दौड़े।

सरोजिनी अम्मा उत्तरी भाग की ओर दौड़ी थी। उन्होंने वासु के कमरे में घुसकर दरवाजे की साँकल लगा ली।

× × ×

दोपहर के पहले ही पुलिस घटना-स्थल पर पहुँच गई। इन्सपेक्टर

की आज्ञा के अनुसार कटहल के पेड़ की शाखा पर बंधी हुई रस्सी को खोला गया। सुमती अम्मा के पैरों ने भूमि का स्पर्श किया। कपड़ों के बीच से एक छोटा-सा कागज़ का टुकड़ा नीचे गिरा। इन्सपेक्टर ने उसे हाथ में ले लिया। राजशेखरन और भास्कर कुरुप ने मृत देह को उठाकर लिटाया।

इन्सपेक्टर ने कागज़ के टुकड़े को खोलकर पढ़ा। उसमें पेंसिल से लिखा था :

'भैया, माफ़ कीजिए—मेरा अपराध माफ़ कीजिए।

मैंने अपने बेटे की पढ़ाई के लिए एक अपराध किया है। मेरे भाई, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए।

मेरी मृत्यु का समाचार मेरे बेटे को मत देना। वह पढ़कर बड़ा आदमी बनेगा। उसके योग्य बनने पर हमारे खानदान की उन्नति करेगा।

अपनी बेटी को ईश्वर के हाथ में सौंपती हूँ।

—छोटी बहन सुमती।'

इन्सपेक्टर ने आँसू पोंछे। भास्कर कुरुप ने वह कागज़ लेकर पढ़ा। सब लोगों ने उस कागज़ में क्या लिखा है, यह जानने की उत्कंठा प्रकट की। दिवाकरन ने वह कागज़ लेकर ज़ोर से पढ़ा। गद्‌गद् स्वर में उसने वह पढ़ा था। सबने आँसू पोंछे। कल्याणी फूट-फूटकर रोई।

भास्कर कुरुप ने सुमती अम्मा के मृत शरीर के पैरों में दण्डवत् नमस्कार किया। उन पैरों पर अपना सिर रखते हुए वह फुसफुसाया : 'माँ—माँ—माँ!'

दो माताएँ मर गईं—दो दिनों के अन्दर। एक माँ कीड़ा पड़कर मरी; दूसरी माँ फाँसी लगाकर मरी।

दोनों माताओं ने व्यभिचार किया था। एक माँ का व्यभिचार देखकर न सह सकने के कारण उस माँ के बेटे ने गाँव छोड़ दिया, दूसरी माँ ने बेटे के उत्कर्ष के लिए उसके अनजाने व्यभिचार किया। उस व्यभिचार का पुरस्कार लेकर माँ की परिशुद्धि में संदेह किये बिना ही

उस माँ के बेटे ने भी गाँव छोड़ा।

कीड़ा पड़कर मरी माँ पर किसी ने एक आँसू भी नहीं बहाया। दूसरी माँ की फांसी से गाँव-भर ने आँसू बहाए।

गांव छोड़कर गए बच्चे तो ?

× × ×

कानूनी कार्यवाही के बाद लगभग संध्या के समय चिता तैयार हुई।

कल्याणी और यशोधरा ने मिलकर वसुमती को उठाकर बैठक में लिटाया। वह कभी-कभी आँख खोलकर पूछती है : 'माँ आई क्या ?'

'आयेंगी-आयेंगी छोटी मालकिन !'—कल्याणी जवाब देती थी।

वसुमती फिर आँखें बंद कर लेती। कुछ देर बाद फिर वह आँखें खोलकर पूछती—'माँ नहीं आई क्या !'

'अभी आयेंगी-अभी अभी आयेंगी छोटी मालकिन !'

इस प्रकार आँखें बन्द करते और खोलते वह अर्ध चेतन अवस्था में बेसुध होकर लेटी है। आँखें खोलने पर यशोधरा नारियल का जल मुख में डाल देती। वसुमती उसे पी जाती।

मृत शरीर को चिता में रखने के पहले राजशेखरन ने भास्कर कुरुप, दिवाकरन और वासु के साथ उत्तरी भाग में जाकर सरोजिनी अम्मा ने जिस कमरे में शरण ली थी उसके दरवाजे को खटखटाकर पुकारा। भीतर से आवाज न होने के कारण उन्हें चिन्ता हुई। वासु घर के ऊपर चढ़कर खपरैल खोलकर कमरे में उतरा।

सरोजिनी अम्मा एक कोने में घुटनों के बीच सिर रखकर कांपती हुई बैठी थी। वासु के कमरे में कूदते ही वह जोर से चिल्लाई—'मुझे ···मुझे मत मारो···हाय, हाय, मेरा गला मत दबाओ···'

वासु ने कमरा खोला। सरोजिनी अम्मा भागकर बाहर निकली—'वह···वह···वह मुझे मारती है।'

सभी पीछे-पीछे दौड़े। विद्यालय के पास जाने पर सरोजिनी अम्मा

को पकड़ लिया। राजशेखरन ने व्यापार का घर खोलकर माँ को उसमें बंद कर दिया। बाहर से ताला लगा दिया।

फूट-फूटकर रोने के बीच सुमती अम्मा का मृत शरीर चिता पर रखा गया। बैठक में लेटी वसुमती ने आँखें खोलीं : 'माँ आई क्या?'

'आयेंगी—अभी आयेंगी, छोटी मालकिन!'

× × ×

रात का दूसरा पहर बीता। चिता से धुएँ की रेखाएँ उस समय भी ऊपर की ओर उठ रही थीं।

बैठक में लालटेन रखी है। वसुमती पास ही चटाई पर लेटी है। कल्याणी उसके पास बैठी है। भास्कर कुरुप, वासु और दिवाकरन आँगन में बैठे धीमे स्वर में कुछ बातें कर रहे हैं। राजशेखरन अपने व्यापार के घर में गया है—अपनी माँ की शुश्रूषा करने।

वसुमती कभी-कभी एकाएक उठकर बैठती और पूछती : 'मेरी माँ नहीं आयेंगी—है न?'

किसी ने उत्तर नहीं दिया।

'माँ मुझे भी साथ लेकर क्यों नहीं गईं?'

कोई उत्तर नहीं। वह शून्य की ओर स्तब्ध देखकर बैठ जाती। फिर लेट जाती।

कुञ्ञुवरीत एक नारियल के पत्ते की मशाल जलाकर पकड़े हुए दक्षिणी बाड़ पार करके आया। उसने पूछा : 'अब भी होश नहीं आया क्या?'

'नहीं'—कल्याणी ने उदासीन होकर उत्तर दिया।

'वैद्य गोविंदन को बुला लाया जाय तो?'

कोई कुछ नहीं बोला। कुञ्ञुवरीत ने आगे कहा : 'नहीं तो रहने दो। सवेरा होते ही उठकर चलने लगेंगी। माता की मृत्यु का दुःख है न? तीन-चार दिन तक रहेगा ही।'

'हाँ।' भास्कर कुरुप ने हुंकारी भरी।

'मैं अभी तक खेत में था। अभी-अभी तो यहाँ आया हूँ।'

'तो कुञ्ञुवरीत जाकर कुछ खाइए'—दिवाकरन ने कहा।

'कुछ खाकर मैं फिर आऊँ क्या? आना जरूरी हो तो आऊँगा।'

'नही, कुञ्ञुवरीत। हम है यहाँ'—भास्कर कुरुप ने दृढ़ स्वर में कहा।

'तो मैं जाता हूँ। कुछ चाहिए तो उस बाड़ के पास खड़े होकर बुलाना काफी है।'

'कुछ नहीं चाहिए। आप जाइए।'

कुञ्ञुवरीत चला गया।

दक्षिणी प्रहाते की चिता मे राख से ढके हुए अगार तीसरे पहर की हवा में कभी-कभी चमक उठते थे—मानो मरी आत्मा कभी-कभी आँखें खोलती और मूँदती हो।

बद किया गया दरवाजा अचानक खुला। पद्मनाभ पिल्लै अंदर आए। पीछे-पीछे साधु भी। साधु के पैरों मे उस समय खड़ाऊं नहीं थे।

'कौन है वहाँ?'—उस आवाज़ में अब भी पाँच वर्ष के जेल-जीवन के बाद भी दृढता और गौरव था।

आँगन मे सब जल्दी ही उठकर सिमटकर खड़े हो गए। कल्याणी बैठक से आँगन मे आ गई।

पद्मनाभ पिल्लै धीरे-धीरे चलकर पास आए। उनकी छाया के समान पीछे खड़ा है वह साधु।

'तू—तू कौन है?'—भास्कर कुरुप की ओर इशारा करते हुए पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा।

'मैं पच्चार्षा का हूँ—भास्करन।'

'पच्चाषी वाले संतुष्ट हो गए न?'—गहरी गुफ़ा के मुख से आने के समान लगा वह प्रश्न।

भास्कर कुरुप ने सिर झुका लिया।

'तुम दोनों कुञ्ञन के बच्चे हो न?'

'हाँ—'दिवाकरन ने उत्तर दिया।

'वह कौन है, कल्याणी है क्या ?'—उस प्रश्न का स्वर नरम था।

'जी, दासी।'

साधु अपनी सिसकियाँ दबा रहा था। उसकी प्रतिध्वनि सुनाई दी।

'अब तुम सब जाओ।'

'छोटी मालकिन'—कल्याणी ने बैठक की ओर इशारा किया।

'हाँ—कल्याणी जाओ। मै देख लूंगा।'

भास्कर कुरुप ने एक कागज़ का टुकड़ा पद्मनाभ पिल्लै के हाथ में दिया। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'क्या है यह ?'

'सुमती दीदी ने लिखकर रखा था।'

'मेरे लिए ?'

'हाँ।'

एक सिसकी ! जल्दी ही वे सँभल गए।

सब लोग चले गए। पद्मनाभ पिल्लै बैठक में आ गए। लालटेन के प्रकाश में वह कागज़ का टुकड़ा खोलकर पढ़ा।

'मेरी···मेरी बच्ची !'—एक बार छाती पीटी ! एक सिसकी भरी।

× × ×

साधु शहर में जाकर प्रतीक्षा कर रहा था, पद्मनाभ पिल्लै का स्वागत करने के लिए। सुमती अम्मा की आत्म-हत्या तक की सारी बातें उसने पद्मनाभ पिल्लै को बता दी थीं। उन्होंने सिर झुकाए हुए सभी कुछ सुना था। फिर सिर उठाया—'हाँ, चलेंगे।'

वे चल दिए। वे पैर काँपे नही। वह मन विचलित नहीं हुआ।

बहन की चिट्ठी पढने मात्र से वह मन विचलित हो उठा। उन आँखों में आँसू आ गए। पर उन्होंने अपने को जल्दी ही नियंत्रित कर लिया।

वसुमती आँखें खोलकर उठ बैठी। उसने पद्मनाभ पिल्लै को आश्चर्य से देखा। मानो स्वप्न में ही उसने पूछा : 'मामा हैं ?···मामा।···'

उसने फूट-फूटकर रोते हुए मामा के पैर पकड़ लिए। पद्मनाभ पिल्लै एक मूर्ति के समान खड़े रहे।

× ×

सबेरा हुआ। जागकर माई वसुमती उठी। उसने मामा और साधु को कमरे में देखा। उसने पूछा: 'मेरी मां नहीं आयगी—है न?'

'नहीं बेटी, नहीं।'

'मेरा भाई?'

'वह आयगा—पढ़कर, बड़ा बनकर आयगा।'

'भैया के आने पर, मां कहां है पूछे तब' वह फिर फूट-फूटकर रोने लगी।

संन्यासी कुछ कहने को था। पद्मनाभ पिल्लै ने उसे इशारे से मना कर दिया। वसुमती ने खूब रोने के बाद रोना बंद कर दिया। पद्मनाभ पिल्लै ने उसका सिर सहलाते हुए कहा: 'बेटी, वह आयगा। पढ़कर, बड़ा होकर वह आयगा।'

वह प्रतीक्षा करती रही कि मामा और कुछ कहेंगे लेकिन पद्मनाभ पिल्लै ने फिर कुछ भी नहीं कहा। उसने पूछा: 'मौसी कहाँ है मामा?'

'वह वहाँ है—राजशेखरन के पास।'

'बड़ी माँ वहाँ किसलिए गई? अब यहां नहीं आयगी क्या?'

'आयगी—फिर आयगी।'

वसुमती फिर मामा के बोलने की प्रतीक्षा में बैठी रही, लेकिन पद्मनाभ पिल्लै ने फिर कुछ नहीं कहा। वसुमती ने पूछा: 'यह साधु कौन है मामा?'

'यह एक साधु है। मेरे साथ आया है।'

'खड़ाऊँ पहनकर इस रास्ते से जाया करता है यह साधु।'

'हाँ।'

साधु ने मानो यह सब-कुछ सुना ही नहीं। आखिर पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा: 'बच्ची, चावल वगैरह कुछ हैं?'

'हैं।'

'तो मैं खाना बनाऊँगा'—पद्मनाभ पिल्लै उठे।

'नहीं, मामा नहीं। मैं बनाऊँगी।' वह शीघ्र ही उठकर रसोई की तरफ चली गई।

अनंत रूप से प्रवाहित होने वाली एक महानदी है जीवन। उस जीवन-प्रवाह से मृत्यु की भाप उठती रहती है। वह भाप घनीभूत होकर वर्षा करती है। उस भाप का पानी बहकर उस महानदी में विलीन हो जाता है। मृत्यु की भाप, यौवन के प्रवाह को सुखाती नहीं; प्रवाह की शक्ति को कम नहीं करती।

वसुमती उस जीवन-प्रवाह की केवल एक बूंद है। जीवन के प्रवाह में बहने के लिए विवश है वह।

× × ×

पद्मनाभ पिल्लै जेल से वापस आ गए। गाँव में सभी लोगों को पता चल गया। कई लोग उन्हें देखने मंगलश्शेरी गए। दरवाजा बंद देखकर कई लोग लौट गए, कुछ ने दरवाजा खटखटाकर पुकारा। भीतर से कोई आवाज नहीं आई; दरवाजा खोला भी नहीं गया। वे भी लौट गए।

दक्षिणी बाड़ के पूर्वी अंचल के द्वार से कुञ्ञुवरीत और सारा भीतर आये। आराम-कुर्सी पर बैठे पद्मनाभ पिल्लै को उन्होंने नमस्कार किया। कुञ्ञुवरीत बरामदे में आया।

'हुँ ?'—पद्मनाभ पिल्लै ने घूमकर देखा।

कुञ्ञुवरीत बरामदे से आँगन में उतर गया। साधु कुञ्ञुवरीत को घूर-घूरकर देखते हुए समाधि में लीन हो गया।

'खेत में जाने के लिए घर से निकला, तभी सुना कि आप आ गए हैं।'—कुञ्ञुवरीत ने विनय के साथ कहा।

'हाँ! तुम आए। अच्छा हुआ—खेती सब कैसी है कुञ्ञुवरीत ?'

'धान, नारियल और काली मिर्च बहुत मिलती हैं। फिर भी पूरा

नही होता। आगे सिर्फ खेती से जीवन बिता नही सकेंगे।'

'हुं···घर बनवा लिया न ?'

'हां, छोटा-सा एक बनवाया है। तीन-चार बच्चे है न ? उन्हें सोने के लिए जगह चाहिए न ?'

'वर्की कहाँ है ?'

वह सवेरे उठकर नारियल लिवाने गया है। बाकी सब पढ़ रहे है। दो अंग्रेजी स्कूल मे पढते है।

'वर्की नही पढ़ता क्या ?'

'सभी को पढने भेज दूं तो खेती मे मदद के लिए भी कोई चाहिए न ? मुझमे तो पहले की तरह ताकत नही रह गई है। वात रोग हो गया है।'

'हाँ ! वैद्य को दिखाना चाहिए। तेल और जड़ी-बूटी गरम करके लेप लगाना चाहिए।'

'वे सब बनाकर रखे है।'

'हाँ।'

एक बडी मूकता ! सारा कुछ कहने को थी, लेकिन उसने कहा नही। आखिर कुञ्जुवरीत ने कहा . 'जेल जाने के बाद यहाँ की बातें सब···'

'यहाँ की बातें कुछ मत कहो, कुञ्जुवरीत'—पद्मनाभ पिल्लै का मुख पहले से अधिक गंभीर हो गया।

'कुछ धान आदि चाहिए तो···'

एकाएक पद्मनाभ पिल्लै का माथा सिकुड गया। शब्दों मे तेज़ी आ गई—'क्या है ? क्या चाहिए, पूछा था ! ·· धान ? क्यों ? किस लिए ?'

'यह सोचकर कि मुसीबत का समय है'—कुञ्जुवरीत सिमटकर खड़ा रहा।

पद्मनाभ पिल्लै की आवाज गूंज उठी—'मैं मुसीबत में हूँ, ऐसा तुमसे

किसने कहा···नहीं—मुझे कोई तकलीफ़ नहीं है। जाओ!'

कुञ्ञुवरीत और सारा ने झुककर प्रणाम किया और चले गए।

ध्यान में बैठे साधु ने आंखें खोलकर कहा : 'जो कुछ बाकी है उसे भी लेने के लिए।'

'जो कुछ दिया था, वह सब दिया ही था कुञ्ञा। लिया नहीं है।'

'माँगने पर दिया। देने पर लिया।'

दोनों चिन्ता में लीन हो गए। वे अतीत की ओर देख रहे थे।

बारह वर्ष पहले वह घटना हुई थी। १९२४ की बाढ़ में घर बह जाने के कारण रहने की जगह खोजते हुए एक बच्चे को गोद में लिये और दूसरे का हाथ पकड़े फाटक से अन्दर झांकने वाले थे ये लोग। फिर बारह वर्ष बीते, बारह बार नदी में जल बढ़ा, कई टीले गड्ढे बने; गड्ढे टीले बने; कई वृक्ष मूल के साथ ज़मीन पर गिरे; कई वृक्षों की शाखाएँ बढ़कर चौतरफ़ा फैल गईं।

उत्तरी बाड़ के द्वार से कल्याणी भीतर आकर प्रणाम करने के लिए पूर्वी आँगन में संकुचित होकर आई। उसे देखते ही साधु उठकर दूसरी ओर चला गया। कल्याणी उस साधु के गए हुए मार्ग की ओर स्तब्ध देखती खड़ी रही। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'क्या है कल्याणी?'

'वह कौन है छोटे मालिक?···कौन है वह साधु?'

'वह एक मौनी साधु है। पूछने पर कुछ भी नहीं कहता।'

'खड़ाऊँ पहनकर कभी-कभी इस रास्ते से जाया करता है।'

'हुं।'

'वह यहीं रहेगा क्या, छोटे मालिक?'

'पता नहीं!···रहे तो रहे; जाय तो जाय।'

कल्याणी फिर भी स्तब्ध ही खड़ी रही। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'कुशल से हो न, कल्याणी?'

'कुशल है···छोटी मालकिन कहाँ हैं?'

'वह उधर है। उधर जाओ।'

कल्याणी बैठक की ओर जाकर खड़ी हो गई। उसने धीरे से आगे हाथ बढ़ाकर एक कागज़ की पुड़िया बैठक मे रख दी। पद्मनाभ पिल्लै की भौंहे तन गईं। उन्होने पूछा : 'यह क्या है कल्याणी ?'

'थोड़े रुपये है। सौ होगे। बच्चों ने भिजवाए है—छोटे मालिक को देने के लिए।'

पद्मनाभ पिल्लै कुछ कहने वाले थे। उसे दबाकर वे थोडी देर चुप-चाप बैठे रहे। कल्याणी धीरे-धीरे पीछे की ओर जाने लगी।

'इधर आ कल्याणी।' पद्मनाभ पिल्लै ने आज्ञा दी।

कल्याणी लौट आई।

'यह पुडिया उठाकर चली जाओ।'

कल्याणी सिकुडकर सकोच से खडी रही।

'लेने को कहा न !' पद्मनाभ पिल्लै की आवाज गूंज उठी।

कल्याणी सीधी खड़ी हो गई। उसके मुख पर भी गंभीरता छा गई। उसने कहा : 'मैं कुञ्जन की औरत हूँ। कुञ्जन के बच्चो ने यह भेजा है। छोटे मालिक इसे ले लीजिए।'

'लेकर चली जा !—वह एक गर्जन था।

'कुञ्जन मगलश्शेरी का है, छोटे मालिक। मैं कुञ्जन की औरत हूँ···' कल्याणी का कंठ अवरुद्ध हो उठा। उसकी आंखो से आंसू बहने लगे।

'हाँ ! कुञ्जन मगलश्शेरी का ही है। मंगलश्शेरी खानदान कुञ्जन का खानदान ही है।'—पद्मनाभ पिल्लै की आवाज मद पड गई। फिर ऊँची आवाज़ मे उन्होने कहा : 'लेकिन कुञ्जन की पत्नी और बच्च मंगलश्शेरी के नही हैं।'

'नही हैं तो न सही, छोटे मालिक। तो भी, मेरे लाए रुपये···'

मंगलश्शेरी वालो ने दिया है लिया नही है। मगलश्शेरी वाले भिखारी नहीं हैं। उनका भिक्षा माँगकर जीने का इरादा नही उठाकर ले जाओ ! ···लेकर नहीं गई तो।'

कल्याणी ने हाथ बढ़ाकर बड़ी कठिनाई से पुड़िया उठा ली। वह पुड़िया आँसुओं से भीग गई। वह धीरे-धीरे चलते हुए, उत्तरी बाड़ के द्वार से दूसरी तरफ चली गई।

पद्मनाभ पिल्लै ने गहरी साँस ली।

२८. अपनी आत्मा की ओर

अचानक मन पर चोट लगने से सरोजिनी अम्मा पागल हो गईं। उनको ऐसा लगता है कि छोटी बहन का प्रेत उनका गला दबाकर मारने आता है। कमरे के अन्दर दरवाजे खिड़की सब बंद करके बैठना ही उस भय से बचने का एक-मात्र उपाय है।

राजशेखरन के व्यापार-स्थान मे एक अँधेरी कोठरी के कोने में घुटनों के बीच सिर छिपाकर वह बैठी रहती है। दरवाज़े और खिड़कियों को अच्छी तरह बंद करके रखा है। दराजों से भीतर आने वाला प्रकाश तक सरोजिनी अम्मा को डराता है। बाहर कहीं कोई आवाज़ सुनने या किसी के पैरों की आहट सुनने पर 'मारने आती है' कहकर भयभीत होकर ऊँचे स्वर मे चिल्लाने लगती है। भोजन भी नहीं है। पानी भी नहीं है। 'कुछ चाहिए' पूछने के लिए उस कमरे के पास जाने की किसी मे हिम्मत नहीं है।

छोटी मौसी के आत्महत्या करने से और माँ के पागल हो जाने से राजशेखरन को कोई परवाह नहीं है। सुमती अम्मा का दाह-संस्कार होते ही वह व्यापार के स्थान में लौट आया। उसके आने की आहट सुनते ही सरोजिनी अम्मा ने भीतर से ही लेटे-लेटे चिल्लाना शुरू कर दिया कि 'मारने आ रही है।' वह बिना आवाज़ किये बरामदे में लेटकर सो गया।

बड़े सबेरे एक खाली बोरा और रुपये की थैली लेकर वह व्यापार के लिए निकल पड़ा। बहुत-दूर एक घर में काली मिर्च लेने जा रहा है वह। बाजार से पुल की ओर जाते समय सामने से आ रहे भास्कर कुरुप ने उसे देखकर आश्चर्य के साथ पूछा : 'तू इस समय कहाँ जा रहा राजशेखरन ?'

थोड़े अपराध बोध के साथ राजशेखरन ने कहा : 'मैं वहाँ जमकर बैठ जाऊँगा तो मेरा व्यापार चलेगा क्या, कुरुप भैया ?'

'माँ और छोटी मौसी से भी तेरा अपना व्यापार बड़ा है क्या ?'

'मेरा अपना व्यापार बडा है। मरने वाले मर गए। आगे भी मरने वाले मरेंगे। मुझे जीना है। मुझे अपना काम देखना है'—राजशेखरन के शब्दों मे दृढ़ता आ गई। उसने दृढ़ स्वर में ही यह कहा था।

भास्कर कुरुप चिन्तामग्न हो गया। उसने धीरे से कहा : 'तुझे जीना है। अपना काम तुझे ही देखना है, लेकिन तेरी माँ का तेरे सिवा कौन आसरा है !'

'माँ को कमरे में बन्द कर दिया है। इसके अतिरिक्त और मै क्या करूँ ?'

'इलाज कराना है न ?'

'आदमी को देखने पर, आवाज सुनने पर, "मारने आती है" कहकर चिल्लाती है, फिर मै क्या कर सकता हूँ भैया ?'

'अन्न और जल के बिना बंद कर देने पर कितने दिन ज़िंदा रहेगी ?'

'जितने दिन ज़िंदा रहें, रहें। उन्हें देखते रहने के लिए मेरे पास समय नही है। सभी ने मिलकर खानदान का नाश किया है। अब मै अपना काम देखूंगा।'

'खानदान का नाश हो गया तो माँ की उपेक्षा करनी है क्या ?'

'खानदान के नाश से सब-कुछ नष्ट हुआ है। माँ भी नष्ट हो गई, छोटी मौसी भी नष्ट हो गई, मामा भी नष्ट हो गए। आगे मुझे अपना काम देखना है।'

'मामा जेल मे आ गए। तूने सुना नही ?'

'आए तो क्या; नहीं आए तो क्या ! सब-कुछ नष्ट करके ही जेल गए थे न ? अब आने से कोई फ़ायदा नहीं; न आने से कोई नुकसान भी नही।'

भास्कर कुरुप सिर झुकाये मौन खड़ा रहा।

'मैं जा रहा हूं कुरुप भैया'—राजशेखरन पुल पर चढ़कर चला गया।

भास्कर कुरुप ने आंसू पोंछ लिए।

× × × ×

दोपहर बीत गई। मंगलश्शेरी की बैठक में आराम-कुर्सी पर पद्म-नाभ पिल्लै बैठे हैं। गालों पर लम्बी-लम्बी झुर्रियां पड़ गई है। छाती, चेहरे तथा सिर के बाल सफेद हो गए है। आंखें धंसी हुई होने पर भी, उनकी दृष्टि से गंभीरता टपकी पड़ती है।

साधु नीचे के बरामदे में पल्थी मारे बैठा है। किसी-किसी समय कुछ पूछने के भाव से वह पद्मनाभ के मुख की ओर देख लेता है। उस मुख-भाव को देखने पर कुछ नही पूछता। प्रकाशमय भूतकाल को मुड़कर देख रहे हैं वे।

पिता और माता के चेचक की बीमारी के समय द्वार खटखटाने के उस दृश्य के बारे मे वे स्मरण कर रहे थे। कुञ्ञन ने दरवाजा खोला था और चाकू खोलकर अपनी छाती की ओर तानकर कहा था, 'छोटी मालकिनों का खयाल करके मेरे छोटे मालिक को यहां नही आना चाहिए।' वह लौटकर दहलीज पारकर चला गया—तीन छोटी बहनों की रक्षा का विचार करके। उस दिन से उस जीवन का एक-मात्र उद्देश्य था—छोटी बहनों की रक्षा और खानदान का गौरव स्थिर रखना, लेकिन उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए उन्होंने जो कुछ किया सबका उल्टा ही फल प्राप्त हुआ। एक छोटी बहन खानदान का नाश देखकर मन-ही-मन तड़पकर मर गई। दूसरी ने आत्महत्या कर ली; तीसरी बहन पागल हो जाने से कमरे में बंद पड़ी हैं; एक भांजा चला गया; दूसरा भांजा मां के चरित्र बेचने से प्राप्त रुपये लेकर पढ़ने चला गया; एक भांजी किसी मुसलमान के साथ भाग गई; दूसरी किसी ईषवा के साथ। शेष बचा एक भांजा और एक भांजी!—कैसे क्या होगा, उन्हें कुछ नहीं पता!

'बच्चियां !'—गूंज उठने वाला वह स्वर चारों ओर फैल गया।

'छोटे मालिक !'—साधु जल्दी ही उठा।

दरवाज़े पर खटखटाहट ! निस्तब्धता ! खटखटाहट लगातार सुनाई पड़ने लगी। पद्मनाभ पिल्लै के मुख पर गंभीरता छा गई। उनकी आवाज़ गूंज उठी : 'कौन है रे वहाँ ?'

'एक ज़रूरत है दरवाज़ा खोलिए'—भास्कर कुरुप की आवाज़ थी।

'खोलना है, छोटे मालिक ?'—साधु ने पूछा।

'तू मत खोल। मैं खोलूंगा'—पद्मनाभ पिल्लै उठकर दरवाज़े के पास गए।

दरवाज़ा खोलकर भास्कर कुरुप को देखते ही पद्मनाभ पिल्लै का माथा तन गया। उन्होंने पूछा : 'हुं ! तू क्यों आया ?'

'वहाँ एक बार हो आइए'—कुरुप न सविनय कहा। 'सरोजिनी जीजी—'

'सरोजिनी से तेरा क्या संबंध ?'

'संबंध नहीं है तो न सही। लेकिन किसी चिकित्सा के लिए—'

'नहीं। पच्चाषी वालों की सहायता मंगलश्शेरी वालों को नहीं चाहिए। सरोजिनी मेरी बहन है। उसकी चिकित्सा के लिए तेरा उपदेश नहीं चाहिए।'

'सहायता देने नहीं आया था। खबर सुनाने आया था।'

'जान ली है। तू जा।'

'माफ़ कीजिए। जो कुछ बीता, उसे भूल जाइए'—भास्कर कुरुप का कंठ अवरुद्ध हो गया।

पद्मनाभ पिल्लै की आवाज़ तेज़ हो गई : 'माफ़ करने और भूलने योग्य बातें तेरे बड़े मामा और भाइयों ने नहीं की थीं रे।'

'बड़ों ने जो कुछ किया, उसका उत्तरदायी मैं हूं क्या ?'

'किसी पर किसी का उत्तरदायित्व नहीं है। सब-कुछ—सब-कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया है। अब किसी पर किसी का उत्तरदायित्व नहीं है

···तू जा मैं कुछ देर बाद आऊँगा ।'

भास्कर कुरुप सिर झुकाकर चला गया। पद्मनाभ पिल्लै ने घूमकर साधु को ज़ोर से बुलाकर कहा : 'दरवाज़ा बंद करके सांकल लगा लो ।'

साधु दरवाज़े के पास आया। उसने पूछा : 'छोटे मालिक अकेले जायेंगे ? मैं भी चलूं ?'

'नहीं। वसुमती को अकेले नहीं छोड़ना है ।'

पद्मनाभ पिल्लै सड़क पर उतर गए। साधु ने दरवाज़ा बंद करके सांकल लगा ली।

चार वर्ष के बाद मंगलश्शेरी के पद्मनाभ पिल्लै दिन के समय सड़क पर पहली बार चल रहे हैं। रास्ते से जाने वाले सभी लोग उन्हें देखने लगे। किसी की आंखों में सहानुभूति थी; किसी की आंखों में दबाये हुए उपहास और तिरस्कार की काली छाया पडी थी, लेकिन रास्ते में सभी हटकर खड़े हो गए। बूढ़ा होने पर भी, शक्ति क्षीण होने पर भी, सिंह सिंह ही है !

विनष्ट हुए प्रताप का प्रतीक !—वह था पद्मनाभ पिल्लै। विनष्ट प्रताप के खंडहरों के बीच किसी की परवाह किये बिना सिर उठाए चल रहा है वह पुरुष सिंह। दु:ख को मन मे दबाकर अभिमान को त्यागे बिना चलने वाले उस प्रतापशाली के आगे जाने और अनजाने सभी ने झुककर प्रणाम किया।

बेटे को साथ लिये हुए सामने की ओर से आते हुए एक व्यक्ति के मुंशी ने पद्मनाभ पिल्लै को झुककर प्रणाम किया। तब पुत्र ने पूछा : 'वह कौन है पिता जी ?'

'वह ?—वह मंगलश्शेरी का बड़ा मालिक ।'

'वहीं की एक औरत फांसी लगाकर मरी है न ?'

'हां ।'

'जो पागल होकर पड़ी है, वह भी वहीं की है न ?'

'हां ।'

'ये बड़े घर वाले हैं क्या पिताजी ?'

'थे बेटा।'

'अब ?'

'अब—'

पद्मनाभ पिल्लै सिर उठाये हाथ हिलाते चले जा रहे हैं। दूर विद्यालय, डाकघर तथा पंचायत के उस ओर उठे हुए महलों को देखकर उन्होंने रास्ते से जाने वाले एक व्यक्ति से पूछा : 'किसका है—वह महल ?'

'ठेकेदार माधवन का है।'

'कौन ठेकेदार माधवन ?'

'कोच्चुरामन वैद्य का बड़ा बेटा।'

पास खड़े हुए दूसरे राही ने कहा : 'इससे भी बड़ा एक महल नदी के किनारे है।'

'वह किसका है !'

'वह माम्मन मुतलाली[1] का है।'

'और भी एक महल है—बाज़ार में।'

'वह ?'

'वह गोविन्दन वैद्य का है।'

'हां।'—वे चले गए। सिर झुकाते हुए वे फुसफुसाये—'एक सड़ता है तो दूसरे के लिए खाद बन जाता है।…एक ज़माना पहाड़ है तो दूसरा ज़माना गड्ढा है।'

कण्डम्पुलयन कहीं से दौड़कर पद्मनाभ पिल्लै के पैरों पर गिर पड़ा। फटे हुए बाँस की आवाज़ के समान फूट-फूटकर रोते हुए उसने पुकारा—'मालिक !…मेरे मालिक !'

पद्मनाभ पिल्लै के कंठ से एक सिसकी निकली। तुरन्त अपने को

---

१. मुतलाली ईसाई और मुसलमान व्यापारियों के लिए प्रयुक्त आदर-सूचक शब्द।

सँभालते हुए उन्होने कण्डम्पुलयन को पकडकर उठा लिया—'कण्डा, तू ···तू अच्छा है न ?'

'मगलश्शेरी मालिक के जाने के बाद से हम दासों को···'

'कृषि और काम नही है क्या, कण्डा ?'

'है तो। कृषि है, काम है, पैसा भी मिलता है···पर कोई एक चीज नही है।'

कौन-सी ?—वह 'कोई एक चीज' क्या है, कण्डम्पुलयन जानता नही, लेकिन पद्मनाभ पिल्लै के जेल जाने पर, मंगलश्शेरी खानदान का नाश होने पर, कण्डम्पुलयन को लगा कि उसका कुछ नष्ट हो गया है। क्या नष्ट हुआ है ? मालिक और सेवक की आपस मे अव्यक्त रूप पर दृढता से बँधे हुए प्यार की शृंखला है—वही है।

पद्मनाभ पिल्लै चलने लगे। कण्डम्पुलयन ने उनका अनुगमन किया। पंचायत, विद्यालय तथा डाकघर से मिले हुए कोने मे लोग एकत्रित होकर खडे थे। सुमती अम्मा की आत्महत्या और सरोजिनी अम्मा के पागलपन के बारे मे कई लोगो ने आलोचना की। पद्मनाभ पिल्लै को आते देखकर सभी ने बोलना बंद कर दिया। सभी ने एक स्थान मे सिमटकर उन्हे प्रणाम किया। वे उस छोटे घर मे चले गए।

'खोल रे दरवाजा !'—पद्मनाभ पिल्लै ने आज्ञा दी।

'मुझे मारने आती है !'—भीतर से सरोजिनी अम्मा की असहनीय पीडामय चिल्लाहट !

'खोल रे !'—पद्मनाभ पिल्लै ने जोर से कहा।

राजशेखरन ने दरवाजा खोला। कमरे के कोने में घुटनों के बीच सिर दबाकर बैठी सरोजिनी अम्मा चिल्लाने लगीं—'मुझे···मुझे···वह मुझे मारने आती है।'

'मेरी बच्ची !'—पद्मनाभ पिल्लै ने अपनी छाती पीट ली। वे फूट-फूटकर रोये।

राजशेखरन ने दरवाजा बंद कर दिया।

× × ×

दूसरे दिन सबेरे मंगलश्शेरी के मुख्य दरवाज़े पर एक खटखटाहट और पुकार—'डाक···डाक !'

'वह कौन है कुञ्ञा ?'—आराम-कुर्सी पर बैठे हुए पद्मनाभ पिल्लै ने बरामदे में बैठे साधु से पूछा।

'लगता है डाकिया है। दरवाज़ा खोलूं क्या ?'

'नहीं मैं खोलूंगा।' पद्मनाभ पिल्लै आंगन में जाकर दरवाज़े की ओर बढ़े।

उस घर में इसके पहले कभी डाकिया नहीं आया था। डाकिये को वहां आने की आवश्यकता नहीं थी। उस गांव में डाकिये का आना दुर्लभ है। छः या सात लोग उस गांव से सिंगापुर और सीलोन गए हैं। वे अपने घर पर खत और मनीआर्डर भेजते हैं जिन्हें लेकर डाकिया महीने में दो या तीन बार आता है। भारत सरकार का एक कर्मचारी होने से वह बड़े ठाट से आता और जाता है।

पद्मनाभ पिल्लै ने दरवाजा खोला। पीछे पहुँचा साधु एक ओर सिमटकर खड़ा हो गया। डाकिये के आने की बात सुनकर वसुमती भी दरवाज़े पर पहुँची। डाकिये ने पद्मनाभ पिल्लै से पूछा : 'यही है न मंगलश्शेरी का घर ?'

'हां। क्या चाहिए ?'

'एक मनीआर्डर है।'

'मनीआर्डर है, किसका ?'

डाकिये ने मनीआर्डर का फार्म देखते हुए पढ़ा : 'एम० कमलाक्षि अम्मा, मंगलश्शेरी घर, मुक्कोणक्करा।'

पद्मनाभ पिल्लै ने तुरन्त मुख फेर लिया—'कमलाक्षी यहां नहीं है ···वह कभी यहां नहीं आयगी। जाओ। मानीआर्डर नहीं चाहिए।'

वे मुड़कर चल दिए। साधु ने पूछा : 'कितने रुपये हैं !'

'पांच सौ।'

'किसने भेजे हैं ?'

'के० नंदिनी।'

'जाने को कहा न।'—पद्मनाभ पिल्लै की आवाज़ तीव्र थी।

'मेरी नंदिनी दीदी···मेरी नंदिनी दीदी कहाँ है ?' वसुमती ने ज़ोर से पूछा।

'कौन-सी तेरी नंदिनी दीदी ?···जा···जा घर के भीतर!'—पद्मनाभ पिल्लै गरज उठे।

'मामा!'—वसुमती चौंक पड़ी और काँपने लगी। वह फूट-फूटकर रोई।

साधु के माथे पर बल पड़ गए। अधिकार के स्वर में उसने कहा: 'छोटे मालिक आप इस तरह अपने को भूल बैठेंगे तो हम क्या करेंगे।'

पद्मनाभ पिल्लै ने सिर झुका लिया। आज्ञाकारी शिष्य के समान उन्होंने कहा: 'माफ करो कुञ्ज···माफ करो···बच्ची, मामा कुछ कह गया। मत रो···'

मामा ने भाजी के आँसू पोंछे।

× × ×

दो-तीन दिन बीत गए। राजशेखरन के व्यापार का स्थान श्मशान के समान निस्तब्ध है। कोई भी उस छोटे घर के आँगन में नहीं जाता। राजशेखरन साँस रोककर बरामदे में सोता है। चलने की आवाज सुनने पर, अनजाने खाँसने पर, भीतर से हृदय को आर्द्र बनाने वाली चिल्लाहट सुनाई पड़ती है—'मारने आती है।'

भास्कर कुरुप, दिवाकरन तथा सुकुमारन नायर रास्ते में खड़े-खड़े ही कुशल पूछ लेते हैं। उन्होंने कई वैद्य और डाक्टरों से मिलकर सरोजिनी अम्मा की बीमारी के लक्षण बताए। उन सबने सिर्फ इतना ही कहा कि वे जाँच करके देखेंगे। जाँच के लिए भी रोगी को दिखाने की समस्या बड़ी कठिन हो गई। आवाज़ सुनने पर, प्रकाश लगने पर प्राण-पीड़ा से चीख-पुकार मचाने वाली रोगिणी के लिए क्या कर सकेंगे ? राजशेखरन ने दृढ़ स्वर में कहा: 'मेरी माँ की कोई चिकित्सा न

करना ।'

कल्याणी रोज़ सबेरे और शाम को रास्ते पर खड़ी होकर रोती है। लौटकर घर जाने पर, बाड़ के पास से वसुमती पुकारकर पूछती : 'बड़ी मौसी ने कुञ्जी या पानी कुछ पिया क्या कल्याणी ?'

'कैसे हो, छोटी मालकिन ? उधर कोई जाय तो शोर मचाती हैं न ? 'मारने आती है 'ऐसा जोर से चिल्लाती है।' यह सुनकर खड़े रहना संभव नहीं छोटी मालकिन ।'

'मेरी माँ···मेरी माँ मेरी बड़ी मौसी को मारेंगी क्या कल्याणी ?' —वसुमती फूट-फूटकर रोती ।

'एक ही पेट से आए थे न ! चारों के चार शरीर होने पर भी, एक ही आत्मा है ।'

वसुमती ने मामा से पूछा : 'मामा, मैं बड़ी मौसी को एक बार देख आऊँ क्या ?'

'देख नहीं सकोगी बच्ची । मत जाओ—बच्ची मत जाओ ।'

'मेरी माँ और मेरी बड़ी मौसी···'—वह मुख ढककर फूट-फूटकर रोई ।

पद्मनाभ पिल्लै शून्यता की ओर स्तब्ध होकर देखते रहे । भांजी के दूसरी ओर चले जाने पर, उन्होंने साधु से कहा : 'अब केवल यही है । केवल एक अंकुर···उसको कीड़े न पड़ें । वह सूख न जाय ।'

बरामदे में बैठा साधु जल्दी से उठा—'नहीं—नहीं छोटे मालिक, उस अंकुर में कीड़ा नही पड़ेगा । वह बीज सूखने वाला नहीं है···उसके माँ और बाप···'

'माँ ?...वह कीड़ा लगकर गिरी थी । ख़ानदान में उसने दाग़ लगाया था !'

साधु की भौंहें तन गई । उसने आज्ञा के स्वर में कहा : 'इस प्रकार न कहिए! ऐसा न कहिए छोटे मालिक—मेरी प्यारी छोटी मालकिन के बारे में ऐसा न कहिए !···'—साधु ऊपर देखने लगा । उसकी

आंखो से आंसू बहने लगे। गद्गद् कंठ के साथ उसने आगे कहा : 'देवी है !...वह छोटी मालकिन देवी है...उस छोटी मालकिन ने अपने सुख के लिए नही—नही छोटे मालिक। सब बदमाश होकर, बिगडकर इधर-उधर चले गए। एक को सीधे मार्ग पर लाने, खानदान को आगे की ओर बढाने...उसके लिए—उसके लिए छोटे मालिक...मेरी छोटी मालकिन देवी है ! देवी ! देवी !'

पद्मनाभ पिल्लै साधु का स्तब्ध हो देखते हुए बैठे रहे।

× × × ×

छ-सात दिन बीत गए। सरोजिनी अम्मा को बन्द किये गए कमरे में कभी-कभी एक सिसकी सुनाई पडती। राजशेखरन धीरे से खिडकी के पास गया। एकाएक एक बडी चिल्लाहट हुई, 'मारने आती है।' लेकिन वह चिल्लाहट एक कराह-मात्र थी।

उस रात को राजशेखरन व्यापार करके लौट आया। बरामदे में बैठकर रुपये गिनकर ठीक करते समय, सरोजिनी अम्मा के कमरे से गर्जन-सी आवाज हुई ! राजशेखरन ने कान लगाया। रास्ते मे आते हुए दिवाकरन, भास्कर कुरुप तथा सुकुमारन नायर दौड आए।

फिर एक गर्जन ! ऊँचे स्वर मे एक कराह थी वह। सायरन बजकर जैसे खत्म होता है वैसे ही वह कराह कम होते होते बिलकुल बंद हो गई। सभी एक साथ दरवाजे के पास खडे हो गए। राजशेखरन ने दरवाजे पर खटखटाते हुए पुकारा : 'माँ...माँ...माँ !'

कोई प्रतिध्वनि नही। भास्कर कुरुप ने द्वार में कान लगाकर ध्यान दिया। कोई आवाज नही; साँस तक नही। उसने दरवाजा खोला। राजशेखरन दौडकर लालटेन ले आया।

कमरे के ठीक बीच में सरोजिनी अम्मा मुँह के बल पडी थी। मुँह से निकला रक्त जमीन पर फैला था। सदा के लिए वे आँखे बंद हो चुकी थी।

कोई नही रोया; किसी ने भी कुछ नहीं कहा; किसी ने भी एक

दूसरे को नहीं देखा।

× × × ×

दूसरे प्रभात मे मंगलश्शेरी के दक्षिणी अहाते में कमलाक्षी अम्मा और सुमती अम्मा के भौतिक अवशेषों के बीच आम की लकड़ी से बनी चिता पर सरोजिनी अम्मा की मृत देह दक्षिण की ओर सिर करके लिटाई गई। राजशेखरन ने चिता मे आग लगाई।

एक सिसकी! एक कराह! और एक फूट-फूटकर रोने की आवाज़! पद्मनाभ पिल्लै ने वसुमती के सिर पर हाथ रखा। वह मुख ढककर फूट-फूटकर रोई। पद्मनाभ पिल्लै बहन की चिता की अग्नि की ओर निष्पन्द नेत्रों से देखते हुए खड़े हैं।

कर्तव्य पूरा किया, ऐसे भाव मे राजशेखरन एक तरफ़ खड़ा था। बोझ को नीचे उतारे हुए एक मजदूर का भाव था उसके मुख पर।

चिता की ओर देखते हुए आँसू पोछती हुई सारा से कुञ्ञुवरीत ने धीरे से कहा: 'तू यहाँ खड़ी रह, मैं खेत में होकर आता हूँ।'

रो-रोकर सूखी आँखों से कल्याणी नारियल के पेड़ के सहारे खड़ी है।

भास्कर कुरुप प्रज्वलित चिता तथा उस चिता की ओर एकटक देखते हुए पद्मनाभ पिल्लै की ओर और मुख ढककर रोती हुई वसुमती को भी बार-बार देखता हुआ कुछ दूर खड़ा है। दिवाकरन और सुकुमारन नायर भास्कर कुरुप के सामने शोक में डूबे खड़े हैं।

दूर कहीं झाड़ियों के उस ओर, सभी की आँखों से छिपकर पल्थी मारे बैठा साधु प्रकाश की ओर स्तब्ध देखते हुए वहाँ पर कुछ खोज रहा है।

चिता की अग्नि ऊंची ज्वालाओं से जल रही थी। पद्मनाभ पिल्लै तब भी उसी ज्वाला की तरफ़ दृष्टि लगाए हुए थे। मानो वैसे ही जलने वाली अपनी आत्मा की ओर देख रहे हों।

२९. बिखरी हुई जड़ें

स्नेह की निधि हैं वे—माँ और बेटी। जो बेटा मर गया था, उसके बदले उनको दूसरा एक बेटा मिला—'रामचन्द्रन!' जानकी अम्मा रामचन्द्रन को 'बेटा' कहकर ही बुलाती हैं। सुदर्शिनी अम्मा उसे 'छोटा भैया' कहती है। 'रामचन्द्रन' के लिए वे दोनों क्रम में माँ और दीदी हैं।

जानकी अम्मा और सुदर्शिनी अम्मा हमेशा उसकी सुख-सुविधाओं के बारे में खोज-खबर रखती थीं; वे सदा उसकी उन्नति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती थीं।

लेकिन रामचन्द्रन के लिए जीवन का एक सुनिश्चित लक्ष्य है—नाश के गर्त्त में पड़े खानदान का उद्धार करना। उसकी एक गुरुतर ज़िम्मेदारी है—उसकी माँ और छोटी बहन की। कालेज में प्रवेश के लिए चलते समय कागज़ की पुड़िया हाथ में देकर माँ ने जो कहा था, वे शब्द हमेशा उसके कानों में गूँजते रहते हैं—'बेटे इतना ही है। और कुछ नहीं है। खानदान को भूलना मत।'

यह तो उसे मालूम नहीं था कि उसके प्रति माँ के अन्तिम शब्द थे वे। उसका यही विश्वास था कि माँ और बहन खानदान का उद्धार करने की क्षमता पाकर उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रही हैं।

सुमती अम्मा ने जो दुबारा सौ रुपए भेजे थे। रामचन्द्रन को उसकी उम्मीद नही थी। वे रुपए पाकर उसने फीस दी; फिर आवश्यक किताबें और कापियाँ खरीदी। बहुत ज़रूरी कपड़े भी खरीदे। लेकिन वह हमेशा अपने आप से पूछता रहा—'माँ को रुपए कहाँ से मिले?'

इस प्रश्न का उत्तर न मिलने से वह चिन्तित नही हुआ। वह पढ़ाई में लगा रहा।

× × ×

बहुत बढ़िया भोजन न होने पर भी, रामचन्द्रन को रुचिकर भोजन मिलता था, जानकी अम्मा और सुदर्शिनी अम्मा उसे समय पर भोजन देने, पढ़ने की सुविधाएँ करने और प्रोत्साहन देने—इन सब बातों पर विशेष ध्यान देती थी। दिवगंत बालचन्द्रन के स्थान पर एक रामचन्द्रन को पाकर माँ और बेटी संतुष्ट हुईं।

कुछ लोग ऐसे हैं जो दूसरों के लिए त्याग करने में सुख-संतोष अनुभव करते हैं। कुछ अन्य लोग हैं जो दूसरों के सुख देखकर अस्वस्थ होते हैं। जानकी अम्मा और उनकी पुत्री प्रथम कोटि के लोगों में से थे।

उन माँ और बेटी ने बहुत कष्ट भोगे थे। कालेज में फीस देने, किताबें खरीदने, भोजन तक के लिए पैसा न होने का कष्ट उन दोनों ने उठाया है। कपड़े धोने का साबुन या सोडा खरीदने के लिए पैसों के अभाव में मैले कपड़े पहनकर सुदर्शिनी अम्मा कालेज गई थी। सहपाठियों और अध्यापकों के उपहास का वह पात्र भी बनी थी। लेकिन उसने पढ़ा; वह पास हो गई; उसे नौकरी भी मिल गई।

अतीत के दुःखों को वे माँ और बेटी भूली नही हैं। रुपयों के अभाव में कालेज में पढ़ने जाने पर जो कष्ट उठाने पड़ते हैं, वे सब उन्हें अच्छी तरह मालूम हैं। इस प्रकार के कष्टों का अनुभव करने वाले विद्यार्थी को आश्रय देने में उन्हें सन्तुष्टि हुई।

राजधानी में घूमते-फिरते आए हुए दो लड़के थे पाञ्चन और अप्पु। उन्हें भोजन और सोने के लिए स्थान यह सब उन माँ और बेटी ने दिया था। उस दिन आँगन में बैठकर पेट-भर खाना खाकर पाञ्चन और अप्पु वहीं सो भी गए। तभी पानी बरसने लगा। माँ और बेटी ने मिलकर उन्हें बरामदे में सुलाया। उसके बाद से वे रोज़ ही उस बरामदे में सोते हैं।

पाञ्चन और अप्पु दोनों बस स्टैण्ड और रेलवे-स्टेशन पर कुली का काम करते थे। रोज़ के भोजन का व्यय कमाने लायक वे हो गए, लेकिन वे रोज उस घर में जाते है। रात को वहाँ से उनको भोजन मिल जाता

है। वे उमी बरामदे म सो जाते है।

रात का सोने के पहले वे बहुत देर बैठकर गाँव की बाते किया करते है, लेकिन जब से रामचन्द्रन वहाँ रहने लगा, उन्होंने गाँव की बाते करना बद कर दिया। रामचन्द्रन की पढाई मे बाधा होने वाला काम उस घर म कोई भी नही करता था।

× × ×

सुदर्शिनी अम्मा के वेतन स ही उम परिवार का खर्च चलता था। इमके अतिरिक्त पढते ममय कई लोगो से लिया गया कर्ज किश्तो मे चुकाना है। सुदर्शिनी अम्मा वेतन मिलने पर पूरा रुपया माँ के हाथ मे दे देती है। जो कुछ है, उससे घर का खर्च पूरा करने की जानकी अम्मा मे असाधारण क्षमता है।

रामचन्द्रन को उस घर की आर्थिक स्थिति के बारे मे पूरा पता चल गया। उसने यह निश्चिय किया कि स्नेह और उदारता की प्रतिमूर्ति इन लोगो के लिए वह भाररूप नही बनेगा। लेकिन खाने और रहने की जो सुविधाएँ है, उसे छोड भी नही सकता था। उस हालत मे अपने ऊपर उनका खर्च जितना कम कर सकता उतना कम करने मे वह प्रयत्नशील रहा। उसने यह भी चाहा कि उनका स्नेह और उदारता अपने दिल के लिए भी एक बोझ न बने।

अपने घर या कुटुम्बियो के बारे मे बात करने का अवसर वह उन्हे नही देता था। उनको इतना बता दिया था कि घर मे कौन-कौन हैं। यह भी उसने एक प्रकार स सूचित कर ही दिया था कि बराबर रुपए भेजने की सामर्थ्य उसके घर के लोगो मे नही है। ज्यादा कुछ पूछने पर वह या तो मौन हो जाता या फिर एकाध शब्दो म उत्तर दे देता। आखिर जानकी अम्मा और सुदर्शिनी अम्मा की समझ मे आ गया कि घर के बारे मे पूछना उसे पसन्द नही है।

एक दिन सबेरे वह अपने कमरे मे खुली किताब हाथ मे लिये चिन्ता में डूबा बैठा था, जानकी अम्मा कॉफ़ी लेकर भीतर पहुँची। रोज काफी

लेकर आते समय वह प्रसन्न होकर जानकी अम्मा से थोड़ी देर बातें करता था। उस दिन चिन्ता में निमग्न देखकर जानकी अम्मा ने उसके मुख की ओर ध्यान से देखा। दुःख की काली छाया उसके मुख पर व्याप्त थी। काफ़ी मेज़ पर रखकर वे चारपाई पर बैठ गईं। उन्होंने पूछा : 'बेटे क्या सोच रहे हो ?'

'यों ही कालेज की बातें सोच रहा था माँ !'—उसने उदासीनता दिखाते हुए जवाब दिया।

'कालेज की बातें सोचने पर तुम्हारे चेहरे पर दुःख क्यों छा जाता है?'

रामचन्द्रन सिर झुकाए मौन बैठा रहा। जानकी अम्मा ने अन्दाज़ लगाया कि वह भारी दुःख की चिन्ता में निमग्न है। उन्होंने उठकर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा : 'तुम्हारे मन में कोई भारी दुःख है। मुझसे कहो, मैं तुम्हारी माँ हूँ न ?'

'हाँ, मेरी माँ हो—मेरी माँ।...' उसने सिर उठाकर जानकी अम्मा के मुख की ओर देखते हुए कहा—'लेकिन मेरी एक माँ और भी हैं... जिसने मुझे जन्म दिया...मेरे एक छोटी बहन भी हैं—केवल एक छोटी बहन...वे...वे...' उसकी आँखें भर आईं।

जानकी अम्मा ने घबराहट के साथ पूछा : 'उन्हें क्या हुआ बेटे ?'

अत्यधिक सामर्थ्य से दुःख को नियंत्रित करते हुए रामचन्द्रन ने कहा : 'कुछ नहीं माँ। माँ और छोटी बहन को न देखने का दुःख है।'

'तो बेटे वहाँ हो आओ।'

'नहीं। मैं अभी नहीं जाऊँगा। माँ ने मुझे पढ़कर योग्य होकर लौटने के लिए यहाँ पर भेजा है। पढ़कर योग्य होकर ही मैं लौटूँगा।'

'माँ और छोटी बहन पत्र नहीं लिखतीं ? उन्हें तुम पत्र नहीं लिखते क्या ?'

'नहीं। पत्र नहीं लिखता। पत्र में लिखने के लिए कुछ है ही नहीं।' —उसने काफ़ी लेकर पी ली।

जानकी अम्मा ने फिर कुछ नहीं पूछा। उसने काफ़ी पीने के बाद

गिलास मेज़ पर रख दिया। जानकी अम्मा गिलास लेकर जाने वाली थी। उन्होंने कहा ; 'तुम पर ईश्वर का आशीर्वाद है बेटे। तुम्हारी माँ और छोटी बहन को कोई कष्ट नहीं होगा। शांति से बैठकर पढ़ो।' जानकी अम्मा चली गई। रामचन्द्रन ने पढ़ना शुरू किया।

उसे पढाने वाले कालेज के अध्यापकों ने एक साथ राय प्रकट की कि पढ़ाई में सबसे होशियार रामचन्द्रन है। कालेज की लायब्रेरी की किताबों में वह जल्दी ही मग्न हो गया। उत्कृष्ट कृतियों को वह बड़े चाव से पढ़ने लगा। जो कुछ वह पढ़ता है, सब उसकी समझ में आ जाता है, वह सब उसके स्मृति-पटल पर अंकित भी हो जाता है।

ऊँचा मस्तक, ओजस्वी आँखें तथा आकर्षक मुस्कराहट रामचन्द्रन की विशेषताएँ थीं। स्पष्ट, ज़ोरदार और रुक-रुककर बोलने की शैली उसकी एक दूसरी विशेषता थी। वह अध्यापकों के वात्सल्य का भाजन बन गया तथा सहपाठियों के स्नेह और आदर का पात्र भी।

निवास-स्थान में रात के दो बजे तक वह अध्ययन में लीन रहता। दस बजने पर जानकी अम्मा और सुदर्शिनी अम्मा सो जाती हैं। पाच्चन और अप्पु सिनेमा देखकर आने के बाद चुपचाप बिना किसी आवाज़ के बरामदे में जाकर सो जाते हैं।

एक दिन पाच्चन और अप्पु के सिनेमा देखकर वापस आने पर रामचन्द्रन एक किताब लिये सड़क पर खड़ा था। अप्पु ने पूछा : 'बाबू-जी, इस समय सड़क पर क्यों खड़े है ?'

'लैम्प में मिट्टी का तेल समाप्त हो गया है। सड़क के लैम्प भी बुझ गए हैं। मुझे अभी पढ़ना है। क्या करूँ, यही सोच रहा हूँ।'

'माँ को बुलाने पर वे लैम्प में मिट्टी का तेल भर देंगी न, बाबूजी ?' —पाच्चन ने कहा।

'नहीं। माँ और दीदी को मत जगाना।'

'तो मैं अभी मिट्टी का तेल ले आता हूँ'—पाच्चन दौड़ गया।

कुछ देर बाद वह एक बोतल में थोड़ा-सा मिट्टी का तेल ले आया।

उसने रामचन्द्रन के कमरे में जाकर लैम्प में मिट्टी का तेल डाला। माचिस निकालकर उसने लैम्प जलाया। लैम्प के आगे खड़े होकर उसने एक प्रतिज्ञा की -'आगे से इस लैम्प में मिट्टी का तेल कभी समाप्त नहीं होगा।'

'यह कैसे पाच्चा। लैम्प के जलने पर क्या मिट्टी का तेल समाप्त नहीं होगा?'

'यह कैसे होगा, कहे! – समाप्त होने के पहले हम उसमें मिट्टी का तेल भरते रहेंगे।'

'इस प्रकार हम बाबूजी को हरायेंगे' - अप्पु ने स्वर-से-स्वर मिलाते हुए कहा।

वे दोनों बार-बार यह प्रतिज्ञा करके कमरे से बाहर चले गए।

उसके बाद से रामचन्द्रन के लैम्प में मिट्टी का तेल भरा ही रहता था। कमरे के कोने में हमेशा एक बोतल मिट्टी का तेल रखा रहता था। पाच्चन और अप्पु का पुरस्कार था वह।

एक दिन रामचन्द्रन के कालेज से आने पर संध्या बीत गई। जानकी अम्मा और सुदर्शिनी अम्मा दरवाजे पर उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थीं। चलने से थककर आए हुए रामचन्द्रन से जानकी अम्मा ने पूछा : 'बेटा आज आने में इतनी देर कैसे हो गई।'

'आगे से मैं रोज ही इस प्रकार देर करके आऊँगा माँ। बहुत सबेरे जाना भी है।'

'ऐसा क्यों छोटे भैया?'— सुदर्शिनी ने पूछा।

'मुझे दो ट्यूशन मिल गई हैं दीदी। एक बड़े वकील के घर में। दूसरी एक प्रोफेसर के घर में। सेकण्ड फोरम, थर्ड फोरम और फोर्थ फोरम में पढ़ने वाले बच्चे हैं। वकील और प्रोफेसर दस-दस रुपए देंगे। सबेरे और शाम को काफी भी मिलेगी।

'अच्छा है —अच्छा है छोटे भैया।' सुदर्शिनी अम्मा ने उसकी

तारीफ की।

'भगवान् तुम्हारा साथ देंगे।'—जानकी अम्मा ने उसे आशीर्वाद दिया।

'वह लायक लडका है मां। वह ऊँचे पद पर पहुँचेगा।' —सुदर्शिनी अम्मा ने दूरदर्शिता दिखाई।

रामचन्द्रन तडके उठकर नित्य-कर्म समाप्त करके कालेज की किताबें लेकर, वकील के घर जाता। वहा दो विद्यार्थियो को पढाना है। ट्यूशन करके काफी पीने के बाद वह कालेज चला जाता। दोपहर को निवास-स्थान मे आकर भोजन करता। शाम को प्रोफेसर के घर जाता। वहा भी दो बच्चों को पढाना है। काफी पीने और पढाने के बाद निवास-स्थान पर लौट आता।

ट्यूशन के बाद घर आने पर सन्ध्या बीत जाती है। फिर कुछ देर तक जानकी अम्मा और सुदर्शिनी अम्मा से इधर-उधर की बातें करता है। कभी पाच्चन और अप्पू उनके साथ मे होते है। उस घर का सबसे आनन्दपूर्ण अवसर था वह।

ट्यूशन मे मिलने वाले रुपयों से रामचन्द्रन कालेज की फीस देता है, थोडा-बहुत खर्च भी चला लेता है। पहले जितनी किताबे पढ लेता था, उतनी न पढ सकने के कारण दु:ख होने पर भी वह अत्यधिक संतृप्त और ऊर्जस्वल दिखाई पडने लगा। अपने प्रयत्न से वह पहली बार रुपया कमा रहा है।

इस प्रकार दो वर्ष बीत गए। रामचन्द्रन इण्टरमीडिएट परीक्षा मे प्रतिज्ञा के अनुसार प्रथम श्रेणी मे पास हुआ। सफलता की खबर जिस दिन मिली उसी दिन सुदर्शिनी अम्मा ने उसे एक धोती और एक कुर्ता पुरस्कार मे दिया। जानकी अम्मा ने उसे आशीर्वाद दिया।

× × ×

बी० ए० क्लास में प्रवेश लेना है। उसके लिए बहुत अधिक रुपयों का खर्च है। रुपयो के लिए रामचन्द्रन क्या करे ? कौन देगा ? किससे

माँगे ?

सुदर्शिनी अम्मा और जानकी अम्मा को मालूम है कि रामचन्द्रन को रुपए की आवश्यकता है। उस घर से रुपए नहीं मिलते, यह भी उन्हें मालूम है। वह उनसे रुपए नहीं माँगेगा, यह भी वह जानती हैं। उसके बिना माँगे, उसे आवश्यक रुपए देने की उनकी इच्छा है। उनके पास रुपए है भी नही। हर महीने कर्ज़ चुकाने और घर का खर्च चलाने के बाद फिर एक पैसा भी बाकी नही बचता।

सुदर्शिनी अम्मा गले में पड़ी सोने की माला और हाथ की दो सोने की चूड़ियाँ गिरवी रखकर रुपए ले आईं। उन्होंने वे रुपए रामचन्द्रन की मेज़ पर लाकर रखे। विस्फारित नयनों से देखते हुए उसने पूछा : 'यह किसके लिए दीदी ?'

'क्यों ? फ़ीस नहीं देनी है ? किताबें नही खरीदनी है ? यह सब बिना पैसे के कैसे होगा ?'

क्या कहे ? क्या करे ? रामचन्द्रन को कुछ समझ में नहीं आया। काफ़ी देर तक वह स्तब्ध बैठा रहा। फिर झट से उसने सिर उठाकर सुदर्शिनी अम्मा के गले और हाथ की तरफ देखा फिर आवेश के साथ पूछा : 'दीदी, आपकी माला कहाँ है ? चूड़ियाँ कहाँ है ? वह सब बेचकर या गिरवी रखकर ही ये पैसे लाई हैं न ?'

सुदर्शिनी अम्मा केवल मुस्करा दी। रामचन्द्रन ने पूछा : 'दीदी··· मैं दीदी और माँ का कौन हूँ, जो इतना स्नेह मिलता है ?'

'मेरा छोटा भैया; माँ का छोटा बेटा।'

'दीदी ! सड़क से बुलाकर लाए हुए लड़के पर इतना स्नेह और और विश्वास अर्पित करना ठीक है क्या ? मेरी माँ कहा करती हैं कि पात्र को देखकर भिक्षा देनी चाहिए।'

'मेरी माँ कहा करती हैं कि भूखे पेट को भोजन देना चाहिए।'

'मेरे समान दीदी भी तो रुपए के बिना पढ़ी हैं न ? किसी ने दीदी की इस प्रकार मदद की है क्या ?'

'हां, मैया मदद की है। रेगिस्तान में भी जल-स्रोत होता है, स्वार्थ के मरुस्थल में भी करुणा और इन्सानियत उत्पन्न करने वाले जल-स्रोत दिखाई दे सकते हैं।'

रामचन्द्रन की आँखें भर आईं। सुदर्शिनी अम्मा ने वात्सल्य से उसका सिर सहलाया।

× × ×

एक वर्ष बीत गया। सुदर्शिनी अम्मा के लिए विवाह का एक प्रस्ताव आया। उससे भी अधिक वेतन पाने वाला अध्यापक था वह। एम० ए० पास था। उसका नाम था परमेश्वरन पिल्लै।

मास्टर परमेश्वरन पिल्लै विवाह के पूर्व दो बार घर पर आया। उस समय रामचन्द्रन से बातें भी की। उसकी बात करने की कर्कशता और व्यवहार रामचन्द्रन को पसंद नहीं आया। रामचन्द्रन में उम्र से भी अधिक ज्ञान और स्वतन्त्र विचार-वृत्ति, मास्टर परमेश्वरन पिल्लै को भी पसंद नहीं आई। क्लास मे पढाने की रीति ही वह बाहर भी व्यवहार में लाता था।

बिना धूम-धाम के ही विवाह सम्पन्न हो गया। मास्टर परमेश्वरन पिल्लै वहाँ रहने भी लगा। वह घर और भी बडा बनाया गया। कई सुधार भी किये गए, लेकिन वहाँ दूसरो का रहना और आना-जाना उनको पसन्द नही था। पाच्चन और अप्पु के आने पर वह पूछता : 'यहाँ क्यो आते हो ?'

उसका क्या जवाब दिया जाय ? वे आँखे फाड़कर देखते ! सुदर्शिनी अम्मा ने कहा : 'वे यहाँ रोज ही आने वाले है।'

'भीख माँगने वाले बदमाश लड़कों का यहाँ आना-जाना हमारे लिए शर्म की बात है।

'वे भीख माँगने वाले नही है, न बदमाश ही। बोझ ढोकर जीवन व्यतीत करने वाले है वे।'

'कुलियो और गाड़ी वालो के आने-जाने का घर है क्या यह ?'

पाच्चन और अप्पू बाहर निकलकर चले गए। वे फिर उस घर में नहीं आए।

मास्टर परमेश्वरन पिल्लै, रामचन्द्रन से भी अपनी थोड़ी-थोड़ी नफरत दिखाने लगा। रामचन्द्रन के पढ़ते समय मास्टर परमेश्वरन पिल्लै ज़ोर से बोलता। सुदर्शिनी अम्मा ने पति को रोकने के कई प्रयत्न किए, लेकिन वे सब निष्फल हुए।

छुट्टी के एक दिन रामचन्द्रन भोजन कर रहा था। परमेश्वरन पिल्लै ने अपने कमरे से ही जोर से कहा : 'बेकार के भिखमंगे पढ़ने का बहाना करके आ जाते हैं। फिर जहां पुरुष नहीं हैं, ऐसे किसी घर में अड्डा जमा लेते हैं। किसी होटल या चाय की दुकान मे जाकर बर्तन धोते तो भोजन मिल जाता।'

रामचन्द्रन झट से उठकर परमेश्वरन पिल्लै के कमरे में गया। उसने पूछा : 'आपने मुझे ही संकेत करके कहा है न ?'

'हां तो ?' परमेश्वरन पिल्लै ने रोष के साथ कहा।

'एक बार फिर तो कहिए ?'—रामचन्द्रन की आंखों से चिनगारियां निकल रही थीं।

'कहने पर ?'

'यह जीभ मैं खींच लूंगा, समझे ?'

'छोटे भैया !'—सुदर्शिनी अम्मा दोनों के बीच में आ गई।

'बेटा !'—जानकी अम्मा ने रामचन्द्रन को गले लगा लिया।

क्षण-भर के लिए वहाँ निस्तब्धता छा गई। रामचन्द्रन अपने को छुड़ाकर बाहर निकल गया। उसने हाथ धोए और अपने कमरे में चला गया। उसने पुस्तकें और कपडे बांधकर एक गठरी बनाई। उसे लेकर वह बाहर निकला और चल दिया।

'बेटा !'—जानकी अम्मा पीछे दौड़ी।

'छोटे भैया !'—सुदर्शिनी अम्मा भी पीछे पहुँची।

रामचन्द्रन सड़क पर निकलकर चला ही गया। मां और बेटी

फाटक पर खड़ी देखती रही।

शहर के एक सुनसान कोने में एक छोटा सा घर किराए पर लिया। रामचन्द्रन, अप्पु और पाच्चन मिलकर वहाँ रहने लगे। रामचन्द्रन खाना पकाता। पाच्चन और अप्पु मदद करते। इस प्रकार कुछ दिन बीतने पर पाच्चन और अप्पु ने खाना पकाने की कला सीख ली। फिर सब-कुछ वे ही करने लगे।

सवेरे बिना दूध की काफ़ी पीकर सब अपने-अपने काम पर चले जाते। रामचन्द्रन की सवेरे दो घरो मे ट्यूशन है। शाम को भी दो घरों मे ट्यूशन लेने के बाद वह घर आता है। तब तक पाच्चन और अप्पु भात तथा सब्जियाँ तैयार करके रख चुके होते है।

पाच्चन ने पहले वह बात कही थी। जब रामचन्द्रन गठरी लेकर सड़क पर चला तो दूर खड़े पाच्चन और अप्पु दौड़कर आ गए। अप्पु ने पूछा : 'बाबूजी को उसने वहाँ से निकाल दिया क्या ?'

'निकाला नहीं खुद ही चला आया।'

'आगे वह उस बूढ़ी माँ को भी वहाँ से पीटकर निकाल देगा बाबू-जी। ऐसा आदमी है वह।'

पाच्चन ने पूछा : 'आगे कहाँ रहेंगे आप ?'

'वह पुरानी पुलिया तो है ही।'

'पुलिया पर कैसे रहेगे ?'

'फिर कहाँ रहेंगे ?'

'बाबूजी आइए हम बतायेंगे रहने की जगह।'

इस प्रकार वे उस छोटे घर मे रहने लगे। तीन रुपया उसका किराया है। उसे वे तीनों मिलकर दे देते है। घर का खर्च भी तीनों मिलकर चलाते हैं, लेकिन रामचन्द्रन को केवल रात मे वहाँ भोजन करना होता है। दिन का भोजन ट्यूशन के घरों मे मिल जाता था।

इस प्रकार वे वहाँ डेढ़ वर्ष रहे। बी० ए० परीक्षा के लिए शुल्क भरने का समय हो गया। रुपये कहाँ से आयेंगे ? किससे माँगे ? ट्यूशन

वाले घरों मे माँगने पर वे शायद रुपये देंगे, लेकिन इस प्रकार का कर्ज लेने के लिए रामचन्द्रन तैयार नहीं है।

शुल्क भरने की तिथि समीप आ गई। क्या करना चाहिए, इस विचार से रामचन्द्रन घर की ओर जा रहा था। शाम के सात बज चुके थे।

टाउन हाल के आस-पास बहुत भीड़ हो रही थी। रामचन्द्रन ने दरवाज़े के भीतर की ओर झाँका। हाल मे बहुत लोग बैठे थे। बरामदे और आँगन में भी बहुत-से लोग खड़े थे।

हाल मे एक संगीत सभा हो रही थी। भीतर का गाना बाहर सुनाई पड रहा था। इस समय रामचन्द्रन की परिस्थिति गाना सुनकर आनन्दित होने की नहीं थी। वह आगे बढ़ा।

लेकिन गीत के स्वर ने मानो उसे पकड़कर खडा कर दिया। उसके पहले भी वह आवाज़ उसे कहीं सुनी जैसी लगी। उसने सडक किनारे खड़े होकर कान लगाया। बहुत परिचित किसी संबंधी की आवाज थी वह। लेकिन यह आवाज यहाँ···कैसे·· वह मूर्ति के समान सड़क के किनारे खड़ा रहा।

एकाएक वह जाग पड़ा। कार्तिक महीने की उस संध्या मे हाल से शीतल-गभीर, भक्तिमय और शोकाकुल एक गान उठकर अन्तरिक्ष मे फैल रहा था।

'अञ्जन श्रीचोर चारुमूर्ते कृष्ण !
वन्दना मैं करूं त्राहि मा हे कृष्ण।'

रामचन्द्रन मानो स्वप्न देख रहा था। वह दरवाज़े के पास चला गया और भीतर भी पहुँच गया। फाटक पर खड़े आदमी ने उसे रोका। उसका हाथ हटाकर वह अन्दर चला गया। लोगों की भीड़ निस्तब्ध और निश्चल थी। रामचन्द्रन लोगों की भीड़ से आगे बढ़ा। दरवाज़े पर खड़े होकर उसने रंगमंच की ओर देखा।

सरस्वती देवी गा रही थी—

'दिल में भरी हुई वेदना-यन्त्रणा
आनन्दरूप ! तुम दूर करो हे कृष्ण !'

सरस्वती देवी के गालों मे आंसू बह रहे हैं। दर्शक आंसू पोंछ रहे हैं।

'नन्दिनी !'—एक पुकार।

लोगों का पूरा ध्यान दरवाजे की ओर गया। रामचन्द्रन कुर्सियों के बीच से स्टेज पर चढ़ गया।

'नन्दिनी !'

'भैया !'—गायिका उठकर खड़ी हो गई।

३०. उदयाचल में प्रकाश

'कुञ्ञा ! अब आगे ?' पद्मनाभ पिल्लै ने साधु से पूछा। राज्य और सिंहासन तथा बन्धु-मित्र सब-कुछ नष्ट हो जाने पर राजा मानो अपने विश्वस्त मंत्री से पूछ रहा था।

मंत्री, सेनाध्यक्ष, कारिंदा और नौकर सब-कुछ—सब-कुछ कुञ्ञन था। कुञ्ञन को छोड़कर दूसरे किससे पद्मनाभ पिल्लै यह प्रश्न पूछते ?

बरामदे में पाल्थी मारकर बैठे साधु ने घूरकर देखा और फिर सिर झुकाकर मौन हो गया।

सम्पत्ति नष्ट हो गई; प्रताप नष्ट हो गया; तीनों बहनें मर गईं; दो भांजियाँ किसी के साथ भाग गईं; अब क्या ? अब क्या किया जाय ? इस प्रश्न का क्या उत्तर है ?

पद्मनाभ पिल्लै ने प्रश्न दुबारा नहीं पूछा। शायद उन्होंने वह प्रश्न स्वयं से पूछा होगा।

साधु ने सिर उठाया। मानो कुछ कहने जा रहा था। फिर सिर झुकाकर मौन धारण किये रहा। उस खानदान की तीन पीढ़ियों की जीवन और मृत्यु उसने देखा था। तीसरी पीढ़ी का केवल एक व्यक्ति शेष रहा है। केवल वही क्यों शेष रहा है ?

उत्तरी बाड़ के द्वार से कण्डम्पुलयन पद्मनाभ पिल्लै के पास आया और प्रणाम किया। फिर एक ओर खड़ा हो गया।

पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा :

"क्या है कण्डा ?'

'आपके दास की एक इच्छा है।'

'कौन-सी इच्छा ?'

'इस बार यहाँ के खेत में पहले की तरह आपके इस दास को खेती

करनी है। तब के जैसे मालिक का खेत के किनारे छतरी लेकर खड़े होना ही पर्याप्त होगा।'

'यह नहीं हो सकता, कण्डा। मैंने हाथी चराया था। अब बकरी नहीं चरा सकता।'

'आपके दास की इच्छा है।'

बहुत देर सोचने के बाद पद्मनाभ पिल्लै ने कहा : 'यहाँ बीज और बैल कुछ नहीं है।'

'बीज और बैल आपका दास लायगा।'

'हाँ। तो मैं खेत के किनारे आकर खड़ा रहूँगा।'

'कल से ही जोतना शुरू करूँगा।

'हाँ।'

'एक बात और है...'

'क्या है कण्डा ?'

'कुञ्ञच्योवन नहीं है, यही दुःख है।'

पद्मनाभ पिल्लै थोड़ा मुस्कराए। सिर झुकाए बैठे साधु ने एक साँस ली।

× × ×

कण्डम्पुलयन की हार्दिक अभिलाषा थी वह। उस अभिलाषा के पीछे बड़ी प्रतीक्षाएँ थीं। उसे उम्मीद थी कि नष्ट हुई पद्मनाभ पिल्लै की सारी सम्पत्ति फिर मिल जायगी। तब पहले की तरह मंगलश्शेरी के बड़े मालिक के संरक्षण में कण्डम्पुलयन पुलयों का मुखिया बनकर खेती कर सकेगा। उसने ऐसा भी सोचा होगा।

कहीं से कर्ज़ में लाए बैल और हल लेकर कण्डम्पुलयन सबेरे खेत में पहुँचा। आस-पास के सब खेत किसी जमाने में मंगलश्शेरी वालों के थे। वे सब आज कुञ्ञुवरीत के हैं। कुञ्ञुवरीत के खेत जोतने वाले मजदूर बैल और हल लेकर खेत में आ गए। कुञ्ञुवरीत सिर पर कपड़ा बाँधकर खेत के किनारे खड़ा हो गया।

पद्मनाभ पिल्लै नित्य-कर्म समाप्त करके खेत में जाने वाले थे।

साधु ने पूछा :

'जाना चाहिए मालिक ?'

'नहीं जाना चाहिए क्या कुञ्ञा ?'

'कण्डम्पुलयन बीज और बैल लेकर मंगलश्शेरी के खेतों में खेती करे···तो···'

'वह फसल काटकर ले जायगा क्या ?'

'काटकर नहीं ले जायगा, लेकिन मगलश्शेरी के खेत मे खेती करने के लिए कण्डम्पुलयन बीज और बैल लाया है, यह लोग जान जायँगे तो शर्म की बात होगी न ?'

'यह ठीक है, लेकिन मैंने वचन दे दिया है।'

'अब वचन वापस नहीं ले सकते ?'

'जो भी हो, मैं ज़रा वहाँ तक हो आऊँ।'

पद्मनाभ पिल्लै खाली पेट खेत में चले गए। पिछली रात का भोजन कञ्जी था। कञ्जी और केवल नमक। पिछवाड़े के एक छोटे नारियल के पेड़ से वसुमती लग्गी से एक कच्चा नारियल तोड़कर लाई थी। उसे तोड़कर नारियल के टुकड़े निकालकर कञ्जी में डाले थे। वसुमती कञ्जी लाकर पद्मनाभ पिल्लै के सामने रखकर सीधी खड़ी हो गई। उन्होंने केवल उसका पानी पिया। इस प्रकार खाली पेट वे खेतों की ओर चले।

खेत के किनारे खड़े होकर उन्होंने चारों ओर देखा। पद्मनाभ पिल्लै को देखते ही कण्डम्पुलयन का उत्साह बढ़ गया। वह ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ करके खेत जोत रहा है। बहुत दूर पर खेत जोतने वालों और खेत की मेड़ बनाने वालों को निर्देश देते हुए खड़ा था कुञ्ञुवरीत। वह बीच-बीच में पद्मनाभ पिल्लै को छिपकर देख लेता था।

खेत के कई भागों में काम करने वाले मजदूरों ने पद्मनाभ पिल्लै को देखा। वे स्नेह और आदर के साथ उनके पास चले आए। पहले ये

सब उनके नौकर थे। उन सबकी अपनी-अपनी मधुर स्मृतियाँ हैं। दोपहर का भोजन, जो उस समय मिलता था, चात्तन पुलयन उसका वर्णन करने लगा।

खेती करने वालों को मजदूरी से ज्यादा मुख्य था दोपहर का भोजन। उस गाँव मे मंगलश्शेरी को छोड़कर और कहीं मे उन्हें उतना स्वादिष्ट भोजन नही मिला था। सभी घरों मे मजदूरों को दोपहर में कञ्जी और कन्द-मूल ही दिया जाता था, केवल मंगलश्शेरी मे ही अच्छा-खासा भोजन मिलता था। जब कुञ्ञुलक्ष्मी अम्मा और भागीरथी अम्मा बड़ी मालकिनें थीं, उस समय वे ही सामने खड़ी होकर खाना परोसवाती थी। जब तक 'बस' नहीं कहा जाता था, तब तक परोसते रहना उनका नियम था।

दोपहर के भोजन का समय होते-होते प्रत्येक मजदूर के घर से एक-एक व्यक्ति मिट्टी की हँडिया लेकर आ जाता था। भोजन के बाद अन्त में एक परोसा घर में भेज देने के लिए होता था। .वह सब याद करते हुए चात्तन पुलयन ने कहा : 'रुपये-पैसे जो मिले थे सो भूल सकते हैं, लेकिन खाना-पीना नहीं भुलाया जा सकता।'

सब-कुछ सुनते खड़े कण्डम्पुलयन ने कहा : 'ईश्वर है तो आगे भी उसी प्रकार का खाना खायेंगे चात्ता—'

पद्मनाभ पिल्लै ने कुछ नहीं कहा। खाली पेट और सुबह की धूप!—उनके सिर में चक्कर आने लगा था।

दूर से कुञ्ञुवरीत ने ज़ोर से पुकारकर कहा : 'तुम सब वहाँ जाकर खड़े रहोगे तो यहाँ कैसे काम चलेगा रे?'

कण्डम्पुलयन के मुख पर गंभीरता छा गई। उसने ज़ोर से कहा : 'ज़रा चुप भी रहिए मालिक। वे आ ही जायेंगे। यहाँ हमारा प्यारा मालिक खड़ा है।'

'तुम सब जाओ।' पद्मनाभ पिल्लै ने उन्हें विदा कर दिया। सिर में एक चक्कर। वे खेत के किनारे बैठ गए।

'कौन खेत जोत रहा है रे ?' एक गर्जन था वह। राजशेखरन कण्डम्पुलयन की ओर दौड़ा।

पद्मनाभ पिल्लै जल्दी ही उठ खड़े हुए। राजशेखरन ने हल पकड़ते हुए गरजकर कहा : 'किसने कहा है रे, यह खेत जोतने के लिए ?'

'किसने कहा है ?—कहने का जिसका अधिकार है उन्होंने कहा है।'—कण्डम्पुलयन चिढ़ गया।

'जो कहने के अधिकारी हैं, उन्होंने कहते-कहते पूंछ छोडकर बाकी सब माद में डाल दिया है। आगे किसी को कहने की जरूरत नहीं है। इस खेत को मैं जोत लूंगा; मैं बो लूंगा—आगे कोई कहने न आए।'

'वापस चला जा कण्डा।' --पद्मनाभ पिल्लै की गूंजने वाली आवाज़ गद्गद हो उठी।

उनका शरीर काँपा, लेकिन वे पैरों को स्थिर करके खड़े रहे।

कण्डम्पुलयन ने हल से बैलों को खोल दिया। हल लेकर कंधे पर रखा।

'बेटा, मैं आगे नहीं कहूंगा। जिसे कहना है वह तू है। तेरा कहना काफ़ी है'—वे लौट पड़े।

अनंत अंधकार! तूफ़ान का भयंकर गर्जन। पद्मनाभ पिल्लै के पैर काँप रहे थे। वे खेत के कीचड़ में गिर पड़े।

'हाय!—हाय!' खेत के चारों ओर एक साथ एक चिल्लाहट सुनाई पड़ी।

हल फेंककर कण्डम्पुलयन दौड़ा आया। उन्हें पकड़कर उठाने वाला था।

'मत पकड़ना!—मत छूना।'—उनकी आवाज़ गूंज उठी। विवशता में भी वह सिंह गरज रहा है।

किसी ने नहीं छुआ; कोई पास नहीं गया।

सारी शक्ति बटोरकर काँपते-काँपते वे उठकर खड़े हो गए। गालों से कीचड़ पोंछते हुए उन्होंने कहा—'कंडा, एक लाठी···या कोई लकड़ी

···कुछ भी ले आओ।

कण्डन दौड़ गया। पद्मनाभ पिल्लै ने चारों ओर देखा। भरी सहानुभूति के साथ चारों ओर खड़े लोगों से उन्होंने कहा : 'पैर फिसल गया ···मुझे कुछ नहीं हुआ···तुम सब जाओ।'

थोड़ी दूर उदासीन खड़े राजशेखरन को देखते हुए उन्होंने कहा : 'बच्चे तू भी जा···अब खेत कल ही जोतवाना है···देर मत करना।'

कण्डम्पुलयन ने एक लकड़ी लाकर पद्मनाभ पिल्लै के हाथ मे दे दी। उस लकड़ी को टेककर वे खेत की मुंडेर पर चढ गए। वे धीरे-धीरे लकड़ी टेककर चलने लगे। कण्डम्पुलयन उनके पीछे-पीछे चल दिया। उन्होंने पूछा : 'वह गया क्या कण्डा ?'

'कौन मालिक ?'

'राजशेखरन।'

'गया।'

'हाँ।'

पद्मनाभ पिल्लै का शरीर फिर काँपा। उन्होंने लाठी टेके खड़े होकर कहा : 'कण्डा, थोड़ा पानी।'

कण्डन दौड़ गया। पद्मनाभ काँपते-काँपते खेत की ओर खड़े झुके। 'हाय !' भास्कर कुरुप चिल्लाता हुआ खेत की मुंडेर से दौड़ आया। पद्मनाभ पिल्लै बिना गिरे लाठी टेकते हुए खड़े रहे। भास्कर कुरुप ने उनका हाथ पकड़ा।

'छोड़ !···मुझे मत पकड़।'

भास्कर कुरुप ने हाथ छोड़ दिया। कण्डम्पुलयन एक मिट्टी के बर्तन में पानी लेकर दौड़ता हुआ आया। पद्मनाभ पिल्लै ने कहा : 'कण्डा, इसे मुंह के पास लगाकर पकड़ा दो।'

कण्डम्पुलयन ने मिट्टी के बर्तन को पद्मनाभ पिल्लै के मुंह के पास किया। उन्होंने उसका पूरा जल पी लिया। वे सीधे खड़े हो गए। फिर लाठी टेकते हुए वे चल दिए। 'तू भी आ भास्कर।'

भास्कर कुरुप और कण्म्डपुलयन ने उनका अनुगमन किया।

× × ×

'भास्कर, तू पास आ'—स्नान करके आराम-कुर्सी पर बैठते हुए पद्मनाभ पिल्लै ने भास्कर कुरुप को बुलाया। भास्कर कुरुप पास जाकर खड़ा हो गया। पद्मनाभ पिल्लै ने पूछा : 'रामचन्द्रन कालेज में है न ?'

'हाँ।'

'उसे एक पत्र भेजना हो तो किस पते पर भेजना चाहिए ?'

'रामचन्द्रन का पता मुझे अच्छी तरह मालूम नहीं है। नाम, कालेज का नाम और स्थान का नाम लिख दिया जाय तो लगता है उसे पत्र मिल जायगा···पत्र लिखना है क्या ?'

'यों ही पूछा···और वह कहाँ है—कमलाक्षी की बड़ी बेटी ?'

'विलासिनी ?'

'हाँ।'

'वह अकेली रहती हैं। वह आदमी मर गया।'

'वह कैसे जीवन-निर्वाह करती है ?'

'किसी-न-किसी प्रकार रहती है। मैं कभी-कभी थोड़ी सहायता कर देता हूँ।'

'तू उसे सहायता दे तो···'

'यह सोचकर कि मंगलश्शेरी की लड़की भिखमंगी न बन जाय।'

'वह यहाँ नहीं आयगी ?'

'बुलाने पर आयगी···आज्ञा हो तो मैं बुला लाऊँगा।'

'जल्दी की बात नहीं। वसुमती अकेली है इसलिए पूछा था···कल या परसों वह यहाँ आए। और···'

'जी।'

'राजशेखरन का भाई गोपालकृष्णन कहाँ है, मालूम है ?'

'तीन-चार वर्ष पहले यहाँ से गया था। दक्षिणी भाग का प्रभाकरन उसके साथ है। पिछले महीने प्रभाकरन के घर पर चिट्ठी आई थी—वे

दोनों सिंगापुर में हैं; उन्हें बहुत तनख्वाह मिलती है।'

'हुं—ग्रौर—'

'जी !'

'रवीन्द्रन !—' पद्मनाभ पिल्लै का कण्ठ ग्रवरुद्ध हो गया। 'वह मेरा बेटा है। वह लायक बनकर ग्रायगा'—वे ग्राराम-कुर्सी मे उठे। ग्रपनी ग्रात्मा से मानो उन्होंने कहा : 'मैं—ग्रब मेरी जरूरत नहीं है'—

दो-तीन बार उस बरामदे मे घूमने के बाद एकाएक भास्कर कुरुप की ग्रोर देखा—

'भास्कर, जो कुछ बीत गया, उसे भूल जाग्रो—ग्रौर—'

'जी !'

'मुझे एक जगह जाना है। कल सवेरे जाऊंगा।'

'दूर हो तो यात्रा के लिए कुछ—'

'नहीं, नहीं। खर्च न होने वाली यात्रा है मेरी यात्रा—यहाँ केवल वसुमती है। उसे देख लेना।'

'देख लूंगा।'

भास्कर कुरुप चला गया। पद्मनाभ पिल्लै ने ग्रन्दर की ग्रोर देखते हुए पुकारा—'वसुमती—'

घर के ग्रन्दर मे वसुमतो दौड़ ग्राई—'क्या है मामा ?'

'बच्ची, एक छोटा कागज का टुकडा, स्याही ग्रौर कलम है क्या ?'

'यहाँ कुछ भी नहीं है मामा। पीछे के घर मे ला दूंगी।'

'तो बच्ची, वहाँ जाकर कल्याणी से कागज, कलम ग्रौर स्याही देने को कहो।'

वसुमती चली गई। पद्मनाभ पिल्लै ने साधु से पूछा : 'कुञ्ञा एक लिफ़ाफ़ा मिलने का उपाय है ?'

ग्रब तक मौन होकर, निश्चल बैठा साधु उठा। उसने गंभीरता से पूछा : 'छोटे मालिक क्या सोच रहे हैं ? सवेरे छोटे मालिक कहाँ के लिए रवाना हो रहे हैं ? किसको पत्र लिख रहे हैं ?'

'कुञ्ञा, मैं आगे यहाँ···'

'नहीं। छोटे मालिक आगे यहाँ मत रहिए···आगे यहाँ रहेंगे तो खूंटे पर बांधे जायंगे·· जाना चाहिए—यहाँ से जाना चाहिए···लेकिन कहाँ जायेंगे ?'

'कहाँ जाऊँगा, यह बाद में सोचूंगा। खूंटे पर बँध जाने के पहले यहाँ से चला जाना चाहिए···' कुछ ऊपर की ओर देखकर स्वगत-सा उन्होंने कहा—

'पाप का परिहार करना चाहिए। काशी में जाकर गंगा के तीर्थ में स्नान करना है। फिर हिमालय पर जाकर मरना है।'

'वही चाहिए।'

'यह लड़की यहाँ अकेली है। रामचन्द्रन को पत्र लिखना है।'

'लिफाफा मैं ला दूंगा'— साधु जल्दी ही बाहर चला गया।

× × ×

रात का तीसरा पहर बीता। मंगलश्शेरी के दक्षिणी आंगन में, दक्षिण की ओर सिर किए पद्मनाभ पिल्लै उत्तान लेटे हैं। उनके पैरों के पास साधु ध्यान में निरत पड़ा है।

पद्मनाभ पिल्लै धीरे-धीरे उठे। वे सिर झुकाए हाथ जोड़कर खड़े हो गए। पूर्वजों के भौतिक अवशेषों से वे विदा माग रहे हैं— 'माँ, बाप···नानी, नाना···बड़े मामा ··आपकी सब कमाई का—धन और प्रताप का···विनाश मैंने किया है· ·गगा में स्नान करके पापों को धोने के लिए मैं जा रहा हूँ। मुझे···मुझे···आशीर्वाद दीजिए।'

फूट-फूटकर रोने की एक आवाज ! एक सिसकी ! जल्दी ही उन्होंने अपने ऊपर नियंत्रण कर लिया। वे बाईं ओर घूमकर दस कदम चले। फिर दक्षिण की ओर घूमकर खड़े होकर उन्होंने विदा माँगी— बच्चियो तुम्हारा भैया जा रहा है।'

वे मुड़कर चल दिए। साधु ने उनका अनुगमन किया।

फाटक खोलकर दोनों बाहर निकल गए। पद्मनाभ पिल्लै मुड़कर

खड़े हो गए। उड़कर दूर जा रही आत्मा को देखकर खड़े प्रेत के समान उन्होंने मंगलश्शेरी खानदान को देखा।

फाटक धीरे से बंद हो गया।

उदयाचल में प्रकाश फैलने लगा।

३१. चमकाया हुआ रत्न

उस छोटे घर के बाहर कार के रुकने पर पाच्चन और अप्पु को आश्चर्य हुआ। वे लालटन लेकर सड़क पर आए।

रामचन्द्रन पहले मोटर से उतरा था। पाच्चन ने अप्पु से धीरे से कहा : 'हमारे बाबूजी हैं न वह ?'

'और कौन है ?'

नंदिनी मोटर से उतरी। पाच्चन और अप्पु स्तब्ध रह गए। बहु-मूल्य वस्त्र और आभूषण पहने एक सुन्दरी युवती !

अप्पु ने पूछा : 'यह कौन है ?'

'क्या पता ?'

वासु गायक भी मोटर से उतरा। आनन्द में डूबकर अपना आपा भूलकर नंदिनी से बातचीत कर रहा था रामचन्द्रन। वासु महोदय की उपस्थिति का खयाल उसको अब तक नहीं आया था। उसने नंदिनी से पूछा : 'ये कौन है नंदिनी ?'

'यह तो ?···यह मेरे गुरु—मेरे अभिभावक !'—आवेश के साथ उसने कहा।

उसने गायक महाशय की ओर घूमकर कहा : 'यह मेरा भाई है, सुमती मौसी का बेटा।'

दोनों ने परस्पर अभिवादन किया। नंदिनी ने ड्राइवर से कहा : 'मोटर सबेरे ले आना।'

वे तीनों उस छोटे घर की ओर बढ़े। पाच्चन और अप्पु लालटेन लेकर आगे-आगे चले। बरामदे से उस झोंपड़ी के एक कमरे में प्रवेश करके नंदिनी ने कहा—'इसी झोंपड़ी में आप रहते हैं क्या ?···यहाँ मेज़, कुर्सी, चारपाई कुछ भी नहीं है।'

रामचन्द्रन ने लापरवाही से कहा : 'मैं यहां रहने नहीं आया, नंदिनी। पढ़ने आया हूं।'

'ये कौन हैं भैया ?'

'ये मेरे मित्र हैं। हम साथ-साथ यहां रहते हैं।'

'ये भी पढ़ने वाले हैं क्या ?'

'नहीं। ये मजदूर हैं···मैं विद्यार्थी और ये मजदूर। हम एक-साथ रहते हैं। इनके होने के कारण ही मैं यहां ऐसा जी रहा हूं।

नंदिनी ने उस कमरे में चारों ओर देखा। एक कोने में किताबें और कापियां संभालकर रखी हैं। एक अरगनी बंधी है जिस पर रामचन्द्रन के कपड़े टंगे हैं। एक कोने मे एक मिट्टी का बर्तन और दो-तीन मिट्टी की थालियां रखी हैं। नंदिनी ने ढंके रखे हुए मिट्टी के बर्तन और थाली को खोलकर देखा। रामचन्द्रन ने कहा : 'कञ्जी और कन्द-मूल की सब्जी है। हमारा रात का खाना।'

नंदिनी को आंसू पोंछते हुए वासु महाशय ने देखा।

ज़मीन पर बिछाई हुई चटाई पर सब बैठ गए। पाच्चन और अप्पु बरामदे में जाकर बैठे। अप्पु ने पूछा : 'भाई और बहन हैं न पाच्चा ?'

'हां, बड़े घर के हैं ये बाबूजी।'

'दूसरा कौन है ?'

'क्या कहते सुना नहीं, गुरु है।'

'काहे के गुरु ?

'क्या पता।'

भीतर थोड़ी देर निस्तब्धता रही। निस्तब्धता को भंग करते हुए नंदिनी ने पूछा : 'भैया घर नहीं जाते क्या ?'

'नहीं। परीक्षा में पास होने के बाद ही मैं घर जाऊंगा।'

'पत्र भी नहीं आते ?'

'नहीं।'

'घर की बातों का कुछ पता नहीं ?'

'नहीं ।'

'आपको यह भी पता नहीं कि मैं इनके साथ भाग आई हूँ ?'

'नहीं ।'

'फिर मेरे बारे में आपने कुछ पूछा ही नही ।'

नंदिनी तेरा गाना सुनने पर और तुझे देखने पर मैं सब-कुछ भूल गया । अब कहो : 'तुम घर से भाग आई थीं क्या ?'

'हाँ, अपनी दीदी के समान मैं भी भाग आई, लेकिन मैं गुरु के साथ गई थी ।'

'तो तूने भी खानदान के मान में कलंक लगाया ।'

नंदिनी उपहास की हँसी हँसी : 'जो मान था ही नहीं उस पर कलंक कैसे लग सकता है भैया ? काली बिल्ली जो नहीं है उसे अँधेरे में ढूंढ़ने के समान···'

रामचन्द्रन चिन्ता-मग्न हो गया । उसने स्वगत जैसा कहा : 'सच है । काली बिल्ली है नहीं उसे अँधेरे में ढूंढ़ने का पागलपन अब खत्म करना चाहिए ।···फिर भी खानदान को भूलना मत ।'

'नहीं भूली हूँ । भूलूंगी भी नहीं । मैंने माँ को एक मनीआर्डर भेजा था —मद्रास से ।'

'यह अच्छा हुआ ।'

'लेकिन—'

'क्या ?'

'लौट आया, क्योंकि जिसके नाम भेजा, वे मिली नहीं ।'

'बड़ी मौसी थी नहीं'—रामचन्द्रन ने उत्कण्ठा से देखा । जल्दी ही उसने इसके विपरीत सोचा—

'डाकिये ने तलाश किये बिना, "नहीं हैं" लिखकर लौटा दिया होगा ।'

'पता नहीं क्या ! ···शायद माँ ने मुझे त्याग दिया होगा । नहीं तो

मेरी माँ···'—नंदिनी की आँखें भर आईं। अवरुद्ध कंठ के साथ उसने कहा : 'दोनों लड़कियाँ ऐसी···यह दुःख माँ क्या सहन कर सकी होगी ? दीदी के जाने पर माँ के प्राण आधे हो गए थे'—उसने फूट-फूटकर रोते हुए पूछा : 'क्या वह अब भी हैं ? भैया—मेरी माँ जिन्दा होगी ?'

'बडी मौसी पर कोई विपत्ति नहीं आई है। नंदिनी, बड़ी माँ के मरने का समाचार क्या माँ मुझे नहीं भेजती ?···बड़ी मौसी तुम्हारा त्याग भी नहीं करेंगी। कोई भी माँ, बच्चों का त्याग नहीं कर सकती। तू कल ही घर जा।'

'मुझे घर में घुसने नहीं देंगी भैया। मैं छिपकर भाग आई थी—वह भी एक ईषवा के साथ···ये मेरे गुरु हैं, मेरे अभिभावक हैं, लेकिन माँ और मौसियों के लिए ये एक अछूत है।'

अब तक चुप बैठा वासु गायक हँसा। उसने कहा : 'आगे नंदिनी स्वतंत्र रह सकती है। अपना काम मैंने पूरा कर दिया।'

'मैं कभी भी स्वतंत्र नहीं होऊँगी। आपका काम समाप्त नहीं हुआ है'—नंदिनी की आवाज़ में असाधारण दृढता थी। उसने रामचन्द्रन से कहा : 'भैया, इन्होंने मेरा गाना नहीं सुना होता तो, ये मुझे न देखते तो···'

'शोभा और मूल्य बढ़ते हैं रत्नों के, जब चमकाये जाते हैं।' गायक महाशय ने इस आशय का एक गाना मृदु स्वर में गाया।

'भैया मैं वहाँ पड़ी-पड़ी नष्ट हो जाती। ईश्वर ने इन्हें भेजा था—आप ईश्वर पर विश्वास करते हैं ?'

'क्या पता !—मैंने सोचा नहीं नंदिनी। मुझे इसके लिए समय नहीं मिला।'

'मुझे विश्वास है। मेरे गुरु को ईश्वर ने मेरे पास भेजा था, भैया।'

वासु संगीतज्ञ सिर झुकाए मौन बैठा रहा। नंदिनी ने आगे कहा : 'आपको सुनना है क्या ?'

घर से निकलने के बाद की सारी कहानी उसने विस्तार के साथ कही।

वासु गायक के संगीत के अच्छे विद्वान् होने पर भी, उतनी अधिक कीर्ति उन्हें नहीं मिली। ट्यूशन से और कभी-कभी मिलने वाली संगीत-सभाओं से वह जीवन बिता रहा था। नंदिनी को लेकर मद्रास में जाकर रहने के बाद से उसे दैनिक जीवन में बहुत कष्ट उठाने पड़े। उसके साथ ही कई अफ़वाहें भी फैल गईं।

पड़ोस वालों और संगीतज्ञ के परिचित लोगों को वासु और नंदिनी के सम्बन्ध के बारे में संदेह हुआ। उनका विचार था कि कहीं से एक लड़की को भगा लाया है।

नंदिनी जिस शीघ्रता से संगीताभ्यास में आगे बढ़ी, उससे गायक महाशय भी आश्चर्य-स्तब्ध रह गए। जब वह गाती है तब उसे इसका भान नहीं रहता कि वह गा रही है। आत्मा से भरे हुए संगीत को एक प्रकार की अबोधावस्था में वह बाहर प्रवाहित किया करती थी। गायक गुरु का निर्देश, उसका सहायक था। लेकिन कभी-कभी उन निर्देशों की अनजाने अवहेलना करके वह अपने मार्ग में बह जाती थी। वह मार्ग अत्यन्त नवीन और मनोहर मार्ग हुआ करता था। निश्चल होकर सपनों से भरे उन विशाल नयनों को दूर कहीं लगाकर प्रपंच के चलन का ताल से बद्ध शब्दों द्वारा व्याख्या करने वाली उस गायिका के आगे कभी-कभी गायक महाशय भक्ति के साथ हाथ जोड़ता था।

गायक नंदिनी का आराधक हो गया। नंदिनी गायक की विनीत शिष्या भी हो गई। यही उन दोनों का आपस का संबंध था।

संयोग से नंदिनी ने पहली बार मद्रास की एक सभा में गाया था। एक दिन शाम को वह अपने गुरु के साथ समुद्र के किनारे गई। देशीय स्वतंत्रता-संग्राम की लहरें उस समय उठ रहीं थी। उस सभा के संयोजकों के बीच वासु गायक के परिचित व्यक्ति भी थे। एक कार्यकर्ता ने गायक महाशय से पूछा—'अपनी शिष्या से 'वंदेमातरम्' गीत गवा देंगे क्या ?'

गुरु ने नंदिनी से पूछा । नंदिनी ने स्वीकार कर लिया ।

पूर्वी दिशा मे समुद्र और उसके इस तरफ मनुष्य का एक और महासमुद्र । उस समुद्र और मनुष्य के महासमुद्र का सामना करते हुए नंदिनी रंगमंच पर खडी हुई । गाना शुरू हुआ—'वंदेमातरम् ।' अरब महासमुद्र से उठी सरस्वती देवी कन्याकुमारी की विवेकानन्द शिला पर खड़ी होकर हिमवान की चोटियो को लक्ष्य करके गा रही थी—'व—न्दे—मा—तरम्' ।

वह गीत हिमालय के शांति-मंत्र से मिलकर सारे भारत में प्रतिध्वनित हुआ । गान के अन्त मे नदिनी ध्यान मे डूब गई । पूर्वी सागर और इस ओर बिखरा पड़ा मानव-महासागर भी निश्चल हो गया । आत्मा की अगाधता से 'वंदेमातरम्' गाया गया था ।

वासु महाशय ने उस दृश्य का वर्णन किया था ।

उस दिन से नंदिनी मद्रास वालो की आँखों की पुतली बन गई । कीर्ति और धन दोनों ने उसे अपना लिया । संगीत की सभाओं में बहुत निष्ठा से दो बातों का पालन वह करती थी । गुरु के पास ही में बैठे होने पर वह गाती थी तथा अंत मे 'अञ्जन श्रीचोर' वाला कीर्तन अवश्य ही गाती ।

रुपये मिलना शुरू होते ही उसने माँ को एक मनीआर्डर भेजा था । एक पत्र भी भेजने की इच्छा थी, लेकिन क्या लिखती ? कैसे माँ से माफी माँगती ? अंत में केवल मनीआर्डर ही भेजने का निश्चय किया । मनीआर्डर लौट आने पर उसने सोचा कि माँ मर गई होगी, लेकिन रामचन्द्रन ने कहा कि माँ मरी नही है और मर जाती तो खबर आए बिना नही रहती । तब वह आश्वस्त हुई ।

नंदिनी की पूरी कहानी सुनने के बाद, रामचन्द्रन ने संक्षेप में अपनी कहानी सुनाई । इस प्रकार वह रात बीत गई ।

प्रभात में कार आई । एक लिफ़ाफा रामचन्द्रन को हाथ में देकर नंदिनी ने कहा : 'थोड़े रुपये हैं इसमें । फिर और भेजूंगी । मेरा पता

इसके अन्दर है। भैया मुझे पत्र लिखना।'

उन्होंने आनंद के साथ विदा माँगी।

पाच्चन ने रामचन्द्रन से पूछा : 'आपकी एक ही बहन है क्या ?'

'दो और हैं।'

'वे कहाँ हैं ?'

'घर पर।'

'दूसरा आदमी आपका बहनोई है न ?'

'नहीं, उसका गुरु है।''

रामचन्द्रन ने लिफ़ाफ़ा खोलकर देखा। चार सौ रुपये और नंदिनी का पता लिखा हुआ एक कागज़ का टुकड़ा उसमें था।

उसने उसी दिन परीक्षा के लिए शुल्क जमा किया। ज़रूरत के कपड़े खरीदे। पाच्चन और अप्पु को धोती खरीद कर दी। चाँवल और अन्य चीज़ें खरीदीं। परीक्षा के लिए पढ़ाई भी बहुत ज़ोर से शुरू की।'

× × ×

प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान लेकर उत्तीर्ण होने का विश्वास रामचन्द्रन को है। पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परीक्षा के हाल में वह गया था।

'रामचन्द्रन'—पीछे से एक सहपाठी ने पुकारा।

रामचन्द्रन ने घूमकर देखा।

'यह तेरा ही है न ?'—उसने एक पत्र रामचन्द्रन की ओर बढ़ाया।

रामचन्द्रन ने पत्र लेकर पता देखा— 'हाँ। यह मेरा ही है।'

सुमती अम्मा और वसुमती की लिखावट नहीं थी। और कौन उसे पत्र भेजेगा ? रामचन्द्रन ने लिफ़ाफ़ा खोलकर पत्र पढ़ा—

'घर में वसुमती अकेली है। तुम तुरन्त आना।

तुम्हारा

मामा पद्मनाभ पिल्लै (हस्ताक्षर)'

घर में वसुमती अकेली है। बाकी सब कहाँ हैं ? माँ, बड़ी मौसी

तथा राजशेखरन आदि सब कहाँ गए ? पत्र लिखकर मामा कहाँ चले गए ?...सब...सब...

रामचन्द्रन का सिर चकराने लगा। वह डेस्क पर हाथ रखकर खड़ा हो गया। उसे लगा कि वह गिर पड़ेगा। वह बेंच पर बैठ गया।

केवल वसुमती घर में है। बाकी सब लोग कहाँ गए ? उस बड़े घर में अकेली वसुमती है। बिना किसी के आश्रय के इस प्रकार उसे अकेली छोड़कर माँ कहाँ गई ? रामचन्द्रन को लेटने की इच्छा हुई, लेकिन वह लेटा नहीं। डेस्क पर ही हाथ की कोहनी टेककर हथेली पर मुख रखकर वह निर्निमेष बैठा रहा।

हाल में विद्यार्थी भर गए। प्रश्न-पत्र बाँटे जाने लगे। रामचन्द्रन के हाथ में भी एक प्रश्न-पत्र आया। उसने सारे प्रश्न पढ़े। कुछ भी समझ में नहीं आया। उसकी आत्मा में एक ही गूँज थी—घर में अकेली वसुमती है।

सब विद्यार्थी जल्दी-जल्दी लिख रहे हैं। रामचन्द्रन केवल प्रश्न-पत्र देखता रहा। समय बीतता रहा। एक निरीक्षक रामचन्द्रन के पीछे आ खड़ा हुआ। उसने धीरे से पूछा : 'क्यों रामचन्द्रन, लिखते क्यों नहीं हो ?

वात्सल्यपूर्ण मृदुल प्रश्न था वह, लेकिन उसे वह बिजली के समान लगा। चार वर्ष के लगातार प्रयत्न और कष्टों को क्या व्यर्थ करना है ? गुच्छा हाथ में होने पर बाँस टूट जाए तो ?

वह सीधा बैठ गया। चार वर्ष पहले घर से निकलते समय माँ के कहे शब्द उसके कानों में गूँजने लगे : 'मेरे बेटे ! पढ़कर योग्य होकर आना। खानदान को मत भूलना।'

उसने पहला प्रश्न पढ़ा। एक, दो, तीन, चार—इस प्रकार हर प्रश्न का उत्तर उसने लिखा। दूसरे सब विद्यार्थियों के पहले उसने अपनी कापी निरीक्षक को दे दी। वह बाहर निकलकर चल दिया।

वह सीधे डाकघर गया। वहाँ बैठकर एक पत्र लिखा। सिर्फ़

इतना—

'प्रिय कल्याणी',

घर में वसुमती अकेली है ऐसा मामा ने लिखा है। मेरी परीक्षा हो रही है। परीक्षा के बाद मैं वहाँ आऊँगा। तब तक वसुमती की देख-रेख करना। रुपये भेजता हूँ।

रामचन्द्रन (हस्ताक्षर)

पत्र और मनीआर्डर भेज दिया।

× × ×

बस मे उतरकर मुक्कोणक्करा की ओर रामचन्द्रन पैदल चला जा रहा है। रात के ग्यारह बज चुके है। केवल चाँदनी का प्रकाश है।

पथरीली सड़क पर चलते समय चार वर्ष के भीतर गाँव में क्या-क्या परिवर्तन आ गया होगा, उसके बारे में उसने अंदाज़ लगाया। दूर तक चलने पर रास्ते के पास एक मकान देखा। फिर और आगे चलने पर मलयालम विद्यालय के पास दूसरा विद्यालय बना हुआ देखा। विद्यालय के पीछे, मंगलश्शेरी वालों के अहाते के उस छोटे घर के सामने एक दुकान थी।

वह चलते-चलते मंगलश्शेरी के द्वार पर पहुँचा। बंद घर का दरवाज़ा खटखटाने पर भीतर सुनाई नहीं पड़ेगा, इसलिए वह दीवार कूदकर भीतर पहुँचा।

बैठक में मामा की आराम-कुर्सी पड़ी थी। उस आराम-कुर्सी की आड़ में, कोई कम्बल ओढ़े लेटा है। उसने बैठक के आगे के बरामदे में खड़े होकर धीरे से पुकारा—'ए—ए!'

'कौन है?—कौन है?'—भास्कर कुरुप जल्दी से उठ खड़ा हुआ।

'मैं हूँ—रामचन्द्रन!'

'रामचन्द्रन!'—भास्कर कुरुप बरामदे में दौड़कर आया। उसने रामचन्द्रन को गले लगाया।

'कुरुप भैया—भैया यहाँ—इस प्रकार—'

वसुमती ग्रौर विलासिनी ग्रंदर हैं। कल्याणी भी हैं।

'माँ कहाँ है ? दोनों बड़ी मौसियाँ कहाँ हैं ? मामा कहाँ है ? राजशेखरन कहाँ है ?'

कुरूप ने उत्तर नही दिया।

'हाँ, हाँ। मेरा भाई है।' वसुमती की ग्रावाज़ भीतर से सुनाई पड़ी।

रामचन्द्रन बैठक मे गया। ग्रंदर एक दियासलाई जलाई गई। दरवाज़े की दराज़ से प्रकाश ने ग्रन्दर की ग्रोर झाँका।

दरवाज़ा खुला। प्रकाश के साथ वसुमती भी बाहर निकल ग्राई। वह रामचन्द्रन के गले लग गई—भैया—मेरे भैया !'

'रामचन्द्रन !—मेरे छोटे भैया !'—विलासिनी ने उसके सिर पर हाथ रखा।

'बच्चे !' मिट्टी के तेल का दीपक पकड खडी कल्याणी फूट-फूटकर रोई।

३२. लय भी बदली, ताल भी बदला

दूसरा महायुद्ध समाप्त हुआ। मानव-जीवन का स्वर और ताल बदल गया। मनुष्य की चिन्ता और उसकी अभिलाषाएँ आकाश के उस पार उड़ गईं।

मनुष्य के स्वतन्त्रता-संग्रामों के इतिहास में सबसे नवीन एक अध्याय जोड़ते हुए भारत राजनैतिक स्वतन्त्रता की सीमा पर पहुँचा। स्वतन्त्रता के जन्म के लिए भारत तड़प रहा था।

इस समय केरल में भी आश्चर्यजनक परिवर्तन हो रहा था। कुछ वर्षों के पहले केरल के एक कवि ने गाया था—

'नियमों को बदलो तुम खुद ही, नहीं तो—

नियम स्वयं बदल डालेंगे तुमको।'

केरल के सामाजिक नियमों में कई परिवर्तन हुए। नियमों का परिवर्तन स्वीकार न करने वालों को नियमों ने ही हटा दिया। जाति का किला टूट-फूट गया; उसके साथ ही मातृ-सत्ता की रीति भी खत्म हो गई। उस विनाश के फलस्वरूप कई खानदान और व्यक्ति भी नष्ट हुए। खेत और ज़मीन अधिकतर ईसाइयों के और थोड़े-बहुत ईषवाओं के हाथों में पहुँच गई।

पच्चाषी खानदान की नींव तक उखाड़ दी गई। देवकी अम्मा जो वहाँ झोंपड़ी बनाकर रही, सबसे लज्जाजनक बीमारी हो जाने से सभी की घृणा-पात्र बनकर एक बूंद पानी के लिए तरसती हुई मर गई। देवकी अम्मा को मारने के लिए गंडासा लेकर आया हुआ बेटा रवीन्द्रन उसे फेंककर कहीं चला गया। खानदान का हिस्सा लेने वाली शाखाएँ उसे बेच खाकर विनष्ट हो गईं। उस विनाश से टूटकर दूर जा गिरे एक टुकड़े का, सिर्फ़ उसका नाश नहीं हुआ। वह छोटा टुकड़ा था भास्कर कुरुप।

मनुष्यत्व को मानने की और आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करने की क्षमता उसमे थी ।

मगलश्शेरी खानदान का अध:पतन हुआ, लेकिन उस खानदान का नाश नही हुआ । दो लड़कियों के भाग जाने के दु:ख और अपमान को सहने की शक्ति न होने से कमलाक्षी अम्मा की मृत्यु हो गई । सुमती अम्मा ने आत्महत्या कर ली । सरोजिनी अम्मा पागल होकर मर गई । गोपालकृष्णन कही चला गया । राजशेखरन खानदान से संबंध तोड़कर अकेन्न कमाई मे लगा है, लेकिन खानदान का नाश नही हुआ । वहाँ एक लडकी शेष रह गई—वसुमती । उसकी आशा का केंद्र है—उसका भाई रामचन्द्रन ।

'साबुन, कंघा और आईना' बेचने वाले के साथ भाग गई थी विलासिनी । भास्कर कुरुप के प्रयत्न से वह मंगलश्शेरी मे लौट आई । फिर भी वह खानदान मे विलीन नही हो सकी । अपराध का बोध और अपकर्ष का भान उसे सताता रहा । भास्कर कुरुप को यह मालूम था । अपने मामा और भाइयों के द्वारा मंगलश्शेरी खानदान के प्रति किये गए विद्रोहों के प्रायश्चित्त के रूप में उसने विलासिनी से विवाह किया और अपने घर ले गया ।

× × ×

मुक्कोणक्करा में बाहरी और आंतरिक कई परिवर्तन हुए हैं । गाँव वालो का ध्यान जाति-सम्बन्धी बातों से राजनैतिक बातों की ओर गया । विदेशियों के अधिकार और स्वेच्छाधिकार के खिलाफ़ शुरू किये गए संग्राम में मुक्कोणक्करा ने बड़े जोश से भाग लिया । दिवाकरन, भास्कर कुरुप और सुकुमारन नायर कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन गए ।

अब तक सपत्ति अर्जित करने और धार्मिक बातों में ही ध्यान केन्द्रित करने वाले ईसाई लोग भी राजनैतिक बातों मे तत्पर हुए । दूसरे भारतीयों से वे भिन्न नहीं हैं और ईसाई होने के कारण अंग्रेज़ी शासकों से विशेष सुविधाएँ भी नहीं मिलेंगी । शायद सत्य का बोध

होने से ही ये लोग भी स्वतन्त्रता-संग्राम में कूद पड़े ।

मुक्कोणक्करा के राजनैतिक मामलों में कुञ्ञुवरीत के बेटे तोमस और माम्मन मुतलाली के बेटे वर्गीस ने बड़े ज़ोर-शोर से भाग लिया ।

बाज़ार में स्थित भास्कर कुरुप के दुमंजिले मकान की पहली मंजिल में काँग्रेस का आफ़िस था । आफिस के ऊपर तिरंगा झंडा भी लगाया गया था । काँग्रेस-आफिस के ठीक सामने पहले एक नाई की दुकान थी । अब उस दुकान में कृषक संघ के आफ़िस की स्थापना की गई । उसके आगे हँसिया और हथौड़े के चिह्नों से युक्त लाल झंडी लगा दी गई । पच्चाषी से बँटवारा लेकर विनष्ट हुई एक शाखा का गोपाल कुरुप कृषक संघ का नेता है । परस्पर विरुद्ध लक्ष्य और मार्ग के अनुयायी इन दो संघों ने लोगों को दो भागों में विभक्त कर दिया । बाज़ारों, सड़कों के किनारे तथा चाय की दुकानों में राजनैतिक वाद-विवाद तीव्रता से चला करते हैं ।

बाज़ार के पीछे वाले मैदान में रोज़ राजनैतिक समारोह हुआ करते थे । यदि काँग्रेस वाले एक समारोह करते तो अगले दिन कृषक संघ के लोग भी एक समारोह करते । दोनों सभाओं में अखिल केरल में प्रसिद्धि पाए हुए और अखिल भारत में प्रसिद्धि पाए हुए लोगों को बुलाकर भाषण दिलवाया जाता था, लेकिन दोनों की सभाओं के भाषण विरुद्ध आदर्श और कर्म-पद्धतियों को बताने वाले होते थे । भारत की राष्ट्रीयता, अंग्रेजी साम्राज्यत्व और राजाओं के स्वेच्छाचारों से मुक्ति, महात्मा गांधी और अहिंसात्मक संग्राम सब काँग्रेस के समारोह के भाषण के विषय थे । कृषक संघ के समारोह में कृषक-मज़दूर-वर्ग के रक्त रूक्षित विप्लव, रूस के संग्राम की विजय, कृषक-मज़दूर-वर्ग का आधिपत्य आदि भाषण के विषय थे ।

मुक्कोणक्करा में इस प्रकार का राजनैतिक परिवर्तन होने के साथ-ही-साथ बाहरी रूप में भी बड़ा परिवर्तन आ रहा था । बाज़ार एक बड़े बाजार के रूप में विकसित हुआ । सड़क बन जाने के साथ ही स्थल

मार्ग के यातायात मे सुविधाएँ हो गई। इस प्रकार नदी और सडक के द्वारा चीजें लाने और ले जाने मे सुविधा हो गई। इतना ही नही, पूर्वी और पश्चिमी भाग मे फिर से मेल-जोल होने लगा। बाज़ार मे थोक बिक्री भी शुरू हो गई।

पहले के मलयालम विद्यालय के स्थान पर अब एक अग्रेजी हाई स्कूल बन गया है। सडक के दोनो ओर नए घर बनवाए गए। उनमे अधिकतर विनष्ट नायर खानदानो के स्थानो पर ईसाइयो द्वारा बनवाये गए घर है। कुछ नये घर ईश्वाओ के भी है।

अग्रेजी हाई स्कूल के सामने राजशेखरन की पसारी की दुकान और चिट-फण्ड आफिस है। पूरे गाँव की सम्पत्ति का केंद्र था वह। राजशेखरन की दुकान मे सभी चीजे खरीदने को मिल जाती थी और कोई भी चीज वहाँ ले जाकर बेची जा सकती थी। दुकान के साथ मिला हुआ है चिट-फण्ड आफिस। धनिकों, मध्यवर्ग के लोगो और गरीबो के योग्य वहाँ कई प्रकार की चिटे है। जाति और धर्म का कोई भेद न मानकर गॉव के बहुत-से लोग उसकी चिट के हिस्सेदार बने। इसके अतिरिक्त सोना गिरवी रखकर सूद पर रुपये देने का इन्तजाम भी था। इस तरह उस गाव के सब लोग किसी-न-किसी प्रकार राजशेखरन से रुपये की बात मे सबधित थे। जाति-धर्म, अमीर गरीब तथा स्त्री-पुरुष का भेद माने बिना सभी मे एक-सा व्यवहार करने की क्षमता उसमे थी।

लेकिन मगलश्शेरी खानदान से राजशेखरन का कोई सबध नही है। केवल मगलश्शेरी से ही नहीं, किसी घर के किसी भी व्यक्ति से उसका विशेष सबध नही। किसी से किसी प्रकार का विरोध भी नही है। धन कमाना उसके जीवन का लक्ष्य था। वही उसके जीवन का सुख भी था।

× × ×

कल्याणी बूढी हो गई। बच्चे सब अच्छे स्थान पर पहुँच गए। फिर भी कल्याणी के मुख पर एक अगाध शोक का भाव स्थायी रूप से छाया रहता था। कौन है वह साधु?—उसके सामने परेशान करने वाला

एक प्रश्न-चिह्न था वह ।

कुञ्जन के चले जाने से जो दु ख हुआ था, उसके कम होने पर उस साधु का आगमन हुआ । दाढ़ी और जटा बढाए, मुख पर भस्म लगाए, खडाऊँ पहने उस साधु के सडक पर जाते समय हमेशा वह निश्चल खडी देखती रहती थी । उसे लगा कि वह उसके बच्चो का पिता है, लेकिन किसी के मुख पर देखे बिना, किसी से बोले बिना चलने वाले साधु से 'तुम मेरे पति हो' ऐसा कैसे पूछ सकती थी ? पद्मनाभ पिल्लै के जेल से आने के बाद साधु मगलश्शेरी मे ही रहता था । वह सदा ध्यान मे मग्न दिखाई पडता था । ऐसे बैठन वाले व्यक्ति से क्या पूछा जाय ?

पद्मनाभ पिल्लै और साधु दोनो जिस दिन काशी चले गए उस रात को कल्याणी ने एक सपना देखा ।

दूसरे दिन उसने वसुमती से कहा : 'मैंने कल एक सपना देखा छोटी मालकिन ।'

'कौन-सा सपना कल्याणी ?'

'वासु के पिता आए है । आकर छोटे मालिक को लेकर इस घर की तीन बार प्रदक्षिणा करके वे दोनो यहाँ से निकलकर चले गए ।

'किधर गए ?' —वसुमती ने पूछा ।

जगल और पहाड पार कर गए । अन्त मे एक नदी मे उतर गए । फिर नही देखा । वह साधु कौन है, आप जानती है ?'

'कौन है ?'

'वासु के पिता हैं ?'

'साधु कुञ्जन है', ऐसा वसुमती ने कई लोगों से कहा । किसी ने उसका विश्वास नही किया, लेकिन कल्याणी का विश्वास था कि वह उसका पति ही था । वह रोज रास्ते की ओर देखती खडी रहती—साधु के वेश मे कुञ्जन को देखने के लिए वह हमेशा बडबडाती—

'छोटे मालिक को लेकर स्वर्ग की ओर चले गए है । तीन बच्चों को जन्म दिया था न मैने ? फिर भी मुझसे बिना कुछ बोले चले गए ।'

× × ×

कुञ्ञुवरीत बढ़ा और वात-रोगी हो गया है। वह घर के बाहर नहीं निकलता। बड़ा बेटा वर्की खेत की देख-रेख करता है। उसने विवाह कर लिया है। एक बच्चा भी है। वर्की का मिला दहेज रीता के विवाह में दे दिया गया। रीता पति के घर चली गई।

माग वृद्धी होने पर भी तंदुरुस्त है। वर्की ने कह रखा है कि वह अधिक काम न करे। फिर भी काम किये बिना सारा नहीं रह सकती। सबेरे उठकर रात के दस-ग्यारह बजे तक काम करने की उसकी आदत पड़ गई है। इस प्रकार कोई काम न करने पर वह खा और सो नहीं सकती।

कुञ्ञुवरीत सब प्रकार से अस्वस्थ है। उत्कंठा के साथ वह बड़-बड़ाता रहता है—'दक्षिणी खेत जोतने कौन-कौन गए हैं?'

'पण्डत पाप्पच्चन बीज ले गया था, क्या लौटा दिया सारा?'

'अञ्जिर पारम्पु के पूर्वी भाग के कटहल के पेड़ों के सब कटहल मैंने बाजार ले जाकर बेचने को कहा था न! लेरे-गैरे कोई भी आकर तोड़ ले जायँगे न? यही मैं पूछता हूँ।'

'खेत के किनारे नारियल के पेड़ के सभी गुच्छे बहुत बड़े हो गए हैं। उन सबको रस्सी से नहीं बाँधा गया तो टूट जायँगे।'

'भूसा अभी मत बेचना। एक महीने के बाद दाम बढ़ेगा तभी बेचना ठीक होगा।'

उसकी इस बक बक को कोई सुनता नहीं था।

कालेज में पढ़ते समय तोमस स्वशासन-संग्राम में भाग लेने के लिए जेल गया था। उसके साथ पढ़ाई भी छोड़ दी।

यह बात जानने पर कुञ्ञुवरीत आग-बबूला हो गया—'वह मेरा बेटा नहीं है। उसे इस घर में घुसने मत देना; पानी भी मत देना।'

यह भी किसी ने सुना हो ऐसा भाव प्रकट नहीं किया। तोमस

कांग्रेस का त्यागी नेता बनकर लौट आया। उसके कारण कुञ्ञुवरीत के परिवार को गाँव में प्रतिष्ठा मिल गई।

कुञ्ञुवरीत फिर भी बड़बड़ाता—'पापी है वह। उसे पढ़ाने में जो खर्च कियाउ स पैसे से सौ पसेरी धान बोए जाने वाले खेत खरीद सकता था·· पापी है। उसे घर में घुसने मत देना; पानी भी मत देना।'

तोमस घर में ही रहा करता था। ज़रूरत पड़ने पर वर्की उसे रुपये भी दिया करता था।

कुञ्ञुवरीत बड़बड़ाता—'राजा और ईश्वर को धिक्कारने वाला पिशाच है। पिशाच को घर मे घुसने मत देना; पानी भी मत देना।'

३३. सभी अंकुर फूले-फले

रामचन्द्रन ने कानून की परीक्षा में पास होकर राजधानी मे ही वकालत शुरू की। जब वह विद्यार्थी था तभी असाधारण बुद्धिमान और प्रयत्नशील था। सहपाठियों और अध्यापकों की ऐसी राय तभी से बन गई थी। इस प्रकार उन सबके स्नेह और आदर का वह पात्र हो गया था। इस वजह से सब लोग जल्दी ही उसे जानने लगे। वकील के रूप में वह आसानी से प्रगति पाने लगा।

रामचन्द्रन राजनैतिक बातों या दूसरे सार्वजनिक कामों में भाग नही लेता था। उसे दो गंभीर दायित्वों को निभाना था। सात वर्ष पहले कालेज की शिक्षा के लिए घर से निकलने पर माँ के द्वारा सौंपे गए हैं वे दोनों—वसुमती और खानदान। बेटे की उन्नति के साथ बेटी और खानदान की रक्षा का स्वप्न उस माँ ने देखा था। उन कर्त्तव्यों को निभाना उसके जीवन का प्रथम लक्ष्य था। उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसने वकालत के काम पर ध्यान दिया। बहुत मुक़दमे और बहुत पैसा उसे मिल रहा था। वह सारा धन उसने बहन और खानदान की रक्षा के लिए खर्च किया।

रामचन्द्रन के विवाह का एक प्रस्ताव आया। उसके एक सहपाठी और मित्र राधाकृष्णन नायर की बहन से विवाह करने का प्रस्ताव था वह। रामचन्द्रन की बहन से विवाह करने को राधाकृष्णन भी तैयार था। कुछ शर्तों के साथ रामचन्द्रन ने उस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। राधाकृष्णन नायर वसुमती से विवाह करने पर मंगलश्शेरी में ही रहे। मंगलश्शेरी को ही अपना घर मान ले। रामचन्द्रन राधाकृष्णन की बहन से विवाह करके उसको अपने निवास-स्थान पर ले जायगा। न दोनों शर्तों को राधाकृष्णन नायर ने स्वीकार किया। एक ही दिन

में दोनों के विवाह हो गए ।

बहुत अधिक खेत और बाग-बगीचों वाले हैं राधाकृष्णन नायर और उसकी बहन । इसके अलावा राधाकृष्णन नायर की अपनी बसें और लारियाँ हैं । बुद्धिमान रामचन्द्रन ने विवाह के द्वारा वह पूरा धन मंगल-श्शेरी में केन्द्रित करा लिया ।

रामचन्द्रन और वसुमती के विवाह के एक दिन पहले नंदिनी और गायक महाशय मंगलश्शेरी में आ गए थे । उस दिन मंगलश्शेरी में एक बड़ा उत्सव था । विवाह के पुरस्कार के रूप में वे मद्रास से कपड़े और आभूषण लाए थे । नंदिनी और गुरुजी को देखने के लिए बहुत-से गांव वाले आने लगे ।

बूढ़ी कल्याणी ने कहा : 'छोटी मालकिन को ईषवा चुरा ले गया, ऐसा कहकर यहाँ के बड़े लोगों ने हो-हल्ला मचाया था ।'

'मैं कोई चीज़ हूँ क्या कि चुरा ले जायँ, कल्याणी ?'—नंदिनी ने हँसते हुए पूछा ।

'ईषवा के साथ ही छोटी मालकिन गई थी न । तब चुरा ले गया, ऐसा कहने के अलावा और फिर क्या कहते ?'

'मैं ईषवा के साथ तो नहीं गई थी ।'

'वासु ईषवा नहीं है क्या ?'

'नहीं । वे मनुष्य हैं; मेरे गुरु हैं । फिर ···'

'फिर क्या ?'

नंदिनी मौन हो गई ।

विवाह के बाद नंदिनी और गायक महाशय मद्रास लौट गए । हर ओणम में वे मंगलश्शेरी आया करते ।

× × ×

एक दिन दोपहर के समय मंगलश्शेरी के फाटक के बाहर एक कार आकर रुकी । पाश्चात्य ढंग से कपड़े पहने एक आदमी कार से उतर-कर फाटक पार करके बैठक में गया । उसके पीछे ड्राइवर सन्दूक लाद-

कर आया।

वसुमती अंदर से बैठक में आई। वह आँखें फाड़कर देखती खड़ी रही। आगन्तुक ने पूछा :

'वसुमती, तूने मुझे पहचाना नहीं क्या ?'

'गोपी—गोपी दादा है न ?'

हाँ—वह गोपालकृष्णन था। सरोजिनी अम्मा का बड़ा पुत्र गोपालकृष्णन। सिंगापुर से आया है वह। शहर से टैक्सी में मंगलश्शेरी के फाटक पर उतरा है। घर की और गाँव की बातें एक मित्र के द्वारा जानने के बाद ही वह आया था। छोटे भाई राजशेखरन की दुकान और चिट-फण्ड आफ़िस के आगे से आने पर भी वहाँ नहीं उतरा। छोटे भाई को देखने की इच्छा भी उसे नहीं हुई।

वर्षों पहले घर से निकल गया था वह। कई वर्ष अपनी इच्छा के अनुसार खूब घूमा-फिरा। इस प्रकार घूमते-फिरते समय एक नाटक-कंपनी से उसका संबंध हो गया। वह एक अभिनेत्री के प्रेम में पड़ गया। नाटक-कम्पनी के मैनेजर ने उस प्रेम-सबंध का विरोध किया और गोपालकृष्णन ने गुस्से मे नाटक-कम्पनी के मैनेजर के गले पर छुरी मार दी और गाँव से भाग गया।

भारत के कई स्थानों में यात्रा करके और विभिन्न प्रकार के काम करके गोपालकृष्णन ने बहुत समय बिताया। अंत में एक मित्र की सहायता से वह सिंगापुर चला गया। वहाँ एक बड़ी कम्पनी में कर्मचारी हो गया। कंपनी के लोगों ने उसे पसंद किया, इसलिए उसे पदोन्नति मिल गई। इस प्रकार वह अधिक वेतन पाने वाला बड़ा कर्मचारी बन गया। तब उसे गाँव और घर देखने की इच्छा हुई। गाँव के एक मित्र को पत्र लिखकर गुप्त रूप से सब बातें जानने के बाद वह लौटा था। दस-पन्द्रह दिन रहने के बाद वह फिर वापस चला गया।

× × ×

कई वर्ष बीत गए। रामचन्द्रन दो बच्चों का पिता हो गया।

वसुमती भी दो बच्चों की माँ बन गई। विलासिनी के तीन बच्चे हुए। भास्कर कुरुप के घर में रहने पर भी वह बीच-बीच में मंगलश्शेरी आती रहती है।

मंगलश्शेरी खानदान की मालकिन है वसुमती। पुराने मकान को तोड़कर उस स्थान में एक नया मकान बनवाना चाहिए, ऐसा राधाकृष्णन के कहने पर भी वसुमती ने उसे अस्वीकार कर दिया।

उसने दृढ़ स्वर में कहा : 'मेरी नानी ने बनवाया था यह मकान। मेरे और मेरे बच्चों का यहीं रहना काफ़ी है।'

राधाकृष्णन नायर ने मोटर रखने के लिए फाटक से सटा हुआ एक 'गराज' बनवाया था। बखारी के कमरे के सामने बरामदे में ही नए ढंग की कुर्सी और मेज़ रखे गए थे। इतना परिष्कार करने की वसुमती ने अनुमति दे दी थी। बैठक में पद्मनाभ पिल्लै की आराम-कुर्सी उसी स्थान पर पड़ी है। रोज़ संध्या-समय वसुमती उस कुर्सी के आगे दीपक रखती है। दीपक के पास बैठकर वह कीर्तन गाती है।

'अञ्जन श्रीचोर चारुमूर्ते ! कृष्ण.........'

३४. एक धागे में गूंथे हुए फूल

सावन के महीने के पहले श्राणम का दिन है श्राज। उस शाम को मद्रास सेण्ट्रल स्टेशन पर कई मलयाली लोग यात्रा के लिए तैयार खड़े हैं। उनमे नन्दिनी श्रौर वासु महाशय भी है। सभी का ध्यान नंदिनी पर लगा है। नंदिनी की गान-धारा मे न बहने वाला उसमे कोई नही है। उनमे नंदिनी के राष्ट्रीय गीत मे लीन हुए देश के श्रभिमान के ऊँचे शृगो पर न पहुँचने वाला कोई भी नही है। स्नेह श्रौर श्रादर के साथ सभी नंदिनी को देख रहे है।

स्टेशन के बाहर भीड है। सभी ने बाहर देखा। खद्दर के कपडे पहने श्रौर लम्बे कद वाला एक व्यक्ति कुछ श्रनुयायियो के साथ स्टेशन के प्लेटफार्म पर श्राया।

'इन्द्र—पी० श्रार० इन्द्र'—कई लोग फुसफुसाए।

नन्दिनी ने उस व्यक्ति को ध्यान से देखा। पके सन्तरे-जैसा रंग। लम्बी श्रौर नुकीली नाक, लम्बे हाथ।—नन्दिनी टकटकी लगाए उन्हें देख रही है। इन्द्र—पी० श्रार० इन्द्र—यह नाम उसने भी सुना है। भारत-भर मे प्रसिद्ध नाम है वह। देश के स्वतन्त्रता-सग्राम मे कई साहसिक कार्य उन्होने किए है, लेकिन उसे प्रत्यक्ष में देखने पर उसे भूला हुश्रा कोई याद श्राने लगा।

वे गाडी के फर्स्ट क्लास के डिब्बे मे चढ गए। नन्दिनी श्रौर गायक महाशय भी उसी डिब्बे मे चढ़े। उनकी सीट के सामने वाली सीट पर वे लोग भी बैठ गए। उन्हे विदा करने श्राए लोग खिडकी के पास खड़े हो गए। यात्रियो मे कई लोग उन्हे झाककर देख रहे थे।

विदा करने के लिए श्राए लोगो से वे श्रंग्रेजी मे बात कर रहे है। दृढ़ श्रौर स्पष्ट स्वर है वह। उस स्वर से वह परिचित है। नन्दिनी

उन्हें निष्पन्द नेत्रों से देखती रही। अंग्रेज़ी भाषा उसकी समझ में आ रही है, लेकिन उनकी बातें उसकी समझ में नहीं आई। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर वे बातचीत कर रहे थे।

गाड़ी ने सीटी बजाई। प्लेट-फार्म पर खड़े हुए लोगों ने उससे विदा माँगी। गाडी प्लेट-फार्म पर से चलने लगी। नन्दिनी के सामने बैठे हुए उन्होंनों एक किताब लेकर पढनी शुरू कर दी।

नन्दिनी ने गुरूजी से धीरे से कहा : 'वही कद, वही रंग वही नाक, वही बोल-चाल सब--सब-कुछ उसी प्रकार का है।'

'किस प्रकार का ?'

'मेरे मामा के समान। मामा को देखा है आपने ?'

'जब मै बच्चा था तब देखा था। अच्छी तरह याद नहीं।'

'इसी प्रकार के। ये अगर सिर पर चोटी रख लें तो वैसे ही लगेंगे।'

'उनके एक पुत्र था न ?'

'था। रवीन्द्रन, लेकिन बचपन मे ही घर छोड़कर चला गया था। विलासिनी दीदी और गोपाल कृष्णन की उम्र का है।'

इन्द्र ने किताब से दृष्टि हटाकर नन्दिनी की ओर देखा। वे भी किसी चिन्ता मे लीन हो गए।

नन्दिनी ने कहा : 'रवीन्द्रन की मां···'

तुरन्त उन्होंने नन्दिनी की ओर विस्फारित नेत्रों से देखते हुए पूछा : 'रवीन्द्रन की माँ।— उस माँ को आप जानती हैं क्या ?'

'आप जानते हैं ?'—नन्दिनी ने प्रतिप्रश्न किया।

'कमलाक्षी बुआ की दूसरी लड़की हो न तुम ?'—उन्होंने दृढ स्वर में पूछा।

'मेरी माँ आपकी बुआ कैसे हो सकती हैं ?'

'पिता की बहन को बुआ कहते हैं न ?'—

'रवि...रवि...रवि दादा !' वह उछलकर उठी। आश्चर्य और आनन्द ने उसे घेर लिया।

'नन्दिनी !' उन्होंने उसका हाथ पकड़ा।

× × ×

दोनों ने अपनी-अपनी कहानियाँ कहीं। नन्दिनी ने अपनी ही नहीं, मंगलश्शेरी खानदान और पच्चापी खानदान की कहानी भी कही। झगड़े के मुकदमे में दण्ड दिये जाने पर रवीन्द्रन के पिता पद्मनाभ पिल्लै के जेल जाने की और विलासिनी के अपने प्रेमी के साथ भाग जाने की, स्वयं संगीतज्ञ के साथ चले जाने की तथा संगीत की दुनिया में हुई उसकी उन्नति आदि सभी का उसने वर्णन किया। कमलाक्षी अम्मा के मरने, सुभनी अम्मा के रामचन्द्रन को कालेज भेजने के लिए कुट्टप्पणिक्कर से रुपए माँगने की उसकी रोगी होने, आत्महत्या करने, पद्मनाभ पिल्लै के जेल से आने, सरोजिनी अम्मा के पागलपन से मरने, भास्कर कुरुप के विलासिनी को लौटा लाकर विवाह करने, राजशेखरन की आर्थिक उन्नति, रामचन्द्रन से अचानक हुई भेंट, रामचन्द्रन के वकालत परीक्षा में पास होकर प्रैक्टिस शुरू करने, रामचन्द्रन और वसुमती के विवाह आदि का समाचार सब-कुछ विस्तार से बताया।

अंत में पच्चाषी खनादान के पूर्ण रूप से पतन के बारे में कहने के बाद उसने कहा : 'खानदान की संपत्ति का बँटवारा हो गया है।'

'माँ ?'—रवीन्द्रन ने पूछा

'मामी ?...मामी...पच्चाषी खानदान के स्थान पर एक झोंपड़ी बनाकर रहीं। अन्त में......अन्त में मामी कीड़े पड़कर मर गईं।'

'कीड़े पड़कर मर गईं !......कीड़े पड़कर मर गईं !......।' रवीन्द्रन की साँस मानो फूल रही थी। आँखें भर आईं।

आँसू पोंछकर दुःख को सम्हालकर उन्होंने पूछा : 'पिताजी ?'

'मामा एक साधु के साथ काशी चले गए।'

जल्दी दौड़ने वाली गाड़ी की खिड़कियों से बहुत देर तक दूर की ओर चुपचाप देखते हुए वे फुसफुसाए :

'माँ कीड़े पड़कर मर गई। पिताजी काशी चले गए......जो कुछ होना था, हुआ।'

संध्या बीती। नन्दिनी ने उसके काफ़ी के बर्तन से काफ़ी निकालकर रवीन्द्रन और गायक महाशय को दी। उसने भी पी।

उसने कहा : 'अब रवि दादा अपनी कहानी कहिए।'

'मेरी कहानी इस देश की कहानी से सम्बन्धित है, नन्दिनी। मेरी कहानी को देश की कहानी से अलग करके कहना मुश्किल है। फिर भी मैं थोड़ा बहुत कहूँगा'—आँखें बन्द करके थोड़ी देर वह निश्चल रहा। मानो भूतकाल की ओर झाँक रहा था।

फिर उन्होंने कहना शुरू किया :

'हत्यारा कहलाने से, माँ का घातक बनने से, फाँसी पर चढ़ने से बचने के लिए मैं घर से भाग गया था। फाँसी से, रोज के विनाश से निकलकर भाग गया था मैं। कहाँ जाना है, क्या करना है, कैसे जीना है, मुझे मालूम नहीं था...इस प्रकार भटकता हुआ मैं मद्रास पहुँचा।

'आश्रयहीन वह बालक मद्रास शहर में बिना भोजन के भटकता रहा। भीख माँगने की आदत उसकी नहीं थी, इसलिए वह भीख माँगने में पराजित रहा। अन्त में शहर के एक भाग के एक छोटे घर में जाकर भूख लगी है, कहा। उस घर में केवल एक ही युवक था। रवीन्द्रन को देखते ही उसने प्यार के साथ पास बुलाकर गाँव और नाम पूछा। उसने सब-कुछ बता दिया। तुरन्त उसने एक टिफ़िन उठाकर देते हुए पूछा, 'क्या होटल से खाना ला सकते हो?' रवीन्द्रन ने 'हाँ' कहा। उस युवक ने एक कागज़ के टुकड़े पर लिख दिया; खाना ले आया। उसे परोसकर स्वयं भी भोजन किया।

'वह युवक कालेज का अध्यापक था। नाम रंगनाथन था। एक

रसोइये के साथ वह रहता था। दो दिन पहले वह रसोइया कुछ रुपए चुरा-कर भाग गया। उसके बाद वह होटल से खाना मँगवाकर या होटल में जाकर भोजन करते हुए जीवन व्यतीत कर रहा था। उसने रवीन्द्रन से पूछा कि वह साथ रहेगा क्या। उसने स्वीकार कर लिया। इस प्रकार एक नौकर के रूप में वह वहाँ रहने लगा, रवीन्द्रन कह रहा है:

'मैं उनका नौकर था, लेकिन वे मुझे नौकर नहीं मानते थे। जीवन में उच्च-नीचत्व न देखने की सांस्कारिक उन्नति-प्राप्त व्यक्ति थे वे···मैं मंगलश्शेरी में पद्मनाभ पिल्लै के बेटे के रूप में जन्मा, लेकिन आज मैं प्रोफ़ेसर रंगनाथन का बनाया हुआ हूँ।'

रवीन्द्रन को रंगनाथन की किताबें आतुरता के साथ उलटते-पलटते देख उन्होंने पूछा कि क्या पढ़ने की इच्छा है? रवीन्द्रन ने अपने पढ़ने की प्रबल इच्छा ज़ाहिर की। रोज़ दो घंटे वे रवीन्द्रन को पढ़ाते थे। रवीन्द्रन में पढ़ने की आतुरता और प्रोफ़ेसर रंगनाथन को पढ़ाने में आनन्द दोनों के योग से वह गुरु-शिष्य का सम्बन्ध एक अभेद्य आत्मीय सम्बन्ध के रूप में स्थिर हो गया। एक-डेढ़ वर्ष के बीत जाने पर अँग्रेज़ी भाषा के बड़े-बड़े ग्रन्थों को पढ़ने की क्षमता रवीन्द्रन में आ गई। इस प्रकार चार वर्ष वे एक साथ रहे। तब तक रंगनाथन के पास की किताबों में से अधिक-तर किताबें रवीन्द्रन ने पढ़ डाली थीं। पत्र-पत्रिकाएँ पढ़कर उसने नवीन ज्ञान भी प्राप्त कर लिया। भारत की स्वतन्त्रता के संग्राम में रवीन्द्रन की उत्कंठा को रंगनाथन ने प्रोत्साहित भी किया।

इस बीच रंगनाथन ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंगलैण्ड जाने का निश्चय किया। उस निश्चय ने रवीन्द्रन को भी भविष्य के बारे में सोचने की प्रेरणा दी। स्वतन्त्रता-संग्राम में भाग लेने की रवीन्द्रन की इच्छा थी। कहीं भी, कैसे भी जीने का उसमें साहस था। जीवन का अर्थ और उद्देश्य खोज लेने में भी वह सफल हुआ। रवीन्द्रन की क्षमता के बारे मे रंगनाथन जानते थे। तभी उसके भविष्य के लिए कुछ-न-कुछ सहायता करने का उन्होंने निश्चय किया। इंगलैण्ड की यात्रा के लिए

जाते समय वे बम्बई तक रवीन्द्रन को भी साथ ले गए। वहाँ उसने अपने एक मराठी मित्र और सहपाठी से रवीन्द्रन का परिचय करा दिया। वह और उसके परिवार वाले स्वराज्य के प्रेमी थे। वे एक बड़ी मिल के मालिक थे। रवीन्द्रन उस परिवार में रहने लगा। उसकी बुद्धि और ज्ञान की तृष्णा, स्वतंत्रता का बोध और त्यागशीलता ने उन घर वालों को हठात् आकर्षित कर लिया। वह उस परिवार का सदस्य हो गया।

धीरे-धीरे वह राजनैतिक कार्यों में भाग लेने लगा। उसके साथ ही राष्ट्रभाषा हिन्दी भी सीख ली। छोटे-छोटे समारोहों में उसने भाषण दिए। देश के नेताओं से परिचय पाया। उसके व्यक्तित्व की विशेषता ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। गूंजने वाली ऊँची आवाज़, दृढ़, स्पष्ट और ललित प्रतिपादन शैली उसके भाषण की विशेषताएँ थीं। इस प्रकार वह अधिकारियों का एक श्रद्धेय बन गया।

पी० आर० इन्द्र इस नाम से सभी रवीन्द्रन को जानते थे। रवीन्द्रन ने जान-बूझकर वह नाम स्वीकार किया था। अंत में पी० आर० इन्द्र अधिकारियों के लिए सिर-दर्द बन गया। दो बार गिरफ़्तार किया और दण्ड भी दिया। इस समय तक रवीन्द्रन माँ को भूलने और पिता को स्मरण करने का प्रयत्न करता रहा। उन्होंने कहा :

'जेल में पिता को देखने की इच्छा थी। जेल से आने के बाद मैंने गाँव आने का विचार भी किया था, लेकिन माँ को देखना पड़ेगा, इस वजह से पिताजी को न देखने का निश्चय किया।'

१९४२ के 'भारत छोड़ो' संग्राम में पी० आर० इन्द्र सबसे साहसी स्वतन्त्रता सेनानी था। अंत में वे गिरफ़्तार कर लिए गए और लंबे समय के लिए जेल भी भेज दिए गए। जेल से बाहर आने पर पिता को देखने की इच्छा न दबा सकने के कारण वे गाँव में लौट रहे थे। मद्रास पहुँचने पर प्रोफ़ेसर रंगनाथन और कुछ सह-प्रवर्त्तकों को देखने के लिए वे एक दिन वहाँ ठहरे।

असामान्य बुद्धि और त्याग के लिए सन्नद्ध एक व्यक्ति की साहस-

पूर्ण कहानी थी वह। यह कहानी संक्षेप में कहकर रवीन्द्रन ने इस प्रकार उससंहार किया :

'नंदिनी, भौतिक और नैतिक अध:पतन से बचने के लिए ही मैं घर से भागा था। मेरा भविष्य क्या होगा, कैसा होना चाहिए, मैं नहीं जानता था। मेरी ज़िन्दगी का ऐसा कोई लक्ष्य और उद्देश्य नहीं था···अब भी —अब भी मुझे मालूम नहीं कि मेरा भविष्य कैसा होगा। संग्राम के सेनानी के पास भविष्य के बारे में सोचने का समय नहीं। इस बात पर मुझे कोई हठ भी नहीं, लेकिन मेरा जीवन मेरे देश के लिए कुछ काम में आया है···आगे भी—आगे भी संग्राम समाप्त नहीं हुआ है। मैं अब भी संग्राम की ओर लौट रहा हूँ।'

'थोड़े दिन भी घर में रह नहीं सकते? आखिर उसी घर में आप पैदा भी हुए और बड़े भी'—नन्दिनी ने पूछा।

'घर?···मेरा घर भारत है। भारत में मेरा जन्म हुआ है।'

'माफ़ कीजिए। मैं घर जा रही हूँ। देश से बड़ा है मेरा घर।'

कुछ मुस्कराते हुए रवीन्द्रन ने कहा :

'उससे ज़्यादा मानने वाले भी हैं नंदिनी। गाँव और घर से भी बढ़कर अपने को ही मानने वाले हैं। यह सब विचार और दृष्टिकोण के अन्तर हैं।'

× × ×

उस दिन ओणम का पहला दिन था। मंगलश्शेरी में एक उत्सव की प्रतीति हो रही थी। रामचन्द्रन पत्नी और दो बच्चों के साथ उसी दिन सबेरे पहुँचे। भास्कर कुरुप, विलासिनी और तीन बच्चे पिछले दिन आ चुके थे। वसुमती घर की मालकिन बनी ओणम की तैयारियों की देख-रेख कर रही है। दोनों बच्चे दूसरे बच्चों से मिलकर खेल में आनंदित हो रहे हैं। राधाकृष्णन नायर वर्मों के मज़दूरों और लारी के मज़दूरों को वेतन और ओणम का पुरस्कार देकर सारे काम सँभालकर रामचन्द्रन और भास्कर कुरुप से बातें कर रहे हैं।

सभी नंदिनी के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। उसने पत्र लिखा था कि वह उस दिन शाम को पहुँच रही है। उस साल ओणम का भोजन करने के लिए राजशेखरन मंगलश्शेरी पहुँचेगा, ऐसी सूचना उसने दी थी। इससे सभी को आश्चर्य हुआ।

रामचन्द्रन ने कहा 'राजशेखरन अब जान गया है कि उसकी संपत्ति हममें से कोई भी नहीं माँगेगा, इसलिए ओणम के दिन भोजन करने आने का उसने निश्चय किया है।'

सभी हँस पड़े।

गोपालकृष्णन ने सिंगापुर से ओणम के लिए शुभकामनाएँ और बच्चों के लिए कई उपहार भेजे थे।

शाम होते ही बखारी के सामने के विशाल बरामदे में एक बड़ी सभा आयोजित की गई। उस सभा में कुञ्जुवर्गीस का पुत्र तोमस, सामन मुतलाली का पुत्र चेरियान दिवाकरन तथा सुकुमारन नायर उपस्थित थे। वसुमती, विलासिनी और रामचन्द्रन की पत्नी अतिथियों को काफी और नाश्ता दे रही थीं।

संध्या हो गई। पद्मनाभ पिल्लै की आराम-कुर्सी के आगे दीपक जलाकर रख दिया गया। स्त्रियाँ और बच्चे आराम-कुर्सी के चारों ओर बैठ गए। बखारी के सामने के बरामदे में निस्तब्धता छा गई। रामचन्द्रन और भास्कर कुरुप उठकर खड़े हो गए। उसके बाद सभी उठ खड़े हुए।

दूर पर एक कार के हार्न की आवाज सुनाई पड़ी। वसुमती ने कीर्तन शुरू किया—

'अञ्जन श्रीचोर! चारु मूर्तेकृष्ण! ...'

एक कार फाटक पर आकर खड़ी हो गई। सभी ने आतुरता के साथ द्वार की ओर देखा।

'पिताजी!···पिताजी!' पुकारते हुए रवीन्द्रन फाटक के अंदर आया। उन्होंने दौड़कर बैठक में प्रवेश किया।

'पिताजी!···पिताजी!' उन्होंने आराम-कुर्सी के आगे दण्डवत्

नमस्कार किया।

बखारी के बरामदे मे खड़े हुए सभी लोग बैठक के आगे आ गए। सब भौचक्के खडे थे।

नंदिनी दीपक के पास आकर बैठ गई। उसने रुका हुआ कीर्तन फिर शुरू किया--

'अञ्जन श्रीचोर ! चारुमूर्ते कृष्ण ! ···

उस गान ने संध्या के शीतल समीर मे तरंगे पैदा कर दी।

स्वर ऊपर उठा। वह गान ताल मे बद्ध सिसकी और फूट-फूटकर रोने में बदल गया—

'दिल मे भरी हुई वेदना यन्त्रणा

आनन्द रूप तुम दूर करो हे कृष्ण'

सभी फूट-फूटकर रो पड़े।

'पिताजा !'—रवीन्द्रन सिसक-सिसककर रोया।